साहित्योत्सव
Festival of letters
2024

साहित्य अकादेमी

संक्षेप

जनवरी-मार्च 2024

सचिव की कलम से...

हर नई चीज़ के आरंभ में एक विशेष आकर्षण, ताजगी तथा उत्सव का तत्व होता है। चाहे वह दिन की सुबह हो या फिर नए साल या नए मौसम की शुरुआत, यह सब सदैव अपने साथ एक नई ताज़गी की जीवंतता और गतिशीलता अपने साथ लेकर आते हैं।

साहित्य अकादेमी के लिए प्रत्येक वर्ष हर्ष, उल्लास तथा उत्सव लेकर आता है, इसलिए साहित्य अकादेमी के लिए साहित्योत्सव उत्सव का समय होता है। वर्ष 2024 में साहित्योत्सव के 40 वर्ष पूरे हो गए तथा इन चार दशकों में यह महोत्सव उपमहाद्वीप में भारत का सबसे विशाल और समावेशी साहित्योत्सव बन गया है।

जब विविधता और समावेशिता की बात आती है तो साहित्योत्सव की तुलना उन बहुत कम साहित्य उत्सवों से कर सकते हैं, जिसमें लेखकों, कवियों, विद्वानों, अनुवादकों, प्रकाशकों, विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिष्ठित हस्तियों, युवा लेखकों, महिला लेखकों, दलित लेखकों, पहचान की खोज में लेखकों, आदिवासी लेखकों तथा अन्य लोगों का प्रतिनिधित्व होता है।

देश की साहित्य सेवा के चार दशक पूर्ण होने के उपलक्ष्य में साहित्योत्सव 2024 विश्व का सबसे बड़ा साहित्योत्सव बन गया है, जिसमें 1000 से अधिक लेखक तथा विद्वान भाग ले रहे हैं, जो लगभग 100 भाषाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। 11 मार्च से 16 मार्च 2024 तक छह दिनों तक चलने वाला यह साहित्योत्सव नई दिल्ली के प्रतिष्ठित रवींद्र भवन में आयोजित किया गया। साहित्योत्सव के दौरान प्रतिष्ठित साहित्य अकादेमी पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

केवल इस वर्ष ही नहीं, वरन् विगत चार दशकों से इस महोत्सव ने विभिन्न वर्गों के भारतीय लेखकों के समुदाय को सदैव मंच प्रदान किया है तथा विगत कुछ वर्षों में यह एक संपूर्ण महोत्सव बन गया है। यह पूरे भारत के लेखकों के सक्रिय समर्थन, प्रोत्साहन, भागीदारी तथा समय पर दिए गए परमर्श के बिना संभव नहीं था।

मैं अकादेमी के समस्त लोगों के साथ देश के लेखकों को उनके द्वारा निस्वार्थ भाव से समाज को दी जा रही उत्कृष्ट एवं सराहनीय सेवा के लिए आभार प्रकट करता हूँ, जिससे असंख्य लोगों की धारणाएँ तथा प्रतिमान आकार ले रहे हैं।

संगोष्ठियों, परिसंवादों, समकालीन कार्यक्रमों सहित स्मारक कार्यक्रमों, अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, विश्व कविता दिवस आदि जैसे नियमित कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा साहित्य की श्रेष्ठता को जन-जन तक पहुँचाने की प्रतिबद्धता को जारी रखने के लिए अकादेमी ने देश भर में अनेक पुस्तक मेलों में भाग लिया।

मुझे आशा है कि "संक्षेप" पत्रिका का यह संस्करण पसंद आएगा तथा यह आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगा। भविष्य में भी साहित्य अकादेमी के शुभचिंतकों से निरंतर संरक्षण और समर्थन की अपेक्षा रहेगी।

-के. श्रीनिवासराव
सचिव

नई दिल्ली

उर्दू युवा लेखक सम्मिलन

3-4 जनवरी 2024, औरंगाबाद

कार्यक्रम के प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी ने डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के सहयोग से 3-4 जनवरी 2024 को विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सम्मलेन कक्ष में उर्दू युवा लेखक सम्मिलन का आयोजन किया। इस सम्मिलन का उद्घाटन उर्दू के प्रख्यात कथाकार नूरउल हसनैन ने किया तथा उर्दू और अंग्रेज़ी के विख्यात समालोचक एवं अनुवादक प्रो. इंतखाब हमीद ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अबू ज़हीर रब्बानी ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के प्रमुख प्रो. जवाले कीर्तिमालिनी विट्ठल राव ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। नूरउल हसनैन ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि साहित्य वास्तविकता का आईना है तथा रचनात्मक लेखन प्रार्थना के समान है। उर्दू के जाने-माने लेखक रहमान अब्बास ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा अंग्रेज़ी और उर्दू साहित्य का शोधपूर्ण तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। प्रो. इंतखाब हमीद ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि युवा लेखकों को भलीभाँति अध्ययन करना चाहिए तथा ज्ञान की गहराई तक जाना चाहिए, उन्हें समझना चाहिए कि रचनात्मक लेखन के लिए गहरी प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। नूरउल हसनैन ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की तथा इस सत्र में अहमद औरंगाबादी, त्रिपुरारि कुमार शर्मा, सबा तहसीन तथा सबा मुनीर अहमद ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. इंतखाब हमीद ने की तथा अहमद औरंगाबादी, त्रिपुरारि कुमार शर्मा, रशीद अशरफ़ ख़ान, शहरोज़ ख़ावर, साबिर, सबा तहसीन, सबा मुनीर अहमद तथा काज़ी जावेद निदा ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। अंतिम सत्र की अध्यक्षता डॉ. रहमान अब्बास ने की तथा इस सत्र में ग़ज़नफ़र इक़बाल तथा रशीद अशरफ़ ख़ान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कश्मीरी भाषा में लीला पर परिसंवाद

5 जनवरी 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

साहित्य अकादेमी ने 5 जनवरी 2024 को जम्मू के सरकारी शिक्षा महाविद्यालय में "कश्मीरी साहित्य में लीला" विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता पश्चिम बंगाल के कल्याणी विश्वविद्यालय तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति ने की, तथा प्रसिद्ध लेखक एवं सामाजिक कार्यकर्ता प्रो. बी.एल. जुत्शी कार्यकम के मुख्य अतिथि तथा प्रख्यात लेखक एवं भाषा कार्यकर्ता प्रो. पी.एन. त्रिचेल कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। सरकारी शिक्षा महाविद्यालय, जम्मू की अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष प्रो. शालिनी राणा ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. शाद रमज़ान ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रो. शाद ने अपने व्याख्यान में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं, विशेषकर कश्मीरी में साहित्य के विकास में साहित्य अकादेमी की भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रख्यात कश्मीरी कहानीकार डॉ. सोहन लाल कौल ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया।

प्रो. बी.एल. जुत्शी तथा प्रो. पी.एन. त्रिचेल ने लीला काव्य में कश्मीरी कवियों के योगदान पर प्रकाश डाला। प्रो. हंगलू ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में लीला काव्य के विकास

परिसंवाद का दृश्य

और अन्वेषण तथा कश्मीरी भाषा में इसकी उत्पत्ति के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। कश्मीरी परामर्श मंडल की सदस्य डॉली टिकू अरवाल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। सत्र का संचालन कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. गुलज़ार अहमद राथर ने किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर.एल. तलाशी ने की। इस सत्र में प्रो. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा तथा प्रो. शाद रमज़ान भी उपस्थित थे। कंवल कृष्ण लिड्डू, विजय वाली, डॉ. गुलज़ार अहमद राथर तथा श्री रिंकू कौल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता सामाजिक एवं भाषा कार्यकर्ता जी.आर. हसरत गड्डा ने की। इस सत्र में विख्यात कवि ए.के. नाज़ तथा संतोष शाह नादान भी उपस्थित थे। सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत करने वाले प्रख्यात लेखकों में श्री अवतार हुगामी, बी.एन. बेताब, रतन लाल तलाशी तथा एम.के. कौल शामिल थे।

व्याख्यान देते हुए प्रो. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा

डॉ. गुलज़ार अहमद राथर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

अर्जन देव मजबूर पर साहित्य मंच

6 जनवरी 2024, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

साहित्य अकादेमी ने अर्जन देव मजबूर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर 6 जनवरी 2024 को कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, जम्मू के सम्मेलन कक्ष में *साहित्य मंच* कार्यक्रम का आयोजन किया। कश्मीरी परामर्श मंडल की सदस्य डॉली टीकू अरवाल ने स्वागत व्यख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जानेमाने प्रसारक एवं लेखक अब्दाल महजूर ने की। इस अवसर पर अदबी मरकज़ कामराज के अध्यक्ष मो. अमीन भट, वली मोहम्मद असीर कश्तीवारी तथा कुसुम धर भी मौजूद थे। प्रोफ़ेसर फ़ारूक फ़याज़, प्यारे हताश, ए.के. नाज़ तथा दिलदार मोहन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का संचालन कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. गुलज़ार अहमद ने किया।

नारी चेतना

6 जनवरी 2424, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

साहित्य अकादेमी द्वारा 6 जनवरी 2024 को कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, कैनाल रोड, जम्मू में कश्मीरी महिला कवियों के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. शाद रमज़ान ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी देश के जिस कोने में भी कश्मीरी भाषा बोली जाती है, वहाँ पर साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन करेगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन में अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष प्रो. शालिनी राणा ने की। इस अवसर पर प्रोफ़ेसर फारूक फ़ैयाज़, कंवल कृष्ण लिधू और अवतार हुगामी भी उपस्थित थे। काव्य पाठ करने वाली महिला कवयित्रियों में संतोष शाह नादान, डॉली टीकू अरवल, कुसुम धर, रजनी बहार और नैन्सी चेतना शामिल थीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. गुलज़ार अहमद राथर, सदस्य, कश्मीरी परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने किया। उन्होंने अकादमी की ओर से धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

व्याख्यान प्रस्तुत करती हुईं प्रो. शालिनी राणा

ग्रामालोक : बख्तावर सिंह देओल की रचनाओं पर चर्चा

7 जनवरी 2024, शेख दौलत, जगराओं के पास, लुधियाना, पंजाब

कार्यक्रम के प्रतिभागी

नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने बख्तावर सिंह देओल के जन्मदिन के अवसर पर उनके पैतृक गाँव शेख दौलत, जगराओं के पास, लुधियाना, पंजाब में उनकी रचनाओं पर चर्चा हेतु *ग्रामालोक* कार्यक्रम का आयोजन किया। पंजाबी लोक विरासत अकादमी के अध्यक्ष गुरभजन सिंह गिल ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि देओल की संपूर्ण रचनाएँ, चाहे कविता हो या उपन्यास, कहानी हो या नाटक, पंजाबी साहित्य में उन पर व्यापक रूप से चिंतन किया जाता रहेगा। उन्होंने देओल से जुड़ी स्मृतियों के माध्यम से उनकी काव्य यात्रा तथा उनके जगराओं प्रवास के दिनों पर प्रकाश डाला।

प्रथम संवादी, अरविंदर कौर काकरा ने *पोएम्स ऑफ़ देओल* पुस्तक का उल्लेख करते हुए कहा कि उनकी कविता बहुस्तरीय तथा बहु-दिशात्मक विषयों को समाहित करती है। वह भूमि, लोगों तथा संस्कृति के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ काव्यात्मक संवेदनशीलता, गहराई, अनुभव तथा दूसरों की सूक्ष्म दृष्टि से संबंधित लिखते हैं। द्वितीय संवादी, अवतार सिंह जगराओं ने कहा कि देओल की लंबी कविताएँ *प्यास, आटे दा दीवा* संवेदनशील, प्रगतिशील तथा सामाजिक सरोकारों वाली हैं। तृतीय संवादी, एच.एस. डिंपल ने *ओदे मरन तों मगरों* (उसकी मृत्यु के पश्चात्) उपन्यास पर बोलते हुए कहा कि इसकी पटकथा में कई उपविषय शामिल हैं तथा यह कृति ग्रामीण भूमि का बहुस्तरीय चित्रण प्रस्तुत करती है। चतुर्थ संवादी, गुरइक़बाल सिंह ने बचपन से लेकर अब तक उनके साहित्यिक सृजन पर पड़े सैन्य जीवन और स्थितियों के प्रभावों का वर्णन किया। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य तथा विख्यात पंजाबी कवि एवं कहानीकार बूटा सिंह चौहान कार्यक्रम के समन्वयक थे। उन्होंने कहा कि अकादेमी 'ग्रामालोक' कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास करती है।

कार्यक्रम में पंजाबी साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष रविंदर भठल, साहित्य सभा जगराओं के अध्यक्ष करम सिंह संधू, फ़िल्म निर्देशक एवं प्रसिद्ध गीतकार जगदेव मान, अभिनेता जसदेव मान सहित कई लेखकों और विद्वानों ने भाग लिया।

गुलवंत सिंह पर संगोष्ठी

8 जनवरी 2024 (ऑनलाइन)

साहित्य अकादेमी ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 8 जनवरी 2024 को अपराह्न 2:00 बजे प्रख्यात पंजाबी विद्वान एवं प्रोफ़ेसर गुलवंत सिंह की शताब्दी पर संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र के दौरान पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. रवेल सिंह ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि ऐसे विद्वान की पुनर्परिभाषा होनी चाहिए जो अरबी-फ़ारसी तथा पंजाबी कालजयी साहित्य के बीच सेतु था तथा जिसने एक संस्था की भाँति कार्य किए हों। प्रख्यात पंजाबी विद्वान मनमोहन ने बीज-वक्तव्य में उनके 'सूफ़ीवाद और इस्लाम' तथा उर्दू, अरबी और फ़ारसी से पंजाबी में शब्दकोश बनाने जैसे प्रमुख कार्यों पर प्रकाश डाला, जिससे पंजाबी में फ़ारसी भाषा की अवधारणा स्पष्ट हुई। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, प्रख्यात पंजाबी समालोचक जसविंदर सिंह ने गुलवंत सिंह के जीवन और कृतित्व पर चर्चा की और साथ ही एक शिक्षक और एक व्यक्ति के रूप में उनकी भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी का संचालन प्रख्यात पंजाबी कवि, अनुवादक एवं समालोचक वनिता ने किया। परमजीत सिंह ढींगरा की अध्यक्षता में राजिंदरपाल सिंह बराड़, अवतार सिंह, कुलदीप सिंह, नरेश कुमार और देविंदर सैफी ने गुलवंत सिंह के जीवन तथा भाषाविद्, कवि, आलोचक, अनुवादक और कोशकार के रूप में उनके कार्यों के विभिन्न पहलुओं, गुरमत, क़िस्सा, सूफ़ीवाद और इस्लाम पर उनके प्रमुख कार्यों के अलावा फ़ारसी से लेकर टी.एस. इलियट तक मध्यकालीन और आधुनिक साहित्य के उनके ज्ञान पर आधारित आलेख प्रस्तुत किए। सत्र का समापन करते हुए परमजीत सिंह ढींगरा ने अपनी आलोचनात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की तथा गुलवंत सिंह की उच्चारण पर पकड़ पर अपने विचार व्यक्त किए। अंत में, साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

संगोष्ठी का दृश्य

प्रवासी मंच

10 जनवरी 2024, नई दिल्ली

ताशकंद की प्रख्यात विद्वान उल्फत मुहिबोवा ने 10 जनवरी 2024 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित 'प्रवासी मंच' कार्यक्रम में *मध्यकालीन हिंदी साहित्य* विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अंगवस्त्रम तथा साहित्य अकादेमी की पुस्तकें भेंट कर उनका स्वागत किया। ताशकंद राज्य प्राच्य अध्ययन संस्थान में दक्षिण एशियाई भाषा विभाग में हिंदी की प्रोफ़ेसर उल्फत मुहिबोवा ने "मध्यकालीन भक्ति साहित्य" पर अपने शोध को श्रोताओं के साथ साझा किया। उल्फत मुहिबोवा ने *हिंदी भक्ति साहित्य* विषय पर पी-एच.डी. की है। उन्होंने कहा कि उनके शोध ने उज्बेकिस्तान के पाठकों को यह स्पष्ट कर दिया है कि संत और भक्त तथा निर्गुण और सगुण में क्या अंतर है। अपने शोध द्वारा उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मध्यकालीन या भक्ति साहित्य की रचना न केवल ब्रज, अवधी में हुई बल्कि फ़ारसी और तुर्की में भी हुई तथा जैन कवि भी इसमें शामिल थे। अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि भक्ति साहित्य के प्रत्येक शब्द के पीछे एक दर्शन छिपा है, जिसे उन्हें अपने देशवासियों को समझाना था। उन्होंने भक्ति साहित्य के लोकप्रिय कवियों जैसे - कबीर, सूर, तुलसी के अलावा दादू दयाल, मलूक दास तथा रज्जब आदि पर भी अपने शोध कार्य को बढ़ाया है।

आलेख प्रस्तुत करने के पश्चात् उपस्थित श्रोताओं ने उनसे कई प्रश्न पूछे, जो मुख्य रूप से उज़्बेक साहित्य तथा उज्बेक भाषा एवं सोशल मीडिया और उसके अनुवाद से संबंधित थे। इस पर उन्होंने कहा कि अनुवाद-कार्य तभी गति पकड़ेगा, जब उज़्बेक भाषा को विभिन्न देशों में पढ़ाया जाएगा। संप्रति, अनुवाद की मात्रा बहुत कम है। उज्बेक में भक्ति साहित्य की उपस्थिति के बारे में पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि उनके देश में इसकी शुरुआत 15वीं शताब्दी में हुई थी। संप्रति, भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता के बारे में पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि भक्ति साहित्य अभी केंद्र में नहीं है, किंतु यह कभी समाप्त नहीं होगा, क्योंकि इसमें व्याप्त दर्शन की भावना सभी में एकता और सहिष्णुता का संदेश देती है।

साहित्य मंच - संक्रमण की कविता

11 जनवरी 2024, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने गुरुवार, 11 जनवरी 2024 को अपने तृतीय तल स्थित सभाकक्ष, रवींद्र भवन, नई दिल्ली में सायं 5:00 बजे "संक्रमण की कविता" विषय पर *साहित्य मंच* कार्यक्रम का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के उपसचिव सुरेश बाबू ने वक्ताओं और श्रोताओं का स्वागत किया। पूर्व विदेश मंत्रालय सचिव और महानिदेशक-आईसीसीआर डॉ. अमरेंद्र खटुआ कार्यक्रम के अध्यक्ष थे तथा प्रख्यात लेखक अम्लानज्योति गोस्वामी, मंदिरा घोष और मिस्ना चानू ने अपनी कविताएँ पढ़ीं और अपने विचार साझा किए।

डॉ. अमरेंद्र खटुआ ने व्यापक दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए कहा कि संक्रमण की कविता कविता की तर्कसंगत, जड़, औपचारिक या स्थिर संरचनाओं के विपरीत है। उन्होंने कहा कि संक्रमण प्रवृत्ति, पाठ, संदर्भ, सूत्रीकरण तथा विचारों में भिन्न हो सकते हैं। उन्होंने सिल्विया प्लाथ जैसी कवयित्री की रचनाओं का हवाला दिया जिन्होंने अपने जीवन, अनुभवों और पीड़ा को कविता में पुन: गढ़ा तथा वे अपने कई समकालीनों से बहुत हद तक अलग थीं। उन्होंने कहा कि इवान बोलैंड, एड्रिएन रिच, आंद्रे डू बोचेट, क्रिस्टोफर ओकिग्बो, जॉर्ज एंसन जैसे कवियों ने बदलाव और संक्रमण के बारे में कई तरह की कविताएँ प्रस्तुत कीं। इसके अलावा, उन्होंने समकालीन उदाहरणों की बात करते हुए अफ्रीकी कवि चिनुआ अचेबे और भारतीय कवि अखिल कत्याल की रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने श्रोताओं को याद दिलाया कि महामारी और कोविड के बाद के समय के उतार-चढ़ाव और अनिश्चितताओं ने और अधिक आयाम जोड़े हैं।

श्री अम्लान ज्योति गोस्वामी ने असम में अपने परिवार के मूल स्थान गुवाहाटी की सुंदरता और शांति को याद किया और एक अद्भुत कविता "बस रूट ऑफ़ चाइल्ड्हुड" पढ़ी, जो सहयोगी स्थानों के नामों से भरी हुई थी। उन्होंने सांस्कृतिक परिवर्तन के एक उदाहरण के रूप में दिल्ली में जन्मी अपनी छोटी बेटी के बारे में एक सुंदर कविता भी पढ़कर सुनाई। उन्होंने भाषा परंपरा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का उल्लेख किया, भले ही अनुवाद के माध्यम से वह अधिक व्यापक संदर्भ में बदल गई हो। उन्होंने यह भी कहा कि विकासवादी उदाहरण भक्ति कविता, यात्रा और समय की बदलती धारणाओं के माध्यम से आते हैं। उनकी मधुर कविताओं में

नई दिल्ली

साहित्य मंच कार्यक्रम का दृश्य

परिवर्तन के तत्त्वों को शानदार ढंग से चित्रित किया गया है। उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी कही कि कविता कवि का विकास करती है तथा वह अपने अर्थों से पाठकों को प्रभावित करती है।

मूल रूप से मणिपुर की विख्यात कवयित्री सुश्री मिस्ना चानू ने प्रकृति की कविता में परिलक्षित परिवर्तनों का हवाला दिया, जो सर्दियों से वसंत तथा फिर गर्मियों में बदल जाती है। प्रकृति की लय के माध्यम से विकास को कवि द्वारा दर्द और लालसा के साथ जोड़ा जा सकता है। चानू ने कहा कि महिला के तौर पर वह अपने और दूसरी महिलाओं के अनुभवों के आधार पर बदलावों के बारे में लिखती हैं, कि शादी के बाद जीवन को बिल्कुल नए माहौल में ढालना पड़ता है। उनके अनुसार, पुरुषों की तुलना में महिलाओं की कविताओं में गहन, व्यक्तिगत बदलाव की कविताएँ ज़्यादा दिखाई देती हैं। उन्होंने अपनी कविताएँ 'माई होराइज़न' तथा 'ए लिटिल पीस ऑफ़ मेलन्कालिक स्काई' पढ़ीं, जो उनके प्रथम कविता-संग्रह का शीर्षक भी है।

विख्यात लेखिका सुश्री मंदिरा घोष चर्चा को वैश्विक और दार्शनिक जाँच के दूसरे स्तर पर ले गईं। अपने स्वयं के परिवर्तनों का उल्लेख करते हुए, उन्होंने कहा कि उनकी शुरुआती कविताएँ सूर्य और प्रकृति की वस्तुओं के बारे में थीं, किंतु विज्ञान की छात्रा होने के नाते, वह कविता के लिए असामान्य शब्दावली का उपयोग करती थीं। फिर उनकी कविता ने विज्ञान और तत्वमीमांसा को कविता में सम्मिलित करना शुरू कर दिया। महामारी के बाद की दुनिया में वर्तमान स्थिति और कई देशों में युद्ध तथा विस्थापन के प्रतिउत्तर में उनके काम में बड़ा बदलाव आया है। मंदिरा घोष ने आज के व्यवधानों को "काफ़्का की भूमि" करार दिया और कहा कि वह नागरिक समाज से निराश हो गई हैं। उन्होंने अपनी कविता, "थॉर्न्स" को जलवायु परिवर्तन के उदाहरण के रूप में उद्धृत किया, जिसे उन्होंने कई वर्ष पूर्व लिखा था। उन्होंने "इज़ देयर एनी नीड ऑफ़ वॉर?" तथा "काफ्का'स वर्ल्ड" कविताओं का पाठ भी किया। उनके अनुसार, "समय अमूर्त है, तथा वर्ष मानव निर्मित हैं"।

अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. मालाश्री लाल ने टिप्पणी की। उन्होंने "संक्रमण" को वास्तविक तथा रूपक अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया और कहा कि "हम सभी निरंतर स्थानांतरण की समकालीन दुनिया में प्रवासी हैं, चाहे स्वैच्छिक हो या परिस्थितियों से विवश हों"। उन्होंने कार्यक्रम में उठाए गए महत्त्वपूर्ण मुद्दों की सराहना की तथा कविता के उदाहरणों के साथ प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। श्रोताओं और सदस्यों के बीच विषय पर गहन चर्चा हुई।

अध्यक्ष के संक्षिप्त समापन वक्तव्य तथा उनके द्वारा प्रस्तुत कविताओं के पाठ के पश्चात्, उपसचिव डॉ. सुरेश बाबू ने औपचारिक रूप से समस्त वक्ताओं तथा दर्शकों को धन्यवाद दिया।

साहित्य मंच, नारी चेतना तथा तुलसी घिमिरे के साथ व्यक्ति और कृति

17 जनवरी 2024, जोरथाङ, दक्षिण सिक्किम

साहित्य अकादेमी ने सृजनशील साहित्य लेखन मंच के सहयोग से 17 जनवरी 2024 को जोरथाङ, दक्षिण सिक्किम में *साहित्य मंच, नारी चेतना* तथा *तुलसी घिमिरे के साथ व्यक्ति और कृति* कार्यक्रमों का आयोजन किया।

प्रथम सत्र *साहित्य मंच* था। इस सत्र की अध्यक्षता सृजनशील साहित्य लेखन मंच, जोरथांग के संरक्षक टीका गुरुङ ने की तथा साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य सुभाष सोताङ ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस सत्र में रवि रोदन, आदर्श एम. प्रधान, सेसिल मुखिया तथा 6 अन्य कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र *नारी चेतना* था तथा इस सत्र की अध्यक्षता सृजनशील साहित्य लेखन मंच की अध्यक्ष रजनी पेगा ने की तथा बीरेन चंद्र राय, थिरू प्रसाद नेपाल, केवल प्रसाद शर्मा और बिक्रम गौतम कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस सत्र के दौरान सुधा एम. राइ, पवित्र लामा, निर्दोषिका तामाङ, तरमित लेपचा तथा 3 अन्य

कार्यक्रम के प्रतिभागी

कवयित्रियों ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

अंतिम सत्र *तुलसी घिमिरे के साथ व्यक्ति और कृति* था। भारतीय नेपाली फिल्म उद्योग के विख्यात निर्देशक, फिल्म निर्माता, अभिनेता तुलसी घिमिरे ने अपने जीवन और संघर्ष के बारे में श्रोताओं को बताया। उन्होंने अपने जीवन में पुस्तकों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, "नेपाली भाषा में कई अच्छी पुस्तकें हैं किंतु उन पर फिल्में बनना अभी शेष है"।

इस सत्र के दौरान, सृजनशील साहित्य लेखन मंच, जोरथांग ने भारतीय नेपाली फिल्मों में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री घिमिरे को सम्मानित किया। राजेंद्र ढकाल एवं जयंती मुखिया ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा सृजनशील साहित्य लेखन मंच के सदस्य पी.एम. चामलिंग ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

डोगरी में ग्रामालोक

17 जनवरी 2024, रियासी

कार्यक्रम के प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी ने 17 जनवरी 2024 को रियासी के पौनी ज़िले में डोगरी भाषा में 'ग्रामालोक' कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 6 स्थानीय कवियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उन कवियों को मंच प्रदान करना है, जो इस क्षेत्र में अपने महत्त्वपूर्ण योगदान के बावजूद अक्सर अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसरों से वंचित रह जाते हैं।

कार्यक्रम में श्री धर्मपाल, श्री मोहिंदर दास, श्री कस्तूरी लाल, श्री संजीव शर्मा, श्री के.सी. शर्मा तथा श्री गोपाल कृष्ण कोमल ने भाग लिया, जिन्होंने अपनी अद्भुत कविताओं से दर्शकों का मन मोह लिया। इसके अलावा, श्री पूरन चंद्र शर्मा, डॉ. इंद्रजीत केसर, श्री रणधीर सिंह रायपुरिया तथा श्री राकेश वर्मा सहित डोगरी के प्रख्यात लेखकों ने भी इस अवसर पर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मोहन सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा साहित्य अकादेमी की राष्ट्रव्यापी पहलों और डोगरी सहित मान्यता

प्राप्त भाषाओं के विकास के प्रति इसकी प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि 'ग्रामालोक' इस प्रतिबद्धता का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे उन कवियों की प्रतिभा को प्रदर्शित करने तथा उनका उत्थान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो अन्य अवसरों से चूक जाते हैं। कार्यक्रम ने न केवल स्थानीय कवियों को मंच प्रदान किया गया, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी बढ़ावा दिया गया।

साहित्य अकादेमी का 'ग्रामालोक' कार्यक्रम देश में भाषाई विविधता तथा काव्य अभिव्यक्ति का उत्सव मनाने एवं उसे बढ़ावा देने की एक सराहनीय पहल है।

नेपाली भाषा में एकरूपता पर परिसंवाद

21 जनवरी 2024, बिश्वनाथ चाराली, असम

साहित्य अकादेमी ने 21 जनवरी 2024 को नेपाली विभाग, बिश्वनाथ कॉलेज, बिश्वनाथ चाराली, असम के सहयोग से "नेपाली भाषा में एकरूपता" पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बिश्वनाथ कॉलेज के अध्यक्ष डॉ. चिंतामणि शर्मा ने की। नेपाली विभाग के प्रमुख श्री हेमकुमार गौतम ने आमंत्रित श्रोताओं, छात्रों तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। सुश्री विष्णु देवी तथा नेपाली विभाग के वरिष्ठ छात्रों ने डॉ. चिंतामणि शर्मा, श्री दुर्गा खतिवाड़ा, श्री जीवन राणा, श्रीमती अमृता राणा तथा श्री चंद्रमणि उपाध्याय का अभिनंदन किया। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के पूर्व सदस्य तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. जीवन राणा ने साहित्य अकादेमी के कार्यक्रमों और गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने भाषा में एकरूपता की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला।

परिसंवाद का दृश्य

वरिष्ठ लेखक, आलोचक तथा साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के पूर्व सदस्य श्री ज्ञान बहादुर छेत्री ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। प्रथम आलेख श्री जमदग्नि उपाध्याय ने प्रस्तुत किया। उन्होंने नेपाली भाषा में एकरूपता के महत्त्व पर बल दिया तथा विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली स्थानीय बोलियों में पाए जाने वाले नेपाली शब्दों का विस्तृत संदर्भ दिया। उन्होंने उच्चारण में भिन्नता तथा अन्य भाषाओं से उधार लिए गए शब्दों को आत्मसात करने की आवश्यकता पर भी अपने विचार साझा किए। डॉ. जयंत कृष्ण शर्मा ने अपने आलेख में भाषा में एकरूपता लागू करते समय चुनौतियों और उनसे संबंधित समाधानों पर चर्चा की। उन्होंने निरंतर विकसित होते समाज में नए शब्दों को जोड़ने पर भी बल दिया।

द्वितीय सत्र में डॉ. खेमराज नेपाल ने अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए नेपाली भाषा के इतिहास को याद किया और प्राचीन नेपाली भाषा बोलने की आवश्यकता तथा भाषा के सही उपयोग को रेखांकित किया। उन्होंने नेपाली भाषा में पंचम वर्ण के उपयोग के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री धर्मेंद्र उपाध्याय ने अपने आलेख में स्कूलों और कॉलेजों में मानकीकृत भाषा के शिक्षण की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने लेखकों एवं साहित्यकारों से आगे आकर मानकीकृत भाषा और उच्चारण पर ज्ञान का प्रसार करने का आह्वान किया। इस अवसर पर नेपाली के कई प्रतिष्ठित लेखक एवं विद्वान यथा - पूर्ण कुमार शर्मा, अंजन बसकोटा, संजीव उपाध्याय, डॉ. भक्त गौतम, हरि लुइटेल, ज्योतिरेखा शर्मा, अरुण उपाध्याय, राजेश शर्मा तथा पूर्णिमा देवी उपस्थित थे।

असमिया-नेपाली अनुवाद कार्यशाला

23 जनवरी 2024, उदलगुड़ी, असम

कार्यशाला के प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी ने 23 जनवरी 2024 को उदलगुड़ी, असम में *असमिया - नेपाली अनुवाद कार्यशाला* का आयोजन किया, जिसमें - हरेकृष्ण डेका कृत पुरस्कृत असमिया कविता-संग्रह *आन एजान* को नेपाली अनुवाद के लिए चुना गया था।

कार्यशाला के निदेशक दुर्गा खतिवाड़ा थे, पुष्पधर शर्मा तथा चंद्रमणि उपाध्याय विशेषज्ञ विद्वान के रूप में शामिल थे तथा भाग लेने वाले अनुवादक थे - पूर्ण कुमार शर्मा, देवराज सपकोटा, रेवती रमन सपकोटा, विद्यानाथ उपाध्याय, छत्रमन सुब्बा, डुलुमणि देवी उपाध्याय तथा इंदिरा गौतम।

साहित्य मंच : माखन लाल कंवल

24 जनवरी 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

साहित्य अकादेमी ने 24 जनवरी 2024 को कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, कनाल रोड, जम्मू में साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया।

साहित्य मंच कार्यक्रम प्रख्यात कश्मीरी कवि, लेखक तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता (स्वर्गीय) माखन लाल कंवल सोपोरी को समर्पित था। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात कश्मीरी लेखक, सांस्कृतिक कार्यकर्ता एवं भाषा कार्यकर्ता जी.आर. हसरत गाडा ने की। साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. शाद रमज़ान ने अपने स्वागत व्याख्यान में माखन लाल कंवल के जीवन और साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला और कहा, "यह गर्व का क्षण है कि साहित्य अकादेमी कश्मीरी भाषा और साहित्य के दिग्गजों को याद कर रही है।"

स्वागत व्याख्यान देते हुए श्री शाद रमज़ान

अस्मिता

24 जनवरी 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

साहित्य अकादेमी ने 24 जनवरी 2024 को कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, कनाल रोड, जम्मू में 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कश्मीरी महिला लेखिका बिमला आइमा मिस्री ने की। इस सत्र में कश्मीरी परामर्श मंडल की सदस्य डॉली टिकू अरवाल ने श्रोताओं के समक्ष आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी कश्मीरी भाषा की समस्त मौलिक महिला लेखकों को मंच प्रदान करने का भरसक प्रयास कर रही है। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले अन्य लेखकों में शामिल हैं - प्रो. निक़हत फ़ारूक़ नज़र, रूही जान तथा बिंदिया टिकू। सरकारी शिक्षा महाविद्यालय की अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष डॉ. शालिनी ने धन्यवाद प्रस्तुत किया।

अस्मिता कार्यक्रम का दृश्य

एक शाम आलोचक के नाम

30 जनवरी 2024, नई दिल्ली

श्रोताओं के साथ श्री जानकी प्रसाद शर्मा

साहित्य अकादेमी ने 30 जनवरी 2024 को नई दिल्ली में आयोजित अपने प्रतिष्ठित कार्यक्रम "एक शाम आलोचना के नाम" में प्रख्यात उर्दू-हिंदी समालोचक जानकी प्रसाद शर्मा को आमंत्रित किया। उर्दू और हिंदी के बीच रचनात्मक संबंधों के विषय पर अपने विचार साझा करते हुए उन्होंने कहा कि उर्दू और हिंदी का रिश्ता बहुत पुराना है तथा उनके बीच रचनात्मक संबंधों की बार-बार तुलना करना बेबुनियाद है और उर्दू को हर बार यह साबित करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि कुछ समय पूर्व तक हिंदी और उर्दू लेखन का दृष्टिकोण बहुत समावेशी था, इसलिए यह प्रश्न नहीं उठता। यह प्रश्न हाल ही की उपज है तथा इसका कोई आधार नहीं है। उन्होंने 1950 में अली सरदार जाफ़री द्वारा लिखी गई एक कविता और शमशेर की एक कविता "अमन का राग" का ज़िक्र करते हुए कहा कि उस समय दोनों लेखक एक-दूसरे की भाषाओं के प्रति सम्मान के साथ लिख रहे थे। उन्होंने कहा कि इस प्रतिद्वंद्विता या इस प्रश्न का कारण यह है कि हम दोनों भाषाओं के लेखकों की रचनाओं के बारे में अच्छी तरह से नहीं जानते हैं। उन्होंने हिंदी में प्रेमचंद, शमशेर, त्रिलोचन, हरिवंश राय बच्चन आदि का उदाहरण देते हुए कहा कि ये लोग हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में निपुण थे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि उर्दू फ़ारसी से निकली कोई विदेशी भाषा नहीं है। उर्दू में 75 प्रतिशत शब्द संस्कृत, हिंदी और प्राकृत से लिए गए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हम सभी जानते हैं कि दोहे अगर हिंदी से उर्दू में आए हैं तो गज़लें उर्दू से हिंदी में आई हैं। उन्होंने तुलसीदास की *रामचरितमानस* से कई उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि वहाँ भी उर्दू को आदर के साथ अवधी भाषा में पिरोया गया है। आधुनिक कवियों में उन्होंने मंगलेश डबराल तथा केदारनाथ सिंह की कविताओं का उदाहरण देकर बताया कि किस प्रकार वे मीर और ग़ालिब की भाषा का सम्मान करते हैं। उन्होंने इस आरोप को भी निराधार बताया कि उर्दू में लोक शिष्टाचार या सामाजिक या सांस्कृतिक लोकाचार का अभाव है। उन्होंने कहा कि उर्दू का कोई अलग लोकाचार नहीं है, हिंदी-उर्दू का लोकाचार मिश्रित है। उन्होंने कहा कि मैं हिंदी और उर्दू की एकता का पक्षधर हूँ, किंतु उर्दू लिपि का अस्तित्व समाप्त करके वह इस एकता को क़ायम रखना नहीं चाहेंगे।

कविसंधि : पंजाबी कवि देव का कविता-पाठ

1 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

श्रोताओं के साथ श्री देव, डॉ. रवेल सिंह तथा डॉ. वनिता

साहित्य अकादेमी के प्रतिष्ठित कार्यक्रम 'कविसंधि' के अंतर्गत 1 फ़रवरी 2024 को नई दिल्ली में प्रख्यात पंजाबी कवि और चित्रकार श्री देव का कविता-पाठ आयोजित किया गया। स्विटजरलैंड से पधारे श्री देव ने अपनी कुछ कविताओं का पाठ किया तथा श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने श्री देव को अंगवस्त्रम भेंट कर स्वागत किया तथा आरंभिक वक्तव्य भी प्रस्तुत किया। श्री देव की प्रमुख कविताओं में शामिल हैं - "बयान", "1947", "कार सेवक", "परवाज़, शायर का घर", "मेरा पंजाब", "खेल", "बचपन", आदि।

श्रोताओं के प्रश्नों का उत्तर देते हुए श्री देव ने कहा, "मैं अपनी कविताओं में मौन को अधिक महत्त्व देता हूँ। मैं अपनी कविता को पहले अपनी आँखों से देखता हूँ और अर्थहीन शब्दों से कविता बनाता हूँ। मैं शब्दकोश में बंद शब्दों को निकालता हूँ और उन्हें पाठकों के लिए फिर से सहेजता हूँ।" जब उनसे उनकी चित्रकारी के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, "मैं केवल एक ही रंग का चित्रकार हूँ, यानी मोनो-कलर पेंटर। मैं एक ही रंग को बार-बार इस्तेमाल करके रंगों की एक नई संगीत रचना रचता हूँ"। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा, "मैं रवींद्रनाथ ठाकुर को भारत का सबसे श्रेष्ठ चित्रकार मानता हूँ और उनके बाद अमृता शेरगिल को। उनकी कविताओं को पंजाब का आभूषण बताते हुए डॉ. रवेल सिंह ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हमें एक ऐसा कवि मिला है जो शब्दों और दृश्यों दोनों में से ऐसी खामोशी चुनता है जो सबसे अधिक वाक्पटु है।

'डोगरी से अन्य भाषाओं तथा अन्य भाषाओं से डोगरी में अनुवाद के विशेष संदर्भ में साहित्य के रूप में अनुवाद' विषय पर परिसंवाद

3 फ़रवरी 2024, जम्मू

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी के सहयोग से 3 फ़रवरी 2024 को राइटर्स क्लब, जम्मू-कश्मीर अकादमी, जम्मू, जम्मू-कश्मीर में 'डोगरी से अन्य भाषाओं तथा अन्य भाषाओं से डोगरी में अनुवाद के विशेष संदर्भ में साहित्य के रूप में अनुवाद' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी कवि एवं साहित्यिक समालोचक श्री दर्शन दर्शी ने की। साहित्य अकादेमी की ओर से साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मोहन सिंह ने स्वागत एवं आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रतिष्ठित लेखक डॉ.

परिसंवाद का दृश्य

ज्ञानसिंह ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया, तथा जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी के सचिव श्री भरत सिंह मनहान ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सभी से भाषाओं के संरक्षण का आग्रह किया। श्री दर्शन दर्शी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डोगरी भाषा और साहित्य दोनों के उत्थान के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा समय-समय पर की गई पहल पर प्रकाश डाला। जम्मू-कश्मीर अकादमी की सहायक संपादक सुश्री रीता कदयाल ने साहित्य अकादेमी को सहयोग देने के लिए धन्यवाद दिया। उद्घाटन सत्र के दौरान गणमान्य व्यक्तियों ने साहित्य अकादेमी के नवीनतम डोगरी प्रकाशन का विमोचन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री जितेंद्र उधमपुरी ने की तथा श्री प्रकाश प्रेमी ने 'उपन्यास का अनुवाद' तथा श्री निर्मल विनोद ने 'कविता का अनुवाद' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. अर्चना केसर ने की, तथा श्री जगदीप दुबे ने 'नाटक का अनुवाद' तथा श्री राधा शर्मा ने 'कहानी का अनुवाद' विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद में बड़ी संख्या में श्रोताओं तथा प्रमुख डोगरी लेखकों एवं विद्वानों ने भाग लिया तथा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कविता-पाठ करते हुए सागर सरफ़राज़

कविसंधि : सागर सरफ़राज़

3 फ़रवरी 2024, हाजिन, जम्मू और कश्मीर

साहित्य अकादेमी ने 3 फ़रवरी 2024 को मोहिउद्दीन हाजनी मेमोरियल पब्लिक स्कूल, हाजिन बांदीपोरा, कश्मीर में प्रख्यात कश्मीरी कवि सागर सरफ़राज़ के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन किया। कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य मजीद मजाज़ी ने सभी का स्वागत किया। अपनी कविताएँ सुनाने के अलावा, सागर सरफ़राज़ ने आमंत्रित दर्शकों के साथ अपने रचनात्मक अनुभव भी साझा किए। उन्होंने दर्शकों द्वारा पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

ग्रामालोक

4 फ़रवरी 2024, पज़लपोरा, ब्रिजबेहरा, जम्मू और कश्मीर

4 फ़रवरी 2024 को पजलपोरा, बिजबेहरा, अनंतनाग में विशेष रूप से महिला कवियों के लिए 'ग्रामालोक' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मराज़ अदबी संगम के उपाध्यक्ष डॉ. मोहम्मद शफ़ी अयाज़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। एम.ए.एस. के महासचिव इज़हार मुबशिर तथा कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. गुलज़ार अहमद राथर भी उपस्थित थे। कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. शाद रमज़ान ने एक रिकॉर्डेड संदेश दिया, जिसमें कवयित्रियों का स्वागत किया गया तथा कश्मीरी के नए लेखकों के लिए समर्थन सुनिश्चित करने का आह्वान किया गया था। उन्होंने साहित्य अकादेमी के इस प्रकार के कार्यक्रमों को आयोजित तथा क्रियान्वित करने में डॉ. गुलज़ार की भूमिका की सराहना की। सुश्री शाइस्ता शफ़क़, सुश्री अतीक़ा सिद्दीक़ी, सुश्री नदीम शौक़िया, सुश्री रूबी-उन-निसा तथा सुश्री पाकीज़ा हिना ने कश्मीरी में अपनी कविताओं का पाठ किया। मोहम्मद शफ़ी अयाज़ ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में शायरी

ग्रामालोक कार्यक्रम का दृश्य

प्रस्तुत करने वाले शायरों की सराहना की। उन्होंने प्रतिष्ठित कश्मीरी कवयित्री परंपरा का उल्लेख किया। कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक श्रोतागण, कवि तथा लेखक उपस्थित थे। डॉ. गुलज़ार अहमद राथर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

ग्रामालोक

6 फ़रवरी 2024, पुलवामा, जम्मू-कश्मीर

साहित्य अकादेमी ने 6 फ़रवरी 2024 को होटल न्यू नाज़ पुलवामा में *ग्रामालोक* कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ज़िला सांस्कृतिक सोसायटी पुलवामा के अध्यक्ष शम्स सलीम ने की। सिविल सोसायटी पुलवामा के अध्यक्ष मोहम्मद अल्ताफ़ भट्ट कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। जानेमाने कश्मीरी कवि एवं लेखक अब्दुल रहमान फ़िदा तथा डी.सी.एस.पी. के महासचिव ग़ुलाम मुहम्मद दिलशाद कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे।

कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. गुलज़ार अहमद राथर ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने देश में विशेषकर जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश में भाषा और साहित्य को बढ़ावा देने में

ग्रामालोक कार्यक्रम का दृश्य

अकादेमी की भूमिका पर प्रकाश डाला। ताज-उन-निसा, शादाब यासमीन, सेहरिश नूर, फ़ातिमा जी तथा रफ़ीक़ मोंघामी ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024

10-18 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

[बाएँ से दाएँ] सालिम सलीम, बलविंदर सिंह बरार, रमण कुमार सिंह, विवेक मिश्र, मिताली फुकन तथा डॉ. एन. सुरेश बाबू

साहित्य मंच

11 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

विश्व पुस्तक मेले के दूसरे दिन 11 फ़रवरी 2024 को अकादेमी द्वारा साहित्य मंच (बहुभाषी रचना पाठ) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हॉल नंबर 2 में लेखक मंच पर आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कथाकार विवेक मिश्र ने की तथा मिताली फुकन (असमिया), रमण कुमार सिंह (मैथिली), बलविंदर सिंह बरार (पंजाबी), सालिम सलीम (उर्दू) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। मिताली फुकन, रमण कुमार सिंह ने अपनी कविताएँ तथा सालिम सलीम ने अपने शेर तथा ग़ज़लें प्रस्तुत कीं। अंत में, बलविंदर सिंह बरार ने अपनी कहानी "जस्ट फ्रेंड्स" तथा विवेक मिश्र ने अपनी कहानी "जुले" प्रस्तुत की जो लद्दाख के अनुभव पर आधारित थी।

नारी चेतना

12 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

[बाएँ से दाएँ] रोमिशा, सरोजिनी बेसरा, अमिया कुँवर, सना असलम ख़ान, मीनू प्रेमचंदानी तथा डॉ. एन. सुरेश बाबू

साहित्य अकादेमी ने 12 फ़रवरी 2024 को पुस्तक मेले में लेखक मंच पर 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ पंजाबी लेखिका सुश्री अमिया कुँवर ने की तथा सुश्री रोमिशा झा (मैथिली), सुश्री सरोजिनी बेसरा (संताली), सुश्री मीनू प्रेमचंदानी (सिंधी) तथा सुश्री सना असलम ख़ान (उर्दू) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

बाल साहिती, युवा साहिती तथा लेखक से मिलिए

14 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

[बाएँ से दाएँ] शकुंतला कालरा तथा सुमन नेगी

[बाएँ से दाएँ] ख़ान मोहम्मद रिज़वान, शचींद्र आर्य, युवराज भट्टाराई तथा गुरसेवक सिंह

साहित्य अकादेमी ने 14 फ़रवरी 2024 को नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में विभिन्न रुचियों के पाठकों के लिए कई कार्यक्रमों का आयोजन किया। सर्वप्रथम हॉल नंबर 3 के बाल मंडप में *बाल साहिती* कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रख्यात बाल साहित्यकार शकुंतला कालरा एवं युवा कथाकार सुमन नेगी ने बच्चों को अपनी रचनाएँ सुनाईं।

लेखक मंच, हॉल नंबर 2 में *युवा साहिती* कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता संस्कृत कवि युवराज भट्टाराई ने की तथा शचींद्र आर्य (हिंदी), गुरसेवक सिंह (पंजाबी) तथा ख़ान मोहम्मद रिज़वान (उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य अकादेमी के स्टॉल पर अंग्रेज़ी लेखक अभय के. को आमंत्रित किया गया।

अपनी पुस्तक हस्ताक्षरित करते हुए श्री अभय के.

उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित अपनी पुस्तक *मानसून* के बारे में बताया। कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उन्हें अंगवस्त्रम तथा साहित्य अकादेमी की पुस्तकें भेंट कर उनका स्वागत किया।

अकादेमी द्वारा प्रकाशित चार बाल पुस्तकों का विमोचन

15 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

15 फ़रवरी 2024 को विख्यात बाल साहित्यकार प्रकाश मनु की साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित 4 नई बाल पुस्तकों तथा दिविक रमेश द्वारा चयनित एवं अनूदित 'किम सोवाल की कविताएँ' नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। 'कविसंधि' के एक अन्य कार्यक्रम में प्रख्यात कवि दिविक रमेश ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं तथा अपनी साहित्यिक यात्रा के अनुभव साझा किए।

पुस्तक विमोचन का दृश्य

कविता-पाठ करते हुए डॉ. दिविक रमेश

प्रकाश मनु द्वारा लिखित जिन पुस्तकों का विमोचन किया गया, वे हैं - 'आओ मिलकर खेलें नाटक', 'तुम भी पढ़ोगे जस्सू?', 'लो नाव चली कुक्कू की' तथा 'आहा रसगुल्ले'।

'किम सोवाल की कविताएँ' के विमोचन के अवसर पर बोलते हुए दिविक रमेश ने कहा कि किम सोवाल ने वियोग को भी इतनी ख़ूबसूरती से प्रस्तुत किया है कि वह एक मिसाल बन गया है। 32 वर्ष की अल्पायु में ही उन्हें सर्वाधिक लोकप्रिय कोरियाई कवि होने का गौरव प्राप्त हुआ। अनुवाद के दौरान मूल भाषा के ज्ञान के महत्त्व को समझाते हुए उन्होंने कहा कि कोई भी अनुवाद पाठकों तक तभी पहुँचता है, जब उसमें स्थानीय स्वाद का भरपूर उपयोग किया गया हो।

बाल साहिती और 'कविता में दिल्ली' पुस्तक का विमोचन

16 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

राधेश्याम तिवारी द्वारा संपादित तथा अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'कविता में दिल्ली' पुस्तक का विमोचन

सुमन बाजपेयी तथा वेद मित्र शुक्ल

16 फ़रवरी 2024 को साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'कविता में दिल्ली' का विमोचन विश्व पुस्तक मेले के दौरान किया गया तथा बाल मंडप में *बाल साहिती* कार्यक्रम के अंतर्गत सुमन बाजपेयी तथा वेद मित्र शुक्ल ने अपनी कहानियों तथा कविताओं का पाठ किया।

राधेश्याम तिवारी द्वारा संपादित पुस्तक का विमोचन साहित्य अकादेमी के स्टॉल पर मदन कश्यप, राकेश रेणु तथा मनोज मोहन आदि की उपस्थिति में हुआ। विमोचन के पश्चात् अपने वक्तव्य में मदन कश्यप ने कहा कि यह पुस्तक बहुत ही उपयुक्त समय पर आई है तथा इसका विस्तृत परिचय दिल्ली के इतिहास को समझने के लिए बहुत उपयुक्त है। बाल मंडप में प्रख्यात बाल साहित्यकार सुमन बाजपेयी तथा वेद मित्र शुक्ल ने अपनी रचनाओं से बच्चों का मनोरंजन किया तथा उनका मार्गदर्शन भी किया। सुमन बाजपेयी की कहानी 'टिम टिम तारे की कहानी' ने बच्चों को ब्रह्मांड के संदर्भ में कई रोचक तथ्यों से अवगत कराया, वहीं वेद मित्र शुक्ल की कविताओं में बच्चों के लिए गुस्से और प्यार में लिए जानेवाले नामों में दिलचस्प कहानियाँ छिपी थीं, जैसे उल्लू, गधा, मेंढक, आदि।

कथासंधि तथा अपने प्रिय कवि से भेंट कार्यक्रम

17 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

मीरा कांत तथा मुकुल कुमार

पाठकों के लिए अपनी पुस्तक पर हस्ताक्षर करती हुई नेहा बंसल

साहित्य अकादेमी ने विश्व पुस्तक मेले के दौरान 17 फ़रवरी 2024 को 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन किया।

लेखक मंच पर सायं 4:00 बजे आयोजित इस कार्यक्रम में प्रख्यात हिंदी कथाकार तथा नाटककार मीरा कांत तथा अंग्रेज़ी कथाकार मुकुल कुमार को आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम मुकुल कुमार ने अपनी पुस्तकों के चुनिंदा अंश पढ़े तथा अपनी रचनात्मक यात्रा के बारे में संक्षेप में बताया। उनके बाद मीरा कांत ने अपनी कहानी 'गली दुल्हन वाली' सुनाई।

साहित्य अकादेमी के स्टॉल पर 'अपने प्रिय कवि से भेंट' कार्यक्रम में प्रख्यात कवियित्री नेहा बंसल को आमंत्रित किया गया था। नेहा बंसल ने अपनी कुछ चुनिंदा रचनाएँ भी सुनाईं।

इस कार्यक्रम में पाठकों ने साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित उनकी पुस्तक पर उनके हस्ताक्षर भी लिए।

अंतरराष्ट्रीय प्रकाशक संघ की अध्यक्ष केराईन पैन्सा ने लेखकों, प्रकाशकों तथा अनुवादकों के वैश्विक अधिकारों पर रखे अपने विचार

12 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी में 12 फ़रवरी 2024 को नई दिल्ली में ब्राजील से पधारी अंतरराष्ट्रीय प्रकाशक संघ की अध्यक्ष केराईन पैन्सा ने विश्व में प्रकाशन उद्योग के सामने आ रही चुनौतियों और कॉपीराइट उल्लंघन की समस्या से निपटने पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय प्रकाशक संघ द्वारा लेखकों, प्रकाशकों और अनुवादकों के अधिकारों पर निर्धारित नीतियों के बारे में अपने विस्तृत विचार प्रकट किए। उन्होंने प्रकाशन उद्योग के सामने निरंतर आ रही इस समस्या को सुलझाने और इसकी व्यापक समझ पैदा करने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में भी विस्तार से बताया। कार्यक्रम में उपस्थित भारतीय प्रकाशक संघ के कई सदस्यों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि एआई और तकनीकी के लगातार बढ़ते प्रयोग के कारण कॉपीराइट उलंघन से इस समस्या में और वृद्धि हुई है और लेखक अपने अधिकारों की सुरक्षा को लेकर असमंजस की स्थिति में हैं। लेखकों की इस समस्या को दूर करने के लिए और प्रकाशकों पर भरोसा करने के प्रयासों पर भी उन्होंने विस्तार से प्रकाश डाला।

व्याख्यान देती हुईं सुश्री केराईन पैन्सा

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने उनका स्वागत अंगवस्त्रम् एवं साहित्य अकादेमी की पुस्तकें भेंट करके किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने कहा कि पूरे विश्व में प्रकाशकों, लेखकों और अनुवादकों के बीच के संबंधों ने लंबी दूरी तय की है और अब वे तकनीकी के बढ़ते प्रयोग के कारण नई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। केराईन पैन्सा के साथ यह कार्यक्रम प्रकाशक उद्योग में प्रकाशकों और लेखकों के बीच कॉपीराइट उल्लंघन को लेकर अधिक सजग और संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से रखी गई है।

कार्यक्रम में अबूधाबी अरेबिक लैंग्वेज सेंटर के इब्राहिम मोहम्मद अलसलमा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर भारतीय प्रकाशक संघ के प्रणव गुप्ता, रमेश मित्तल, नवीन गुप्ता एवं कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

बाल साहिती

16 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

[बाएँ से दाएँ] श्री कृष्णा किंबहुने, सुश्री संजुला शर्मा, सुश्री सबा बशीर, सुश्री बुलबुल शर्मा, सुश्री सुनीता पंत बंसल तथा अन्य श्रोतागण

साहित्य अकादेमी ने शुक्रवार, 16 फ़रवरी 2024 को अपने तृतीय तल स्थित सभाकक्ष, रवींद्र भवन, नई दिल्ली में "बाल साहिती - भारतीय संदर्भों में बाल साहित्य" विषयक कार्यक्रम का आयोजन किया।

सुनीता पंत बंसल, सबा बशीर, संजुला शर्मा तथा बुलबुल शर्मा ने कार्यक्रम में भाग लिया। प्रत्येक प्रतिभागी, जो अपनी तरह का बाल साहित्य के प्रति प्रतिबद्ध लेखक है, ने बताया कि किस प्रकार विगत तीन दशकों में बाल साहित्य में कितना बदलाव आया है। उन्होंने टिप्पणी की कि पहले भारतीय बच्चे केवल विदेशों में प्रकाशित पुस्तकें ही प्राप्त कर सकते थे तथा केवल विदेशी बच्चों के जीवन और उनके परिवेश के बारे में ही पढ़ सकते थे। अक्सर वे उन सभी अजीबोगरीब चीज़ों को पढ़कर हैरान रह जाते थे, जिनके बारे में उन्होंने पढ़ा था, क्योंकि इनमें से कोई भी चीज़ भारत में कभी नहीं देखी गई थी। सौभाग्य से यह सब बदल गया है और अब भारत में बाल पुस्तकों के लिए एक बहुत ही समृद्ध और सफल प्रकाशन कार्यक्रम है जो जीवनी, प्रकृति पुस्तकें, पौराणिक कथाओं तथा साहसिक कहानियों जैसे विषयों की विस्तृत श्रृंखला से संबंधित है। प्रतिष्ठित लेखका तथा साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक प्रोफ़ेसर मालाश्री लाल ने कहा कि भारत में बाल पुस्तकें अब लेखन के साथ-साथ चित्रों में भी बहुत उच्च गुणवत्ता वाली हैं।

प्रतिभागियों ने इस बात पर भी चर्चा की कि किस प्रकार शहरी बच्चों की पढ़ने की आदतों को प्रोत्साहित किया जा सकता है क्योंकि वे अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से अधिक जुड़ रहे हैं तथा उनके पास पढ़ने के लिए कम समय होता है। ग्रामीण बच्चों तक पुस्तकें पहुँचाने की समस्या पर भी चर्चा की गई। प्रतिभागियों ने सुझाव दिया कि बच्चों को बोले गए शब्दों के साथ-साथ लिखित शब्दों की भी सराहना करने के लिए विद्यालयों द्वारा रचनात्मक लेखन पर अधिक कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए। प्रतिभागियों ने विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं से बाल पुस्तकों का अनुवाद करने के महत्त्व पर भी बात की जिससे बच्चे हिंदी तथा अंग्रेज़ी के अलावा अन्य भाषाओं में लिखी गई कहानियों को पढ़ने का आनंद ले सकें तथा हमारी समृद्ध, सांस्कृतिक विरासत के बारे में जान सकें।

प्रतिभागियों ने बाल साहित्य पर आयोजित इस सत्र के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया तथा उम्मीद जताई कि भविष्य में इस प्रकार के और भी रोचक सत्र आयोजित किए जाएँगे। अंत में, उपसचिव कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अकादेमी की पत्रिका का सदस्य बनें

समकालीन भारतीय साहित्य (डाक शुल्क सहित)

एकल प्रति : 100 रुपए, एक वर्ष की सदस्यता : 500 रुपए

तीन वर्ष की सदस्यता : 1300 रुपए

'नज़्र निज़ामी : जीवन और कृतित्व' पर परिसंवाद तथा साहित्य मंच कार्यक्रम

18 फ़रवरी 2024, जबलपुर

साहित्य अकादेमी ने गुलशन अदब, जबलपुर के सहयोग से 18 फ़रवरी 2024 को जबलपुर में 'नज़्र निज़ामी : जीवन और कार्य' पर परिसंवाद तथा साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया। गुलशन अदब के अध्यक्ष शेख निज़ामी ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने कहा कि नज़्र निज़ामी की शायरी ने उन्हें प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि नज़्र निज़ामी जैसे कवियों के अपार योगदान को सामने लाने के लिए हमें उर्दू भाषा को पढ़ने, लिखने और संरक्षित करने की ज़रूरत है। विख्यात लेखक, कवि और पत्रकार डॉ. मेहताब आलम ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि नज़्र निज़ामी का अध्ययन और शोध गहन था। उन्होंने यह भी कहा कि नज़्र निज़ामी ने कबीर, सादी शिराज़ी और ग़ालिब का गहराई से अध्ययन किया था। उर्दू परामर्श मंडल के सदस्य

व्याख्यान देते हुए श्री चंद्रभान ख़याल

डॉ. बिलकीस जहाँ, डॉ. अशफ़ाक़ आरिफ़, डॉ. बदरा वास्ती, डॉ. जलील उर रहमान, सुश्री अस्तुति अग्रवाल तथा डॉ. मुस्तकीम रज़ा ने निज़ामी की शायरी पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस अवसर पर जानेमाने सामाजिक कार्यकर्ता हाजी अय्यूब कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। द्वितीय सत्र में, 'साहित्य मंच' कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता अली अब्बास उम्मीद ने की। साहित्य मंच में बाबू अनवर निज़ामी, सिराज़ अगाज़ी, शकील दिलकश, रशीद राही, मौलवी रियाज़ आलम ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

प्रवासी मंच

26 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के प्रतिष्ठित *प्रवासी मंच* कार्यक्रम में 26 फ़रवरी 2024 को नई दिल्ली में कनाडा से पधारीं हिंदी साहित्यकार शैलजा सक्सेना ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। उन्होंने पहले अपनी कविताएँ सुनाईं तथा उसके बाद अपनी कहानी 'लेबनॉन की एक रात' का एक अंश प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने खंड काव्य *भीष्म* के भी कुछ अंश प्रस्तुत किए। उनकी कविताओं के शीर्षक थे - *कनाडा में सुबह, ख़ुशफ़हमियाँ, मैं कहीं भी रहूँ, विदेश में रहती है, पेड़ यह तथा इंद्रधनुष।* उन्होंने अपनी कविताओं का समापन 'माँ' पर लिखी एक कविता से किया। इन सभी कविताओं में जहाँ प्रवासी जीवन के संघर्ष थे, वहीं एक स्त्री होने के नाते इन संघर्षों की संवेदना का स्तर भी अलग था। रचना-पाठ के बाद उन्होंने उपस्थित श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

कविता-पाठ करते हुए शैलजा सक्सेना

उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि कोविड के बाद ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर कार्यक्रमों और संवाद की बढ़ोत्तरी के कारण एक दूसरे को समझने के नए आयाम खुले हैं। उन्होंने नाटकों और अन्य विषयों के लेखन तथा प्रस्तुति की बढ़ोत्तरी की ओर इशारा करते बताया कि अब प्रवासी रचना-संसार भी कहानी, कविताओं के अलावा नई-नई विधाओं में पंख पसार रहा है। प्रवासी एवं भारतीय साहित्य की दूरियाँ भी अब कम हुई हैं।

कार्यक्रम में प्रवासी रचना-संसार से जुड़े कई महत्त्वपूर्ण लोग, यथा - सुरेश ऋतुपर्ण, अनिल जोशी, राकेश पांडेय, नारायण सिंह, अलका सिन्हा, रेखा सेठी, मधुरिमा, वीरेंद्र मिश्र आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में शैलजा सक्सेना का स्वागत अंगवस्त्रम् एवं साहित्य अकादेमी के प्रकाशन भेंट करके किया गया।

नई दिल्ली

साहित्य मंच

28 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 28 फ़रवरी 2024 को अपने तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में यूनिवर्सिटी ऑफ़ नॉर्थम्प्टन, यूनिवर्सिटी ड्राइव, नॉर्थम्प्टन, यू.के. के कला, विज्ञान और मानविकी संकाय में अंग्रेज़ी और उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन की प्रोफ़ेसर जेनेट मैरी विल्सन के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन किया। आरंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रोफ़ेसर विल्सन को अंगवस्त्रम तथा साहित्य अकादेमी के प्रकाशन भेंट कर उनका स्वागत किया। प्रोफ़ेसर जेनेट मैरी विल्सन ने "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में साहित्य" विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मशीनी साहित्य मानव विधाओं की परिचित दुनिया से पृथक है। इसके स्थान पर हम अजीब, नई संरचनाओं का सामना करते हैं – जो साहित्यिक कलाओं की पूर्णत: पृथक् शाखा है। कई ऐतिहासिक उदाहरणों के आधार पर, प्रोफ़ेसर विल्सन ने मशीनी साहित्य की वैकल्पिक, अभिलेखीय (पूर्व तथा पूर्वोत्तर डिजिटल) वंशावली तैयार करने का सुझाव दिया। अपने व्याख्यान के पश्चात् उन्होंने श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए। कार्यक्रम के अंत में, श्री कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

व्याख्यान देते हुए प्रो. जेनेट मैरी विल्सन

डोगरी में महिला लेखन के समकालीन मुद्दे और चुनौतियाँ विषय पर परिसंवाद

7 मार्च 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

परिसंवाद के प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी ने सरकारी डिग्री कॉलेज फ़ॉर एजुकेशन, जम्मू के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 7 मार्च 2024 को 'डोगरी में महिला लेखन के समकालीन मुद्दे और चुनौतियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। जम्मू विश्वविद्यालय के डोगरी विभाग की प्रमुख प्रोफ़ेसर सुचेता पठानिया ने परिसंवाद की अध्यक्षता की। प्रख्यात डोगरी लेखिका डॉ. सुषमा रानी राजपूत ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मोहन सिंह ने स्वागत एवं आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रोफ़ेसर शालिनी राणा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। परिसंवाद में उद्घाटन सत्र के अलावा दो और सत्र भी थे, जिनमें विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की डोगरी परामर्श मंडल की सदस्य डॉ. नीलम सरीन ने की। श्रीमती निर्मल विक्रम जैन तथा डॉ. राधा रानी ने महिलाओं द्वारा लिखी गई डोगरी कहानियों तथा महिलाओं द्वारा लिखी गई डोगरी कविताओं में समकालीन मुद्दों और चुनौतियों पर क्रमश: अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्रीमती उषा किरण 'किरण' ने की तथा श्रीमती स्वतंत्रता मेहरा और डॉ. सुषमा चौधरी ने महिलाओं द्वारा लिखे गए डोगरी गद्य और महिलाओं द्वारा लिखे गए डोगरी उपन्यासों में समकालीन मुद्दों और चुनौतियों पर क्रमश: अपने आलेख प्रस्तुत किए।

साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन

11 मार्च 2024, रवीन्द्र भवन परिसर, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के साहित्योत्सव के 39वें संस्करण का उद्घाटन भारत सरकार के माननीय विधि एवं न्याय मंत्री तथा संसदीय कार्य एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने 11 मार्च 2024 को किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक के उद्बोधनों के पश्चात्, श्री अर्जुन राम मेघवाल ने अपने संबोधन में साहित्योत्सव की प्रशंसा की, जिसमें इस वर्ष 175 भाषाओं तथा 190 सत्रों में 1100 से अधिक लेखकों ने भाग लिया। उन्होंने राष्ट्र तथा समाज को प्रभावित करने में साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका तथा संस्कृति को आकार देने में भावना से प्रेरित लेखन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने लेखक के रूप में स्वयं के अनुभव की कहानी के साथ तथा साहित्य के शिक्षाप्रद तथा मानवीय गुणों को स्वीकार करते हुए अपने संबोधन का समापन किया। इसके पश्चात उन्होंने अकादेमी को आमंत्रण के लिए धन्यवाद दिया तथा साहित्योत्सव में उपस्थित लोगों का स्वागत किया। श्री अर्जुन राम मेघवाल ने फीता काटकर साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए श्री अर्जुन राम मेघवाल

भारत का भक्ति साहित्य

11 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

'भारत का भक्ति साहित्य' विषयक कार्यक्रम की अध्यक्षता सूर्य प्रसाद दीक्षित ने की तथा धीरज भटनागर, दिलीप धोंडगे, एम.ए. आलवार तथा माधव हाड़ा वक्ता थे। उन्होंने साहित्य की इस शैली के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। श्री एम.ए. आलवार ने भक्ति साहित्य की उत्पत्ति और विकास पर बात की। उन्होंने *वैदिक साहित्य, इतिहास, पुराण और संस्कृत शास्त्रीय साहित्य* से शुरुआत की। धीरज भटनागर ने कहा कि भक्ति साहित्य ने मध्यकालीन युग में आम जनता को उत्पीड़न, भ्रष्टाचार और अन्य मानसिक दुविधाओं के दुष्परिणामों से मानसिक रूप से उबरने में मदद की। 'सगुण' भक्ति साहित्य के उदाहरण के रूप में *रामचरितमानस* का विश्लेषण करते हुए उन्होंने कहा कि भक्ति साहित्य एकीकरण का साहित्य है। दिलीप धोंडगे ने 'मनुस्मृति' और वेद व्यास द्वारा प्रतिपादित विभिन्न धाराओं पर बात की। उन्होंने इस संदर्भ में 'गीता' और 'भागवत' की शिक्षाओं का उल्लेख किया।

माधव हाड़ा का मत था कि औपनिवेशिक काल के दौरान भक्ति साहित्य को बहुत प्रोत्साहन मिला। उन्होंने इस संदर्भ में यूरोपीय विद्वानों के लेखन और प्रयासों का उल्लेख किया। अध्यक्षता करते हुए, सूर्य प्रसाद दीक्षित ने भक्ति साहित्य के अखिल भारतीय प्रभाव और उसे लोकप्रिय बनाने वाले संतों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भक्ति साहित्य समाज को शुद्ध करता है, महिलाओं और तथाकथित निचली जातियों की स्थिति को उन्नत करता है, कई कला रूपों एवं 'गुरुकुल' जैसे नए शैक्षणिक प्रारूपों का निर्माण करता है। रामजी तिवारी पैनल चर्चा में उपस्थित नहीं हो सके।

नई दिल्ली

क्या साहित्य अन्य कलाओं के लिए महत्त्वपूर्ण है?

11 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

ए.पी. माहेश्वरी ने कहा कि यदि हम इस तथ्य के बारे में सोचें तो साहित्य अन्य कलाओं का नेतृत्व करता है, जबकि अन्य कलाएँ केवल प्रक्रिया की बात करती हैं, जबकि साहित्य पूरे संदर्भ को सभी अर्थों और अभिप्रायों के साथ सामने लाता है।

मा सरना ने मानवीय संवेदनाओं को बढ़ावा देने में साहित्य और कला की सहवर्ती भूमिका पर बल दिया। उनका मानना था कि इन सभी कला रूपों के बीच सतही विभाजन नहीं किया जा सकता।

प्रबोध पारिख ने कहा कि किसी भी सफल लेखक या कलाकार के लिए मौखिक और साहित्यिक परंपरा या अन्य कला परंपराओं का ज्ञान अति आवश्यक है। प्रत्येक कला का अपना काव्य होता है। अगर हम इसमें प्रयुक्त प्रथाओं पर गौर करें तो धर्म भी कला का एक रूप है। सुधा शेषाय्यान ने 'कला' शब्द की परिभाषा और अर्थ पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि साहित्य प्रदर्शकारी कला सहित अन्य सभी प्रकार की कलाओं का आधार बनता है। उन्होंने इस संदर्भ में त्यागराज और संगीत परंपराओं का उल्लेख किया।

सत्र की अध्यक्षता शेरोन लोवेन ने की। उन्होंने अपने तर्कों पर विचार-विमर्श के लिए एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति दी। उन्होंने नृत्य, साहित्य और नाटक, दृश्य, ध्वनि और संगीत एवं विभिन्न कला रूपों के बीच संबंधों पर बात की। उन्होंने अपने तर्क के समर्थन में कई सांस्कृतिक प्रदर्शनों की वीडियो क्लिप भी प्रस्तुत की।

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में रंगमंच

11 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

इस सत्र में, श्री अर्जुन देव चारण, श्री भानु भारती, श्री चितरंजन त्रिपाठी और श्री वामन केंद्र ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में रंगमंच पर अपने विचार साझा किए। सत्र की अध्यक्षता श्री असगर वजाहत ने की। श्री भारती ने भारतीय महाकाव्यों के नाट्य इतिहास के बारे में बताया। श्री चारण ने मनोरंजन के साधन के रूप में उत्तर-आधुनिकतावाद और रंगमंच पर बात की। श्री केंद्रे ने भारतीय रंगमंच की विविधता पर ध्यान केंद्रित किया। श्री त्रिपाठी ने युवा पीढ़ी के बीच नाट्य परंपराओं का प्रचार-प्रसार कैसे किया जाए, इसके बारे में बात की। श्री वजाहत ने रंगमंच के सांस्कृतिक दृष्टिकोण से की गई टिप्पणियों के साथ सत्र का समापन किया। उन्होंने इसकी एकजुट करने वाली प्रकृति के बारे में बात की और इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि कैसे इसमें एक स्थायी शक्ति है जो समय और स्थान से परे है।

(बाएँ से दाएँ) भानु भारती, श्री असगर वजाहत, श्री वामन केंद्रे तथा श्री चितरंजन त्रिपाठी

(बाएँ से दाएँ) श्री ऑस्कर पुजोल, सुश्री अंजू रंजन, श्री कुमार तुहिन, श्री नितिन प्रमोद तथा सुश्री मारिया पुरी

'वैचारिकता और साहित्य' विषयक परिचर्चा की अध्यक्षता कुमार तुहिन ने की। अंजू रंजन, ऑस्कर पुजोल, मारिया पुरी तथा नितिन प्रमोद ने साहित्य और कूटनीति के बीच संबंधों पर चर्चा की। रंजन ने राजनयिकों को विदेशी

'वैचारिकता और साहित्य'

11 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

संस्कृतियों को समझने का एक तरीका प्रदान करने वाले साहित्य पर ध्यान केंद्रित किया। ऑस्कर पुजोल ने यूरोपीय राष्ट्रीयता के बारे में बात की और बताया कि किस प्रकार इसने नई साहित्यिक संवेदनाओं को जन्म दिया।

सुश्री पुरी ने वैचारिकता को साहित्य से जुड़े सांस्कृतिक आदान-प्रदान के रूप में परखा। नितिन प्रमोद ने बताया कि वैचारिकता और साहित्य समुदायों को किस प्रकार जोड़ते हैं। कुमार तुहिन ने कहानी कहने में निवेश और साझा प्रतीकवाद जैसे कूटनीति और साहित्य के बीच संबंधों को रेखांकित किया। दोनों एक ऐसे मैदान के रूप में भी कार्य करते हैं जहाँ प्रतिस्पर्धी विचार मिलते हैं।

भारत में बाल साहित्य के अनुवाद से संबंधित मुद्दे

11 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

इस सत्र में, दाश बेनहुर, दीपा अग्रवाल, पारो आनंद, विकास दवे ने भारत में बाल साहित्य के अनुवाद से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता श्री तपन बंद्योपाध्याय ने की। वक्ताओं ने चर्चा में भाग लिया और अपने प्रसिद्ध उद्धरणों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसमें वर्तमान समाज में बाल साहित्य की भूमिका पर बल दिया गया।

भारत का एलजीटीबीटीक्यू साहित्य

11 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी वर्ष 2018 से ही ट्रांसजेंडर एवं एलजीबीटीक्यू समुदाय के लेखकों को प्रोत्साहित करने का काम कर रही है। साहित्योत्सव में भी 11 मार्च को उन पर केंद्रित दो सत्र आयोजित किए गए। उनके द्वारा प्रथम लेखकीय अनुभव साझा करने के सत्र की अध्यक्षता सुश्री देविका देवेंद्र एस. मंगलामुखी ने की, जिसमें चाँदिनी, साधना मिश्र तथा शांता खुराई वक्ता थीं। उन्होंने अपने लेखन करियर की शुरुआत के रूप में अपना पहला लेखन अनुभव दर्शकों के साथ साझा किया।

साहित्य एवं महिला सशक्तिकरण

11 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

'साहित्य और महिला सशक्तिकरण' विषय पर आधारित इस सत्र में, विभिन्न भाषाओं के जाने-माने विद्वानों ने इस बात पर चर्चा की कि किस प्रकार से साहित्य ने महिला सशक्तिकरण की लहर को आगे बढ़ाया है। इस सत्र में वक्ता के रूप में सोमा बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), सुजाता प्रसाद (अंग्रेज़ी), स्तुति गोस्वामी (अंग्रेज़ी), वर्षा दास (गुजराती) तथा मनीषा कुलश्रेष्ठ (हिंदी) ने भाग लिया। सत्र की अध्यक्षता सुश्री सुनैना सिंह ने की।

नई दिल्ली

प्रौद्योगिकी और साहित्य

11 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

इस सत्र में, श्री अजित अब्राहम, श्री अमरजीत सिंह ग्रेवाल, श्री अशोक चक्रधर तथा श्री पुष्पक भट्टाचार्य ने प्रौद्योगिकी और साहित्य एक दूसरे से किस प्रकार जुड़े हुए हैं, पर चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता श्री गिरीश नाथ झा ने की। उन्होंने साहित्य पर 21वीं सदी की प्रौद्योगिक प्रगति के प्रभाव पर प्रकाश डाला।

बहुभाषी कविता-पाठ

11 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

इस बहुभाषी कविता-पाठ सत्र में, श्री विजय वर्मा (डोगरी), श्री इनायत गुल (कश्मीरी), श्री पूर्णानंद चारी (कोंकणी) तथा सुश्री याकम्मा (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का उनके अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ कविता-पाठ प्रस्तुत किया। गुजराती के विख्यात कवि श्री दिलीप झावेरी ने सत्र की अध्यक्षता की।

युवा साहिती : युवा भारत का उदय : कविता-पाठ

11 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

इस कविता-पाठ सत्र में भारत के युवा कवियों को व्यापक पहचान देने के लिए मंच प्रदान किया गया। सुश्री प्रतिभा नंदकुमार ने सत्र की अध्यक्षता की, जबकि श्री दिगंत सैकिया (असमिया), श्री राजेश बोरो (बोडो), श्री संदीप सूफ़ी (डोगरी) तथा सुश्री स्मिता शेनॉय (कोंकणी) ने सत्र में अपनी कविताओं के साथ-साथ उनका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

कवयित्री सम्मिलन

11 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

कवयित्री सम्मिलन की अध्यक्षता सुश्री शेफालिका वर्मा ने की। रत्नोत्तमा दास (असमिया), गीतिका बसुमतारी (बोडो), विनीता नरूला (अंग्रेज़ी), अलका त्यागी (हिंदी), एच.एल. पुष्पा (कन्नड), संगीता बर्वे (मराठी) तथा जोबा मुर्मू (संताली) ने अपनी कविताएँ उनके अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़कर सुनाईं।

भारत को जोड़ना : कविता-पाठ

11 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

कविता-पाठ सत्र में नीतू (अंग्रेज़ी), विक्रम सिंह (हिंदी), बी.आर. लक्ष्मण राव (कन्नड), सुखराज सिंह (पंजाबी) तथा रवि सुब्रमण्यम (तमिऴ) ने अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ-साथ अपनी भाषाओं में कविताएँ प्रस्तुत कीं। साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. चंद्रशेखर कंबार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अपनी कन्नड कविता 'माओ त्से तुंग' का पाठ किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने भी कविता से उभरी जुड़ाव की शक्ति पर संक्षेप में चर्चा की, क्योंकि यह भारत को जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारतीय पर्यावरणीय समालोचना

11 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

'भारतीय पर्यावरणीय समालोचना' पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए अंग्रेज़ी तथा मलयाळम् की प्रख्यात लेखिका और समालोचक जेन्सी जेम्स ने कहा कि इकोक्रिटिसिज़्म पहली बार 1972 में जोसेफ मीकर की कृति 'द कॉमेडी ऑफ़ सर्वाइवल स्टडीज़ इन लिटरेरी इकोलॉजी' में एक विचार के रूप में आया था। उन्होंने आगे कहा कि यह साहित्य और प्रकृति दोनों को परस्पर प्रभावित करने वाली तथा योगदान देने वाली शक्तियों के अपरिहार्य पुनर्पाठ के रूप में उभरा है।

मीनाक्षी फेथ पॉल ने कहा कि रस्किन बॉन्ड से लेकर अरुंधति रॉय तक, रवींद्रनाथ ठाकुर से लेकर श्री अरबिंदो तक भारतीय मन की यह समझ देखने को मिलती है कि मानव तथा गैर-मानव एक ही दुनिया का हिस्सा हैं। पी. शिवरामकृष्ण ने विधानों के इतिहास तथा लोककथाओं के संयोजन पर चर्चा की। सचिन केतकर ने 'व्यंकटेश मडगुलकर के कथा साहित्य में इकोपोएटिक्स और जैव-क्षेत्रीयता' पर चर्चा की। इस सत्र में प्रख्यात लेखकों और विद्वानों ने सहभागिता की।

अपने उपन्यास *सत्तांतर* पर चर्चा करते हुए श्री केतकर ने कहा कि व्यंकटेश माडगुलकर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के काल में मराठी में आधुनिक और ग्रामीण कथा साहित्य के अग्रदूतों में से एक हैं। उन्होंने आगे कहा कि आधुनिकता के साथ-साथ आधुनिकतावादी साहित्य को व्यापक भारतीय तथा दक्षिण एशियाई आधुनिकतावादी आवेग के साथ-साथ एक बड़ी विश्व साहित्यिक घटना के रूप में समझा जाना चाहिए।

अस्मिता : कवयित्री सम्मिलन

11 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

'अस्मिता' कार्यक्रम के अंतर्गत बहुभाषी कवयित्री सम्मिलन प्रख्यात तमिऴ कवयित्री सलमा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उन्होंने कहा कि कविता भावनाओं से मिलती है। यह हमारे हृदय की भावनाओं का प्रतिबिंब है तथा दर्द और पीड़ा से निकलती है।

जानीमानी अंग्रेज़ी कवयित्री नीलम चंद्रा ने *द मैडनेस, द पेन, रेनड्रॉप्स* तथा *द डेथ* नामक अपनी कविताएँ सुनाईं। प्रख्यात असमिया कवयित्री मणिकुंतला भट्टाचार्जी ने *नारी, प्रेम, मोहब्बत* (हिंदी अनुवाद में) का कविता-पाठ प्रस्तुत किया, गुजराती कवयित्री छाया त्रिवेदी ने *आगमन, उदास सागर* तथा *रेनकोट* के अलावा हिंदी अनुवाद के साथ गुजराती में 'एक स्थिर आकाश' विषयक कविता का पाठ प्रस्तुत किया। शबनम आशाई ने नज़में प्रस्तुत कीं। अंत में, सलमा ने अपनी कविताएँ *लेक* आदि पढ़ीं तथा कुछ श्रीलंकाई शायर के विचार साझा किए, जिन्होंने कहा था कि कविता के बिना कोई मानवता और प्रकृति नहीं होगी।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए सुश्री सलमा

नई दिल्ली

युवा साहिती : कहानी-पाठ

11 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

'युवा साहिती' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात मणिपुरी विद्वान एल. जॉयचंद्र सिंह की अध्यक्षता में बहुभाषी कहानी-पाठ कार्यक्रम आयोजित हुआ। सत्र में चार युवा लेखकों ने कहानी-पाठ किया। साधना ब्रह्म (बोडो) ने एक प्रेम कहानी पढ़ी, 'हिंदी अनुवाद में प्रेम तो है'। मौनेश बाडीगर (कन्नड) ने अंग्रेज़ी अनुवाद में 'ओंती ओरिये मुत्तु पढ़ी'। दीपा मिश्र (मैथिली) ने 'बाबुजिक अलमारी' शीर्षक कहानी का अनुवाद पढ़ा। सुजीत कुमार पंडा (ओड़िशा) ने 'श्रेया' कहानी का हिंदी अनुवाद पढ़ा।

सत्र के प्रतिभागी

लेखन एक अस्त्र के रूप में

11 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

'लेखन एक अस्त्र के रूप में' विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी विद्वान गिरीश्वर मिश्र ने की। उन्होंने कहा कि लेखन कई चीज़ों के खिलाफ़ एक शक्तिशाली हथियार है तथा यह सत्र शब्दों की शक्ति पर प्रकाश डालेगा। ज्ञानेश्वर मुले ने कहा कि भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है किंतु शब्दों को केवल हथियार कहना उन शब्दों के साथ अन्याय है जिन्हें वे शांत कर सकते हैं, वे क्रांति ला सकते हैं तथा वे कई भूमिकाएँ निभाते हैं। के. श्रीलता ने कहा कि शब्द दुनिया को दृश्यमान बनाते हैं। वास्तविक दुनिया को शब्दों के माध्यम से जवाब देने की ज़रूरत है। नरेंद्र बी. पाठक ने शब्दों की शक्ति का प्रदर्शन करते हुए अतीत की प्रसिद्ध हस्तियों की कुछ प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन किया। प्रशांत ज्योति बरुआ ने असम के इतिहास में लेखन द्वारा लाए गए परिवर्तन के अनुभवों पर गहराई से प्रकाश डाला। सब्यसाची सरकार ने लेखन के माध्यम से आने वाले आत्मबोध के अपने अनुभव को साझा किया और कहा कि आज हर किसी को नियमित रूप से कुछ न कुछ लिखने की आवश्यकता है।

अंत में गिरीश्वर मिश्र ने समाहार वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा और साहित्य का लोक से गहरा संबंध है और शब्दों का शिष्टाचार के साथ प्रयोग अत्यंत आवश्यक है।

बहुभाषी कहानी-पाठ

11 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

बहुभाषी कहानी-पाठ कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली कथाकार वीणा ठाकुर ने की। उन्होंने 'बड़की माँ' कहानी का पाठ किया। यह कहानी पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच संवेदना के अंतर को दर्शाती है। इस कहानी में नई पीढ़ी की गाँव के प्रति विरक्ति और पुरानी पीढ़ी का अपने गाँव और घर से जुड़ाव को चित्रित किया गया है। प्रख्यात कोंकणी कथाकार वसंत सावंत ने 'नीता और टीना' शीर्षक कहानी प्रस्तुत की। यह कहानी आजकल के बदलते हुए परिवेश की है, जिसमें युवा पीढ़ी पर तेज़ी से बढ़ते पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव को चित्रित किया गया है। प्रख्यात डोगरी कथाकार कृष्ण शर्मा ने 'दिहाड़ीदार' शीर्षक कहानी प्रस्तुत की, जो राज्य की शिक्षा प्रणाली में सुधार करने की आवश्यकता पर आधारित थी। इस कहानी में आंचलिकता का भी प्रभाव था। प्रख्यात बाङ्ला कथाकार शमीक घोष ने 'आफ़्टर हाफ़ टाइम' कहानी का पाठ किया। यह कहानी सामाजिक, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित थी।

पूर्वोत्तरी : समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

11 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

'पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन' विषयक समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों पर परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात कश्मीरी लेखक मो. ज़मां आज़ुर्दा ने की। उन्होंने अध्यक्षता करते हुए कहा कि हम मनुष्यता से अमनुष्यता, प्रकृति से कृत्रिमता की ओर उन्मुख हो रहे हैं। सभी भाषाओं के साहित्य का रूप एक ही होता है।

कार्यक्रम के आरंभ में प्रख्यात राजस्थानी लेखिका गीता सामोर ने राजस्थानी की समकालीन प्रवृत्तियों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि साहित्यकार का संवेदनशील होना ही साहित्य सृजन करने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है।

मणिपुरी के प्रख्यात लेखक एन. किरण कुमार ने बताया कि मणिपुरी में 21वीं शताब्दी से अनुवाद द्वारा साहित्य को समृद्ध बनाने का कार्य हो रहा है।

उन्होंने ट्रांसजेंडर लेखिका शांता खुरई की पुस्तक 'येलो स्पैरो' का भी ज़िक्र किया, जिन्होंने मणिपुरी साहित्य को समृद्ध बनाने में योगदान दिया है।

प्रख्यात मैथिली लेखक अशोक कुमार झा ने समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों पर अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि मिथिला के साहित्य में रस और अलंकार की परंपरा रही है।

प्रख्यात हिंदी लेखक देवेंद्र चौबे ने 1850 से अब तक के साहित्य सृजन पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि स्त्री विमर्श, स्त्री-अस्मिता, सांस्कृतिक और आर्थिक अलगाव, सामाजिक-आर्थिक शोषण आदि रीति, वृति और प्रवृत्ति भी साहित्य का हिस्सा बन रही हैं।

अंग्रेज़ी की प्रख्यात लेखिका मंजू जैदका ने 'रिवर्स स्पीक' कविता के द्वारा अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जैसे नदी बहती रहती है कभी रुकती नहीं है, उसी प्रकार हमारे साहित्य का सृजन जारी है।

प्रख्यात असमिया लेखक अपूर्व कुमार सैकिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कहानी, विज्ञान कथा, संस्मरण पर समकालीन सृजन हो रहा है। समाज में जो भी हो रहा है, उसी पर आज असमिया साहित्य लिखा जा रहा है।

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन

11 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

'पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन' के अंतर्गत कविता-पाठ का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात असमिया कवयित्री करबी डेका हाज़रिका ने की। उन्होंने कहा कि कविता आपके आंतरिक संवेदना से सृजित होती है। कविता के द्वारा कवि अपने विचारों, अपनी संवेदना को व्यक्त करता है। कार्यक्रम के अंत में प्रख्यात असमिया कवयित्री करबी डेका हाजरिका ने 'द गॉड एंड ए वीमेन' कविता का असमिया में पाठ किया तथा उसका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

प्रख्यात उर्दू कवि तारिक कमर ने 'मौसम का मिज़ाज', 'धुंध छँटती हुई' आदि ग़ज़लें प्रस्तुत कीं। प्रख्यात पंजाबी कवि बूटा सिंह चौहान ने भी पंजाबी में ग़ज़लें प्रस्तुत कीं तथा उसका हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। प्रख्यात मिज़ो कवि लालरिंगजुआला पाचुआउ ने प्रकृति पर आधारित कविता मिज़ो में प्रस्तुत की तथा उसका अनुवाद अंग्रेज़ी में प्रस्तुत किया।

प्रख्यात कश्मीरी कवि मंशूर बानिहाली ने आज की भागम भाग ज़िंदगी पर अपनी एक ग़ज़ल तथा एक अमन पसंदी पर तथा एक अन्य कविता हिंदी में प्रस्तुत की। हिंदी कवि तुलसी रमण जी ने लाहौल स्पीति से संबंधित एक जनजातीय अनुभव की कविता एवं 'संसार जिसमें औरतें नहीं थीं' तथा एक अन्य कविता का पाठ किया। प्रख्यात बोडो कवयित्री घीर्ज्यू ज्योति बसुमतारी ने जंगल काटकर बसाए गए गाँव पर अपनी बोडो कविता और 'पुकार' शीर्षक कविता प्रस्तुत की। प्रख्यात असमिया कवयित्री अपराजिता पुजारी ने कश्मीर को समर्पित एक कविता 'पथरीला' का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया तथा एक अन्य कविता का असमिया में पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में, श्रीमती अलका सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

उत्तर-पूर्वी साहित्य में समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

11 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

कार्यक्रम के प्रतिभागी

नई दिल्ली

'उत्तर-पूर्वी साहित्य में समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ' विषय पर केंद्रित परिचर्चा की अध्यक्षता प्रख्यात असमिया लेखक सत्यकाम बॅरठाकुर ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि पूर्वोत्तर भारत के साहित्य की अपनी विशेषता है। उनकी अपनी संस्कृति और इतिहास है। हम वाचिक और लिखित साहित्य को अलग नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि तेमसुला आओ, वीरेंद्र भट्टाचार्य एवं अन्य प्रख्यात पूर्वोत्तरी लेखकों ने पूर्वोत्तर भारत को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। वे पूर्वोत्तर भारत के दीप्तिमान इंद्रधनुष हैं।

प्रख्यात मणिपुरी लेखक ई. प्रियॅव्रत सिंह ने परिचर्चा में 1899 से बीसवीं शताब्दी तक के रूमानी मणिपुरी साहित्य पर रतन थियम तथा अन्य मणिपुरी लेखकों के नाटकों, संस्मरणों आदि का उल्लेख किया, जिन्होंने मणिपुरी साहित्य को समृद्ध किया।

प्रख्यात नागा लेखिका विज़ोवोनो एलिजाबेथ ने अपने वक्तव्य में नागालैंड के वाचिक साहित्य के बारे में बताते हुए कहा कि नागालैंड की अपनी कोई लिपि नहीं है। वे अंग्रेज़ी में अपनी संस्कृति और इतिहास का पुनर्लेखन कर रहे हैं। अधिकतर कथेतर साहित्य पर लिखा जा रहा है। कुछ लेखिकों और युवाओं द्वारा समकालीन साहित्य में लेखन किया जा रहा है।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

11 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 11 मार्च को बहुभाषी कविता-पाठ का सत्र ललद्यद सभागार में आयोजित किया गया। सत्र की अध्यक्षता ए.जे. थॉमस ने की। कश्मीरी के प्रख्यात कवि एम. अहमद पारे ने 'हादसा' शीर्षक कविता का पाठ किया। गुजराती के मशहूर कवि संजू वाला ने कविता 'छूरी', 'उपाय' का कविता-पाठ किया। हिंदी की प्रख्यात कवयित्री वर्तिका नंदा ने 'महिला दिवस के नाम', 'औरत की चुप्पी' तथा 'जेल' आदि कविताओं का पाठ किया। मराठी कवि वीरा राठोड ने 'भयमुक्त' और 'रिश्ता' आदि मराठी कविताओं का पाठ किया।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

11 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

ललद्यद सभागार में ही आयोजित कविता-पाठ के दूसरे सत्र की अध्यक्षता दर्शन दर्शी ने की। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषा में कविता आज भी जीवंत है। नई पीढ़ी के रचनाकार पढ़ना कम लिखना अधिक चाहते हैं। असमिया की अनुपमा बसुमतारी ने 'कोई बात नहीं' कविताओं से आगाज़ किया। कोंकणी के शशिकांत पुनाजी ने 'सभी करने लगे हैं खुदाई' और 'एक सितारा' आदि कविताओं का पाठ किया। मणिपुरी की अशङ्गबम नेत्रजीत ने मणिपुरी कविताओं का पाठ किया। ओड़िआ कवयित्री आद्याशा दास ने 'प्रार्थना' कविता-पाठ के माध्यम से ओड़िआ समाज को चित्रित किया। सिंधी के प्रख्यात कवि हरीश करमचंदाणी ने 'पेड़', 'पाबंदी', 'दो बच्चे' आदि कविताओं का पाठ किया।

'भारत का एलजीटीबीटीक्यू साहित्य विगत 4 दशकों पर प्रतिबिंबन'

11 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

'भारत का एलजीटीबीटीक्यू साहित्य विगत 4 दशकों पर प्रतिबिंबन' विषयक सत्र की अध्यक्षता कल्कि सुब्रमण्यम ने की, जिन्होंने विगत 4 दशकों को प्रतिबिंबित करते हुए अपने समाज के दर्दनाक रूप को दर्शाया। ए. रेवती ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें समाज से तिरस्कृत और बहिष्कृत किया जाता है। कुहू चानना ने अपने वक्तव्य में कहा कि एलजीटीबीटीक्यू होना अपने आप में एक अभिशाप है।

नेविश ने कहा हमें समाज में पुरुष रूप में सम्मिलित तो कर लिया जाता है लेकिन महिला एलजीटीबीटीक्यू का जीना दूभर है।

रेशमा प्रसाद ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'हिजड़ा' शब्द सुनते ही मेरे तन बदन में आग लग जाती है। वसुधेंद्र ने अपने मार्मिक वक्तव्य में कहा कि 'गे' को आसानी से पहचाना नहीं जाता, लेकिन महिला एलजीटीबीक्यू के शारीरिक बनावट के कारण उन्हें कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं। सभी ने श्रोताओं के समक्ष अपने विचार प्रकट किए तथा इस शैली और इसके विकास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

नई दिल्ली

मेरे लिए कविता का अर्थ?

11 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

'मेरे लिए कविता का अर्थ?' विषयक सत्र की अध्यक्षता मलयाळम् भाषा के प्रभा वर्मा ने की। उन्होंने 'मेरे लिए कविता का अर्थ?' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। कन्नड भाषा के प्रसिद्ध कवि सी. नागन्ना ने प्रस्तुत विषय पर चिंतनीय आलेख का पाठ किया। मलयाळम् के कवि के. श्रीकुमार ने मलयाळम् समाज को अपने सुमधुर स्वर में कविता-पाठ कर 'मेरे लिए कविता का अर्थ?' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया।

ओड़िआ की प्रख्यात कवयित्री गायत्री बाला पंडा ने कहा कि मेरी कविताएँ कुछ तो अलग हैं। रूपांतरित सत्य ही कविता है। सिंधी के प्रख्यात कवि मोहन हिमथाणी ने कहा कि कविता शब्दों में ढलकर विश्व कविता बन जाती है। ढाई आखर प्रेम ही हमें कविता करनी सिखाती है।

युवा साहिती : कहानी-पाठ

11 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. ललित मंगोत्रा

'युवा साहिती कार्यक्रम' के अंतर्गत आयोजित युवा कथाकारों के कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी कथाकार डॉ. ललित मंगोत्रा ने की। इस सत्र का उद्देश्य युवा कहानीकारों को व्यापक मंच प्रदान करना था। इसमें मणिका देवी (असमिया) तथा मोनिका फुलवाणी (सिंधी) ने हिंदी अनुवाद में क्रमशः 'इग्लू' और 'उम्मीद की किरण' शीर्षक से अपनी कहानियाँ पढ़ीं, उपासना (हिंदी) ने अपनी हिंदी कहानी 'उदास आँगन' पढ़ी।

कविता : आत्मा का दर्पण

11 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

'कविता : आत्मा का दर्पण' विषय पर केंद्रित परिचर्चा की अध्यक्षता सियाराम शर्मा (हिंदी) ने की। यह सत्र साहित्यिक चर्चा के साथ-साथ कविता-पाठ को समर्पित था। सियाराम शर्मा ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण है जबकि कविता आत्मा का दर्पण है और सकारात्मकता का संकेत देती है। बसुधारा रॉय (अंग्रेज़ी) ने कहा कि सीमांतता कविता की शक्ति है। कविता का दायरा सदैव कथा साहित्य से बड़ा रहा है। मिस्ना चानु (मणिपुरी) ने सुमित्रानंदन पंत को उद्धृत करते हुए कहा कि केवल विचारों और तथ्यों से कविता नहीं बन सकती। कविता अपने आप आती है; कविता वही दर्शाती है जो कवि के भीतर होता है। उन्होंने अपनी कविता 'प्याज रोता नहीं है' सुनाते हुए समापन किया। नीलिमा ठाकुरिया हक (असमिया) ने खलील जिब्रान को उद्धृत करते हुए कविता के बारे में बात की और अपनी कविता 'हाउस ऑफ़ एसेज़' भी सुनाई। शुभ्र बंद्योपाध्याय (बाङ्ला) ने कहा कि कविता मेरे लिए सबसे अंतरंग कला है। उन्होंने कहा कि लेखकों के पास कल्पना ही एकमात्र शक्ति है।

नई दिल्ली

मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?

11 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

'मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ? विषय पर पैनल चर्चा सत्र की अध्यक्षता क्षमा शर्मा ने की। सत्र में प्राणजित बोरा (असमिया), अंकित नरवाल (हिंदी), प्रत्यूष दुबे (हिंदी), कुमार राहुल (मैथिली), आशा मेनन (मलयाळम्) तथा जूलियेस वनथैयान (तमिळ) ने श्रोताओं से अपने विचार व्यक्त किए। प्राणजित बोरा ने कहा कि लेखक जो देखता है, जो महसूस करता है उसे स्वर देता है तथा अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाता है। अंकित नरवाल (हिंदी) ने कहा कि आलोचक के रूप में उन्हें लगता है कि जो लिखा जा रहा है उस पर नज़र रखना एक आलोचक का उत्तरदायित्व है।

प्रत्यूष दुबे ने कहा कि लेखक की बेचैनी उसे अंदर से लिखने के लिए प्रेरित करती है। कुमार राहुल ने कहा कि लेखन संतुष्ट न होने की एक सतत प्रक्रिया है। आशा ने कहा कि इस धरती के प्रति ज़िम्मेदार होना हमारा प्राथमिक कर्तव्य है; लिखने के लिए भीतर से कुछ आंतरिक आग्रह आना चाहिए।

जूलियेस वनथैयान ने कहा कि हमारे समाज को अमानवीय बनाने वाली सामाजिक बुराइयों को खत्म करना हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी है तथा लेखक को यह ज़िम्मेदारी निभानी होगी।

बहुभाषी कविता-पाठ

11 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

तुलसीदास सभागार में आयोजित बहुभाषी कविता-पाठ के सत्र की अध्यक्षता उत्तर-पूर्व भारत के प्रख्यात लेखक, रॉबिन नङ्गोम ने की। बिशालदीप काकती (असमिया), अग्नि रॉय (बाङ्ला), शिव नारायण सिंह (हिंदी), सुमन केशरी (हिंदी), संघमित्रा भंज (ओड़िआ), ए. साथिया सारदामणि (तमिळ) तथा प्रसेन बेलमकोंडा (तेलुगु) ने सत्र में अंग्रेज़ी अनुवाद सहित अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ पढ़ीं।

भारत को जोड़ना : कहानी-पाठ

11 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता ओड़िआ की प्रतिष्ठित लेखिका सुश्री अनिता पंडा ने की तथा रजत चौधुरी (बाङ्ला), बाबासाहेब परित (मराठी) तथा कुप्पिली पद्मा (तेलुगु) ने पहले अपनी मूल भाषा में एक कहानी सुनाई, तत्पश्चात् 2 कहानियों का हिंदी और अंग्रेज़ी में अनुवाद प्रस्तुत किया। अध्यक्षता करते हुए अनिता पंडा ने 'प्लैन' कहानी का पाठ किया, जोकि परिवार में बुज़ुर्गों की दुर्व्यवस्था पर आधारित थी।

'बहुभाषी कविता-पाठ : विभिन्न भाषाओं में भारतीय कविता'

11 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

'बहुभाषी कविता-पाठ : विभिन्न भाषाओं में भारतीय कविता' कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थानी और हिंदी के प्रख्यात कवि, कथाकार तथा नाटककार मधु आचार्य 'आशावादी' ने की। इस सत्र में श्रुति बी. आर. (कन्नड), सुरेश रंजन गदुका (असमिया), रिमी नाथ (अंग्रेज़ी), एकांत श्रीवास्तव (हिंदी), जीवन नामदुंग (नेपाली), रीतारानी नायक (ओड़िआ) तथा सादिका नवाब सहर (उर्दू) ने पहले अपनी मूल भाषा में कविता सुनाई तत्पश्चात् 2 कविताओं का हिंदी/अंग्रेज़ी में अनुवाद प्रस्तुत किया।

अध्यक्षता करते हुए मधु आचार्य ने कहा कि कविता भाषा की सीमा का अतिक्रमण अपने भीतर समाहित संवेदना से कर देती है, इसलिए कविता अपने मूल स्वभाव में स्थान, भाषा, समाज और देशों को पार कर सभी के हृदय के लिए ग्राह्य हो जाती है।

महत्तर सदस्यों का अभिनंदन

2024, मेघदूत मुक्ताकाशी रंगशाला-1, नई दिल्ली

श्री एस. एल. भैरप्पा तथा साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष

श्री रघुवीर चौधुरी तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष

डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं, जिन्होंने भारतीय साहित्य में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि जीवित महत्तर सदस्यों में से केवल चार - रघुवीर चौधुरी, एस.एल. भैरप्पा, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा तेजवंत सिंह गिल - ही इस समारोह में शामिल हो सके, जबकि अन्य 12 महत्तर सदस्य स्वास्थ्य कारणों से शामिल नहीं हो सके। उन्होंने समस्त महत्तर सदस्यों को शुभकामनाएँ दीं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे साहित्य दिग्गजों को सम्मानित करके साहित्य अकादेमी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने पुष्पगुच्छ भेंट कर महत्तर सदस्यों का स्वागत किया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने रघुवीर चौधुरी को वक्तव्य देने हेतु आमंत्रित किया। रघुवीर चौधुरी ने इस सम्मान के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि वे अकादेमी की स्थापना के समय से ही इससे जुड़े हुए हैं। उन्होंने आने वाली पीढ़ी के लेखकों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। एस.एल. भैरप्पा ने कहा कि इस अवसर पर यहाँ आना न केवल हर्ष बल्कि सम्मान की भी बात है। उन्होंने साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भारतीय साहित्य के प्रति अपनी निरंतर और निष्पक्ष सेवा के लिए साहित्य अकादेमी को बधाई तथा धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

प्रो. तेजवंत सिंह गिल

नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी अपनी कल्पनाशील और व्यावहारिक गतिविधियों को लंबे समय तक जारी रखेगी। तेजवंत सिंह गिल ने कहा कि वे अमेरिका में व्याख्यान दे रहे थे, इसी दौरान उन्हें अकादेमी की ओर से फोन आया और इस अवसर पर भारत आने का अनुरोध किया गया। उन्होंने अकादेमी को सम्मान प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। समापन वक्तव्य में प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि लेखक वास्तव में एक साधक होता है। उन्होंने यह भी कहा कि अकादेमी प्रतिष्ठित भारतीय लेखकों के योगदानों को सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित महसूस करती है।

अंत में, डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी का धन्यवाद किया।

भरतनाट्यम का प्रदर्शन : शृंगारम् - रस की रानी

11 मार्च 2024, मेघदूत मुक्ताकाशी रंगशाला-1, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शृंखला के भाग के रूप में, भारतीय नृत्य की महान शास्त्रीय परंपरा को प्रदर्शित करने के लिए भरतनाट्यम का प्रदर्शन किया गया। राजश्री वारियर की प्रस्तुती को दर्शकों द्वारा सराहा गया।

राजश्री वारियर द्वारा भरतनाट्यम की प्रस्तुती

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह

12 मार्च 2024, कमानी सभागार, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह 12 मार्च 2024 को सायं 5:30 बजे कमानी सभागार, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

प्रख्यात ओड़िआ लेखिका डॉ. प्रतिभा राय कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। आरंभ में, सुश्री सौम्या ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक से डॉ. प्रतिभा राय का औपचारिक स्वागत करने का अनुरोध किया। अपने स्वागत व्याख्यान में डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि प्राचीन काल से ही साहित्यिक कृतियाँ मानव मन को पोषित करती रही हैं। उन्होंने कहा कि आज के दिन साहित्य अकादेमी भारतीय साहित्य के लिए अपनी अथक सेवा के 70 वर्ष पूरे कर रही है। अपनी स्थापना के बाद से ही अकादेमी भारतीय साहित्य तथा साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देती रही है। 24 भाषाओं में किसी साहित्यिक कृति को पुरस्कृत करना भारतीय साहित्यिक परंपराओं को पुरस्कृत करना है। उन्होंने कहा कि साहित्य हमारे राष्ट्र का डी.एन.ए. है। उन्होंने 2023 में अकादेमी द्वारा की गई गतिविधियों की जानकारी दी। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय व्यख्यान में 24 भाषाओं के समस्त पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि हज़ारों वर्ष पूर्व जब दुनिया भ्रमित थी, तब भारतीय लेखकों ने ऐसा साहित्य रचा था जो आने वाले वर्षों के लिए प्रकाश स्तंभ साबित होगा। साहित्य सदैव मानवीय मूल्यों को बनाए रखता है तथा आम आदमी की बात करता है। यह अकादेमी के लिए खुशी और सम्मान की बात है कि वह अपने

पुरस्कार विजेताओं के साथ, (बाएँ से दाएँ) डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. प्रतिभा राय, श्री माधव कौशिक तथा प्रो. कुमुद शर्मा

स्थापना दिवस पर लेखकों को पुरस्कृत कर रही है। अपने व्यख्यान के पश्चात् साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष ने 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों को साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 प्रदान किए। चूँकि असमिया पुरस्कार विजेता पुरस्कार अर्पण समारोह में शामिल नहीं हो सके, इसलिए उनके बेटे ने उनकी ओर से पुरस्कार प्राप्त किया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 के विजेता हैं : प्रणव ज्योति डेका (असमिया), स्वपनमय चक्रवर्ती (बाङ्ला), नंदेश्वर दैमारि (बोडो), विजय वर्मा (डोगरी), नीलम सरण गौड़ (अंग्रेज़ी), विनोद जोशी (गुजराती), संजीव (हिंदी), लक्ष्मीश तोल्पाडि (कन्नड), मंशूर बानिहाली (कश्मीरी), प्रकाश एस. पर्येंकार (कोंकणी), बासुकी नाथ झा (मैथिली), प्रकाश एस. पर्येंकार (कोंकणी), ई.वी. रामकृष्णन (मलयाळम्), सोरोक्खाईबम गम्भिनी (मणिपुरी), कृष्णात तुकाराम खोत (मराठी), युद्धवीर राणा (नेपाली), आशुतोष परिड़ा (ओड़िआ), स्वर्णजीत सवी (पंजाबी), गजेसिंह राजपुरोहित (राजस्थानी), अरुण रञ्जन मिश्र (संस्कृत), तारासीन बास्के (संताली), विनोद आसुदानी (सिंधी), एन. राजशेखरन (तमिऴ), तल्लावज्जल पतंजलि शास्त्री (तेलुगु) तथा सादिक़ा नवाब सहर (उर्दू)। साहित्य अकादेमी के सचिव ने प्रशस्ति-पत्र पढ़े।

पुरस्कार अर्पण समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. प्रतिभा राय ने अपने संबोधन में इस वर्ष विश्व के सबसे बड़े साहित्योत्सव के आयोजन के लिए समस्त पुरस्कार विजेताओं तथा साहित्य अकादेमी को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि राजनीति बाँटती है, साहित्य जोड़ता है। उन्होंने कहा कि भारत भाषाओं का अद्भुत देश है तथा संकट के समय लेखक ही विश्व को बचाते हैं।

समापन वक्तव्य साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आज इस मंच पर भारतीय साहित्य का स्वाभिमान, सौंदर्य और गरिमा एक साथ देखने को मिल रही है। साहित्य शाश्वत है तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए मानवता का मार्ग प्रशस्त करता है।

भारत के ग्राफ़िक उपन्यास

12 मार्च 2024, वाल्मिकी सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

नई दिल्ली

'भारत के ग्राफ़िक उपन्यास' विषयक कार्यक्रम में, आबिद सुरती, इता मेहरोत्रा, मिआ जोस, जोशी बेनेडिक्ट और रहमान अब्बास ने अमृता पाटील की अध्यक्षता में भारत में ग्राफिक उपन्यास के परिदृश्य पर चर्चा की। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए अमृता पाटील ने भारत में ग्राफ़िक उपन्यास संस्कृति के इतिहास के साथ सत्र की शुरुआत की। उन्होंने भारत में सफलतापूर्वक ग्राफिक उपन्यास बनाने और विभिन्न विषयों पर काम करने में आने वाली बाधाओं के बारे में भी बात की। आबिद सुरती ने उन पर बॉलीवुड पटकथा लेखन के प्रभाव के बारे में बात की। जोशी बेनेडिक्ट ने अपनी रचनाओं के अनुवाद के अनुभव पर ध्यान केंद्रित किया। इता मेहरोत्रा ने सामाजिक मुद्दों पर तत्काल प्रतिक्रिया के रूप में चित्रकला के बारे में बात की। जोस ने ग्राफ़िक शैली के कथा साहित्य के भावनात्मक प्रभावों को विस्तार से समझाया। रहमान अब्बास ने बहुभाषी रचनाओं के महत्त्व के बारे में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

मेरे लिए साहित्य का क्या अर्थ है?

12 मार्च 2024, वाल्मिकी सभागार, नई दिल्ली

प्रतिभागियों के साथ डॉ. ध्रुब ज्योति बोरा

इस सत्र में ज्योति प्रसाद सैकिया (असमिया), कोरल दासगुप्ता (अंग्रेज़ी), मृत्युंजय सिंह (हिंदी), मेल्विन एस. पिंटो (कोंकणी), सी. अशोकन (मलयाळम्), पॉल ज़कारिया (मलयाळम्) तथा बिजयानंद सिंह (ओड़िआ) ने साहित्य से अपने संबंधों के बारे में चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता डॉ. ध्रुब ज्योति बोरा ने की। ज्योति प्रसाद सैकिया ने साहित्य के सामाजिक प्रभाव के बारे में बात की। कोरल दासगुप्ता ने साहित्य की दार्शनिक शक्ति पर बल दिया। मृत्युंजय सिंह ने अन्य संस्थाओं के प्रति साहित्य की सहानुभूति पर प्रकाश डाला। मेलविन एस. पिंटो ने साहित्य को मानव स्वभाव का प्रतिबिंब बताया। सी. अशोकन ने साहित्य की क्रांतिकारी शक्ति के बारे में बताया। पॉल ज़कारिया ने इसके परिवर्तनकारी गुणों के बारे में चर्चा की। बिजयानंद सिंह ने इसे आलोचना के माध्यम के रूप में खोजा। अध्यक्ष ने साहित्य की व्यक्तिपरकता पर बल दिया और यह बताया कि साहित्य, समाज में नए विचारों को प्रोत्साहित करने के लिए इच्छाओं को व्यक्त करने का एक माध्यम है।

भारत की अवधारणा

12 मार्च 2024, वाल्मिकी सभागार, नई दिल्ली

इस सत्र में जे. साई दीपक, अश्विनी कुमार, एल. हनुमंतैया, शांतिश्री डी. पंडित और सोनल मानसिंह ने भारत के संदर्भ में अपने-अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ़ मोहम्मद ख़ान ने की।

जे. साई दीपक ने भारतीय कलात्मक परंपराओं की रक्षा करने की बात कही। श्री अश्विनी कुमार ने विविधता के माध्यम से भारतीय पहचान के निर्माण के बारे में बात की। एल. हनुमंतैय्या ने स्वतंत्र भारत के लिए भेदभाव को ख़त्म करने की बात कही।

डॉ. शांतिश्री डी. पंडित तथा माननीय राज्यपाल श्री आरिफ़ मोहम्मद ख़ान

नई दिल्ली

बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक समाज में अनुवाद

12 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार, नई दिल्ली

'बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक समाज में अनुवाद' विषय पर आयोजित परिचर्चा की अध्यक्षता प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी विद्वान प्रोफ़ेसर आलोक भल्ला ने की। उन्होंने कहा कि उनके लिए भारत में अनुवाद की संस्कृति है। उन्होंने अनुवाद अध्ययन की समस्याओं और अनुवाद का मूल्यांकन करने के तरीकों पर बात की। उन्होंने अनुवाद सिद्धांतकारों द्वारा प्रस्तुत अनुवाद सिद्धांतों पर संक्षेप में बात की।

बीना बिस्वास ने समकालीन भारत में अनुवाद के बढ़ते महत्त्व पर बात की। उन्होंने बोलियों, भाषा-विशिष्ट भाषाई गुणों और सांस्कृतिक वस्तुओं के अनुवाद के मामले में अनुवादकों को आने वाली चुनौतियों पर बात की। हरीश जैन ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के विकास और उसके महत्त्व पर संक्षेप में बात की। इस संदर्भ में, वह टॉवर ऑफ़ बैबेल की कहानी का उल्लेख करते हैं। उन्होंने प्रमुख भारतीय शहरों की बहुभाषी संस्कृति और संस्कृतियों के बीच एक सेतु के रूप में अनुवाद की भूमिका पर बात की।

जे.एल. रेड्डी ने उन समस्याओं के बारे में बात की जिनका सामना दक्षिण भारतीय ग्रंथों के हिंदी अनुवादकों को उनका अनुवाद करते समय करना पड़ता है। उन्होंने विशेष रूप से तेलुगु ग्रंथों के हिंदी अनुवाद पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने अनुवाद के माध्यम से प्रतिलेखन के महत्त्व और अपनी मातृभाषा में अनुवाद के महत्त्व के बारे में भी बताया।

प्रकाश भातंब्रेकर ने अनुवाद का मूल्यांकन करने के मानक नियमों की कमी पर बात की। उन्होंने अनुवादों को मंज़ूरी देने में प्रकाशकों की भूमिका पर बात की। उन्होंने कहा कि फिर भी अनुवादकों को उनका हक मिलना चाहिए। रूमी लस्कर बोरा ने असमिया संस्कृति और भाषा पर ध्यान केंद्रित करते हुए सांस्कृतिक वस्तुओं के अनुवाद के तरीकों पर बात की।

एस. शेषारत्नम ने अनुवाद करने से पहले अनुवादक द्वारा स्रोत पाठ को बारीकी से पढ़ने के महत्त्व पर ध्यान केंद्रित किया। अनुवाद के मामले में अनुवादक को स्रोत भाषा और संस्कृति का संपूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

शोभना कुमार ने तमिळ से अंग्रेज़ी में अनुवाद की गतिशीलता पर बात की। उन्होंने इस संदर्भ में रामानुजन और अनुवाद के बारे में उनकी राय का उल्लेख किया। उन्होंने तमिळ ग्रंथों के अंग्रेज़ी अनुवाद के उदाहरण प्रस्तुत किए और उनका विश्लेषण किया।

बहुभाषी कविता-पाठ

12 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार, नई दिल्ली

'बहुभाषी कविता-पाठ' सत्र की अध्यक्षता प्रयाग शुक्ल ने की। उन्होंने कहा कि बहुभाषी लेखकों की बैठकें भारत में विभिन्न भाषाओं के बीच सेतु बनाने का काम करती थीं। इस सत्र में गोपाल लाहिड़ी (अंग्रेज़ी), भरत नाइक (गुजराती), नरेंद्र पुंडरीक (हिंदी), सतीश विमल (कश्मीरी), रामेवर शारुंगबम (मणिपुरी), इंद्रजीत भालेराव (मराठी) और एस. रघु (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कविताएँ अंग्रेज़ी/हिंदी अनुवाद में पढ़ी गईं।

कविता का भविष्य?

12 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार, नई दिल्ली

'कविता का भविष्य?' विषय पर इस सत्र की अध्यक्षता सुरजीत पातर ने की। उनके लिए कविता मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति है। उन्होंने भविष्य की मानव सभ्यता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के व्यापक प्रभाव पर बात की और बताया की यह कविता को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है। उन्होंने कविता की भावनात्मक अपील पर बल दिया जो हमेशा बनी रहेगी। उन्होंने कविता के तत्वों और वे भविष्य में कैसे जीवित रह सकते हैं, इस पर भी विस्तार से चर्चा की।

अमरेंद्र खटुआ ने भविष्य की कविता को

नई दिल्ली

व्याख्यान देते हुए श्री अमरेंद्र खटुआ

आकार देने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावनाओं पर विस्तार से बात की। उन्होंने अपनी सामग्री के आधार पर कविता के प्रकारों के बारे में बात की।

बसवराज सदर ने परंपरा के महत्त्व पर बात की जो कविता के भविष्य को आकार देने में सहायक है। उन्होंने काव्य में सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली मानवीय संवेदना की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

बृजरतन जोशी ने श्रोताओं को उन विषयों से अवगत कराया जो हमारे समाज, वातावरण, जीवनशैली आदि में निरंतर परिवर्तन के कारण आने वाले समय में कविता के विषय के रूप में उभर सकते हैं।

चंद्र प्रकाश देवल ने राजनीति को कविता से दूर रखने की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की। उनके लिए, कविता का भविष्य भाषा के साथ-साथ मानव जाति के भविष्य के समान है। कई भाषाएँ मर रही हैं, इसलिए हमें इसके प्रति सचेत रहना होगा।

के. सच्चिदानंदन ने कविता के इतिहास और विकास के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने कहा कि कविता के भविष्य के बारे में यह प्रश्न पहले भी पूछा जाता रहा है। उन्होंने इसके कई उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने कविता के प्रकार और काव्य परंपराओं के इतिहास के बारे में भी बताया।

रोमन जैकबसन और नोम चॉम्मकी जैसे साहित्यिक विद्वानों का ज़िक्र करते हुए, मनजिंदर सिंह ने कहा कि कविता के भविष्य के बारे में चर्चा भविष्य की कविता के बारे में भी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सीमाओं पर टिप्पणी करते हुए, उन्होंने कहा कि एआई के विपरीत, कविता आंतरिक स्व को पकड़ सकती है और परे देख सकती है। उनके लिए कविता भावना और बुद्धि के बीच संतुलन बनाने का काम करती है।

शफ़ी शौक़ ने ज़ोर देकर कहा कि कविता को जीवित रहना चाहिए क्योंकि यह आंतरिक रूप से हमारी अभिव्यक्ति के तरीकों से जुड़ी हुई है। यह तब तक जीवित रहेगी जब तक यह वर्तमान में जुड़ी रहेगी।

अकादेमी पुरस्कार 2023 विजेताओं के साथ मीडिया की बातचीत

12 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता

सत्र की शुरुआत में वर्ष 2023 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताओं ने अपना परिचय दिया।

बाद में, उन्होंने इस सत्र में मीडिया के साथ अपने अनुभवों, प्रेरणाओं, भावनाओं, कल्पनाओं, अपने लेखन के पीछे की परिस्थितियों, समाज में बदलते परिदृश्य के प्रति प्रतिक्रिया को साझा किया। भाग लेने वाले लेखक थे : स्वप्नमय चक्रवर्ती (बाङ्ला), नन्देश्वर दैमारि (बोडो), विजय वर्मा (डोगरी), नीलम सरन गौड़ (अंग्रेज़ी), विनोद जोशी (गुजराती), संजीव (हिंदी), लक्ष्मीश तोल्पाडि (कन्नड), मंशूर बानिहाली (कश्मीरी), प्रकाश एस. पर्येकार (कोंकणी), बासुकी नाथ झा (मैथिली), इ.वी. रामकृष्णन (मलयाळम्), सोरोकखाईबम गम्भिनी (मणिपुरी), कृष्णात तुकाराम खोत (मराठी), युद्धवीर राणा (नेपाली), आशुतोष परिड़ा (ओड़िआ), स्वर्णजीत सवी (पंजाबी), गजेसिंह राजपुरोहित (राजस्थानी), अरुण रंजन मिश्र (संस्कृत), तारासीन बास्के (संताली), विनोद आसुदानी (सिंधी), एन. राजशेखरन (तमिऴ), तल्लावाला पतंजलि शास्त्री (तेलुगु) और सादिका नवाब सहर (उर्दू)।

मातृभाषाओं का महत्त्व

12 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

(बाएँ से दाएँ) श्री मेल्विन रोड्रिग्स, श्री मदन मोहन सोरेन, श्री मोहन गेहानी, श्री अजीत दुबे तथा श्री सिल्वानस लमारे

'मातृभाषाओं के महत्त्व' पर पैनल चर्चा की अध्यक्षता मोहन गेहानी ने की। इस सत्र में अजीत दुबे, मदन मोहन सोरेन, मेल्विन रोड्रिग्स तथा सिल्वानस लमारे ने मातृभाषाओं की स्थिति पर अपनी राय प्रस्तुत की। गेहानी ने बताया कि मातृभाषा गर्भनाल की तरह है, यह हमारे अस्तित्व को जीवन देती है। अजीत दुबे ने कहा कि भाषाओं की विविधता हमारी ताकत है और हमारी मातृभाषाएँ हमें अपनी विरासत से जोड़ती हैं। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि बच्चों को अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में मिलनी चाहिए।

मदन मोहन सोरेन ने कहा कि मातृभाषा सांस्कृतिक विरासत होती है। मातृभाषाएँ हमारे जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। दुबे की बात का समर्थन करते हुए उन्होंने इस बात पर बल दिया कि बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए।

मेल्विन रोड्रिग्स ने कहा कि वह अपनी मातृभाषा के कारण ही अलग हैं तथा मातृभाषा ने ही उन्हें पहचान दी है। सिल्वानस लामारे ने कहा कि भाषा केवल लिपि नहीं है, बल्कि महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक अस्तित्व है जो हमारे मस्तिष्क को आकार देता है।

बहुभाषी कहानी-पाठ

12 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

बहुभाषी कहानी-पाठ कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी लेखिका चित्रा मुद्गल ने की। प्रारंभ में चित्रा मुद्गल की गरिमामयी उपस्थिति में उनकी बेटी ने उनका लिखित वक्तव्य पढ़ा। उन्होंने अकादेमी की सराहना की, जिसने अपने साहित्य महोत्सव में देश की विभिन्न भारतीय

भाषाओं के लेखकों को एक मंच पर एकत्रित किया है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार संगीत की कोई भाषा सीमा नहीं होती, उसी प्रकार रचनात्मक कार्य को भी किसी भाषा से नहीं बाँधा जा सकता। विभिन्न भाषाओं के माध्यम से हमारे लेखक अपनी रचनाओं से अपनी दुनिया को दूसरों के साथ साझा करते हैं। सत्र में तीन प्रतिष्ठित लेखकों द्वारा कहानियाँ पढ़ी गईं। प्रख्यात असमिया लेखक आरण्यक सैकिया ने अंग्रेज़ी अनुवाद में अपनी कहानी 'द लीनिंग पोस्ट' का पाठ किया। प्रख्यात कश्मीरी लेखक एम. के. भट्ट 'निर्धन' ने हिंदी अनुवाद में अपनी कहानी 'स्पीड ब्रेकर' सुनाई तथा प्रख्यात मलयाळम् लेखक अरशद बाथे ने अंग्रेज़ी अनुवाद में 'द बफेलो' शीर्षक का पाठ किया। सत्र का समापन चित्रा मुद्गल कृत कहानी "मैं" के पाठ से हुआ, जिसे उनकी बेटी ने पढकर सुनाया।

क्या साहित्य का अनुवाद, संस्कृति का अनुवाद है?

12 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. निर्मलकांति भट्टाचार्जी

'क्या साहित्य का अनुवाद, संस्कृति का अनुवाद है?' विषय पर आयोजित परिचर्चा की अध्यक्षता डॉ. निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने की। उन्होंने कहा कि अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे 190 से अधिक सत्रों में से केवल इसी सत्र पर प्रश्नचिह्न है और कहा कि यहाँ पैनलिस्ट को बहस करने की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा, जब एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है तो वह वास्तव में संस्कृति का अनुवाद होता है।

अपने विचार व्यक्त करते हुए अनीसुर रहमान ने कहा कि साहित्य अकादेमी के प्रश्न का उत्तर है 'प्रत्येक अनुवाद एक सांस्कृतिक अनुवाद है'। यह तब दिया जाता है जब कोई एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करता है तो उसे संस्कृति का अनुवाद करना होता है। एक बहुभाषी देश होने के नाते यहाँ के अनुवादक एक साथ कई भाषाओं में बातचीत करते हैं तथा साथ ही वे तुलनावादी भी होते हैं। चंद्रकांत पाटिल ने अकादेमी के प्रश्न का सकारात्मक उत्तर देकर शुरुआत की। आगे विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा कि प्रश्न के तीन घटक हैं- साहित्य, संस्कृति और अनुवाद, तथा इन घटकों पर विस्तार से चर्चा की गई।

चंद्रशेखर होता ने कहा कि अनुवाद मनुष्य, समाज तथा साहित्य का विस्तार है। इसका कर्तव्य सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देना है। उन्होंने ओड़िआ साहित्य के विभिन्न सांस्कृतिक कालखंडों तथा पूर्व-औपनिवेशिक काल से लेकर औपनिवेशिक युग तथा उत्तर-औपनिवेशिक काल से लेकर समकालीन समय तक हुए अनुवादों पर विस्तार से चर्चा की।

सायंतन दासगुप्ता ने भारतीय साहित्य अनुवाद केंद्र में अपने कुछ अनुभव साझा किए जहाँ अनुवाद एक व्यक्तिगत गतिविधि के स्थान पर एक सहयोगात्मक कार्य के रूप में किया जाता है। उन्होंने कहा कि एक अनुवादक के समक्ष विभिन्न चुनौतियाँ होती हैं। किसी विशेष भाषा समूह की आस्था की जटिलताओं को समझे बिना अनुवाद नहीं किया जा सकता।

सोहन पेन ने कहा कि इस विषय के लिए उनकी केस स्टडी भवानी प्रसाद की *दुर्गा सप्तशती* का अनुवाद है। भवानी प्रसाद ने एक साहित्यिक पाठ से अधिक अनुवाद किया क्योंकि उन्हें मूल के इतिहास और संस्कृति को ध्यान में रखना था। उन्होंने यह भी कहा कि अनुवाद अंतर-सांस्कृतिक संचार का कार्य है।

बहुभाषी कहानी-पाठ

12 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

व्यख्यान देते हुए श्रीमती रीता चौधुरी

बहुभाषी कहानी-पाठ की अध्यक्षता प्रख्यात असमिया लेखिका रीता चौधुरी ने की। इस सत्र में प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपनी कहानी 'बॉय चाइल्ड इट विल बी' (अंग्रेज़ी अनुवाद में) पढ़ने वाले पहले प्रतिभागी थे। दूसरी कहानी 'वेणु' आदिवासी लेखिका सुमित्रा धर्मसिंह वसावे ने अपनी मातृभाषा भील मथवाड़ी में पढ़ी। तीसरे प्रतिभागी प्रख्यात मणिपुरी लेखक नबकुमार नोंगमाइकपम ने अंग्रेज़ी अनुवाद में 'डूम्सडे' का पाठ किया।

चौथे और अंतिम प्रतिभागी, प्रख्यात सिंधी लेखक कैलाश सादाब ने हिंदी अनुवाद में कहानी 'मौत की हत्या' प्रस्तुत की। अंत में, अध्यक्षता कर रही रीता चौधुरी ने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया और कहा कि उपन्यास की तुलना में कहानी लिखने में बहुत परिश्रम लगता है क्योंकि यह 'बिंदु' में सिंधु को समाहित करने जैसा है। किसी भी भाषा में कहानियाँ विभिन्न भावनाओं, विषयों आदि से बहुत समृद्ध होती हैं।

उत्तर-पूर्व तथा पश्चिमी लेखक सम्मिलन : कविता-पाठ

12 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

यह सत्र कविता-पाठ के लिए समर्पित था, जिसमें गौतम देमारी (बोडो), पन्ना त्रिवेदी (गुजराती), पबित्र मोलसोम (हलम), दुर्गेश सोनार (मराठी), रीता क्रोचा (उत्तर-पूर्व अंग्रेज़ी) तथा चारुमित्रा माखीजानी रानडे (सिंधी) ने अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ पढ़ीं। सत्र की अध्यक्षता करते हुए, उदयन ठक्कर ने सभी कवियों द्वारा पठित कविताओं की सराहना की और कहा कि हालाँकि उनकी भाषाएँ अलग-अलग हैं किंतु वे समान संवेदनशीलता साझा करते हैं। अंत में उन्होंने अपनी कविताएँ भी प्रस्तुत कीं।

नई दिल्ली

उत्तर-पूर्व और पश्चिमी लेखक सम्मिलन - समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

12 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

सत्र के प्रतिभागी

उत्तर-पूर्व और पश्चिमी लेखक सम्मिलन के अंतर्गत 'समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ' विषयक सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात असमिया लेखक वाई.डी. थोंगची ने कहा कि संचार क्रांति के दौर में भी साहित्य की प्रवृत्तियाँ पहले की तरह ही सर्वव्यापी हैं। चूँकि पूरी दुनिया अन्य संस्कृतियों को आत्मसात करने तथा उनके साथ घुलने-मिलने की समस्याओं का सामना कर रही है, इसलिए पहचान को जीवित रखने के सवाल पर साहित्य में अधिक सचेत रूप से चर्चा की गई है। इसके अलावा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस सत्र में असमिया के मृदुल हलै, गुजराती के जयेंद्रसिंह जादव, मणिपुरी के इरोम रोबिंद्रो सिंह, मराठी के आसाराम लोमटे तथा सिंधी के कलाधर मुतवा ने भी प्रतिभागिता की और अपने-अपने भाषा साहित्य में समागत नवीन साहित्यिक प्रवृत्तियों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

बहुभाषी कहानी-पाठ

12 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

'बहुभाषी कहानी-पाठ' के कार्यक्रम में हिंदी, मैथिली, मलयाळम् तथा सिंधी भाषाओं के प्रतिभागियों को पैनल में आमंत्रित किया गया। अचला बंसल ने हिंदी में, आभा झा ने मैथिली में तथा एस. महादेवन थम्पी ने मलयाळम् में अपनी कहानी पढ़ी, जबकि सिंधी भाषा का प्रतिनिधित्व अशोक झमनाणी ने किया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए मनोज कुमार गोस्वामी ने कहा कि सभी प्रस्तुतकर्ताओं की कथा तथा कथन में समानताएँ हैं। उन्होंने कहा कि भारत में कहानी लेखन ने उत्तर-आधुनिक समय में भी अपनी गति बरकरार रखी है। उन्होंने बताया कि सभी कहानीकार समाज में व्याप्त माहौल के प्रति सचेत हैं जो उनकी कहानियों में परिलक्षित हो रहा है।

नई दिल्ली

आदिवासी कवि सम्मिलन

12 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

व्याख्यान देते हुए सुश्री के. वासमल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 12 मार्च 2024 को आयोजित 'आदिवासी कवि सम्मिलन' की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात टोडा कवयित्री के. वासमल्ली ने कहा कि हम हमारी संस्कृति, हमारी प्रकृति से सृजित हुए हैं; अलग-अलग भाषा और संस्कृति के होते हुए भी हम एक हैं। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने अपनी कविता 'विंटर', 'समर' और 'सोएल' तथा पहाड़ों पर आधारित दो कविताएँ प्रस्तुत कीं और उनके अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किए। ठाकरी भाषा के प्रख्यात कवि तुकाराम धांडे ने 'मिट्टी' कविता हिंदी में तथा 'पोरी' कविता ठाकरी भाषा में प्रस्तुत की, जिसमें मिट्टी की महक अभिव्यक्त की गई है। मिसिंग की चर्चित कवयित्री नर्मदा दलै ने मिसिंग भाषा में अपनी कविता 'अली' का पाठ किया, जिसका अंग्रेज़ी अर्थ 'स्प्रिंग' है तथा उसका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। लिंबू के प्रख्यात कवि गुमान सिंह सुब्बा की एक कविता अपनी मातृभाषा को छोड़कर अंग्रेज़ी भाषा की ओर भागने वाले युवा पीढ़ी पर आधारित थी तथा दूसरी कविता लिंबू परंपरा पर आधारित थी। उन्होंने 'अक्षरज्ञान' और 'अशांत वातावरण' शीर्षक से कविताओं का पाठ हिंदी में किया। लेप्चा के प्रख्यात कवि काच्यो लेप्चा ने 'ह्यूमैनिटीज' कविता का लेप्चा में पाठ किया तथा उसका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। कुई तथा ओड़िआ भाषा के प्रख्यात कवि नीरद चंद्र कँहर ने 'फिश हंटिंग' शीर्षक से कविता मूल भाषा में प्रस्तुत की तथा उसका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया साथ ही, एक और कविता 'कैसे होगा' का पाठ हिंदी में प्रस्तुत किया। हो भाषा के प्रख्यात कवि डोब्रो बुड़िउली ने हो भाषा में 'हो हयाम जगरमोतो' अर्थात् 'हो भाषा का अनुकरण' शीर्षक से कविता और 'दादानी एतोना' का सस्वर पाठ किया।

भीली भाषा के प्रख्यात कवि सुनील गायकवाड़ ने 'तांत्या भील' तथा 'कोपायेल कविताओं का पाठ मातृभाषा में किया तथा हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

आदिवासी लेखक सम्मिलन : आदिवासी लेखन में वर्तमान साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

12 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

'आदिवासी लेखक सम्मिलन' के अंतर्गत 'आदिवासी लेखन में वर्तमान साहित्यिक प्रवृत्तियाँ' विषयक सत्र की अध्यक्षता बंजारा लेखक एन. शांता नाइक ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भाषा तब तक नहीं मर सकती है जब तक हम अपने साहित्य को अपने लेखन के ज़रिए ज़िंदा रखने का प्रयास जारी रखते हैं। अपनी भाषा को जीवित रखने का एक माध्यम सोशल मीडिया भी है।

न्यीशी भाषा की प्रख्यात लेखिका जमुना बीनी ने एक लोककथा के ज़रिये अपनी लिपि के विलुप्त होने की बात बताई और कहा कि न्यीशी समुदाय का मौखिक साहित्य बहुत समृद्ध

कार्यक्रम के प्रतिभागी

नई दिल्ली

है, किंतु अपनी लिपि न होने के कारण उसे हिंदी या अंग्रेज़ी में लिखा जा रहा है। न्यीशी के कुछ शब्द देवनागरी और रोमन लिपि में उपलब्ध न होने के कारण लिखने में भी समस्या उत्पन्न होती है।

मिज़ो की प्रख्यात लेखिका ज़ोथनछिंगी खिआङते ने 'रेडिकल डिस्ट्रक्शन' विषय पर अपना लेख प्रस्तुत किया और बताया कि समाज के चिंतन और प्रभाव पर समकालीन साहित्य में कार्य हो रहा है। कार्बी के प्रख्यात लेखक जॅयसिंग तोकबी ने 'कार्बी भाषा के मौजूदा साहित्यिक रुझान' पर अपना लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने येशे दोरजे थोंगची, तेमसुला आओ, ममंग दई आदि कई लेखकों के लेखन का भी उल्लेख किया। लिपि न होने के कारण पूर्व में हिमाचल प्रदेश में असमिया में रचनाओं का लेखन किया जाता था। उन्होंने बताया कि कार्बी के उद्भव, इतिहास, लोकगीत आदि पर समकालीन कार्बी साहित्य लिखा जा रहा है।

धोड़िया भाषा के प्रख्यात लेखक कुलिन पटेल ने बताया कि युवा पीढ़ी के लिए ऑडियो-विजुअल डॉक्यूमेंटेशन करके धोड़िया की रचनाओं और रीति-रिवाज़ों को यू-ट्यूब में अपलोड किया गया है और इसी ज़रिये से धोड़िया भाषा के साहित्य, लोकगीत आदि को जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है। उन्होंने 'धनारूपा' तथा 'लघुमन्नो' कविताओं का पाठ किया।

आदिवासी कवि सम्मिलन

12 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

'आदिवासी कवि सम्मिलन' की अध्यक्षता करते हुए पहाड़ी भाषा के प्रख्यात कवि प्रत्यूष गुलेरी ने कहा कि यह बड़े गौरव की बात है कि साहित्य अकादेमी आदिवासी भाषाओं के संवर्द्धन के लिए कार्य कर रही है और उनके लेखकों को मंच प्रदान कर रही है। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने 'घोड़े गीतां दे' विषयक अपनी लंबी कविता प्रस्तुत की।

वडारी भाषा के प्रख्यात कवि भरत दौंडकर ने 'भटकी शाह' कविता वडारी में और 'बैकवर्ड' तथा 'सूअर पकड़नेवाले इंसान', दो कविताओं का पाठ हिंदी में प्रस्तुत किया। दरदी के प्रख्यात कवि नवांग शरप ने दरदी में अपनी कविता के ज़रिये अपनी विलुप्त होती भाषा को बचाने के लिए युवाओं से आह्वान किया तथा महिला सशक्तिकरण पर भी एक कविता का पाठ प्रस्तुत किया, साथ ही लद्दाख की खूबसूरती को अपनी कविता के माध्यम से भी प्रस्तुत किया। प्रख्यात मालवी कवयित्री हेमलता शर्मा ने अपनी कविता 'विश्वगुरु भारत', 'अपनो भारत देश', 'वृद्धावस्था' तथा 'मोबाइल का डब्ल्या' कविताओं का सस्वर पाठ किया। गोजरी भाषा के प्रख्यात कवि जान मो. हकीम ने 'इंतज़ार' और 'मेरा अंश्रू' (मेरे आँसू), दो

कार्यक्रम के प्रतिभागी

इस सत्र में जिन कवियों ने अपनी कविताएँ सुनाईं, उनमें शकुंतला तरार (छत्तीसगढ़ी), उर्मिला कुमरे (गोंडी), जोशुआ हलम (हलम), लिजिना कडुमेनी (मालर्वोवन), भास्कर भोसले (पारधी) और मैत्रेयी पातर (तिवा) शामिल थे। सभी कवियों ने अपनी मूल भाषा में एक-एक कविता सुनाई और उसके बाद उनका हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया। यह सत्र बहुत ही जीवंत था और इन कवियों द्वारा प्रस्तुत कविताओं ने उनकी संस्कृति, संस्कार और जीवन की एक सुंदर तस्वीर खींची।

कार्यक्रम के प्रतिभागी

मार्मिक नज़्में गोजरी में हिंदी तर्जुमे के साथ प्रस्तुत कीं।

देसिया भाषा के प्रख्यात कवि रंजन महुरिया ने प्रकृति पूजा पर अपनी कविता का सस्वर पाठ किया। निहाली भाषा के प्रतिष्ठित कवि श्रीकृष्ण काकडे ने निहाली में एक कविता 'टेबरै' (बाघ) के माध्यम से आदिवासियों की आवाज़ को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। बघेली के प्रख्यात कवि शिवशंकर मिश्र 'सरस' ने दो कविताओं 'फागुन' (छंदबद्ध कविता) और 'अकालगीत' का पाठ किया। अहिरानी भाषा के प्रख्यात कवि महेश लीलापंडित ने अहिरानी में 'भाषा न खंदावरती' और 'तो ती नी मत' कविताएँ सुनाईं।

आदिवासी कवि सम्मिलन

12 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

सम्मिलन की अध्यक्षता श्रीमती एम.पी. रेखा ने की, जो कोडवा भाषा में लिखती हैं। अपने समापन भाषण में, उन्होंने सभी कवियों की प्रस्तुति की प्रशंसा करते हुए कहा कि भारत में जनजातियों की संस्कृति अद्भुत है, उनके रीति-रिवाज, फूल, होली, त्योहार के गीत, उनके दैनिक जीवन में गाय के गोबर का महत्त्व, उनके विवाह आदि शामिल हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आदिवासी लोग पृथ्वी के उपासक हैं तथा सांसारिक संसाधनों का दुरुपयोग नहीं करते हैं तथा सादा जीवन जीते हैं और अपने सभी कार्यों में सादगी रखते हैं। उन्होंने कहा, आधुनिकता के साथ हम कई चीजें खो रहे हैं और बदलते समय के साथ हमें अपनी संस्कृति को बनाए रखना और संरक्षित करना होगा।

नई दिल्ली

शमीमा कुठार (ब्यारी), दीपक कुमार दलै (मिसिंग), संतोष पावरा (पावरी), चारु मोहन राभा (राभा), राजेश राठवा (राठवी) और किशोर कुमार राय शेनी (तुलु) ने क्रमश: हिंदी के साथ-साथ अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत कीं। इस सत्र की अध्यक्षता विकास रॉय देबबर्मा ने की, जो कोकबोरोक में लिखते हैं तथा स्वयं बहुत उत्कृष्ट कवि हैं। उन्होंने कहा कि इस देश की सुंदरता इसकी विविधता में निहित है - संस्कृति में विविधता, भाषाओं में विविधता, क्षेत्रों में विविधता तथा उनकी भौगोलिक सीमाओं की विविधता। उन्होंने कहा कि आदिवासी लेखक

धरा गीत : आदिवासी कवि सम्मिलन

12 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

व्याख्यान देते हुए श्री विकास रॉय देबबर्मा

सबसे पहले अपनी पहचान बचाने के लिए संघर्ष करते हैं, अपनी आजीविका कमाने के लिए संघर्ष करते हैं।

उसके बाद ही वे लिखने के बारे में सोचते हैं और इस क्षेत्र में वही आते हैं जिनका जुनून लेखन का होता है। उन्होंने सत्र का समापन स्वयं की कविता 'लाइक, कमेंट, शेयर' सुनाकर किया।

'आदिवासी लेखकों के समक्ष चुनौतियाँ'

12 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

कार्यक्रम के प्रतिभागी

' आदिवासी लेखकों के समक्ष चुनौतियाँ' विषयक सत्र की अध्यक्षता आर. रमेश आर्य (बंजारा) ने की, जिसमें कलिंग बोरांग (आदि), क्रिस्टल कॉर्नेलियस डी. मरक (गारो), वंदना टेटे (खड़िया), स्ट्रीमलेट डखार (खासी), अन्ना माधुरी तिर्की (कुड़ुख) तथा प्रमोद मुनघाटे (मराठी) ने भाग लिया।

आदि भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाले कलिंग बोरांग ने कहा कि लिखना अपने आप में एक चुनौती है और अच्छा लिखना उससे भी बड़ी चुनौती है। आदिवासी लेखकों के लिए, मुख्यधारा की भाषाओं के लेखकों की तुलना में उनके सामने कहीं अधिक चुनौतियाँ हैं; उनके सामने क्षेत्र-विशिष्ट चुनौतियाँ हैं। अधिकांश जनजातियों के पास अपनी लिपि नहीं है तथा उनकी भाषा के पाठकों की संख्या भी बहुत अधिक नहीं है। इसमें शब्दों के उच्चारण की हमारी विशेष प्रकृति के अनुरूप लिपि का भी अभाव है। हमें अपनी भाषा के अस्तित्व के लिए और अपनी भाषा को जीवित रखने के लिए लड़ना होगा। उन्होंने कहा, आधुनिक सॉफ्टवेयर हमारी भाषा की ज़रूरतों का समर्थन नहीं करते हैं। गारो भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाले क्रिस्टल कॉर्नेलियस डी. मरक ने कहा कि भारत के उत्तर-पूर्व के सभी आदिवासियों के पास समृद्ध मौखिक लोक साहित्य, कविता, किंवदंतियाँ, मिथक, विश्वास प्रणाली, कथाएँ, गीत, पहेलियाँ, वाक्यांश तथा मुहावरे हैं और ये मौखिक साहित्य हैं। इसे उचित रूप से प्रलेखित करने की आवश्यकता है जो एक बड़ी चुनौती है। खड़िया भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रख्यात आदिवासी लेखिका वंदना टेटे ने कहा कि हमारे साहित्य का इतिहास 1840 से शुरू होता है, इसमें बहुत समृद्ध साहित्य है लेकिन अभी भी हमारे पास कम प्रकाशन हैं। हमारा लेखक समुदाय अपने प्रकाशनों के विपणन से अच्छी तरह परिचित नहीं है। प्रकाशक हमारी किताबें कम संख्या में छापते हैं और हमारे आदिवासी लेखकों को बढ़ावा नहीं देते।

नई दिल्ली

खासी भाषा का प्रतिनिधित्व कर रहे स्ट्रीमलेट डखार ने कहा कि हमारी अपनी लिपि नहीं है। हम अतीत की कई पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में रह रहे हैं। आदिवासी लोग भारतीय संस्कृति के सच्चे संरक्षक हैं लेकिन बदलते समय में उनके लिए बहुत सारी चुनौतियाँ आई हैं।

कुडुख भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाली अन्ना माधुरी तिर्की ने कहा कि उनके सामने सबसे पहली चुनौती अपनी भाषा और उसका अनुवाद है। अपनी भाषा में साक्षर लोगों की संख्या बहुत अधिक नहीं है तथा इस प्रकार लेखकों की संख्या और भी कम है। उनके साहित्य का अब तक समुचित दस्तावेज़ीकरण नहीं हो सका है। उनके समुदाय के लेखकों को भी उचित मार्गदर्शन और प्रोत्साहन नहीं मिलता है। मराठी भाषा के प्रमोद मुनघाटे ने कहा कि मौखिक साहित्य अपार है किंतु उसे प्रकाशित करने की ज़रूरत है ताकि भावी पीढ़ी लाभान्वित हो सके। हमारे लेखकों को अपनी बात कहने के लिए कम मंच मिलते हैं।

सत्र के अंत में अध्यक्ष के रूप में बोलते हुए डॉ. आर. रमेश आर्य ने कहा कि संपूर्ण मानव जाति एक समय में जंगलों में रहने वाली आदिवासी रही है। उन्होंने इस बात पर निराशा व्यक्त की कि कुछ लोग अपने घर में अपनी मातृभाषा का उपयोग नहीं करते हैं और यही कारण है कि उनके बच्चे भी अपनी मातृभाषा नहीं सीखते हैं।

यदि हमें अपनी भाषा की रक्षा और प्रचार-प्रसार करना है तो अपनी मातृभाषा का प्रयोग करना नितांत अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि हमें अपने साहित्य, जो वर्तमान में मौखिक रूप में है, को सही ढंग से प्रलेखित करने के लिए किसी न किसी लिपि को अपनाने की आवश्यकता है।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

12 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

कार्यक्रम के प्रतिभागी

बहुभाषी कवि सम्मिलन के इस सत्र की अध्यक्षता जयंत परमार (उर्दू) ने की। तारिणी शुभदायिनी (कन्नड), जयंती नाइक (कोंकणी), हेमंत दिवटे (मराठी), केदार मिश्र (ओड़िआ), बलबीर माधोपुरी (पंजाबी), मंजूषा कुलकर्णी (संस्कृत) तथा रवि टेकचंदाणी (सिंधी) ने इस सत्र में अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ पढ़ीं तथा उनमें से कुछ ने अपनी कविताओं के हिन्दी/अंग्रेज़ी संस्करण भी प्रस्तुत किए।

बहुभाषी कहानी-पाठ

12 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

इस बहुभाषी कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता ऋता शुक्ला ने की। इस सत्र में शाश्वती नंदी (बाङ्ला), अन्नपूर्णा शर्मा (अंग्रेज़ी), प्रीति प्रकाश (हिंदी) तथा सुनील कृष्णन (तमिळ) ने अपनी-अपनी भाषाओं में कहानियाँ पढ़ीं।

(दाएँ-बाएँ) श्री सुनील कृष्णन, सुश्री प्रीति प्रकाश, सुश्री ऋता शुक्ला, सुश्री शाश्वती नंदी तथा सुश्री अन्नपूर्णा शर्मा

नई दिल्ली

कवि सम्मिलन

12 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री केशरी लाल वर्मा

आदिवासी कवि सम्मिलन के इस सत्र की अध्यक्षता श्री केशरी लाल वर्मा ने की। उन्होंने कहा कि आदिवासी लेखकों ने हमेशा अपने लेखन के माध्यम से प्रकृति के तत्वों, जैसे - पहाड़ों, नदियों तथा परिदृश्यों के साथ-साथ स्वदेशी सांस्कृतिक तत्त्वों को सामने रखा है। उन्होंने सदैव अपनी संस्कृति को हर संभव तरीके से संरक्षित करने का प्रयास किया है। सुषमा कुमारी असुर (असुरी), ग्लोरिया सोरेंग (खड़िया), बिजय देबबर्मा (कॅकबरॅक), लिंकन मुरासिंह (कॅकबरॅक), थुपस्टन नोरबू (लद्दाखी), थाइलो मोग (मोग), बाबू संगदा (पंचमहाली भीली) तथा सनद वार्ली (वार्ली) ने इस सत्र में अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ पढ़ीं।

कस्तूरी की प्रस्तुति : गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर को श्रद्धांजलि

12 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

कस्तूरी की सांस्कृतिक प्रस्तुति

पुरस्कार समारोह के पश्चात् कमानी सभागार में रवींद्रनाथ ठाकुर की कविताओं पर आधारित 'कस्तूरी' शीर्षक से एक मंचीय प्रस्तुति हुई, जिसकी परिकल्पना संदीप भुतोड़िया ने तथा रचना पद्मभूषण और ग्रेमी पुरस्कार प्राप्तकर्ता पंडित विश्वमोहन भट्ट ने की। नृत्य संरचना शिंजिनी कुलकर्णी ने की तथा गायन अंकिता जोशी द्वारा प्रस्तुत किया गया।

नई दिल्ली

'सिनेमा और साहित्य' विषय पर संवत्सर व्याख्यान

13 मार्च 2024, नई दिल्ली

संवत्सर व्याख्यान देते हुए श्री गुलज़ार

संवत्सर व्याख्यान के दौरान उपस्थित श्रोतागण

साहित्य अकादेमी की प्रतिष्ठित व्याख्यानमाला के अंतर्गत वर्ष 2024 का *संवत्सर व्याख्यान* उर्दू लेखक तथा फिल्मकार गुलज़ार द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने अपने मन की बात खुलकर रखी तथा सिनेमा और साहित्य के बीच संबंधों पर अपने विचार साझा किए। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रोताओं से श्री गुलज़ार का परिचय कराया तथा भारतीय साहित्य के साथ-साथ संस्कृति के प्रति उनके योगदान की सराहना की। गुलज़ार के लिए सिनेमा एक नई भाषा की खोज थी। चलती आँखों के साथ 'क्लोज़-अप' ने वर्णमाला में एक नए अक्षर की शुरुआत कर दी। एक 'लॉन्ग शॉर्ट', 'कैमरे की पैनिंग', 'ट्राली की गति' फिल्म व्याकरण के नए नियम थे। ध्वनि तथा वाणी के बिना किसी विचार को व्यक्त करने के लिए छवियों को घुमाने से अभिव्यक्ति का एक नया रूप सामने आया। इसे साहित्य का ही विस्तार माना जा सकता है।

साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता की घोषणा

13 मार्च 2024, नई दिल्ली

श्री वेद राही

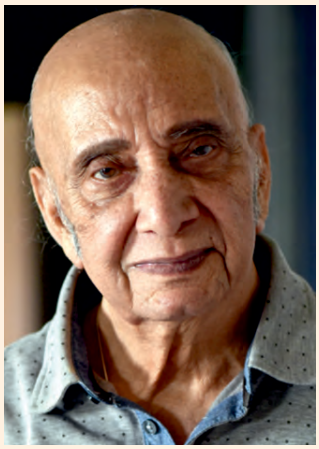

श्री प्राण किशोर कौल

श्रीमती अजीत कौर

डॉ. चंद्रशेखर कंबार

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक की अध्यक्षता में गठित साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद ने चार प्रतिष्ठित लेखकों एवं विद्वानों चंद्रशेखर कंबार (कन्नड), अजीत कौर (पंजाबी), प्राण किशोर कौल (कश्मीरी) तथा वेद राही (डोगरी) को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करने की संस्तुति की है। साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता भारत की उन महानतम हस्तियों को प्रदान की जाती है जिनके साहित्यिक योगदान ने सोचने के नए तरीके, साहित्यिक परंपराओं को आकार देने और मज़बूत करने और देश के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति के विकास तथा विकास के लिए नए माध्यम प्रदान किए हों।

साहित्य अकादेमी के संविधान के अनुसार, उत्कृष्ट योग्यता वाले साहित्यकारों को ही साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता के लिए चुना जाता है और किसी भी समय सदस्यों की संख्या 21 से अधिक नहीं हो सकती है। महत्तर सदस्यता में एक ताम्र फलक और अंगवस्त्रम् शामिल होता है, जो एक विशेष समारोह में प्रस्तुत किए जाते हैं।

साहित्य अकादेमी ने बनाया सबसे लंबी रीडिंग रिले का विश्व कीर्तिमान

13 मार्च 2024, नई दिल्ली

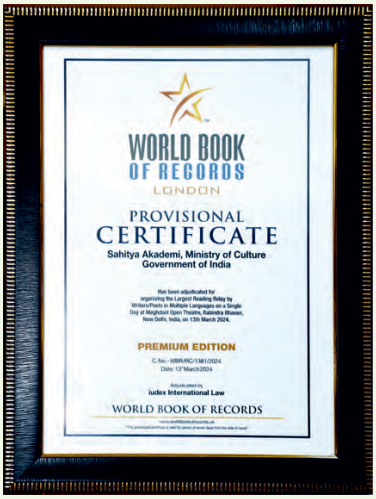

वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स का प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री माधव कौशिक, प्रो. कुमुद शर्मा, श्रीमती उमा नंदूरी तथा डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी ने 13 मार्च 2024 को विश्व की सबसे लंबी रीडिंग रिले का विश्व कीर्तिमान बनाया। साहित्य अकादेमी ने भारतीय लेखकों/कवियों द्वारा एक दिन में विभिन्न भारतीय भाषाओं में 'साहित्योत्सव 2024' के दौरान मेघदूत मुक्ताकाश रंगमंच, रवींद्र भवन, नई दिल्ली में यह पाठ आयोजित कर विश्व कीर्तिमान बनाया है।

ये कीर्तिमान इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि यह दुनिया के सबसे बड़े साहित्योत्सव में बनाया गया है जिसमें कि सबसे ज्यादा प्रतिभागियों और भाषाओं का प्रतिनिधित्व हुआ है। इस कार्यक्रम का मूल्यांकन और निरक्षण लंदन के वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स की देखरेख में हुआ तथा कार्यक्रम का निर्णय iudex International Law द्वारा किया गया।

एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, वाल्मिकी सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

इस बैठक की अध्यक्षता होशंग मर्चेंट ने की। इस सत्र में अज़ान सिंह, भैरवी अमरानी 'ख़ानबदोश', मीरा परिड़ा, संजना साइमन, तोशी पांडे, विजयराजमल्लिका और विशाल पिंजानी ने अपनी कविताओं को मूल रूप से हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने दर्शकों को यह भी बताया कि उनके समुदाय को दैनिक जीवन में किन बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उनकी कविताओं में उनके समुदाय के सदस्यों के साथ-साथ आम जनता के साथ मज़बूत जुड़ाव प्रदर्शित हुआ। कविताओं का पाठ समाप्त होने के पश्चात् उन्होंने श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

नई दिल्ली

अंग्रेज़ी में 21वीं सदी का भारतीय लेखन

13 मार्च 2024, वाल्मिकी सभागार, नई दिल्ली

(बाएँ – दाएँ) प्रो. अमृत सेन, श्री धनंजय सिंह, सुश्री अरुंधति सुब्रमण्यम, श्री रंजीत होसकोटे, सुश्री रश्मी नार्जारी, प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता तथा सुश्री कावेरी नांबिसन

सत्र की अध्यक्षता कावेरी नांबिसन ने की। उन्होंने भारतीय अंग्रेज़ी लेखकों तथा भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के लेखकों के बीच संबंध के महत्त्व पर बात की। उन्होंने उन भारतीय अंग्रेज़ी लेखकों के बारे में बात की जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। उन्होंने समकालीन भारतीय समाज में स्वतंत्रता पैदा करने, समकालीन साहित्य में लिंग के प्रतिनिधित्व, डिजिटल मीडिया के प्रभाव, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ई-पुस्तकें तथा समकालीन साहित्य आदि अन्य मुद्दों पर बात की।

संयुक्ता दासगुप्ता ने कहा, 21वीं सदी का भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य मूलत: अखिल भारतीय है। उन्होंने इस साहित्य के स्वरूप एवं पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। इसमें स्थानीय और वैश्विक को शामिल किया जा सकता है। उन्होंने भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य की उप-शैली के बारे में बात की। उन्होंने एआई और रचनात्मक लेखन के बीच संबंधों के बारे में बात की।

प्रोफ़ेसर अमृत सेन ने इस साहित्य के एक भाग के रूप में यात्रा लेखन के बारे में बात की। उन्होंने इस शैली के प्रमुख ग्रंथों का उल्लेख किया और शुरुआत से ही इसके विकास का पता लगाया। उन्होंने भारतीय अंग्रेज़ी यात्रा साहित्य के माध्यम से प्रदर्शित खाद्य संस्कृति, जीवन शैली, मिथकों, भौगोलिक और सांस्कृतिक विवरणों के बारे में बात की।

अरुंधति सुब्रमण्यम ने रचनात्मक लेखन के पहलुओं तथा प्रकाशक की पसंद और अन्य मुद्दों पर बात की जो भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य के रुझानों को प्रभावित करते हैं। उन्होंने समकालीन भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य की स्थिति पर भी चर्चा की। रश्मि नार्जारी ने उत्तर पूर्व भारत पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रवासी भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य पर बात की। उन्होंने साहित्य के इस खंड के पहलुओं पर बात की। उन्होंने मौखिक और लोक साहित्य के साथ-साथ ग़ैर-काल्पनिक साहित्य पर भी बात की।

रंजीत होसकोटे ने अपने लेखन के पीछे काम करने वाली प्रेरणाओं के साथ-साथ उन बाधाओं के बारे में बताया जिनका उन्हें सामना करना पड़ा। उन्होंने समकालीन भारत में अंग्रेज़ी की स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने सार्वजनिक संकट और महत्त्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने में लेखकों की भूमिका पर बात की। धनंजय सिंह ने भारतीय अंग्रेज़ी कविता की उत्पत्ति के पीछे के आवेगों के बारे में बताया। उन्होंने लेखन के माध्यम से प्रदर्शित स्थान सांस्कृतिक और जातीय अनुभव के साथ-साथ 21 वीं सदी के भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य के प्रभाव पर प्रकाश डाला।

भविष्य के उपन्यास

13 मार्च 2024, वाल्मिकी सभागार, नई दिल्ली

इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री प्रतिभा राय ने की। उन्होंने कहा कि उपन्यास अनंत संभावनाओं की खोज करते रहेंगे। उन्होंने अपने कुछ उपन्यासों के विषयों के बारे में बात की। उन्होंने विज्ञान कथाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए उपन्यासों पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव पर भी बात की। उन्होंने स्वयं प्रकाशन की प्रवृत्ति, उपन्यासों पर सोशल मीडिया तथा अन्य के प्रभाव पर प्रकाश डाला। सुश्री अनुराधा शर्मा पुजारी ने कहा कि भविष्य के उपन्यास अतीत और वर्तमान के उपन्यास की परंपरा पर निर्भर होंगे। उन्होंने ज्ञान के विषयों का ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रमुख समकालीन भारतीय लेखकों का उल्लेख किया। उन्होंने समकालीन उपन्यासों के विषयों के साथ-साथ उनकी लेखन शैली का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने भविष्य के उपन्यासों के संभावित विषयों पर बात की। श्री भगवानदास मोरवाल ने विभिन्न प्रकार के उपन्यासों पर बात की। इस संदर्भ में, उन्होंने उपन्यासों को अपने दर्शकों तक पहुँचाने के दृश्य-श्रव्य तरीकों का उल्लेख किया। के.पी. रामनुन्नी ने मिलन कुंडेरा के विशेष संदर्भ में प्रमुख उपन्यासों का विश्लेषण किया। उन्होंने उपन्यासों पर सामाजिक मुद्दों की भूमिका पर प्रकाश डाला। सुश्री महुआ माजी ने कहा कि उपन्यास मौलिक और वास्तविक हों तथा उपन्यासों की विषयवस्तु के संदर्भ में अतीत की

नई दिल्ली

(बाएँ – दाएँ) सुश्री प्रीति शेनॉय, सुश्री अनुराधा सरमा पुजारी, श्री के.पी. रामानुन्नी, सुश्री महुआ माजी, डॉ. प्रतिभा राय, श्री भगवानदास मोरवाल, श्री राजन गावस तथा श्री रामदेव शुक्ल

पुनरावृत्ति न हो। उन्होंने इतिहास और उपन्यासों के बीच संबंध के बारे में बात की। सुश्री प्रीति शेनॉय ने कहा कि भविष्य के उपन्यास भविष्य के पाठकों पर निर्भर करेंगे। उन्होंने एआई द्वारा उत्पन्न विचारों की प्रकृति पर प्रकाश डाला। श्री राजन गावस ने मानव जीवन के मूल्यों तथा यह उपन्यासों में कैसे परिलक्षित होता है, इस पर बात की। श्री रामदेव शुक्ल ने कहा कि भविष्य के उपन्यास भविष्य की तत्कालीन स्थिति पर निर्भर करेंगे क्योंकि उपन्यास समाज को प्रतिबिंबित करते हैं। उन्होंने भविष्य के उपन्यासों की नई विषयवस्तु की संभावनाओं पर बात की।

21वीं सदी के भारतीय उपन्यास

13 मार्च 2024, वाल्मिकी सभागार, नई दिल्ली

'21वीं सदी के भारतीय उपन्यास' शीर्षक परिचर्चा की अध्यक्षता श्री दामोदर मावज़ो ने की। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी के उपन्यास पिछली सदी के उपन्यासों से बिल्कुल अलग नहीं हैं। उन्होंने वर्तमान युग की तकनीकी प्रगति और साहित्य पर इसके प्रभाव पर अपने विचार रखे। श्री अमर मित्र ने समकालीन साहित्य पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव पर बात की। उन्होंने समकालीन बाङ्ला उपन्यासों के विषयों पर बात की जिसमें उत्पीड़ित और हाशिये पर पड़े लोगों से जुड़े मुद्दे शामिल हैं।

श्री मनमोहन ने एक साहित्यिक शैली के रूप में उपन्यासों पर आलोचनात्मक सिद्धांतों के साथ-साथ पंजाबी उपन्यासों के इतिहास पर प्रकाश डाला। श्री मुकुल कुमार ने भाषा के उपयोग, बाज़ार की संभावना और समकालीन भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यासों के विषयों पर बात की। सुश्री नासिरा शर्मा ने पत्रकारिता और साहित्य के बीच संबंधों के बारे में बात की। उन्होंने हिंदी उपन्यासों के समसामयिक विषयों के साथ-साथ उन विषयों पर भी प्रकाश डाला जिनमें नए विषयों का स्थान कम होता जा रहा है।

श्री विश्वास पाटिल ने अखिल भारतीय उपन्यासों की परंपरा पर बात की। उन्होंने ऐतिहासिक और पौराणिक उपन्यासों जैसे उपन्यासों पर भी पृथक ढंग से अपने विचार व्यक्त किए।

श्री प्रसन्न के. स्वाईं ने 21वीं सदी के ओड़िआ उपन्यासों को संदर्भित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। श्री रोहित मनचंदा ने समकालीन समाज और लोगों पर इंटरनेट के प्रभाव पर बात की। उन्होंने समकालीन युग में लोगों की पहचान की दुविधा पर भी चर्चा की।

क्या ई-पुस्तकें और ऑडियो पुस्तकें मुद्रित पुस्तकों का स्थान ले रही हैं?

13 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

इस सत्र का विषय था—मुद्रित पुस्तकों के ई-पुस्तकों और ऑडियो पुस्तकों द्वारा संभावित प्रतिस्थापन। कार्तिका वी.के. ने सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रभात कुमार, रजनी सिंह तथा रवि डीसी ने उन निर्णायक कारकों का विश्लेषण किया जिन पर इस चर्चा का परिणाम काफ़ी हद तक निर्भर करता है। कार्तिका वी.के. ने राय दी कि ई-पुस्तकें और ऑडियो पुस्तकें मुद्रित पुस्तकों का स्थान नहीं ले सकतीं। उन्होंने कहा कि भौतिक पुस्तकों को बदलने में लंबा

(बाएँ से दाएँ) सुश्री रजनी सिंह, श्री प्रभात कुमार, श्री रवि डीसी तथा सुश्री कार्तिका वी.के.

नई दिल्ली

समय लगेगा क्योंकि साहित्य अकादेमी तथा अन्य पारंपरिक संस्थानों में विशाल पुस्तकालय हैं। रवि डीसी ने कहा कि तकनीकी बदलावों के साथ प्रिंट कम से कम अगले 15 वर्षों तक रहेगा और ई-बुक प्रिंट के साथ मिल जाएगी। प्रभात कुमार ने कहा कि भारत में करीब 80 करोड़ लोगों के हिंदी बोलने के बावजूद एक हिंदी पुस्तक की मात्र 300 से 500 प्रतियाँ ही प्रकाशित होती हैं। रजनी सिंह ने कहा कि सत्र का विषय एक बहस की ओर इशारा करता है और उन्होंने यह महसूस किया कि मुद्रित और डिजिटल दोनों संस्करणों का अपना महत्त्व है।

लेखक, प्रकाशक और स्वत्वाधिकार के मुद्दे

13 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

सत्र की अध्यक्षता रमेश मित्तल ने की। शुरुआत में, उन्होंने लेखकों और प्रकाशकों के बीच संबंधों, कॉपीराइट मुद्दों और पांडुलिपि के पुस्तक का आकार लेने की प्रक्रिया के बारे में संक्षेप में बात की। उन्होंने चित्रकारों/ कलाकारों, उचित लेआउट, कवर डिज़ाइनिंग, लेखक और प्रकाशक के बीच समझौतों आदि के बारे में बात की। शुमा राहा ने कहा कि पायरेसी एक बड़ा मुद्दा है जिसे हल करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि लेखक को प्रकाशकों की आवश्यकता है तथा प्रकाशकों को लेखक की आवश्यकता है, वे एक-दूसरे के पूरक हैं।

माइली ऐश्वर्या ने कहा कि हम शुरू में सोच सकते हैं कि प्रकाशन से संबंधित मामला तकनीकी है किंतु यह महत्त्वपूर्ण है। एक लेखक के रूप में अपने अधिकारों को जानना महत्त्वपूर्ण है। विकास नियोगी ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि कभी-कभी कॉपीराइट की अनुमति प्राप्त करना बहुत कठिन हो जाता है। लेखक पुस्तक तैयार करने में कड़ी मेहनत करते हैं। अपू दे ने कहा कि कॉपीराइट का मुद्दा पश्चिम बंगाल में एक बड़ा मुद्दा है। विजय कुमार धूपती ने कहा कि लेखक और प्रकाशक के बीच विश्वास होना चाहिए। उन्होंने कहा कि कॉपीराइट एक कानूनी मुद्दा होने के बजाय एक सामाजिक मुद्दा है। लोगों को कॉपीराइट कानूनों का सम्मान करना चाहिए। आशीष दीक्षित ने कहा कि प्रकाशकों की बड़ी ज़िम्मेदारी है। लेखक को कॉपीराइट के बारे में बताने की आरंभिक ज़िम्मेदारी प्रकाशक की है।

मेरे लिए स्वतंत्रता का क्या अर्थ है?

13 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

कार्यक्रम की शुरुआत में, सितांशु यशश्चंद्र ने आपने अध्यक्षीय उद्बोधन में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वतंत्रता की अवधारणा को कई कोणों से देखा जाना चाहिए। स्वतंत्रता की कमी किसी को विलुप्त कर सकती है। पारमिता शत्पथी के लिए, स्वतंत्रता एक ऐसी चीज़ है जिसे वह छू सकती हैं, महसूस कर सकती हैं। यह उसे आकाश की ओर प्रेरित करता है। अनिल चौधरी ने कहा कि वे स्वतंत्रता को तीन स्तरों पर समझते हैं एक नागरिक के रूप में, एक भावनात्मक व्यक्ति के रूप में और आध्यात्मिक स्तर पर ।

सुश्री भूमा वीरवल्ली ने कहा कि उन्होंने शब्दकोश में स्वतंत्रता का अर्थ खोजने का प्रयास किया। मंडलपार्थी किशोर ने कहा कि जब समय बदलता है तो स्वतंत्रता के मायने भी

(बाएँ से दाएँ) सुश्री भूमा वीरवल्ली, श्री अनिल चौधरी, प्रो. सितांशु यशश्चंद्र, श्री मंडलपार्थी किशोर तथा डॉ. पारमिता शत्पथी

बदल जाते हैं। नंदितेश निलय ने भी अपने विचार साझा किए कि उनके लिए स्वतंत्रता का क्या अर्थ है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए।

सतीश आलेकर ने कहा कि वे एक थिएटर कलाकार हैं। वह स्वतंत्रता का दर्शन नहीं चाहते। अंतिम वक्ता के रूप में शुदेशा भट्टाचार्य ने भी अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि विचारों की स्वतंत्रता उनकी रचनात्मकता के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है।

साहित्य और सामाजिक आंदोलन

13 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

सत्र की अध्यक्षता नीरा चंधोक ने की। विचार-विमर्श का माहौल तैयार करते हुए उन्होंने कहा, साहित्य और सामाजिक आंदोलन निश्चित रूप से एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। हिरण्मयी मिश्र ने 'ओड़िआ साहित्य में सामाजिक न्याय' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें पूर्व-औपनिवेशिक काल, भक्ति आंदोलन, 15वीं तथा 16वीं शताब्दी के भक्ति कवि और जाति व्यवस्था के विरुद्ध विरोध शामिल था। इमायम ने द्रविड़ साहित्य पर विशेष ध्यान देते हुए साहित्य और सामाजिक आंदोलनों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

प्रख्यात दलित लेखक लक्ष्मण गायकवाड़ ने कहा कि सामाजिक आंदोलनों के बाद रचा गया साहित्य लोगों की आत्मा को छूता है। उन्होंने विशेषकर महाराष्ट्र में सामाजिक आंदोलनों का लंबा इतिहास बताया। सुश्री रविंदर कौर ने पंजाब में स्वतंत्रता-पूर्व दलित साहित्य के बारे में बात की। श्री संतोष कुमार सोनकर ने 'आदिवासी साहित्य और उसका अनुवाद' विषय पर व्याख्यान दिया।

सुधीश पचौरी ने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन पहला आंदोलन था जिसने साहित्य पर अमिट छाप छोड़ी और जिसने कई दिग्गज लेखकों को जन्म दिया। उन्होंने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला कि सभी आंदोलन आमतौर पर स्वतंत्रता के लिए होते हैं।

कंबोडिया के शुन्टेंग हुन को आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

13 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्योत्सव के दौरान आयोजित एक कार्यक्रम में कंबोडिया के खमेर साहित्य के प्रख्यात विद्वान शुन्टेंग हुन को औपचारिक रूप से वर्ष 2023 के लिए अकादेमी की प्रतिष्ठित आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदान की गई। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने शुन्टेंग हुन को ताम्र फलक, पुस्तकों का पैकेट एवं अंगवस्त्रम भेंट किया। प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत किया तथा इस महत्तर सदस्यता को स्वीकार करने के लिए शुन्टेंग हुन को धन्यवाद दिया तथा दर्शकों से उनका संक्षिप्त परिचय भी कराया।

श्री शुन्टेंग हुन को आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

अपने स्वीकृति वक्तव्य में, शुन्टेंग हुन ने कहा कि इस महत्तर सदस्यता को प्राप्त करने वाले वे प्रथम कंबोडियन हैं, अत: इस महत्तर सदस्यता का बहुत महत्त्व है। वह इस महत्तर सदस्यता का उपयोग भारतीय साहित्य और संस्कृति की समृद्ध टेपेस्ट्री की खोज और योगदान के लिए करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि इस मान्यता के साथ, वह भारतीय संस्कृति के क्षेत्र में अपना शोध जारी रखने के लिए पहले से कहीं अधिक दृढ़ संकल्पित हैं।

नई दिल्ली

बहुभाषी कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

डॉ. सुबोध सरकार के साथ सत्र के प्रतिभागी

प्रख्यात बाङ्ला कवि डॉ. सुबोध सरकार की अध्यक्षता में आयोजित बहुभाषी कवि सम्मिलन में लक्ष्मी कण्णन (अंग्रेज़ी), हरेकृष्ण शतपथी (संस्कृत), सुकराज दियाली (नेपाली), अग्निशेखर (कश्मीरी), दिनेश दधीचि (हिन्दी), यज्ञेश दवे (गुजराती), जीबन नरह (असमिया) ने अपनी कविताओं का पाठ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ किया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. सुबोध सरकार ने कहा कि कविता आपसे प्यार करती है और आप कविता से प्यार करते हैं। यह एकतरफा यातायात नहीं है।

श्रोता बड़े कवि होते हैं, मंच पर मौजूद कवि नहीं। उन्होंने अपनी कविताओं का पाठ भी किया।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

श्री वी.पी. जॉय के साथ सत्र के प्रतिभागी

प्रख्यात मलयाळम् कवि श्री वी.पी. जॉय की अध्यक्षता में आयोजित सत्र में उन्होंने कहा कि हर भाषा एक फूल की तरह है और हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पास भाषाओं का एक बगीचा है जो न केवल हमारे देश की, बल्कि दुनिया की सभ्यता में भी योगदान देता है। उन्होंने अपनी कविताओं का पाठ भी किया। इस सत्र में तेलुगु कवि एस.वी. सत्यनारायण, बोडो कवयित्री अंजलि बसुमतारी, अंग्रेज़ी कवयित्री महुआ सेन, हिंदी कवयित्री रंजीता सिंह 'फलक', पंजाबी कवयित्री वनीता तथा संताली कवयित्री दमयंती बेशरा ने अपनी कविताओं का पाठ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ किया।

'अस्मिता' : बहुभाषी कवयित्री सम्मिलन

13 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

'अस्मिता' के अंतर्गत आयोजित बहुभाषी कवयित्री सम्मिलन की अध्यक्षता पंजाबी और अंग्रेज़ी की विख्यात कवयित्री सुश्री निरुपमा दत्त ने की। इस सत्र में असमिया कवयित्री ज्योतिरेखा हाजरिका, बाङ्ला कवयित्री यशोधारा रॉय चौधुरी, अंग्रेज़ी कवि मणि राव, अंग्रेज़ी कवयित्री नेहा बंसल, गारो कवयित्री फेमलिन मरक, ओड़िआ कवयित्री प्रवासिनी महाकुड, तेलुगु कवयित्री सी. भवानी देवी तथा नेपाली कवयित्री आशा मुखिया लामा ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी लेखक सम्मिलन - मेरा प्रथम लेखकीय अनुभव

13 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

यह सत्र भारत के उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी लेखकों के साहित्यिक करियर की शुरुआत के संकेत प्रकट करने पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता करते हुए बसवराज कलगुडी ने कहा कि लेखन शुरू करना एक सपने के सच होने जैसा है। लेखक अपने प्रथम लेखन को अपने सबसे बड़े बच्चे के रूप में मानते हैं और चाहते हैं कि हर कोई इसे देखे और इसकी प्रशंसा करे। संजीब पॉल डेका (असमिया), तरेन चंद्र बोरो (बोडो), पद्मिनी नागराजु (कन्नड), पी. मोहम्मद. कोया (मलयाळम्), आर.के. भुबॅनसना सिंह (मणिपुरी) तथा सी. श्रीनिवास (तेलुगु) ने दर्शकों के साथ अपने प्रथम लेखकीय अनुभव साझा किए।

नई दिल्ली

उत्तर-पूर्वी एवं दक्षिणी कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

'उत्तर-पूर्वी एवं दक्षिणी लेखक कवि सम्मिलन' शीर्षक से आयोजित बहुभाषी कविता-पाठ सत्र की अध्यक्षता राजेन तोइजाम्बा ने की। इस सत्र में असमिया की तूलिका चेतिया येन, बोडो के न्यूटन बसुमतारी, कन्नड की सुब्बु होलियार, मलयाळम् की अनामिका अनु, मणिपुरी के लेनिन खुमांचा, तमिळ की शक्ति तथा तेलुगु के के. श्रीकांत ने अपनी कविताओं का पाठ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया।

श्री राजेन तोइजाम्बा के साथ सत्र के प्रतिभागी

नारी चेतना : महिला लेखिका सम्मिलन : कहानी-पाठ

13 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

'नारी चेतना' के अंतर्गत आयोजित कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता असमिया कथा लेखिका अरूपा पतंगिया कलिता ने की, जिसमें गुजराती भाषा की उषा उपाध्याय तथा हिंदी की निधि अग्रवाल के साथ सभाध्यक्ष ने भी अपनी हृदयस्पर्शी कहानियों का पाठ प्रस्तुत किया।

(दाएँ-बाएँ) सुश्री अरूपा पतंगिया कलिता, सुश्री उषा उपाध्याय तथा सुश्री निधि अग्रवाल

साहित्य में मेरा प्रेरणास्त्रोत

13 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

डॉ. आर. दामोदरन के साथ प्रतिभागी

सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. आर. दामोदरन ने कहा कि कोई भी रचनात्मकता बिना प्रेरणा के नहीं होती। इस अवसर पर असमिया के दिव्यज्योति शर्मा, डोगरी के यश रैणा, हिंदी के गीत चतुर्वेदी, मलयाळम् की लोपा मुद्रा, मराठी के इंद्रजीत घुले तथा संस्कृत के श्वेतपद्म शतपथी ने अपने विचार व्यक्त किए।

नई दिल्ली

मीर तक़ी मीर पर जन्म-त्रिशतवार्षिकी संगोष्ठी

13-14 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

संगोष्ठी का दृश्य

मीर तक़ी मीर पर आयोजित जन्म-त्रिशतवार्षिकी संगोष्ठी में उद्घाटन सत्र की शुरुआत साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के स्वागत व्याख्यान से हुई। उन्होंने भारतीय काव्य की महान परंपरा में मीर तकी मीर के स्थान पर बात की।

आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उर्दू परमर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने प्रस्तुत किया। उन्होंने मीर तक़ी मीर के जीवन और कृतित्व पर संक्षेप में बात की।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री सैयद एहतेशाम हसनैन, पूर्व वी.सी., हैदराबाद विश्वविद्यालय थे। श्री सैयद एहतेशाम हसनैन ने मीर तक़ी मीर को एक उत्कृष्ट कवि बताते हुए उर्दू शायरी की परंपरा में उनकी भूमिका के बारे में बताया। प्रख्यात उर्दू लेखक और गीतकार गुलज़ार तथा जामिया मिलिया इस्लामिया के पूर्व कुलपति सैयद शाहिद मेहदी विशिष्ट अतिथि के रूप में इस अवसर पर उपस्थित थे।

श्री गुलज़ार ने अपने संबोधन में, शब्दों को भावनाओं की जटिल टेपेस्ट्री में पिरोने की मीर की अद्वितीय क्षमता को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया, जहाँ सरलता गहनता के साथ मिलती है, जिससे एक कालातीत प्रतिध्वनि पैदा होती है।

सैयद शाहिद मेहदी ने मीर की प्रतिभा को स्वीकार करते हुए, उनकी कलात्मकता को निखारने वाली खामियों पर भी प्रकाश डाला, कलाकारों को उनकी संपूर्णता, खामियों तथा सभी को गले लगाने के महत्त्व पर बल दिया।

बीज-वक्तव्य प्रख्यात उर्दू विद्वान अहमद महफूज़ द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसमें उन्होंने मीर की कविता की बारीकियों पर प्रकाश डाला, इसके अर्थ तथा प्रतीकवाद की परतों को उजागर

संगोष्ठी के प्रतिभागी

नई दिल्ली

संगोष्ठी के प्रतिभागी

किया।

साहित्य अकादेमी के माननीय अध्यक्ष माधव कौशिक ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने आज की दुनिया में मीर के कृतित्व की स्थायी प्रासंगिकता पर बल दिया। उनके शब्द मीर की कालातीत अपील और समय तथा स्थान की बाधाओं को पार करने की उनकी क्षमता की मार्मिक याद दिलाते हैं।

श्री शाफ़े क़िदवई ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की जिसमें कौसर मज़हरी, हक़्क़नी अल क़ासमी तथा सरवत ख़ान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

श्री हक्कानी अल कासमी ने मीर तक़ी मीर के दिव्य पागलपन पर प्रकाश डाला जिसके परिणामस्वरूप कविताओं और शायरियों का संग्रह तैयार हुआ जो आज भी प्रासंगिक हैं और अपने समय से आगे है।

सुश्री सरवत ख़ान ने मीर के छंदों के माध्यम से प्यार और जुनून के संबंध को बताया क्योंकि वह एकतरफ़ा प्यार की पीड़ा, अलगाव की पीड़ा और लालसा की पीड़ा को पकड़ते हैं, मानवीय रिश्तों की जटिलताओं को रेखांकित करते हैं।

श्री कौसर मज़हरी ने बताया कि किस प्रकार जमील जलिबी ने मीर तक़ी मीर पर अपनी 2 पुस्तकें प्रकाशित कीं, जहाँ उन्होंने मीर के जीवन को ज्वार-भाटे से भरे महासागर के रूप में वर्णित किया है।

अध्यक्ष के रूप में बोलते हुए, श्री शाफ़े क़िदवई ने आलेख प्रस्तुतकर्ताओं के व्याख्यानों का सारांश प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र के वक्ता श्री लीलाधर मंडलोई और श्री जानकी प्रसाद शर्मा थे। इस सत्र की अध्यक्षता श्री शीन काफ़ निज़ाम ने की।

श्री लीलाधर मंडलोई ने प्रसिद्ध उर्दू कवि मीर तकी मीर के जीवन का जीवंत विवरण प्रस्तुत किया।

श्री जानकी प्रसाद शर्मा के अनुसार, मीर तक़ी मीर संभवत: हिंदी और उर्दू कविता दोनों की मौखिक परंपरा की दुनिया के अंतिम कवि हैं।

अध्यक्ष के रूप में श्री शीन काफ़ निज़ाम ने कहा कि उन्होंने चर्चाओं से सीखा कि मीर तक़ी मीर को आज भी पढ़ा और उनकी व्याख्या की जानी चाहिए, उसी तरह उन्हें अपने समय में पढ़ा और व्याख्यायित किया गया था।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

श्री चंद्रभान ख़याल की अध्यक्षता में आयोजित बहुभाषी कवि सम्मिलन में संगीता गुंदेचा (हिंदी), मजीद मसरूर (कश्मीरी), रमेश (मैथिली), प्रीतिधारा सामल (ओड़िआ), भारत भूषण रथ (संस्कृत) तथा ए. कृष्ण राव (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

नई दिल्ली

लेखक सम्मिलन

13 मार्च 2024, तिरुवल्लुवर सभागार, नई दिल्ली

व्याख्यान देते हुए पुरस्कार विजेता

साहित्योत्सव के दौरान में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 विजेताओं ने लेखक सम्मिलन के अंतर्गत अपने रचनात्मक अनुभवों के बारे में बात की। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने इस सम्मिलन की अध्यक्षता की।

असमिया पुरस्कार विजेता श्री प्रणव ज्योति डेका उपस्थित नहीं थे। बाङ्ला पुरस्कार विजेता स्वप्नमय चक्रवर्ती ने अपनी पुरस्कृत पुस्तक *जलेर ऊपर पानी* पर बात करते हुए कहा कि उन्होंने इसके लेखन में पश्चिम बंगाल और बिहार में बंगाल विभाजन से बचे लोगों की मौखिक कहानी पर अपने विचार व्यक्त किए।

बोडो पुरस्कार विजेता नंदेवर दैमारी ने अपने पुरस्कृत कहानी-संग्रह *जिउ-सफरनि दाखोन* की चर्चा करते हुए कहा कि इन कहानियों की रचना करते समय उन्होंने घरेलू परिवेश तथा समाज में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का एहसास कराने का प्रयास किया है।

डोगरी पुरस्कार विजेता विजय वर्मा ने दर्शकों को अपनी लेखन यात्रा के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया, जिसके कारण वे डोगरी में सबसे लंबी ग़ज़ल, 721 पंक्तियों वाली, *दौं सदियां इक सीर* लिखने के लिए प्रेरित हुए और जो संभवत: सभी भारतीय भाषाओं में सबसे लंबी ग़ज़ल है।

अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता डॉ. नीलम सरन गौर ने *राग जानकी में रिक्विम* के बारे में बात की, जो इलाहाबाद के इतिहास में प्रतिष्ठित किंतु भुला दी गई शख्सियत, जानकी बाई इलाहबादी के जीवन से संबंधित है।

गुजराती पुरस्कार विजेता श्री विनोद जोशी ने कहा कि वे साहित्य सृजन की इच्छा से नहीं लिखते हैं। वह भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए लिखते हैं।

हिंदी पुरस्कार विजेता श्री संजीव ने कहा कि उनकी पुरस्कृत पुस्तक *मुझे पहाचानो* एक माँ और एक बेटी के रिश्ते को बयान करती है और कैसे परिस्थितियाँ माँ और बेटी की भूमिकाओं को बदल देती हैं और वे सिर्फ महिला बन जाती हैं।

कन्नड पुरस्कार विजेता लक्ष्मीशा थोलपाडी ने अपनी पुरस्कृत पुस्तक *महाभारत अनुसंधनाद भारतयात्रा* से एक निबंध 'माई-मनगला ओडु' का संक्षिप्त अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़ा।

कश्मीरी पुरस्कार विजेता श्री मंशूर बानिहाली ने बताया कि उनके सम्मानित काव्य-संग्रह *येथ वकवेह हलय तसोंग कौस ज़ाले* का शीर्षक प्रसिद्ध कश्मीरी संत हज़रत शेखुल आलम के एक दोहे से लिया गया था और इस पुस्तक में उन्होंने पहली बार दो नई शैलियाँ जोड़ी हैं।

कोंकणी पुरस्कार विजेता श्री प्रकाश एस. पर्येकार ने कहा कि उनका मानना है कि लेखक को एक प्रकाश-स्तंभ की तरह होना चाहिए जो चमकता है और क्षेत्र और आसपास के पथप्रदर्शकों को मंत्रमुग्ध और निर्देशित करने के लिए आकर्षित करता है।

मैथिली पुरस्कार विजेता श्री बासुकी नाथ झा ने कहा कि उनके अनुसार पुस्तक ऐसी होनी चाहिए जिससे सत्य का उद्घाटन संभव हो, ईमानदारी का उद्घोष संभव हो और समाज व पाठकों को उस पर विश्वास हो।

मलयाळम् पुरस्कार विजेता प्रोफेसर ई.वी. रामकृष्णन ने कहा, जैसे ही प्रिंट संस्कृति ने डिजिटल संस्कृति को रास्ता दिया है, 'साहित्य' जिसे हम आज जानते हैं, बड़े पैमाने पर परिवर्तन के दौर में है।

मणिपुरी पुरस्कार विजेता सुश्री सोरोकखईयम गभिनी ने शून्य सीमा अवधारणा के बारे में बात की, जो उनकी कविता की एक अनूठी विशेषता है।

मराठी पुरस्कार विजेता कृष्णत तुकाराम खोत का मानना था कि किसी चीज़ के नष्ट होने की चिंता करने की बजाय लेखक को उस चीज़ के नष्ट होने की प्रक्रिया के बारे में वर्तमान चिंता को रेखांकित करना चाहिए।

नेपाली पुरस्कार विजेता श्री युद्धबीर राणा ने बताया कि आजकल आधुनिकता के दबाव में वर्तमान समाज के लोग और बच्चे बदल रहे हैं। हम अपनी लोक परंपरा, लोक रीति-रिवाज़ और संस्कृति को भूलते जा रहे हैं।

नई दिल्ली

ओड़िआ पुरस्कार विजेता डॉ. आशुतोष परिदा ने बताया कि उनके पुरस्कृत संग्रह की कई कविताएँ प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने कवि के आंतरिक संघर्ष और उथल-पुथल और उनसे उबरने की उनकी तीव्र इच्छा को सामने रखती हैं। पंजाबी पुरस्कार विजेता श्री स्वर्णजीत सवी उर्फ़ स्वर्णजीत सिंह ने कहा कि कविता बदलते युगों के चिंतनशील इतिहास के रूप में कार्य करती है, जो इसके सार को पकड़ती है। कार्यक्रम में गजेसिंह राजपुरोहित (राजस्थानी), अरुण रंजन मिश्र (संस्कृत), तारासीन बास्के (संताली), विनोद आसुदानी (सिंधी), एन. राजशेखरन (तमिळ), तल्लावझला पतंजलि शास्त्री (तेलुगु) और सादिका नवाब सहर (उर्दू) ने भी अपने रचनात्मक अनुभवों को साझा किया।

विदेशों में भारतीय साहित्य

13 मार्च 2024, तिरुवल्लुवर सभागार, नई दिल्ली

इस सत्र में बी.आर. दीपक, दिविक रमेश, प्रभाती नौटियाल तथा सोनू सैनी ने ऑस्कर पुजोल की अध्यक्षता में भारतीय साहित्य की वैश्विक उपस्थिति पर चर्चा की। बी.आर. दीपक ने भारत-चीन सांस्कृतिक आदान-प्रदान की बात कही। दिविक रमेश ने दक्षिण कोरिया में भारतीय साहित्य के प्रभाव के बारे में बताया। प्रभाती नौटियाल ने द्विपक्षीय अनुवाद संबंधों के महत्त्व पर बल दिया। सोनू सैनी ने रूस में भारतीय साहित्य पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष ने अधिक क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं का स्पेनिश में अनुवाद करने का आह्वान किया।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, तिरुवल्लुवर सभागार, नई दिल्ली

श्री मोहन सिंह के साथ सत्र के प्रतिभागी

डोगरी के प्रख्यात कवि मोहन सिंह की अध्यक्षता में आयोजित सत्र में राघव गुप्ता, देव सिंह पोखरिया और नाहिद अख़्तर ने क्रमश: अंग्रेज़ी, हिंदी और उर्दू में अपनी कविताएँ सुनाईं। उथ्रिसार खुंगुर बसुमतारी (बोडो), अरुण म्हात्रे (मराठी), गणेश ठाकुर हाँसदा (संताली) तथा विम्मी सदारंगाणी (सिंधी) ने अपनी कविताओं के अंग्रेज़ी तथा हिंदी अनुवाद पढ़कर सुनाए । रानी श्रीवास्तव (मैथिली) ने अपनी हिन्दी कविता सुनाई।

आदिवासी कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

इस सत्र में भीली भाषा के मंगला गरवाल, भूमिज भाषा के सिद्धेश्वर सरदार, कुई भाषा के लंकेश्वर कँहर तथा माठवाडी भाषा के उमेश वाल्वी ने अपनी मूल भाषा के साथ-साथ अनूदित भाषा हिंदी और अंग्रेज़ी में कविता-पाठ किया। इस सत्र की अध्यक्षता जोगमाया चकमा (चकमा) ने की।

आदिवासी कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

'आदिवासी कवि सम्मिलन' के एक अन्य सत्र की अध्यक्षता कच्छी भाषा के पाबू गडवी ने की। इस सत्र में बांगो सोसिया (अरुणाचली), अंजलि बेलागल (बागड़ी), मो. सादिक़ हरदासी (बल्टी), गीतांजलि पुजारी (भोत्रा), ललित मोहन भोई (कंधान) तथा अब्बास ज़मीर (पुर्गी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

आदिवासी कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

अनल भाषा के बी.एस. खेल्हरिंग अनल की अध्यक्षता में आयोजित 'आदिवासी कवि सम्मिलन' में प्रीतेश चौधरी (चौधरी), गजानन जाधव (गौर), कन्हैया उइके (गोंडी), जवाहर लाल बांकीरा (हो), कैलाश गावित (मावची), आर. न्गुपानी ताओ (पौमई नागा), सज्जाद अली शुजात (पुर्गी) तथा चिंग्या चावुंग (ताङ्खुल) ने अपनी कविताओं का पाठ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ किया।

सत्र के प्रतिभागी

आदिवासी लेखक सम्मिलन : कहानी-पाठ

13 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

नई दिल्ली

इस सत्र की अध्यक्षता हक्किपिक्की भाषा के वसंत कुमार पी. ने की। इस सत्र में गुलाब सिंह गोविंद ठाकरे (डोंगरी नोयरी) की कहानी बहुत मार्मिक थी। नीता कुसुम बिलुंग (खड़िआ) ने मूल भाषा में कहानी-पाठ किया। एस्थर जून शोंग्वान (खासी) ने गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान पर कहानी-पाठ किया। बिश्वम्बर प्रधान (कुई) ने अंधविश्वास पर चोट करते हुए कहानी-पाठ किया। मंजूनाथ काले (पारधी) ने मूल भाषा में सस्वर गायन के बाद कहानी-पाठ किया।

बहुभाषी कहानी-पाठ

13 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

प्रख्यात लेखक बलराम की अध्यक्षता में आयोजित सत्र में बलराम ने हिंदी तथा अंग्रेज़ी के द्वंद्व पर आधारित कहानी 'दूसरी गुलामी' का पाठ किया। हिंदी के प्रख्यात कथाकार राजेंद्र कनौजिया ने 'तफ्तीश', नेपाली के प्रख्यात कथाकार मुक्ति प्रसाद उपाध्याय ने अपनी कहानी के हिंदी अनुवाद 'जैसे को तैसा', प्रख्यात मलयाळम् लेखिका मिनी एम.बी. ने अपनी कहानी के अंग्रेज़ी अनुवाद 'द बैट ईयर', तथा प्रख्यात तेलुगु कथाकार वेमपल्ली गंगाधर ने 'गंगमाफुल्लो' कहानी का पाठ तेलुगु में प्रस्तुत किया।

भारतीय साहित्य में जादुई यथार्थवाद

13 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

'भारतीय साहित्य में जादुई यथार्थवाद' विषयक विचार सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखिका और दिल्ली विश्वविद्यालय की पूर्व प्रोफ़ेसर विभा मौर्य ने की। उन्होंने कहा कि इतने प्रख्यात लोगों के साथ मुझे मंच साझा करने का अवसर प्राप्त हुआ इसके लिए मैं साहित्य अकादेमी की शुक्रगुज़ार हूँ। उन्होंने कहा कि 20वीं शताब्दी में वैश्विक रूप से यह विधा हमारे समक्ष आई। 1960 में जादुई यथार्थवाद का एक झोंका आया, जिसने सबाल्टर्न लिटरेचर को स्वर दिया है। उन्होंने नोबेल पुरस्कार विजेता गार्सिया मार्खेज का भी विशेष रूप से उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यूरोपीय देशों से यह शब्दावली हमारे यहाँ आई है। उन्होंने उदय प्रकाश की कहानी 'हीरालाल का भूत' का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि हमारे मूल और सामाजिक इतिहास से ही जादुई यथार्थवाद उत्पन्न हुआ है।

(बाएँ –दाएँ) श्री मालन, डॉ. बद्री नारायण, सुश्री विभा मौर्य तथा श्री कुल सैकिया

प्रख्यात हिंदी लेखक बद्री नारायण ने कहा कि जादुई यथार्थवाद में जो जादू है वह उसी के पास होगा जिसके पास काल्पनिक शक्ति होगी तथा काल्पनिक शक्ति उसके पास होगी जो अधिकतर सबाल्टर्न है। अति काल्पनिकता से ही जादुई यथार्थवाद का उद्भव होता है। जादुई शक्ति अधिकतर मार्जिनल और सबाल्टर्न के पास ही होती है। प्रख्यात असमिया लेखक कुल सैकिया ने कहा कि उत्तर औपनिवेशिक काल में यथार्थवाद का पदार्पण हुआ। भारतीय साहित्य में जादुई यथार्थवाद पर कई रचनाएँ लिखी गई हैं। एक हज़ार वर्ष पहले की कहानियों में भी जादुई कहानियाँ होती थीं। उन्होंने यह भी बताया कि लक्ष्मीनाथ बेज़बरुआ ने तेजी मौला जैसे पात्र के द्वारा वास्तविकता में कल्पना का मिश्रण करके अद्भुत रचना का सृजन किया। मैजिक एक तरह का टूल है जो आपके लेखन को धार देता है।

प्रख्यात मलयाळम् लेखक मालन ने कहा कि 80 के बाद और 90 की शुरुआत में जादुई यथार्थवाद का उन्मेष हुआ। लैटिन अमेरिका से इस विधा की शुरुआत हुई। उन्होंने सुब्रह्मण्यम भारती की 2 कहानियों, विशेष रूप से 'काकै पार्लियामेंट' ('पार्लियामेंट ऑफ़ क्रो') का उल्लेख किया। उन्होंने इस विधा में लिखनेवाले डॉ. कार्लोस की रचनाओं का भी उल्लेख किया। कार्यक्रम के अंत में श्रोताओं ने कुछ प्रश्न भी पूछे।

बहुभाषी कहानी-पाठ

13 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता उर्दू लेखक सैयद मोहम्मद अशरफ़ ने की। इस सत्र में प्रख्यात ओड़िआ लेखिका इति सामंत ने अपनी कहानी के हिंदी अनुवाद 'पति-पत्नी', हिंदी के प्रख्यात लेखक हरि भटनागर ने 'भय' कहानी, तेलुगु के प्रख्यात लेखक मो. खादीर बाबु ने अपनी कहानी के अंग्रेज़ी अनुवाद 'सेल्फ़ी', प्रख्यात तमिऴ बाल कथाकार को.मा.को. एलंगो ने अपनी कहानी के अंग्रेज़ी अनुवाद 'मिरेकल इन द डीप सी' का पाठ किया। सत्राध्याक्ष सैयद मोहम्मद अशरफ़ ने 'दुआ' कहानी का पाठ किया।

21वीं सदी की भारतीय कविता : कविता-पाठ

13 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

श्री के.जयकुमार के साथ सत्र के अन्य प्रतिभागी

'21वीं सदी की भारतीय कविता : कविता-पाठ' कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात मलयाळम् और अंग्रेज़ी लेखक के. जयकुमार ने कहा कि कविता हमेशा जीवन का प्रतिबिंब होती है तथा कविता आपके जीवन के अनुभवों, अंतर्मन के विचारों से उत्पन्न होती है। इस सत्र में बाङ्ला कवि बिभास रॉय चौधुरी, डोगरी कवि निर्मल विनोद, अंग्रेज़ी कवयित्री अमिता राय, हिंदी कवि बोधिसत्व, कन्नड कवयित्री जयश्री कंबार, कश्मीरी कवयित्री सुनीता रैणा पंडित तथा उर्दू ग़ज़लकार फारूक़ इंजीनियर ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

21वीं सदी की भारतीय कविता : कविता-पाठ

13 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

'21वीं सदी की भारतीय कविता' शीर्षक के अंतर्गत आयोजित कवि सम्मिलन की अध्यक्षता मृत्युंजय सिंह ने की। अध्यक्ष के रूप में उन्होंने कहा कि 21वीं सदी की कविता अपनी समावेशिता और विविधता से चिह्नित है। विभिन्न जातीयताओं, लिंगों, यौन रुझानों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कवि शैली की पारंपरिक सीमाओं को नष्ट कर रहे हैं। इमरान हुसैन (असमिया), प्रवाल कुमार बसु (बाङ्ला), नेहा आर. कृष्णा (अंग्रेज़ी), कल्पना दूधल (मराठी), गजेसिंह राजपुरोहित (राजस्थानी), मोहिनी हिंगोराणी (सिंधी), अन्नावरम देवेंद्र (तेलुगु) तथा निज़ाम सिद्दीक़ी (उर्दू) ने अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ पढ़ीं और कुछ कवियों ने अपनी कविताओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद भी पढ़ा।

नई दिल्ली

भारत को जोड़ना : कहानी-पाठ

13 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

डॉ. यशोधारा मिश्र के साथ सत्र के अन्य प्रतिभागी

'भारत को जोड़ना' के अंतर्गत आयोजित बहुभाषी कहानी-पाठ की अध्यक्षता प्रसिद्ध ओड़िआ लेखिका और संपादक यशोधारा मिश्र ने की। इस सत्र में अमर मुदि (बाङ्ला) ने अपनी कहानी का अंग्रेज़ी अनुवाद 'लेट्स डाँस सुरूल', उर्मिला शिरीष (हिंदी) ने 'यात्रा' शीर्षक कहानी तथा पी. भूपथी (तमिळ) ने अपनी कहानी के अंग्रेज़ी अनुवाद 'स्टोन स्टैच्यू वेटिंग' का पाठ किया। अध्यक्ष के रूप में यशोधारा मिश्र ने एक कहानी के हिंदी अनुवाद 'हर दिन का चेहरा' का पाठ किया।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

बहुभाषी कवि सम्मिलन के एक अन्य सत्र की अध्यक्षता सुरेश ऋतुपर्ण ने की, जिसमें ब्रजेंद्र त्रिपाठी (हिंदी), नसीम शेफ़ाई (कश्मीरी), रंजन कुमार दास (ओड़िआ), सरबजीत सोहल (पंजाबी), टी. विष्णुकुमारन (तमिळ), नंदिनी सिद्दा रेड्डी (तेलुगु) तथा मोहम्मद जमशेद (उर्दू) ने अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ पढ़ीं तथा उनका अंग्रेज़ी/हिन्दी में अनुवाद भी प्रस्तुत किया। ऋतुपर्ण जी ने हिंदी में अपनी कुछ कविताएँ सुनाकर सत्र का समापन किया।

आदिवासी कवि सम्मिलन

13 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

उषाकिरण आत्राम (गोंडी) की अध्यक्षता में संपन्न सत्र में सखाराम दाखोरे (आंध), पुष्पा गावित (भिलोरी), धनीराम नाग (ध्रुव), बखियामोन रिंजाह (खासी) तथा ललवनत्लुआंगा चौंगथू (मिज़ो) ने सत्र में अपनी-अपनी भाषाओं में अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं तथा उनका हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया। श्रीमती उषाकिरण आत्राम (गोंडी) ने अपनी कुछ कविताओं के हिंदी अनुवाद के पाठ के साथ सत्र का समापन किया।

नई दिल्ली

'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

14-16 मार्च 2024, तिरुवल्लुवर सभागार, नई दिल्ली

(बाएँ से दाएँ) डॉ. के. श्रीनिवासराव, प्रो. हरीश त्रिवेदी, श्री माधव कौशिक, प्रो. कुमुद शर्मा तथा प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने दिया, उन्होंने आज़ादी के बाद लिखे गए भारतीय साहित्य का संक्षिप्त विवरण देते हुए कहा कि आज़ादी के बाद बड़ी संख्या में महिला और दलित लेखिकाओं का उदय हुआ है। इस अवधि में प्रिंटिंग प्रेस और उनके कार्यों की गुणवत्ता में कई गुना सुधार से लेकर ई-पुस्तकों और ऑडियो पुस्तकों के आगमन तक बड़े बदलाव देखे गए हैं। प्रौद्योगिकी और साहित्य का चोली-दामन का साथ रहा और अंग्रेज़ी प्रकाशनों तथा अंग्रेज़ी अनुवादों की भूमिका ने भारतीय साहित्य को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रख्यात अंग्रेज़ी विद्वान प्रो. हरीश त्रिवेदी ने उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय साहित्य भारत को एक सूत्र में बाँधे रखता है। पिछले 50-60 वर्षों में अनेक परिवर्तन हुए जिनका प्रभाव भारतीय साहित्य पर भी पड़ा। बीज भाषण प्रख्यात हिंदी कवि, लेखक और साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया। उन्होंने कहा कि साहित्य का शाश्वत मूल्य है। देश का विभाजन अत्यंत दुखद था। यह हर जगह दर्द, आँसू, पीड़ा और विनाश लेकर आया। उन्होंने भारतीय साहित्य में भारतीयता, मार्क्सवाद और आधुनिकता की समझ, बेचैनी का साहित्य, साहित्य की स्वायत्तता जैसे विभिन्न मुद्दों को भी छुआ। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में भारतीय भाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य में आए क्रमिक परिवर्तनों के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बाद के युग में डायरी, रिपोर्ट, आत्मकथा जैसी साहित्यिक विधाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने मंच पर उपस्थित

(बाएँ से दाएँ) प्रो. शाफ़े क़िदवई, श्री गोविंद मिश्र, श्री रमाकांत पांडे तथा प्रो. महेंद्र पी. लामा

नई दिल्ली

सभी गणमान्य व्यक्तियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी लेखक एवं अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक गोविंद मिश्र ने की। इस सत्र में प्रो. महेंद्र पी. लामा ने स्वतंत्रता के बाद के नेपाली साहित्य पर राष्ट्रवाद के प्रभाव, क्षेत्रवाद के दावे, पहचान और अलगाव के मुद्दों, क्षेत्रवाद तथा राष्ट्रवाद के बीच साहित्यिक इंटरफेस, महिला लेखकों के योगदान, नई साहित्यिक शैलियों तथा अवधारणाओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

प्रो. शाफ़े क़िदवई ने विगत सात दशकों में उर्दू साहित्य के विकास पर बात की। उन्होंने कथा साहित्य के उत्थान के साथ-साथ उर्दू शायरी और साहित्यिक आलोचना के विकास पर भी अपने विचार व्यक्त किए।

रमाकांत पांडे ने विगत सात दशकों में संस्कृत साहित्य की स्थिति पर बात की। उन्होंने संस्कृत कविता, कहानियों तथा नाटकों के पुनरुत्थान के साथ-साथ संस्कृत साहित्य की महाकाव्य परंपरा पर प्रकाश डाला। सत्र के अध्यक्ष गोविंद मिश्र ने स्वतंत्रता के बाद के

व्याख्यान देते हुए प्रो. शाफ़े क़िदवई

भारतीय साहित्य पर अपने विचार साझा करते हुए, प्रेमचंद के उपन्यासों, प्रख्यात हिंदी लेखक जैनेंद्र कुमार की पुस्तकों, रामधारी सिंह दिनकर की संस्कृति के चार अध्याय, निर्मल वर्मा की *अंतिम अरण्य,* जयशंकर प्रसाद की *कामायनी* तथा भीष्म साहनी की *तमस* के बारे में बात की जो भारत की आज़ादी के बाद विभाजन की कहानी का भयावय चित्रण प्रस्तुत करती है। पी. पी. रवीन्द्रन ने 'साउथर्न डिलाइट्स' पर द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की। बी. तिरुपति राव ने पिछले सत्तर वर्षों में तेलुगु साहित्य के विकास में गहनता से अध्ययन किया, विभिन्न चरणों तथा कथा के महत्त्वपूर्ण रुझानों के माध्यम से इसकी बहुमुखी यात्रा पर प्रकाश डाला, जिसमें आलोचनात्मक यथार्थवाद, राष्ट्रवाद, रूमानियत, तर्कवाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद तथा क्रांति शामिल हैं। एम.एस. आशा देवी ने कहा कि विगत सात दशकों का कन्नड साहित्य, मोटे तौर पर भारतीय बहुलता के साथ संवाद रहा है।

संगोष्ठी का तृतीय सत्र "बीसवीं शताब्दी का भक्ति साहित्य" पर केंद्रित था। इसकी अध्यक्षता प्रोफ़ेसर एच.एस. शिव प्रकाश ने की तथा श्री अनिंद्य शेखर पुरकायस्थ, श्री अवतार सिंह और डी. रामकृष्ण ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

श्री अनिंद्य शेखर पुरकायस्थ ने अपने आलेख में रवींद्रनाथ ठाकुर तथा काज़ी नज़रुल इस्लाम की काव्य दुनिया के बारे में विस्तार से बताया, जो बंगाल के दो ऐसे महान साहित्यिक व्यक्तित्व हैं, जिनमें हम भक्ति या वैष्णव दर्शन या अविभाज्य ईश्वरीय प्रेम और पारस्परिक भक्ति की विधर्मी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव देख सकते हैं।

श्री अवतार सिंह ने उत्तर भारत में 20वीं शताब्दी के भक्ति साहित्य पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री डी. रामकृष्ण का आलेख भक्ति, कर्मकांड और जाति व्यवस्था की अस्वीकृति,

प्रो. एच.एस. शिव प्रकाश के साथ कार्यक्रम के प्रतिभागी

स्थानीय भाषाओं का प्रयोग, गुरु की भूमिका, व्यक्तिगत अनुभव का महत्त्व, संगीत तथा कविता का प्रयोग, दक्षिण भारत के भक्ति साहित्य की सामान्य विशेषताओं पर आधारित था। उन्होंने कहा कि इस सत्र का विषय हमें भक्ति साहित्य को फिर से परिभाषित करने के लिए निमंत्रित करता है। भक्ति साहित्य की पूरी प्रक्रिया सिर्फ़ 20वीं सदी तक सीमित नहीं है। उन्होंने भक्ति शब्द के अर्थ पर अपने विचार व्यक्त किए। महान भक्ति कवि नकलची नहीं थे बल्कि वे नवप्रवर्तक थे। उन्होंने भारतीय साहित्य में टैगोर, बेंद्रे, कुवेम्पु तथा अंडाल के स्थान का भी उल्लेख किया। आधुनिक समय में भक्ति साहित्य की भूमिका कम होने लगी है किंतु भक्ति में अभी भी स्वयं को नवीनीकृत करने की क्षमता है, जो सदियों से हो रही है।

'स्वतंत्रता के बाद का भारतीय साहित्य' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 'पश्चिमी यात्रा' शीर्षक के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता भाग्येश झा ने की। कैलाश दौंड ने कहा कि 'स्वतंत्रता के बाद मराठी साहित्य के विषय और शैली में काफी बदलाव और विकास हुआ है। उन्होंने मराठी साहित्यिक विधाओं के विकास और उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों पर बात की।

हसित मेहता ने गुजराती साहित्य के विगत सात दशकों में विकसित हुई साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों के पहलुओं के साथ-साथ उनके विकास के पीछे काम करने वाले कारकों पर भी प्रकाश डाला। किरण बुडकुले ने विगत सात दशकों में कोंकणी साहित्य के उत्थान पर बात की। मेनका शिवदासानी ने कहा कि अनगिनत चुनौतियों के बावजूद, भारत में सिंधी साहित्य अपनी पकड़ बनाए हुए है, यह सात दशकों में विस्थापन, स्क्रिप्ट पर संघर्ष और घटती पाठक संख्या समेत अन्य मुद्दों के बीच अपनी राह बना रहा है। अरविन्द आशिया ने कहा कि राजस्थानी साहित्य ने औपचारिक आकार मध्यकाल में लिया जब जैन साहित्य और चारण साहित्य काव्य का प्राथमिक रूप बन गए तथा इसकी जड़ें 11वीं शताब्दी से पाई जा सकती हैं, जब मारू-गुर्जरी एक भाषा के रूप में विकसित होने लगी। विद्या कामत ने विगत सात दशकों में पश्चिमी भारत की मौखिक और जनजातीय कथाओं पर बात की। उन्होंने कहा कि आदिवासी सांस्कृतिक पैटर्न, जिसे पूरे उपनिवेश में विचिक कथाओं और प्रदर्शनों के रूप में संरक्षित किया गया था, ने गोवा के सांस्कृतिक इतिहास और पहचान को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पंचम सत्र की अध्यक्षता मालाश्री लाल ने की। लीना चंदोरकर ने एक सार्वजनिक बुद्धिजीवी के रूप में इरावती कर्वे पर विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि उन्होंने समाजशास्त्री-सह-मानवविज्ञानी के रूप में कार्य किया तथा वे सदैव अपनी भारतीय विरासत के प्रति सच्ची रहीं। रक्षंदा जलील के आलेख का विषय था - 'उर्दू में प्रगतिशील लेखक आंदोलन महिला कवयित्रियों को सृजित करने में विफल क्यों रहा?'

रेखा सेठी ने 'नारीवादी आख्यान तथा पितृसत्तात्मक आधिपत्य से मुकाबला' विषयक आलेख में कहा कि नारीवादी आख्यान का अर्थ आवश्यक रूप से महिलाओं द्वारा लिखे गए आख्यान नहीं हैं, बल्कि महिलाओं के पक्ष में लिखा गया साहित्य, महिलाओं के प्रति सहानुभूति तथा संवेदनशीलता से भरा साहित्य है। उन्होंने कहा कि पितृसत्ता के बाहर महिला साहित्य और नारीवादी आख्यानों को पढ़ना भी महत्त्वपूर्ण है।

मालाश्री लाल ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि महिला और शक्ति दो स्तरों पर काम करती है एक विधायी परिवर्तन के सार्वजनिक क्षेत्र में तथा दूसरा निजी क्षेत्र में मौन क्रांतियों में जो अक्सर साहित्य में व्यक्त होती हैं।

षष्ठ सत्र में, प्रोफ़ेसर राणा नायर ने अपने आलेख में पंजाबी समालोचनात्मक विमर्श पर इतिहास के माध्यम से बात की। शाद रमज़ान ने अपने आलेख में कहा कि कश्मीरी साहित्य की यात्रा केवल एक कालानुक्रमिक प्रगति नहीं है, बल्कि सामाजिक बदलाव, सांस्कृतिक सम्मेलन तथा कश्मीरी लोगों की लचीली भावना का सूक्ष्म प्रतिबिंब है।

महेश शर्मा ने 'विगत सात दशकों में उत्तरी भारत की मौखिक तथा जनजातीय कथाएँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनके लिए, स्वतंत्रता के बाद आदिवासी समुदायों की धारणा और मुख्यधारा में भारी बदलाव आया।

बद्री नारायण ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि विगत सत्तर वर्षों में भारतीय साहित्य में बहुत कुछ घटित हुआ है। बहुत सारे साहित्यिक आंदोलन हुए हैं, जैसे दलित आंदोलन, नई कहानी आंदोलन, नई कविता आंदोलन, पहचान के लिए आंदोलन आदि। समय बदलने के साथ-साथ आख्यान भी बदलते हैं, वे कभी स्थिर नहीं रहे। सप्तम सत्र की अध्यक्षता शरणकुमार लिम्बाले ने की। उन्होंने स्वतंत्रता से लेकर 20वीं सदी तक के दलित साहित्य का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया, जिसमें उन्हें दयनीय स्थिति में रहने के लिए

नई दिल्ली

विवश किया गया, उन पर जो अत्याचार हुए, वे और उनके साथ होने वाला सामाजिक भेदभाव शामिल था। उन्होंने भारतीय संविधान के निर्माता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की भूमिका की सराहना की, जिन्होंने समानता, सामाजिक न्याय और भारत के सभी नागरिकों के मौलिक अधिकारों का मंत्र दिया।

इस सत्र में, पी. शिवकामी ने आधिपत्य का सामना करने तथा वैकल्पिक प्रतिमान बनाने पर बात की। उन्होंने कुछ प्रमुख उपन्यासों के संदर्भ में साहित्य में प्रतिबिंबित वर्चस्ववादी ताकतों या विचारों का उल्लेख किया।

श्योराज सिंह बेचैन ने कहा कि दलित साहित्य अब केवल अस्मिता का साहित्य नहीं रह गया है। यह साहित्य मानवीय पीड़ा और विविधता का शब्दों से भरा इतिहास है।

'चमकता सितारा : साहित्य और शिक्षा में तकनीकी की बढ़ती हुई भूमिका' विषयक अष्ठम सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए देबाशीष चटर्जी ने कहा कि शिक्षा और साहित्य में प्रौद्योगिकी की बढ़ती भूमिका विचारों की नई वृद्धि साबित हुई। उन्होंने संबंध का तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र, संबंध की संस्था, तथा संबंधों के बदलते नियमों आदि पर अपने विचार व्यक्त किए। निर्मला मेनन ने बताया कि किस प्रकार तकनीक लेखक/पाठक विभाजन को कम कर

कार्यक्रम के प्रतिभागी

रही है। अपने आलेख में, उन्होंने 'डिजिटल मानविकी' शब्द तथा भारत में डिजिटल मानविकी में अनुसंधान के उभरते क्षेत्रों पर प्रकाश डाला।

राजकिशोर नाथ ने 'कृत्रिम बुद्धि, 'लेखक' रहित साहित्य और प्रगति' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि कृत्रिम, ग़ैर-जैविक प्रणाली ऐसी वस्तु हो सकती है जो न केवल हमारी रोज़मर्रा की समस्याओं को हल करने के लिए जटिल कार्यक्रमों का निर्माण करे बल्कि मशीनों में मानसिकता को भी पुन: प्रस्तुत कर सकती है।

सुश्री तन्वी चौधरी ने मानविकी शिक्षा पर बात की और बताया कि किस प्रकार प्रौद्योगिकी इसे बदलने में मदद कर सकती है। उनके आलेख का विषय था - 'मानविकी शिक्षा, और तकनीक किस प्रकार इसे परिवर्तित करने में सहयोग कर सकती है'। यह आलेख चित्रा देवकरुनी बनर्जी कृत 'एन अनकॉमन लव' तथा अमीश त्रिपाठी कृत 'रामचंद्र शृंखला' आदि प्रसिद्ध लेखकों तथा उनकी पुस्तकों पर विगत तीन वर्षों पर किया गया एक नृवंशवैज्ञानिक विश्लेषण था।

नवम सत्र 'भारतीय अंग्रेज़ी लेखन और अनुवाद : वैश्विक क्षेत्र पर विजय पाने के लिए भारत को सशक्त बना रहे हैं' विषय पर आधारित था।

सत्र की अध्यक्षता अंग्रेज़ी की प्रख्यात लेखिका और विद्वान डॉ. सुकृता पॉल कुमार ने की। स्वतंत्रता के बाद के भारतीय साहित्य, विशेषकर अंग्रेज़ी पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि अंग्रेज़ी औपनिवेशिक आकाओं की भाषा रही है; अभिजात वर्ग की भाषा; भारतीय रचनात्मक लेखक जानबूझकर अंग्रेज़ी भाषा को भारत की एक भाषा के रूप में अपनाना चाहते थे।

इस सत्र में ओम द्विवेदी ने अनुवाद के माध्यम से वैश्विक पटल पर भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के चित्रण पर बात की। उनके आलेख का विषय था - 'भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं को वैश्विक क्षेत्र में अनुवाद के माध्यम से चित्रित करना'। उन्होंने कहा कि उपनिवेशवाद की बुराइयों और चोटों को शायद ही गिनाने की ज़रूरत है - वे व्यापक, बहुआयामी, गहरी पहुँच वाली और लंबे समय तक चलने वाली हैं। हालाँकि, औपनिवेशिक मानसिकता उत्तर-औपनिवेशिक दुनिया में काम करना जारी रखती

प्रो. सुमन्यु सत्पथी, डॉ. सुकृता पॉल कुमार, डॉ. ओम द्विवेदी तथा सुश्री सीमा शर्मा

नई दिल्ली

सुश्री ममंग दई के साथ कार्यक्रम के प्रतिभागी

है, भले ही अलग-अलग तरीकों और रूपों में। सीमा शर्मा ने 'अंग्रेज़ी में भारतीय स्त्री लेखन सशक्तिकरण के एक उपकरण के रूप में' विषय पर अपने आलेख में उन महिला लेखकों के कार्यों का विश्लेषण किया जिन्होंने अंग्रेज़ी को अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में चुना। उन्होंने उन तरीकों पर प्रकाश डाला, जिनसे ये लेखिकाएँ स्वतंत्रता के बाद के राष्ट्र-राज्य की ज्ञानमीमांसीय और संस्थागत संरचनाओं में अंतर्निहित पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रहों पर संवाद करती हैं। यह उनके लेखन को सशक्तिकरण के एक उपकरण के रूप में भी दर्शाता है क्योंकि वे घरेलू और सार्वजनिक दोनों स्थानों में संरचनात्मक असमानताओं पर बातचीत करने के लिए पीड़ित छवियों से परे जाती हैं।

सुमन्यु सत्पथी ने 'अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन : एक भाषा में बहुभाषी स्वर' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनका मत था कि भारतीय अंग्रेज़ी लेखकों की पहली श्रेणी महानगरीय केंद्रों से संबंधित थी। अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन की दूसरी श्रेणी में अंतर्देशीय प्रवासी लेखकों, भारतीय राष्ट्र राज्य के भीतर 'प्रवासी' के कम सैद्धांतिक कार्य शामिल हैं। अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन की तीसरी श्रेणी अर्ध-शहरी मुफस्सिल कस्बों में स्थित है। उन्होंने इन लेखकों के साथ-साथ उनके कार्यों के बारे में भी विस्तार से बात की।

दशम सत्र का विषय था - 'उत्तर-पूर्व का सौंदर्य और प्रतिभा'। सत्र की अध्यक्षता ममंग दई ने की। उन्होंने विगत सत्तर वर्षों के दौरान देश के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में भाषाओं और मौखिक परंपराओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मौखिक कथाओं, लोक साहित्य, लोक गीतों, उत्तर पूर्व के लोगों की संस्कृति पर विचार-विमर्श करना अतीत को फिर से देखने जैसा है।

सत्र में प्रदीप ज्योति महंत ने असमिया साहित्य के विगत सात दशकों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने इस युग में अनूदित साहित्य के साथ-साथ साहित्यिक उप-शैलियों के विकास पर भी प्रकाश डाला। अनिल बर' ने 'विगत सात दशकों में असमिया साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उस समय की साहित्यिक उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा की। ख. कुंजो सिंह ने 'विगत सात दशकों में मणिपुरी साहित्य' विषय पर अपने आलेख में कहा कि आलोचना के भारतीय और पश्चिमी सिद्धांतों को एकीकृत करने का प्रयास, मणिपुरी साहित्यिक आलोचना को अधिक बढ़ाएगा। ज्योतिर्मय प्रधानी ने 'विगत सात दशकों में उत्तर-पूर्वी भारत के मौखिक आख्यान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

एकादश सत्र 'पूर्वी प्रकाश' विषय पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता उदय नारायण सिंह ने की। उन्होंने कहा कि जहाँ तक हमारी भाषाओं का प्रश्न है, पूर्वी क्षेत्र में विगत कई वर्षों में वास्तव में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। दूर-दराज़ के इलाकों में पुस्तकों की बिक्री तथा पाठकों की संख्या बढ़ रही है और यह बहुत महत्त्वपूर्ण और सार्थक है। उन्होंने संक्षेप में कहा कि इन भाषाओं में महिला लेखकों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस सत्र में चैतन्य प्रसाद माझी ने विगत सात दशकों में संताली साहित्य पर बात की। उन्होंने इस युग के संताली साहित्य का दशकवार विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिसमें उप विधाओं के प्रमुख लेखकों और ग्रंथों, साहित्यिक पत्रिकाओं, साहित्यिक आंदोलनों के साथ-साथ अन्य प्रासंगिक विवरण भी शामिल थे। चिन्मय गुहा ने विगत सात दशकों के बाङ्ला साहित्य पर बात की। उन्होंने इस युग के प्रमुख लेखकों के बारे में बात की, जिन्होंने विभिन्न

नई दिल्ली

(बाएँ से दाएँ) प्रो. चिन्मय गुहा, श्री चैतन्य प्रसाद माझी, प्रो. उदय नारायण सिंह, प्रो. जतींद्र कुमार नायक तथा डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र

साहित्यिक विधाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। उन्होंने उन लेखकों पर प्रभाव की प्रकृति और उनके लेखन के ऐतिहासिक संदर्भ का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया। जतींद्र कुमार नायक ने विगत सात दशकों के ओड़िआ साहित्य पर बात की। उन्होंने इस शैली के ओड़िआ साहित्य की कई उप-शैलियों का उनके विशिष्ट पहलुओं के साथ विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। महेंद्र कुमार मिश्र ने 'विगत सात दशकों में पूर्वी भारत के मौखिक और आदिवासी आख्यान' पर बात की। भारत में मौखिक परंपरा लोगों की सामूहिक स्मृति के माध्यम से समय और घटनाओं, पात्रों तथा इतिहास की यात्रा को देखती है। मौखिकता अपने गीतों, कहानियों, मिथकों तथा मौखिक महाकाव्यों में समय और स्थान के इतिहास को दर्ज करती है। भारतीय रचनात्मकता में आदिवासी मौखिक आख्यानों की प्रकृति ने सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों के बावजूद अपनी परंपरा को जारी रखा किंतु वास्तविकता को सामूहिक स्मृति में कैद कर लिया।

आमने-सामने

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 पुरस्कार विजेता लेखकों की प्रख्यात लेखकों/विद्वानों से बातचीत

14 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

प्रो. जी.जे.वी. प्रसाद तथा नीलम सरन गौड़

इस कार्यक्रम में प्रख्यात विद्वान एवं लेखक प्रो. जी.जे.वी. प्रसाद ने अंग्रेज़ी में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता लेखिका नीलम सरन गौड़ के साथ बातचीत की।

जब प्रो. प्रसाद ने उनके लेखन के पीछे काम करने वाली प्रेरणाओं, उनकी यादों, उन मुद्दों के बारे में पूछताछ की, जिन्होंने उनके जीवन के साथ-साथ उनके लेखन को भी प्रभावित किया, तो उन्होंने दर्शकों के समक्ष अपने विचार व्यक्त किए।

सत्र के दौरान प्रो. गौड़ का प्रारंभिक जीवन और उनकी साहित्यिक यात्रा अपनी पूरी भव्यता के साथ दर्शकों के सामने प्रकट हुई।

नई दिल्ली

अमृत गंगर तथा विनोद जोशी

इस सत्र में, प्रख्यात विद्वान अमृत गंगर ने गुजराती में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता लेखक विनोद जोशी के साथ बातचीत की। अपनी पुस्तकों की उत्पत्ति, उनमें प्रयुक्त भाषा शैली, विषयों की पसंद के कारणों तथा ऐसे अन्य मुद्दों के बारे में प्रश्नों के प्रतिउत्तर में, विनोद जोशी (गुजराती) ने दर्शकों के समक्ष अपने मन का खुलासा किया। इन दोनों विद्वानों के बीच इस अंतरंग बातचीत के कारण, लेखक की कल्पना के अनुसार, हमारे दैनिक मामलों के महत्त्व के साथ-साथ महाकाव्य पात्रों का एक अनूठा विश्लेषण सामने आया।

संजीव तथा अशोकपुरी गोस्वामी

जब उनसे उस प्रेरणा के बारे में पूछा गया जिसने उन्हें लेखन के लिए प्रेरित किया, तो संजीव (हिंदी) ने यादगार क़िस्सों के साथ दर्शकों के आगे खुलकर बात की। कविता से शुरू होकर उपन्यासों तक पहुँची अपनी साहित्यिक यात्रा के पथ के संबंध में एक प्रश्न के उत्तर में, संजीव ने विभिन्न साहित्यिक विधाओं के विभिन्न आयामों के साथ-साथ उनके महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। जैसे ही अशोकपुरी गोस्वामी ने विषयों की पसंद और लेखन शैली के बारे में पूछताछ की, संजीव ने उनके जीवन और साहित्यिक करियर के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत विचार-विमर्श प्रस्तुत किया।

आशुतोष परिड़ा तथा संग्राम जेना

आशुतोष परिड़ा (ओड़िआ) ने दर्शकों को अपने लेखन की उत्पत्ति के साथ-साथ उन प्रेरणाओं के बारे में बताया जिन्होंने उन्हें लेखन की ओर प्रेरित किया। परिड़ा द्वारा कल्पित कविता की प्रकृति का अनावरण संग्राम जेना द्वारा उनके समक्ष रखे गए प्रश्नों की शृंखला के उत्तर में किया गया था। पूछे जाने पर, परिड़ा ने जन आंदोलनों के प्रति अपने दृष्टिकोण और भारत की संस्कृति और साहित्य पर उनकी भूमिका के बारे में भी अपना मन खोला। जैसे-जैसे प्रश्नों की शृंखला को उपयुक्त उत्तर मिले, परिड़ा का जीवन और कार्य अपने सभी रंगों के साथ दर्शकों के सामने प्रकट हो गए।

त. पतंजलि शास्त्री तथा छाया मोहन

जब त. पतंजलि शास्त्री (तेलुगु) ने प्रश्नों का उत्तर दिया तो दर्शकों को शुरू से ही प्रख्यात साहित्यकार से उनके आरंभिक जीवन के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण के साथ-साथ आम जनता में साहित्य की स्वीकार्यता के बारे में बात की। उन्होंने उन कारकों पर भी बात की जिन्होंने उन्हें प्रभावित किया। उन्होंने ऐसे अन्य मुद्दों से जुड़े प्रश्नों के उत्तर देने के साथ-साथ आम लोगों की समाज के प्रति भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

नई दिल्ली

बहुभाषी कवि सम्मिलन

14 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

'बहुभाषी कवि सम्मिलन' शीर्षक से आयोजित सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित अवधी कवि राम बहादुर मिश्र ने की। इस सत्र में शरद धनगर (ख़ानदेशी), दीनबंधु पंडा (कोशली-संबलपुरी), कलाचंद महाली (महाली), नामदेव विठ्ठल गवली (मालवनी), वीरेंद्र कुमार महतो (नागपुरी) तथा अशोक कोली (तावडी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। अन्य भाषाओं के कवियों ने अपनी कविताओं की प्रस्तुति हिंदी/ अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ की। अध्यक्षता कर रहे कवियों ने पठित कविताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी करने के साथ अपनी कविताओं का पाठ भी किया।

"पुस्तकों से रील तक तथा रील से पुस्तकों तक : सिनेमा और साहित्य की अंतरक्रिया"

14 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

प्रतिभागियों के साथ श्री अरुण खोपकर

वाल्मीकि सभागार में "पुस्तकों से रील तक तथा रील से पुस्तकों तक : सिनेमा और साहित्य की अंतर्क्रिया" जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर प्रख्यात सिने समालोचक अरुण खोपकर की अध्यक्षता में अजित राय, अतुल तिवारी, मुर्तज़ा अली, निरुपमा कोतरु, रत्नोत्तमा सेनगुप्ता तथा त्रिपुरारी शरण ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। अजित राय ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह ज़रूरी नहीं कि अच्छे साहित्य पर अच्छी ही फ़िल्म बने या फिर खराब साहित्य पर ख़राब फ़िल्म ही बने। सिनेमा एक अलग विधा है इसलिए साहित्य को उसके अनुसार ढलने की आवश्यकता है। अतुल तिवारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि सिनेमा एक नई विधा है, किंतु उसने अपनी ताकत परंपरा से भी प्राप्त की है। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य को सिनेमा की भाषा में ढलना होगा तभी दोनों के संबंध एक दूसरे के लिए पूरक होंगे। मुर्तज़ा अली ने कई विदेशी फ़िल्मों के साहित्यीकरण के उदाहरण देते हुए बताया कि अमूमन लेखक और निर्देशक के बीच सहमति और असहमति की स्थिति बनी रहती है।

निरुपमा कोतरु ने श्याम बेनेगल का उदाहरण देते हुए कहा कि साहित्यिक कृति को सम्मानजनक तरीके से फ़िल्माने के लिए अच्छे निर्देशक की ज़रूरत होती है। रत्नोत्तमा सेन गुप्ता ने कहा कि सिनेमा जहाँ डायलाग का माध्यम है, वहीं साहित्य विस्तार का। जिस प्रकार से रंगमंच को साहित्य में समाहित होने के लिए लंबा समय लगा, वैसे ही सिनेमा को साहित्य का हिस्सा बनने के लिए अभी समय लगेगा। त्रिपुरारी शरण ने कहा कि पॉपुलर साहित्य और आर्ट का झगड़ा हमेशा चलता रहा है। किंतु यह एक दूसरे के पूरक हैं और हमेशा मिलकर काम करते रहेंगे। अंत में, परिचर्चा सत्र के अध्यक्ष अरुण खोपकर ने कहा कि एक नई विधा के रूप में सिनेमा ने बहुत जल्दी ही साहित्य सहित अन्य विधाओं को भी अपने अंदर बहुत जल्दी समाहित कर लिया है। सिनेमा जहाँ अन्य विधाओं से ले रहा है तो वहीं अन्य विधाओं को कुछ दे भी रहा है। फ़िल्मों ने एक नई भाषा को भी जन्म दिया है। इस परिचर्चा में पटकथा को साहित्य मानने पर भी विचार-विमर्श हुआ।

अतुल तिवारी ने इस संदर्भ में गुलज़ार की पहल और अपनी फिल्मों की स्क्रिप्ट को *मंज़र नामा* नाम से प्रकाशित करने के बारे में बताया। रत्नोत्तमा और त्रिपुरारी शरण ने इसे व्यवसाय बढ़ाने के लिए एक पूरक प्रक्रिया के रूप में देखा।

नई दिल्ली

लेखन : जुनून या व्यवसाय ?

14 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

श्री जीत थायिल के साथ सत्र के प्रतिभागी

इस सत्र की अध्यक्षता जीत थायिल ने की। आशीष चक्रवर्ती, अजय सिंह चौहान, आशुतोष अग्निहोत्री, प्रिया नायर, राहुल सैनी, सीमा जैन तथा तजिंदर सिंह लूथरा ने इस सत्र में लेखक के रूप में अपने अनुभव पर चर्चा की। चक्रवर्ती ने कला और वाणिज्य के बीच संघर्ष को संबोधित किया। अजय सिंह चौहान ने लेखन के संदर्भ में आत्म-संदेह के बारे में बात की। आशुतोष अग्निहोत्री ने लेखन को मानवता की आकांक्षा बताया।

नायर ने पाठकों को विकसित करने की आवश्यकता व्यक्त की। सीमा जैन ने सामाजिक सुधार के प्रति लेखकों के जुनून के बारे में बात की। तजिंदर सिंह लूथरा ने जुनून के संकेतकों पर प्रकाश डाला। राहुल सैनी ने व्यावसायीकरण के बाद जुनून को पुन: खोजने के बारे में बात की। अध्यक्ष ने लेखकों के बीच समावेशिता के महत्त्व पर बल दिया।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की कौन सी सीमाएँ उचित हैं?

14 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

अभिव्यक्ति की आज़ादी पर सीमा तय करने के मुद्दे पर हमेशा बहस होती रही है। यहाँ तक कि अभिव्यक्ति की इस स्वतंत्रता पर सीमाएँ लगाने के विचार को भी औचित्य के प्रश्न का सामना करना पड़ा। इसलिए, इस विवादास्पद मुद्दे को इस सत्र का विषय बनाया गया जिसकी अध्यक्षता बी.पी. सिंह ने की। इस सत्र में नलिनी, राजीव रंजन नाग, एस.ए.वी. प्रसाद राव तथा शोभना नारायण ने इस बहस के निर्धारण कारकों पर प्रकाश डाला। नलिनी ने दावा किया कि नैतिक उन्नति के लिए अभिव्यक्ति को सीमित किया जा सकता है। राजीव रंजन नाग ने प्रेस की स्वतंत्रता की सीमा और मीडिया के लिए संवैधानिक सुरक्षा की कमी पर बल दिया। एस.ए.वी. प्रसाद राव ने लेखकों के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के महत्त्व को व्यक्त किया। नारायण ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए स्वागत महत्त्वपूर्ण है। अध्यक्ष ने इस बात पर बल दिया कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सर्वोपरि अधिकार है तथा लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है।

भारत की साहित्यिक विरासत

14 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

बल्देव भाई शर्मा ने 'भारत की साहित्यिक विरासत' विषयक सत्र की अध्यक्षता की। जैसा कि विषय से संकेत मिलता है, इस सत्र में भारत की विरासत में योगदान देने वाले साहित्यिक रत्नों के महत्त्व पर चर्चा हुई। अनिंदिता बंद्योपाध्याय ने भारतीय मौखिक साहित्यिक परंपराओं के महत्त्व पर बल दिया। गौरहरि दास ने ओड़िआ साहित्य के ऐतिहासिक महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा ओड़िआ की तीन कालजयी कृतियों लक्ष्मीपुराण (बलराम दास), स्तुति चिंतामणि (भीमा भोई) तथा देउला तोला (पूर्णचंद्र मिश्र) के विशेष संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए। दिगंत विश्व शर्मा ने इस बारे में बात की कि राष्ट्रीय साहित्य का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाना चाहिए। उन्होंने महर्षि श्री अरविंद के विचारों को संदर्भित करते हुए अपनी बात रखी। शिव कुमार राय ने भारतीय साहित्यिक विरासत को दर्शन का सतत प्रवाह बताया। बल्देव भाई शर्मा ने वेदों को भारतीय साहित्य और बौद्धिकता का स्रोत बताया तथा भारतीय साहित्य की हीनता की औपनिवेशिक धारणा को खारिज करते हुए इसके महत्त्व पर प्रकाश डाला।

नई दिल्ली

मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?

14 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागियों के साथ डॉ. चित्तरंजन मिश्र

'मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?' विषयक सत्र में विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों ने अपनी लेखन प्रक्रिया के बारे में बताया। इनमें बाङ्ला के बिनायक बंद्योपाध्याय, अंग्रेज़ी की नवमालती चक्रवर्ती, हिंदी के पुखराज जांगिड़ तथा विनोद कुमार त्रिपाठी, कन्नड के रमेश एच.आर., कश्मीरी के गौरी शंकर रैणा तथा तमिळ भाषा के वेलमुरुगन एलंगो शामिल थे। प्रख्यात हिंदी लेखक और कवि डॉ. चित्तरंजन मिश्र ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मन में हमेशा कोई न कोई अशांति रहती है जो लेखक को कलम और काग़ज़ का उपयोग करने के लिए उकसाती है।

बहुभाषी कहानी-पाठ

14 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

प्रख्यात कथा लेखक चंद्रकांता ने बहुभाषी कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता की। हिंदी के शरद सिंह, कश्मीरी के मो. अमीन भट, ओड़िआ के विजय नायक, राजस्थानी के मदन लढ़ा तथा तेलुगु भाषा के एम. नरेंद्र ने अपनी कहानियाँ पढ़ीं। पूरे सत्र के दौरान दर्शक हमारे देश में प्रचलित विविध संस्कृतियों के लोकाचार को महसूस करने में सक्षम थे।

भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य

14 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

श्री प्रकाश मनु के साथ सत्र के अन्य प्रतिभागी

'भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य' विषयक सत्र में विभिन्न भाषाओं के प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी भाषाओं में बाल साहित्य की उदासीनता और समस्याओं पर चर्चा की। इनमें चित्रा राघवन, देवेंद्र मेवाड़ी, मधु पंत, मीनाक्षी भरत, पी. मोहन, रजनीकांत शुक्ल तथा ऋषि राज शामिल थे। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रकाश मनु ने कहा कि बच्चों के लिए लिखते समय आयु वर्ग का मनोविज्ञान महत्त्वपूर्ण है।

भारत को जोड़ना : बहुभाषी कहानी-पाठ

14 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

भारत को जोड़ना के अंतर्गत आयोजित कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता विश्व स्तर पर प्रशंसित लेखिका तथा कथाकार अजीत कौर ने की, जिन्होंने स्वयं दिल को छू लेने वाली कहानियाँ लिखी हैं। हिंदी की मंजुला अस्थाना, मलयाळम् की इंदु मेनन, ओड़िआ के सुभ्रांसु पंडा तथा उर्दू भाषा के अब्दुस्समद ने वैश्वीकरण के समय में आधुनिक जीवन की कई समकालीन वास्तविकताओं तथा दुविधाओं पर अपनी कहानियाँ पढ़ीं।

आदिवासी लेखक सम्मिलन

14 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

आदिवासी लेखक सम्मिलन की अध्यक्षता गालो भाषा के प्रतिष्ठित कवि एच.आर. बाडो ने की। बुधु सिंह (भूमिज), हीरा मीणा (मीणा), सुधा अजय सिंह चौहान (राठवी) तथा अनीसा सलिल तडवी (तडवी) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

आदिवासी लेखक

बहुभाषी कवि सम्मिलन

14 मार्च 2024 ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

प्रतिभागियों के साथ श्री सुदर्शन वशिष्ठ

'बहुभाषी कवि सम्मिलन' विषयक सत्र की अध्यक्षता हिंदी हिमाचली के प्रतिष्ठित कवि सुदर्शन वशिष्ठ ने की। इस सत्र में एस.के. पाटील (अहिरानी), शमीम शर्मा (हरियाणवी), परमेश्वरी प्रसाद महतो (कुरमाली), अलखदेव प्रसाद 'अचल' (मगही), दिव्या टोटो (टोटो) तथा अहसान अली बिस्मिल (शीना) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

नई दिल्ली

आदिवासी कवि सम्मिलन

14 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

आदिवासी कवि सम्मिलन सत्र की अध्यक्षता वागरी भाषा की प्रतिष्ठित कवयित्री कुमुद बी. ने की। इस सत्र में लालपियानमावी (हमार), क्षेत्रबासी जुआंग (जुआंग), शांति खलखो (कुडुख) तथा विलियम नेपुनी माओ (माओ) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

आदिवासी कवि

आदिवासी कवि सम्मिलन

14 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

प्रतिभागियों के साथ श्री जोरामदिनथारा

आदिवासी कवि सम्मिलन सत्र की अध्यक्षता मिज़ो भाषा के प्रतिष्ठित कवि जोरामदिनथारा ने की। इस सत्र में ज्ञाति राणा (आपातानी), रामदास बिरजे (चंदगदी), पी.सी. लाल यादव (देवर घुमंतू), वी.पी. होले (लेवागन), दौलत राजवार (राजवार), रामप्रसाद गमांग (सौरा) तथा राजेश्वरी (हक्कीपिक्की) ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

भारत को जोड़ना : कविता-पाठ

14 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

प्रतिभागियों के साथ श्री अष्टभुजा शुक्ल

'भारत को जोड़ना' शीर्षक के अंतर्गत आयोजित कविता-पाठ सत्र की अध्यक्षता हिंदी के प्रतिष्ठित कवि अष्टभुजा शुक्ल ने की। इस सत्र में सुषमा रानी (डोगरी), पीयूष ठक्की (गुजराती), व्यासमणि त्रिपाठी (हिंदी), क्षेत्री राजेन (मणिपुरी), हरिमोहन सारस्वत (राजस्थानी), फटिक मुर्मु (संताली) तथा वी. राम मनोहर (तेलुगु) ने कविताओं का पाठ किया। श्री शुक्ल ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि जब कविता को अंग्रेज़ी अनुवाद में पढ़ा जाता है तो उसका सार खो जाता है, जिसे केवल मूल भाषाओं के माध्यम से ही व्यक्त किया जा सकता है। उन्होंने अपनी कुछ कविताएँ भी प्रस्तुत कीं।

युवा साहिती : नई फसल : कविता-पाठ

14 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

'युवा साहिती : नई फसल' के अंतर्गत आयोजित कविता-पाठ का सत्र युवा कवियों को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित ओड़िआ कवयित्री पारमिता शतपथी ने की।

इस सत्र में विधु शेखर (हिंदी), निगहत नसरीन (कश्मीरी), श्याम सुधाकर (मलयाळम्), के. सोनिया देवी (मणिपुरी), सुशिर कुमार स्वाई (ओड़िआ), फणी माधवी कन्नोजु (तेलुगु) तथा अंबर (उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कवियों ने मूल कविताओं के साथ-साथ उनके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद भी पढ़े। सुश्री सत्पथी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि कविता को विशेष प्रकार की प्रेरणा के साथ-साथ पाठकों के विशिष्ट वर्ग की भी आवश्यकता होती है। उन्होंने कविता की प्रकृति तथा महत्त्व पर संक्षेप में बात की। उन्होंने हिंदी अनुवाद में कुछ कविताएँ भी पढ़ीं।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

14 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

'बहुभाषी कवि सम्मिलन' विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित हिंदी कवि नंद भारद्वाज ने की। इस सत्र में आरती बेल्लारी (अंग्रेज़ी), सुजाता चौधुरी (अंग्रेज़ी), निशांत (हिंदी), आर्य गोपी (मलयाळम्), पवित्र मोहन कर (ओड़िआ), मर्सी मार्गरेट (तेलुगु) तथा मंज़र भोपाली (उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

भारत को जोड़ना : बहुभाषी कवि सम्मिलन

14 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

'भारत को जोड़ना' शीर्षक के अंतर्गत बहुभाषी कवि सम्मिलन की अध्यक्षता हिंदी कवि प्रमोद जैन ने की। इस सत्र में निर्माल्य मुखोपाध्याय (बाङ्ला), बिजित रामसियारी (बोडो), मोहित भारद्वाज (हिंदी), दाहुन खारसिन्टियू (खासी), सरन मुस्कान (नेपाली), सतनाम वाहिद (पंजाबी), सरोजिनी बेसरा (संताली) तथा अरुण रंजन मिश्र (संस्कृत) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

उत्तर-पूर्वी एवं पूर्वी लेखक सम्मिलन : कविता-पाठ

14 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

'उत्तर-पूर्वी एवं पूर्वी लेखक सम्मिलन' के अंतर्गत आयोजित कविता-पाठ सत्र की अध्यक्षता असमिया की प्रतिष्ठित कवयित्री अर्चना पुजारी ने की। इस सत्र में तन्मॅय चक्रवर्ती (बाङ्ला), च. दीपू सिंह (मणिपुरी), लालबियाकज़ामी पचुआउ (मिज़ो), गंखू सुमन्यन (उत्तर-पूर्वी अंग्रेज़ी), शुभश्री लेंका (ओड़िआ) तथा रुद्र माझी (संताली) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

नई दिल्ली

'उत्तर-पूर्वी एवं पूर्वी लेखक सम्मिलन साहित्य : अभिव्यक्ति का साधन

14 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

श्री क्षेत्री बीर के साथ सत्र के प्रतिभागी

यह सत्र उत्तर-पूर्वी एवं पूर्वी लेखकों के बीच प्रचलित साहित्यिक अभिव्यक्ति के साधनों पर आधारित था।

सत्र की अध्यक्षता क्षेत्री बीर ने की। प्रमोद कलिता (असमिया) ने मूल भाषा के अलावा अनूदित भाषा में आलेख पाठ किया। अर्णब साहा (बाङ्ला) ने अभिव्यक्ति के साधन का सटीक वर्णन किया। राखी मोराल (उत्तर-पूर्वी अंग्रेज़ी), कमला तामंग (नेपाली) तथा मनोरंजन मिश्र (ओड़िआ) ने भी अभिव्यक्ति के साधन पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। तारो सिंदिक (उत्तर-पूर्वी हिंदी) ने भी अभिव्यक्ति के साधन का उल्लेख करते हुए कहा कि मौखिक साहित्य को आधार मानकर सृजनात्मक लेखन हो रहा है। संग्राम मिश्र (ओड़िआ) ने भी साहित्य में अभिव्यक्ति के साधन विषय पर सटीक व्याख्यान देते हुए कहा कि साहित्य से ही क्रांति आती है।

भारत की कविता : रमणीय विचार और सुगंधित भावनाएँ

14 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागिगण

'भारत की कविता : रमणीय विचार और सुगंधित भावनाएँ' विषयक कार्यक्रम की अध्यक्षता कौशल नाथ उपाध्याय ने की। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि कवि के शब्द ही बोलते हैं। आभा ने महिला के दु:ख-दर्द पर चिन्तनीय कविताएँ प्रस्तुत कीं। अमरनाथ अमर ने रमणीय विचार तथा सुगंधित भावनाओं पर आधारित कविता-पाठ किया। जितेंद्र श्रीवास्तव ने मनुष्यता, सहिष्णुता तथा सामाजिकता पर आधारित कविताओं का पाठ

किया। महेश गर्ग ने हास्य-व्यंग्य, मजदूर-किसान, माँ, याद और ग़ज़ल इत्यादि का गायन किया।

नवनीत शर्मा ने रमणीय तथा समकालीन ग़ज़ल प्रस्तुत की। ओम निश्चल ने गीत-ग़ज़ल तथा समकालीन विषयों की ओर ध्यान आकर्षित करवाया। वीरेंद्र कुमार शेखर ने भी गीत और ग़ज़ल से समां बाँध दिया।

मुलाक़ात : युवा कवि सम्मिलन

14 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

श्री अर्जुन देव चारण के साथ सत्र के प्रतिभागी

'मुलाक़ात' शीर्षक के अंतर्गत आयोजित युवा कवि सम्मिलन की अध्यक्षता प्रख्यात राजस्थानी कवि अर्जुन देव चारण ने की।

इस सत्र में गौरव चक्रवर्ती (बाङ्ला), सॉनेट मंडल (अंग्रेज़ी), निगहत साहिबा (कश्मीरी), एम. भगत सिंह (मणिपुरी), सोनाली सुतार (राजस्थानी), सुचित्रा हाँसदा (संताली) तथा निशा धनवाणी (सिंधी) ने अपनी कविताओं का पाठ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया। सत्राध्यक्ष ने भी कुछ कविताएँ पढ़कर सुनाईं।

बहुभाषी कहानी-पाठ

14 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

कार्यक्रम के प्रतिभागी

बहुभाषी कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी लेखिका ममता कालिया ने की। इस सत्र में प्रख्यात ओड़िआ लेखक अरुण कुमार साहू ने अंग्रेज़ी अनुवाद में अपनी कहानी 'निर्वाण' का सार प्रस्तुत किया। पंजाबी लेखक नछतर ने 'लाश' शीर्षक से हिंदी अनुवाद में अपनी कहानी पढ़ी। प्रख्यात हिंदी लेखक अखिलेश ने 'अगली शताब्दी के प्यार का रिहर्सल' विषयक कहानी का पाठ किया। प्रसिद्ध तेलुगु लेखिका नीरजा अमरवाड़ी ने अपनी कहानी 'पल्लवी' के अंग्रेज़ी अनुवाद का पाठ किया। अंत में, ममता कालिया ने कहा कि यह देखकर अच्छा लग रहा है कि कहानी के लिए रास्ते धीरे-धीरे खुल रहे हैं, जैसे दिन-ब-दिन नए बाज़ार खुल रहे हैं। एक कहानी जिसे किसी भी बिंदु पर शुरू और बंद किया जा सकता है, उसका अपना अनूठा खुलापन होता है, जो सभी भारतीय भाषाओं में बड़े पैमाने पर साहित्य को लाभ पहुँचाता हुआ दिखाई देता है। उन्होंने अपनी कहानी 'पिज़्ज़ा' का पाठ भी किया।

नई दिल्ली

भारत में नाट्य लेखन

14 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

व्याख्यान देते हुए श्री डी.पी. सिन्हा

'भारत में नाट्य लेखन' विषयक परिचर्चा की अध्यक्षता डी.पी. सिन्हा ने की। उन्होंने कहा कि विभिन्न भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले इतने सारे नाटककारों का एक मंच पर होना बहुत अच्छी बात है। उन्होंने यह भी कहा कि रंगमंच अनादि काल से जीवित है और भविष्य में भी फलता-फूलता रहेगा। सौमित्र मित्र ने 'थिएटर आधारित साहित्य : खुशियों से बंधा हुआ' विषय पर बात की तथा कुछ साहित्य आधारित नाट्य प्रस्तुतियों पर प्रकाश डाला। बलवंत ठाकुर ने डोगरी थिएटर के इतिहास पर चर्चा करते हुए, कोविड के बाद के युग में इसके विलुप्त होने पर गहरी चिंता व्यक्त की तथा अकादेमी से आगे आकर थिएटर परंपरा को पुनर्जीवित करने में मदद करने का अनुरोध किया। देवेन्द्र राज अंकुर ने एक भाषा के रूप में हिंदी की स्थापना के बाद से ही हिंदी साहित्य में नाटक लेखन पर अपने विचार व्यक्त किए, साथ ही 'महाभोज', 'कोर्ट मार्शल' तथा कई अन्य स्वतंत्रता पूर्व और बाद के नाटकों पर भी चर्चा की। दिलीप बोरकर ने इस बात पर चर्चा की कि भारत में, विशेषकर गोवा में नाटक लेखन की परंपरा कैसे बढ़ी। उन्होंने पुर्तगाली शासन से लेकर गोवा के इतिहास उनके प्रभाव, स्वतंत्रता के बाद कोंकणी के विलुप्त होने से लेकर स्वतंत्रता के बाद के आगमन, भाषा और नाटक लेखन परंपरा के पुनरुद्धार और स्थापना पर विचार-विमर्श किया।

वाई. सदानंद सिंह ने मणिपुरी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रथम नाटक 'नरसिम्हा' 1922 में प्रदर्शित हुआ तथा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान समाप्त हुई थिएटर गतिविधि 1951 में कई नए नाटकों तथा नाटककारों के आने के साथ फिर से पुनर्जीवित हुई।

अभिराम भडकमकर ने कहा कि मराठी साहित्य ने कई महान नाटककार दिए हैं और कहा कि थिएटर तीन प्रकार के होते हैं मनोरंजन के लिए थिएटर, जागरूकता के लिए थिएटर तथा जीवन और जीवन पर सवाल उठाने वाला थिएटर। बिजॉय कुमार शतपथी ने 'भारत में बदलती सामाजिक-राजनीतिक स्थिति तथा नाटक लेखन' पर बात की। उन्होंने देश में राजनीतिक परिवर्तन, घटनाओं की विविधता की कमी आदि के कारण संस्कृत नाटक के पतन में योगदान देने वाले कुछ कारकों पर भी चर्चा की।

रचनात्मकता को बढ़ावा देने वाली शिक्षा

14 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

'रचनात्मकता को बढ़ावा देने वाली शिक्षा' सत्र की अध्यक्षता कपिल कपूर ने की। शुरुआत में उन्होंने विषय के तीन शब्दों यानी क्रिएटिविटी, बूस्टिंग और एजुकेशन के बारे में विस्तार से बताया। शिक्षा जो कभी-कभी खतरनाक भी हो सकती है, पर चेतावनी देते हुए उन्होंने कहा कि रचनात्मकता वह शक्ति और क्षमता है जो कुछ नया ला सकती है; यह मानव हित के लिए हो भी सकता है और नहीं भी। अनन्या मुखर्जी ने कहा कि आजकल न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में अधिक समग्र शिक्षा के लिए शिक्षा पर पुनर्विचार किया जा रहा है।

शिव नादर विश्वविद्यालय के संस्थापक मिशन के बारे में बोलते हुए, उन्होंने

(बाएँ से दाएँ) प्रो. अजीत अब्राहम, प्रो. कपिल कपूर तथा डॉ. अनन्या मुखर्जी

कहा कि दो बिंदुओं पर ध्यान दिया गया कि विश्वविद्यालय को प्रकृति के करीब होना चाहिए तथा समग्र शिक्षा के लिए आवश्यक रूप से किसी भी स्ट्रीम के साथ नैतिकता आदि जैसे मुख्य विषय होने चाहिए।

अजीत अब्राहम ने कुछ चुनौतियों के बारे में बात की जिनका न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर शिक्षा प्रणाली में सामना किया जा रहा है। तकनीकी पृष्ठभूमि होने और विषय से थोड़ा हटकर, उन्होंने इस बात पर गहराई से चर्चा की कि कैसे प्रौद्योगिकी एआई टूल, चैट जीटीपी, चैटपोट्स तथा अन्य के उपयोग से शिक्षा को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है। चूँकि भविष्य प्रौद्योगिकी का है, एआई प्लेटफॉर्म का उपयोग न केवल रचनात्मकता को बढ़ावा देगा बल्कि सही शिक्षण सुनिश्चित करेगा और अनुसंधान प्रक्रिया में तेजी लाएगा।

भारत की लोककथाएँ

14 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

'भारत की लोककथाएँ' विषयक सत्र की अध्यक्षता रवेल सिंह ने की। उन्होंने कहा कि दिलों के बेहद करीब, दादा-दादी से सुनी और एक से अगली पीढ़ी तक स्थानांतरित होने वाली यह शैली सरल लगती है, किंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि यह संस्कृति और परंपरा की विरासत होने के साथ-साथ नैतिक मूल्यों और उद्देश्यों के लिए मार्गदर्शक भी है, जो हमारे समाज को पोषित और समृद्ध करती है।

बलवंत ठाकुर ने गुजराती लोककथाओं के बारे में बताते हुए कहा कि उनका लंबा इतिहास है तथा उन्होंने ब्रिटिश भारत, पारसी शासन और 18वीं शताब्दी के गुजरात में प्रचलित संपादन पद्धति पर विस्तार से चर्चा की,जब गुजराती लोगों ने स्वयं लोककथाओं का संपादन शुरू किया।

परवीन कुमार ने पंजाब की लोककथाओं पर बोलते हुए कहा कि किसी भी क्षेत्र का भविष्य देखने के लिए वहाँ की लोककथाओं का विश्लेषण सबसे महत्त्वपूर्ण है। बेनी यान्थन ने कहा कि मौखिक परंपरा के मामले में, लोककथाओं, कहावतों और आख्यानों का उपयोग यह कहने के अलावा आवश्यक हो जाता है कि उनके दस्तावेज़ीकरण को अपना मूल मूल्य नहीं खोना चाहिए। खेमसिंह डहेरिया ने बुंदेली आदि सहित मध्य प्रदेश की लोककथाओं के बारे में बताया। उन्होंने कुछ छोटी-छोटी बुंदेली लोककथाएँ पढ़ीं और बताया कि वे कल्पना से भरपूर हैं किंतु मज़बूत शिक्षाओं से भरपूर हैं। महासिंह पूनिया ने कहा कि लोककथाएँ समाज, धर्म, आस्था, आध्यात्म, संस्कृति एवं नैतिकता एवं शिक्षाओं से परिपूर्ण परंपरा का दर्पण होती हैं। उन्होंने कुछ रोचक हरियाणवी लोककथाएँ भी पढ़ीं। मोना लिसा जेना ने कहा कि वह लोककथाओं को दोबारा सुनाती हैं क्योंकि वे सरल हैं तथा उनमें रहस्यवादी तत्व हैं, जिनमें प्रेम, घृणा, लालच तथा पक्षियों और जानवरों की भाषा की दिलचस्प कहानियाँ हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : संत वाणी गायन

14 मार्च 2024, मेघदूत मुक्ताकाशी मंच-1, नई दिल्ली

महेशा राम एवं साथियों द्वारा संत वाणी गायन की प्रस्तुति

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला के भाग के रूप में, महेशा राम और समूह ने 'संत वाणी गायन' की प्रस्तुति दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत की। उन्होंने प्रस्तुति के माध्यम से भारत के प्रतिष्ठित संत कवियों तथा दूरदर्शी लोगों की दार्शनिक विरासत को दर्शाया।

नई दिल्ली

'भारत के वाचिक महाकाव्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

15 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार, नई दिल्ली

संगोष्ठी के उद्घाटन का दृश्य

'भारत के वाचिक महाकाव्य' विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने किया। बीज-भाषण प्रख्यात लोकसाहित्यविद् महेंद्र कुमार मिश्र ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति विशुद्ध रूप से मौखिक आख्यानों से जुड़ी है तथा सांस्कृतिक परिवर्तन भी इन्हीं आख्यानों से होता है। मौखिक आख्यानों में सैकड़ों *रामायण* और *महाभारत* थे जिनमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों की मान्यताएँ और परंपराएँ शामिल थीं। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि भारत में मौखिक महाकाव्यों की संख्या पर्याप्त है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में, माधव कौशिक ने कहा कि भारत में मौखिक महाकाव्यों की जीवंतता को समझाने वाली *महाभारत* जैसी पुस्तकें थीं। यह उदाहरण बार-बार सिद्ध करते हैं कि वेदों के आरंभ से ही हमारा अधिकांश ज्ञान मौखिक परंपरा से जुड़ा हुआ है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लोकसाहित्यविद् सरस्वती वेणुगोपाल ने की। इस सत्र में, चितरंजन कर ने छत्तीसगढ़ के मौखिक महाकाव्यों : पंडवानी, देवार गीत, बांसगीत तथा गोंडी का प्रतिनिधित्व करते हुए आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मौखिक महाकाव्यों में प्रस्तुति का मनोरंजन समसामयिक परिस्थिति के अनुसार बदलेगा तथा जीवंत होगा। वंदना टेटे ने झारखंड के आदिवासी मौखिक महाकाव्यों (संताली, खड़िया, मुंडा, ओरम और अन्य) पर आधारित आलेख में कहा कि प्रकृति के प्रति करुणा मौखिक महाकाव्यों में बहुत देखी जाती है तथा विशेष रूप से आदिवासी कथाओं में प्रकृति की सुरक्षा को अत्यधिक चित्रित किया गया है। धर्मेंद्र पारे ने मध्य प्रदेश के आदिवासी मौखिक महाकाव्यों को दार्शनिक प्रतिनिधित्व के उदाहरण के रूप में समझाया। उन्होंने कहा कि आदिवासी लोग वे हैं, जो संस्कृति के प्रतिनिधि हैं तथा वे कई परंपराओं के प्राथमिक स्रोत हैं और जो कहीं अधिक व्यावहारिक हैं।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता रवेल सिंह ने की, जिसमें उपेंद्र 'अणु' ने गरासिया मौखिक महाकाव्यों के विशेष संदर्भ के साथ राजस्थान के आदिवासी मौखिक महाकाव्यों पर आलेख प्रस्तुत किया। उपेंद्र ने उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट रूप से उल्लेख किया कि किस प्रकार गरासिया मौखिक महाकाव्य पंजाब तथा अन्य निकटतम राज्यों के महाकाव्यों से प्रभावित हैं तथा अंग्रेजों के आगमन के कारण कितने आदिवासियों ने अपनी जान गँवाई। उन्होंने यह भी कहा कि गरासिया मौखिक महाकाव्य अधिक प्राकृतिक हैं तथा समसामयिक मुद्दों के

संगोष्ठी का दृश्य

संगोष्ठी के प्रतिभागी

साथ वर्णित हैं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में रवेल सिंह ने राजस्थान के मौखिक महाकाव्यों की तुलना पंजाब से की और बताया कि किस प्रकार भारत में पारंपरिक नाटक लेखन पंजाब में मौखिक कथाओं में बदल गया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात गुजराती लेखक और लोकगीतकार श्री कांजी पटेल ने की। श्रीकृष्ण काकड़े ने महाराष्ट्र के जनजातीय मौखिक महाकाव्यों पर आलेख प्रस्तुत किया और बताया कि किस प्रकार अमरावती में कोरकू जनजातियों के मौखिक महाकाव्यों में विभिन्न संस्कारों का पालन किया जाता है। बाद में, पांडुरंग फलदेसाई ने 'गोमांतक (गोवा) के जनजातीय मौखिक महाकाव्य : एक परिचय' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने आलेख में विशेष रूप से उल्लेख किया गया कि गोवा और कोंकणी के मौखिक महाकाव्य 400 साल से भी पुराने हैं। अंत में, कांजी पटेल ने 'भिलोनी वार्ता : गुजरात के डुंगरी भिल्ली के बीच मौखिक महाकाव्य' पर आलेख प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने भौगोलिक विभाजन के अलावा इन मौखिक महाकाव्यों के संरक्षण तथा सुरक्षा के लिए सांस्कृतिक मानचित्रण की आवश्यकता पर बल दिया।

चतुर्थ सत्र में प्रख्यात टोडा लेखिका वासमल्ली के. ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में टोडा जनजाति के मिथक के बारे में बताते हुए कहा कि हमारे समुदाय द्वारा नीलगिरि पर्वत को पूजा जाता है तथा सबसे पहले प्रार्थना की जाती है। टोडा किसेम (बालकृष्ण) को भी पूजा जाता है तथा पाहोरि (बांसुरी) को विशेष प्रकार से बजाया जाता है तथा एक विशेष प्रकार के भैंस की पूजा की जाती है। उन्होंने *महाभारत* के पात्र भीम से जुड़ी कथा के संदर्भ में भी बताया। टोडा समुदाय द्वारा बकासुर को भी देवता के रूप में पूजा जाता है। शिव और पार्वती की भी उपासना की जाती है।

लोक साहित्य विशेषज्ञ सरस्वती वेणुगोपाल ने 'तमिलनाडु के वाचिक महाकाव्यों' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जो तमिलनाडु की 2 जनजातियों की संस्कृति तथा उनके महाकाव्यों पर आधारित थी। उन्होंने 1800 वर्ष पूर्व इलंगो अडिगळ द्वारा लिखित महाकाव्य के बारे में बताया, जो चेरा राजा के छोटे भाई थे और बाद में संत बन गए थे। उन्होंने पांड्या, टोडा, चेरा साम्राज्य का भी उल्लेख किया। उन्होंने यह भी बताया कि *महाभारत* और *रामायण* को तमिलनाडु में क्षेत्रीय कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। वहाँ *रामायण* के कई रूप प्रचलित हैं। अलग-अलग क्षेत्र में *रामायण* की अलग-अलग कथाएँ हैं तथा *महाभारत* के अलावा भी कई कथाएँ प्रचलित हैं। बंजारा भाषा के प्रख्यात लेखक एन. शांता नायक ने बताया कि कर्नाटक में आधा दर्जन वाचिक महाकाव्य हैं। कुछ गाथाएँ ऐसी हैं जिनका रातभर वाचन किया जाता है। *रामायण* और *महाभारत* की गाथा भी सुनाई जाती है। आदिवासियों की अपनी

श्री एस. नागमल्लेश्वर राव

सुश्री वासमल्ली के.

सुश्री सरस्वती वेणुगोपाल

श्री एन. शांता नायक

सुश्री शमशाद हुसैन केटी

नई दिल्ली

विशिष्ट वाचिक परंपरा है। 'संत सेवालाल' की गाथा भी बंजारा समुदाय में सुनाई जाती है। 'श्री अल्लवेदी' बंट समाज के वाचिक साहित्य, 'श्रीसंधि', 'मले मालेश्वर', 'जेंजपा एटप्पा', 'मैसबैरा' आदि वाचिक महाकाव्यों का भी उन्होंने उल्लेख किया। तेलुगु के कवि और आलोचक एस. नागमल्लेश्वर राव ने तेलंगाना राज्य के राजगोंड कोलम तथा राजगोंड आदिवासियों के वाचिक महाकाव्य *महाभारत* पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने आदिवासियों के वाचिक महाकाव्य में महाभारत तथा रामायण की कथा का भी विस्तारपूर्वक उल्लेख करते हुए बताया कि *महाभारत* के भीम की गाथा वहाँ अधिक प्रचलित है। भीम और भीमन्ना को वे देवता के रूप में पूजते हैं तथा घटोत्कच को भी वहाँ पूजा जाता है। उन्होंने तेलंगाना के विभिन्न जनजातियों के *महाभारत* का भी उल्लेख किया। मलयाळम् की लेखिका एवं प्रोफ़ेसर शमशाद हुसैन केटी ने केरल के

(बाएँ से दाएँ) श्री इरोम रॅबींद्र सिंह, श्री एम. सदानंद सिंह तथा श्री दिलीप कुमार कलिता

लोकगीतों के बारे में बताया, जो उत्तर, दक्षिण और मध्य केरल में प्रचलित हैं। उन्होंने वहाँ के आदिवासी समुदायों के लोकगीतों तथा वाचिक परंपराओं के बारे में भी जानकारी दी।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात लेखक एम. सदानंद सिंह ने कहा कि जिस प्रकार एक दिन में रोम का निर्माण नहीं हुआ था उसी प्रकार भारतीय वाचिक साहित्य का निर्माण भी एक दिन नहीं हुआ। इनका वाचिक साहित्य समृद्ध है। असमिया के प्रख्यात लेखक दिलीप कुमार कलिता ने असम के मिथक महाकाव्य पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया वहाँ *कार्बी रामायण* का सस्वर गायन, वादन तथा नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। उनके रसानुभूतिपूर्ण गायन के पश्चात् निश्चित रूप से वर्षा होती है। *रामायण* तथा *महाभारत* की भांति *मनसा मंगल* भी वहाँ का वाचिक महाकाव्य है। मणिपुरी के प्रख्यात लेखक इरोम रॅबींद्र सिंह ने बताया कि पूर्वोत्तर भारत के वाचिक महाकाव्य में नृत्य, गीत तथा नाट्य का सुंदर समन्वय होता है। कार्यक्रम के अंत में, एम. सदानंद ने दोनों प्रतिभागियों तथा समस्त श्रोताओं को धन्यवाद दिया।

'लोकप्रिय चेतना में राम कथा'

15 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा के साथ सत्र के प्रतिभागी

वाल्मीकि सभागार में आयोजित 'लोकप्रिय चेतना में राम कथा' विषयक सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि पूरे भारत में राम की कथा ने मिथकों, स्थानों के साथ-साथ भारतीय मानस पर अपनी छाप छोड़ी है। राम समय और स्थान की बाधाओं से परे हैं। उन्होंने साहित्य, संस्कृति तथा सामाजिक आंदोलनों आदि हर क्षेत्र पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा कि राम हमारे अस्तित्व का एक अनिवार्य हिस्सा हैं और हमारे आदर्श हैं। तुलसीदास की रामकथा अन्य विविध रामकथाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। राम के चरित्र का हम पर चिरस्थायी प्रभाव है, जिसे रामकथा गायकों और प्रचारकों के उपदेशों के माध्यम से और भी मज़बूत किया गया है। उन्होंने रामकथा की लोकप्रियता के कई

नई दिल्ली

सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र

कारण बताए आनंद नीलकांतन ने कहा कि तुलसीदास कृत *रामचरितमानस* किसी संत द्वारा लिखी गई *रामायण* का अंतिम महान रूप हो सकता है।

नीलकांतन ने *रामायण* के अन्य क्षेत्रीय और लोक संस्करणों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि रामकथा के विभिन्न संस्करणों में परिवर्तन हमारी सामाजिक व्यवस्था के विकास के कारण हुए, जिसका उपयोग समकालीन युग के साथ समायोजित होने के लिए किया गया है।

भारतीय महाकाव्यों तथा पौराणिक साहित्य के जापानी अनुवादक हिरोयुकी सातो ने अन्य दक्षिण एशियाई देशों की विविधताओं पर बात की। उन्होंने कहा कि *रामायण* मूल्यों तथा जीवनशैली का प्रतीक है। उन्होंने जापानी साहित्य और लोक कथाओं पर रामकथा के प्रभाव पर प्रकाश डाला। रामकथा प्राचीन काल में चीन से होते हुए जापान पहुँची। उन्होंने जापानी में *रामायण* के अनुवाद पर बात की।

इंदुशेखर तत्पुरुष ने रामकथा में नैतिक आचरण पर बल देने की बात कही। उन्होंने रामकथा के कई प्रसंगों की नीतिशास्त्र की दृष्टि से व्याख्या भी की। उन्होंने *रामायण* के कई पात्रों तथा *रामायण* के नैतिक निहितार्थ का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया। युगल जोशी ने जनता के बीच *रामायण* की लोकप्रियता के कारणों पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने *रामायण* की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित विभिन्न कहानियों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने मध्यकालीन युग के भक्ति साहित्य पर *रामायण* के प्रभाव पर भी बात की। उन्होंने तमिळ *रामायण* तथा *भुशुंडी रामायण* पर विशेष ध्यान देते हुए *रामायण* की विविधताओं पर बात की।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता महेंद्र कुमार मिश्र ने की। उन्होंने रामकथा की स्वीकार्यता के संदर्भ में 'लोकप्रिय चेतना' शब्द के महत्त्व को समझाया। उन्होंने रामकथा की अखिल भारतीय अपील की अपील की। उन्होंने *रामायण* तथा *महाभारत* के राजनीतिक निहितार्थ तथा गाँधी, लोहिया और टैगोर द्वारा दी गई *रामायण* की व्याख्या पर भी बात की। उन्होंने *रामायण* के जनजातीय रूपों की कथानक संरचना के साथ-साथ उससे निकलने वाली कहावतों और पहेलियों के बारे में विस्तार से बात की।

भगवानदास पटेल ने रामकथा की परंपरा में सीता के चरित्र के विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने दर्शकों को महाकाव्य पात्रों की मौखिक और लोक विविधताओं से अवगत कराया। उन्होंने आदिवासी संस्कृति में देवी सरस्वती की स्थिति के बारे में बताया। उन्होंने आदिवासी संस्कृति में सीता की उन्नत तथा आत्मविश्वासपूर्ण स्थिति पर बात की।

अनुजा चंद्रमौली ने *रामायण* के महाकाव्य पात्रों के कुछ कृत्यों के विवादास्पद चित्रण पर बात की। उन्होंने सीता की 'अग्निपरीक्षा' की तुलना पुराणों के कुछ समान प्रसंगों से की। उन्होंने कहा कि दया के गुण ने राम के चरित्र को काफी हद तक ऊँचा उठाया।

मयंक अग्रवाल ने भारतीय जनमानस तथा दूरदर्शन के माध्यम से *रामायण* के प्रभाव पर विस्तार से बात की। उन्होंने टीआरपी के लिहाज से *रामायण* के स्वागत का विश्लेषण प्रस्तुत किया। स्तुति गुप्ता ने लोकप्रिय चेतना में भगवान राम के सुपरहीरो कद पर बात की और कहा कि भगवान राम हमारे जीवन का हिस्सा बन गए हैं। उन्होंने चित्रकला, सेल्युलाइड, मूर्तिकला तथा अन्य कला धाराओं पर रामकथा के प्रभाव पर प्रकाश डाला।

भारत की सांस्कृतिक विरासत

15 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

'भारत की सांस्कृतिक विरासत' विषयक सत्र की अध्यक्षता एस.एल. भैरप्पा ने की। उन्होंने मृत्यु की छवि के बारे में अपनी धारणा और दर्शनशास्त्र के साथ अपने आजीवन जुड़ाव के बारे में बताया। उन्होंने दर्शन, समृद्धि, संस्कृति तथा अन्य कई अवधारणाओं पर भी विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि *महाभारत* सांस्कृतिक मूल्यों का सबसे समृद्ध साहित्यिक कोश है। उन्होंने कुछ महान भारतीय उपन्यासों तथा उनके दार्शनिक आधारों

नई दिल्ली

(बाएँ से दाएँ) श्री प्रधान गुरुदत्त, प्रो. एस.एल. भैरप्पा, श्री नंदकिशोर आचार्य, डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी तथा सुश्री वाणी त्रिपाठी टिकू

का उल्लेख किया। नंदकिशोर आचार्य ने भारतीय मूल्य व्यवस्था के स्रोत के बारे में बताया। उन्होंने भारतीय दर्शन तथा अंत: अस्तित्व, अर्थव्यवस्था और कई अन्य अवधारणाओं पर भी बात की।

प्रधान गुरुदत्त ने 'संस्कृति' शब्द की परिभाषा तथा अर्थों पर बात की और वेदों, पुराणों, पौराणिक ग्रंथों तथा उनके सांस्कृतिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने जीवन और समाज के विभिन्न तरीकों के माध्यम से संस्कृति की अभिव्यक्तियों पर भी चर्चा की। उन्होंने कई दार्शनिक तथा धार्मिक परंपराओं के बारे में भी बात की। राधावल्लभ त्रिपाठी ने संस्कृति के घटकों के साथ-साथ संस्कृति के निर्माण की प्रक्रिया के बारे में भी बताया।

वाणी त्रिपाठी टिकू ने मौखिक कथा परंपरा को परंपरा के सबसे महत्त्वपूर्ण भंडार में से एक बताया। उन्होंने महाकाव्यों के संदेश के प्रसार के महत्त्व पर भी बात की। उन्होंने भारत की प्रसिद्ध नृत्य परंपराओं के साथ-साथ उनकी उत्पत्ति तथा विकास पर भी प्रकाश डाला।

भारतीय साहित्यिक स्त्रीवाद : लेखिकाएँ तथा बदलती दुनिया

15 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

नारीवाद के आगमन के परिणामस्वरूप हर तरफ तेजी से बदलाव आया और समय के साथ इसने नए आयाम ग्रहण किए। नंदिनी साहू ने रचनात्मक लेखिका और लोकगीतकार, सिद्धांतकार, शिक्षक तथा शोधकर्ता के रूप में अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने लिंग अध्ययन और अनुसंधान के अन्य संबंधित क्षेत्रों में हाल के विकास पर भी प्रकाश डाला।

रिज़ियो राज ने नारीवाद के संदर्भ में आधुनिकता की विषम प्रकृति पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने इस संदर्भ में कमला दास तथा उनके लेखन का उल्लेख किया। सुकृता पॉल कुमार ने इतिहास की उत्पत्ति और विकास तथा भारत में महिला लेखन के विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महिलाओं के पास लंबे समय तक स्वयं को व्यक्त करने के लिए भाषा का अभाव था, क्योंकि वे मानसिक रूप से सीमित थीं, उन्हें लंबे समय तक एक्सपोज़र की

शर्तें मिलीं। उन्होंने दलित महिला लेखन पर भी बात की। उन्होंने पौराणिक महिला पात्रों के चित्रण पर भी प्रकाश डाला।

तानिया चक्रवर्ती ने संयुक्ता दासगुप्ता के चयनित कार्यों की विशेषताओं पर बात की। अपने तर्क के समर्थन में उन्होंने अपने ग्रंथों से भी उद्धरण दिए। उन्होंने अपने लेखन में पाए जाने वाले नारीवादी स्वरूप की तुलना अन्य लेखकों के कार्यों में पाए जाने वाले नारीवादी स्वरूप से की। वासंती ने इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि महिलाएँ शुरू से ही कहानीकार रही हैं। उन्होंने ऐसी कहानियाँ और मिथक सुनाए, जिनमें महिलाओं को अलग-अलग रूप में दर्शाया गया है। उन्होंने महिलाओं की जागृति की घटनाओं तथा उन्होंने किस प्रकार दुनिया की संस्कृति को बदल दिया, पर भी बात की।

अध्यक्ष के रूप में बोलते हुए, मृदुला गर्ग ने कहा कि लेखिकाएँ सदियों पुरानी मानसिकता के बारे में जनता के मन में संदेह पैदा कर सकती हैं। बदलाव इस प्रकार आ सकता है। उन्होंने कहा कि महिलाएँ पुरुषों की तुलना में गंभीर स्थितियों से बेहतर तरीक़े से बच सकती हैं। प्रकृति ने महिलाओं को कुछ ऐसे गुण और शक्तियाँ दी हैं जिन्हें पार नहीं किया जा सकता।

भारतीय गौरवग्रंथ और विश्व साहित्य

15 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

श्री अल्वारो एंटररिया, श्री एस.पी. गांगुली, सुश्री डायना मिकेविशिएन, श्री अभय के. तथा श्री रूमी नक़वी

इस सत्र की अध्यक्षता एस.पी. गांगुली ने की। अभय के. ने विश्व साहित्य का संक्षिप्त विवरण देकर अपनी प्रस्तुति शुरू की और कहा कि विश्व साहित्य में वास्तव में राष्ट्रीय साहित्य समाहित है, किंतु वे साहित्यिक कृतियाँ जो अपने मूल स्थानों से परे, अपने सांस्कृतिक क्षेत्रों से परे यात्रा करती हैं, उन्हें विश्व साहित्य माना जाता है। अपनी प्रस्तुति के दौरान, उन्होंने बिहारी साहित्य पर अपने कुछ व्यावहारिक विचार साझा किए तथा बिहार में बोली जाने वाली कुछ महत्त्वपूर्ण भाषाओं के बारे में संक्षेप में बात की।

अल्वारो एंटररिया ने एक प्रकाशक के रूप में अपने अनुभव साझा किए तथा स्पैनिश भाषा में 'इंडिया फ्रॉम विदइन' नामक पुस्तक पर चर्चा की। डायना मिकेविशिएन ने कहा कि संस्कृति का अनुवाद करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। उनके अनुसार, साहित्य का अनुवाद करना पर्याप्त नहीं है यदि आप इसे बिल्कुल अलग संदर्भ में डाल दें, इसलिए बेहतर समझ के लिए पृष्ठभूमि तथा व्याख्यात्मक कार्य करने की आवश्यकता है।

रूमी नक़वी ने भारतीय गौरवग्रंथों के प्रभाव पर आधारित अपने आलेख में साहित्य की विभिन्न बारीकियों और पहलुओं पर चर्चा की। अभय के. ने नमिता गोखले का आलेख पढ़ा। प्रस्तुत आलेख के अनुसार, यदि हम विश्व साहित्य की बात करें तो इस विषय पर कोई भी चर्चा महान व्यक्तित्व रवींद्रनाथ ठाकुर के बिना पूरी नहीं होगी।

पश्चिमी गौरवग्रंथ और तोपें कुछ हद तक पदानुक्रमित लाभ तथा सांस्कृतिक शक्ति की स्थिति में उभरीं और अनुवादों की पहुँच ने उनकी पहुँच में इज़ाफ़ा किया। अभय मौर्य ने कहा कि क्लासिक्स का मतलब महाकाव्य भी होता है। जिन देशों या लोगों के इतिहास में महाकाव्य हैं, उनके चरित्र इन महाकाव्यों द्वारा गढ़े गए हैं। उन्होंने कहा कि विश्व साहित्य ऐसी पुस्तकों का समूह या संग्रह अथवा खज़ाना है, जो समय और स्थान की उन सीमाओं का उल्लंघन करने में सक्षम है।

नई दिल्ली

भारत का धार्मिक और दार्शनिक साहित्य

15 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

प्रो. मृणाल मिरी के साथ सत्र के अन्य प्रतिभागी

धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं ने भारत के साहित्यिक मस्तिष्कों को प्रभावित किया है तथा धार्मिक और दार्शनिक धाराओं के माध्यम से विकसित हुआ साहित्य बहुत महत्त्व का विषय रहा है। यह सत्र इसी विषय पर चर्चा के लिए समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता मृणाल मिरी ने की।

ए. रघुरामराजू ने बताया कि किस प्रकार राजनीति दर्शन से प्रभावित हुई है। अजय कुमार वर्मा ने भाषा और प्रकृति के बीच अलगाव पर चर्चा की। कंचन महादेवन ने बौद्ध दर्शन में सक्रिय अहिंसा के विचारों पर अपने विचार व्यक्त किए। ननी गोपाल महंत ने असम में भक्ति विद्वत्ता के महत्त्व पर प्रकाश डाला। पी. रामचंद्रशेखर ने तमिलनाडु तथा कश्मीर में छोटे दार्शनिक आंदोलनों की पृष्ठभूमि के बारे में बताया। प्रणव खुल्लर ने उपनिषदों के प्रभाव के बारे में बताया। वेन. थुपस्टन पालदन ने दर्शनशास्त्र के अनुवाद की आवश्यकता पर बल दिया।

सत्राध्यक्ष, प्रो. मृणाल मिरी ने गीता को धर्म और दर्शन के विलय का श्रेष्ठ उदाहरण बताया।

भारतीय भाषाओं में विज्ञान कथासाहित्य

15 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

इस सत्र में, अनिल मेनन, अतनु भट्टाचार्य, नागसूरी वेणुगोपाल, रॅथींद्र नाथ गोस्वामी तथा तरूण संत ने साधना शंकर की अध्यक्षता में भारतीय विज्ञान कथासाहित्य पर विमर्श किया। अनिल मेनन ने भारतीय विज्ञान कथा और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के बीच संबंधों के बारे में बात की। अतनु भट्टाचार्य ने बाङ्ला विज्ञान कथासाहित्य का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। तरुण संत ने भारतीय विज्ञान कथासाहित्य के विकास के बारे में चर्चा की। नागसूरी वेणुगोपाल ने तेलुगु विज्ञान कथासाहित्य की पृष्ठभूमि पर अपने विचार व्यक्त किए। रॅथींद्र नाथ गोस्वामी ने असमिया विज्ञान कथासाहित्य तथा अनुवाद के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सत्राध्यक्ष ने फंतासी और विज्ञान कथासाहित्य के बीच अंतर के महत्त्व के बारे में बात की।

भारतीय भाषाओं में तेज़ी से दमकता कथासाहित्य

15 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

सत्र की अध्यक्षता चंदना दत्ता ने की। शलाका कुलकर्णी ने बताया कि किस प्रकार प्रतिबंध रचनात्मकता को प्रेरित करते हैं। राफा दलवी ने भारत में फ़्लैश फिक्शन प्रकाशित करने की कठिनाइयों तथा इसकी अपील पर प्रकाश डाला। जैल वर्मा ने बताया कि किस प्रकार उन्हें स्वाभाविक रूप से फ़्लैश फिक्शन लिखना आया। अनुज गोसालिया ने ऑनलाइन फ़्लैश फिक्शन तक आसानी से पहुँचने पर चर्चा की।

चंदना दत्ता ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में फ़्लैश फिक्शन को वर्गीकृत करने में आनेवाली कठिनाई के साथ-साथ इसकी संक्षिप्तता के महत्त्व पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं में फ़्लैश फिक्शन शैली की समृद्ध तथा विस्तृत साहित्यिक परंपरा है। कुछ प्रतिष्ठित लेखकों ने वह लिखा है जिसे अब फ़्लैश फिक्शन कहा जाता है। यद्यपि, पश्चिमी दुनिया में जिस प्रकार का कठोर वर्गीकरण हम देखते हैं, यह वैसा नहीं है। भारत की भाषाओं में फ़्लैश फिक्शन शैली लेखन का एक परिष्कृत रूप रही है, जो बहुत गहरी अंतर्दृष्टि तथा अनंत संभावनाओं से भरपूर है। युवा पीढ़ी द्वारा आज की फ़्लैश फिक्शन ड्राइव मुख्य रूप से समय की कमी, ध्यान की कमी तथा इंटरनेट प्लेटफार्मों के विस्फोट से प्रेरित लगती है।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

15 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

बहुभाषी कवि सम्मिलन के प्रतिभागी

नई दिल्ली

'बहुभाषी कवि सम्मिलन' शीर्षक के अंतर्गत आयोजित कवि सम्मिलन सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित कवि के. शिवा रेड्डी ने की। इस सत्र में सुदेशना मैत्र (बाङ्ला), फुकन बसुमतारी (बोडो), सरबजीत गरचा (अंग्रेज़ी), विनीता अग्रवाल (अंग्रेज़ी), अनिल मिश्र (हिंदी), संगीता अग्रवाल (हिंदी), बुद्धिनाथ मिश्र (मैथिली), प्रवीण दवणे (मराठी), हृषिकेश मल्लिक (ओड़िआ) ने कविताओं का पाठ किया।

जूनून और निपुणता : लेखन के दोहरे स्तंभ

15 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

'जूनून और निपुणता : लेखन के दोहरे स्तंभ' पर पैनल चर्चा का संचालन माधुकर उपाध्याय ने किया उन्होंने कहा कि हर किसी के पास एक कहानी होती है, लेकिन उसे दूसरों तक पहुँचाने में जूनून और निपुणता की आवश्यकता है। साहित्य एक कला है और लेखन एक कौशल है और अमर लेखन का निर्माण लेखक के हाथों में नहीं होता, बल्कि यह जूनून और निपुणता के द्वारा संभव होता है। संपदा कुंकोलिएनकर ने कहा कि लेखन दुनिया का सबसे श्रेष्ठ और प्रभावशाली पेशा है। प्रभावी लेखन के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि यह जूनून ही था जिसने स्वतंत्रता सेनानियों को जेलों में अपनी कृतियाँ लिखने के लिए प्रेरित किया। आदित्य श्रीवास्तव ने यह विचार व्यक्त किया कि लेखन के लिए किसी के पास भावनाएँ होनी चाहिए, अन्यथा समाज को समझा नहीं जा सकता। निपुणता भी महत्त्वपूर्ण है और यह सब पुस्तकों के अध्ययन के माध्यम से आता है, जो लेखन का एकमात्र मार्गदर्शक है। मौमिता ने कहा कि जूनून मानव शरीर की आत्मा है और निपुणता वह वस्त्र है जिसे शरीर की इच्छा के अनुसार आकार देना होता है। मोहम्मद असदुद्दीन ने लेखन के विभिन्न रूपों पर बात करते हुए विशेष रूप से अनुवाद पर ध्यान केंद्रित किया, जिसे उन्होंने भारत जैसे बहुभाषी देश में लेखन का सबसे महत्त्वपूर्ण रूप बताया। उन्होंने इसे विस्तार से समझाया और अनुवाद के विभिन्न प्रकारों और प्रक्रियाओं के साथ-साथ आवश्यक निपुणता और प्रयासों पर प्रकाश डाला। आकांक्षा पारे काशिव ने जूनून और निपुणता पर बात करते हुए कहा कि लेखन के लिए प्रेरित होना ही जूनून है, किंतु निरंतर लेखन करना निपुणता है। केवल जूनून से कोई लाभ नहीं है, इसे निपुणता के साथ होना चाहिए, तभी व्यक्ति महाश्वेता देवी, मार्क जुकरबर्ग या एलन मस्क जैसा बन सकता है।

नैतिकता और साहित्य

15 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

'नैतिकता और साहित्य' पर पैनल चर्चा की अध्यक्षता पुरुषोत्तम अग्रवाल ने की। उन्होंने कहा कि इस सत्र में आपको नैतिकता और साहित्य पर कई प्रामाणिक सवाल मिलेंगे, न कि उत्तर। श्री जय साहा ने शक्ति साहित्य में नैतिकता पर बात करते हुए कहा कि शक्ति की दर्शन की नीतियों को नैतिकता के ध्यान में रखते हुए, यानी शक्ति पूजा और शाक्त साहित्य से जुड़ी धर्म और प्रथाएँ, जो समय के साथ उत्पन्न हुईं, दोनों बौद्धिक और भक्तिमूलक प्रकृति की होती हैं, उन्हें दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से विश्लेषित किया जा सकता है : दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण तथा ऐतिहासिक दृष्टिकोण। श्री रजनीश मिश्र ने कहा कि जीवन के मूल्य साहित्य में अच्छे से स्थापित हैं और यह लाभकारी है क्योंकि यह सभी को एकजुट करता है। *रामायण* और *महाभारत* जीवन के मूल्यों पर प्रकाश डालते हैं। श्रीमती रमनप्रीत कौर ने मध्यकालीन पंजाबी साहित्य में नैतिकता के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की और कहा कि एक साहित्यकार न केवल वही लिखता है जो देखा हुआ या बोला जाता है, बल्कि वह समाज के मूल्यों और इससे भी ऊपर, आदर्श समाज के बारे में लिखता है। श्री ओम द्विवेदी ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उभार के साथ, हमने मानवीय बुद्धिमत्ता से समझौता होते हुए देखा है। हम अब उस मोड़ पर हैं जहाँ मानव बुद्धिमत्ता कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपना ताज पहनाने में व्यस्त है और इस कारण डेटा नया पूंजीवाद बन गया है। श्री टी.एस. कृष्णन ने तिरुकुलरल में 'धार्मिक' सिद्धांतों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पोस्ट-संगम काल के दौरान तमिळ साहित्य में साहित्यिक मूल्यों में एक बड़ा बदलाव देखा जा सकता है तथा इसकी बेहतर समझ के बहुत सारे उदाहरण प्रस्तुत किए। अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल ने पैनलिस्टों द्वारा प्रस्तुत सभी विचारों को संक्षेप तथा प्रभावी ढंग से समझाया।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

15 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

श्री शीन काफ़ निज़ाम ने 'बहुभाषी कवि सम्मिलन' की अध्यक्षता की। श्री आदित्य कुमार मांडी ने संताली में एक कविता सुनाई तथा उसका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया। उन्होंने 'कविता' और 'कैसे विश्वास करूँ' कविताएँ भी सुनाईं। श्री जी.एस.आर. कृष्ण मूर्ति ने संस्कृत में मूल रूप से 'विश्वास' तथा अन्य कविताएँ प्रस्तुत कीं। श्री सुसंत कुमार नायक ने ओड़िआ में कई कविताएँ सुनाईं, जिनमें 'युद्ध' विषयक कविता उसके अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ शामिल थी। श्री परेश कामत ने कोंकणी में 'वादे' कविता सुनाई तथा उसका हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। श्री श्रीराम परिहार ने कुछ नवगीत प्रस्तुत किए, जिनमें 'सीप भर' भी शामिल थी। श्री नसीब सिंह मनहास ने डोगरी में एक गीत तथा कुछ ग़ज़लें प्रस्तुत कीं। अंत में, अध्यक्ष ने कुछ सुंदर नज़्में और ग़ज़लें भी सुनाईं।

भारतीय साहित्य में आत्मकथाएँ

15 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

सुश्री कविता शर्मा ने 'भारतीय साहित्य में आत्मकथाएँ' सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि उन्हें आत्मकथा बहुत पसंद है क्योंकि इसमें केवल व्यक्ति के अपने अनुभव नहीं होते, बल्कि यह पूरे समाज को भी प्रतिबिंबित करती है। उन्होंने कस्तूरबा गाँधी की आत्मकथा तथा अमृता प्रीतम की आत्मकथा का भी उल्लेख किया। प्रोफ़ेसर गरिमा श्रीवास्तव ने महिलाओं द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं की सीमाओं पर बात की। श्री जेठलाल चंद्रवाड़िया ने गुजराती आत्मकथाओं की उत्पत्ति और विकास का विश्लेषण प्रस्तुत किया। सुश्री लिपिपुष्पा नायक ने ओड़िआ आत्मकथाओं की कुछ चयनित कृतियों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री राजेंद्र छेत्री ने कन्नड साहित्य में आत्मकथाओं के इतिहास पर बात की। प्रोफ़ेसर राजकुमार ने भारत की पहली आत्मकथा तथा कुछ अन्य प्रमुख व्यक्तित्वों द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया।

मीडिया और साहित्य

15 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

श्री अजय सिंह ने 'मीडिया और साहित्य' विषय पर आधारित इस सत्र की अध्यक्षता की और बताया कि किस प्रकार से यह दोनों एक-दूसरे को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करते हैं। उन्होंने कहा कि सिनेमा भी मीडिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। मीडिया में कोई भी शब्द अनूदित करके प्रयोग में लाया जा सकता है, किंतु साहित्य में सटीक शब्दों का प्रयोग करना आवश्यक है। इस संदर्भ में उन्होंने कुछ प्रमुख फिल्मों का उल्लेख किया।

श्री देवांशु कुमार झा ने विभिन्न प्रकार के मीडिया के संदर्भ में मीडिया

सत्र के प्रतिभागी

और साहित्य के बीच के अंतर पर ध्यान केंद्रित किया। श्री इमरान हुसैन ने यह बताया कि मीडिया और साहित्य एक-दूसरे पर किस प्रकार निर्भर हैं। उन्होंने असमिया साहित्य के प्रमुख कार्यों का उल्लेख किया।

श्री मंगेश वैषंपायन ने कहा कि साहित्य और मीडिया एक-दूसरे के पूरक हैं। मीडिया का जीवनकाल लघु होता है, किंतु बाद में इसे पुस्तक रूप में भी प्रकाशित किया जा सकता है। आजकल, सोशल मीडिया भी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गया है।

सुश्री शेफाली वैद्य ने कहा कि मीडिया का काम अपने संदेश को दर्शकों तक पहुँचाना होता है और साहित्य भी एक माध्यम के रूप में अपने संदेश को पाठकों तक कहानी, उपन्यास आदि के माध्यम से पहुँचाता है। दोनों में कोई अंतर नहीं है। दोनों एक-दूसरे से संबंधित हैं।

श्री श्याम पारख ने कहा कि मीडिया की नींव में साहित्य की आवश्यकता नहीं है। मीडिया में भाषा का प्रयोग केवल सूचना देने के लिए किया जाता है। मीडिया और साहित्य दोनों ही भाषा पर निर्भर करते हैं।

विविधता में एकता

15 मार्च 2024, कबीर सभागार, नई दिल्ली

'विविधता में एकता' सत्र की अध्यक्षता अंग्रेज़ी के प्रख्यात लेखक संजीव चोपड़ा ने की। उन्होंने कहा कि अंग्रेज़ी भाषा ने भी विविधता में एकता लाने का कार्य किया है। मुल्कराज आनंद की विविधता में एकता 'अनटचेबल' जो छुआछूत को लेकर लिखी गई है, अंग्रेज़ी से लेकर कई भाषाओं में प्रकाशित हुई। उसी प्रकार जे.सी. पिंटो, राजकमल झा, अनीता देसाई, किरण देसाई आदि कितने लेखक हैं जिन्होंने अंग्रेज़ी लेखन के माध्यम से अनेकता में एकता लाने का कार्य किया।

असमिया के प्रख्यात लेखक अरिंदम बरकटकी ने कहा कि साहित्य अकादेमी का कार्यक्रम विविधता में एकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। भारत अपने विविधता में एकता के लिए गर्व का अनुभव करता है। 14वीं शताब्दी में असमिया में वाल्मीकि रामायण का सर्वप्रथम अनुवाद हुआ था। भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक विविधता के बावजूद भारतीय एक हैं। एकीकरण और समावेषण के विविध आयामों के बावजूद हमारे बीच एकता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर और अनुवादक उज्ज्वल जाना ने 'विविधता में एकता की झलक' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत। उन्होंने कहा कि टैगोर की 'भारत तीर्थ' में विविधता में एकता चित्रित होती है। भारत की सभ्यता और संस्कृति को विभिन्न देशों के आए लोगों ने भी ग्रहण किया है। बाणभट्ट, कालिदास, भवभूति की रचनाओं पर भारत के विभिन्न प्रांतों, क्षेत्रों में कार्य हुआ है। इन रचनाओं के रस, गुण अलंकार, वक्रोक्ति के सभी सिद्धांत अत्यंत रुचिकर हैं।

हिंदी के लेखक जगन्नाथ दुबे ने कहा कि हिंदुस्तान की परिकल्पना बहुवचनात्मक होगी, विविधात्मक होगी। हिंदी भाषा या साहित्य में आप देखें तो 22 भाषाओं के अलावा 100 से भी अधिक बोलियाँ हिंदुस्तान में बोली जाती हैं। रामकथा विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध है, किंतु सभी बोलियों में रामकथा भिन्न-भिन्न रूपों में उपलब्ध है। भारतीय होने का बोध ही हमारे पंजाबी या भारतीय होने का पूरक है। यही विशिष्टता हमारी भारतीयता का पूरक है। सभी के अस्तित्व को बचाए रखकर ही हम अपनी एकता को बचाए रख सकते हैं।

कन्नड के प्रख्यात लेखक गुंडेर एन.एस. ने कहा कि विविधता में एकता कहाँ से आया है इस प्रश्न के साथ अपनी बात रखना चाहूँगा। विविधता प्राकृतिक रूप से हमें प्राप्त हुई है, जबकि मनुष्य द्वारा एकता का निर्माण हुआ है। हमारा राष्ट्रीय आंदोलन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है जिसमें विविध प्रांत के होते हुए भी सभी एक ही राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में शामिल हुए। विविध भाषाओं संस्कृतियों, रीति-रिवाज़ों, धर्मों के बावजूद कन्नड भाषा क्षेत्र के लोग भी एक ही राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में शामिल हैं।

मलयाळम् के प्रतिष्ठित लेखक तथा कोशकार ए.एम. श्रीधरन ने कहा कि केरल के धार्मिक अनुष्ठान थैयम के माध्यम से अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि जाति धर्म सब बाहरी आवरण हैं। केरल के प्रत्येक 25 किलोमीटर में विभिन्न भाषा, संस्कृति, बोलियों तथा धर्मों के लोग रहते हैं, किंतु सभी लोगों में एकता है। विविधता में एकता का मूल 'द्रविड़ियन संस्कृति' में है। उन्होंने आदि शंकराचार्य के 'मनीषापंचकम' का भी उल्लेख किया।

आदिवासी कवि सम्मिलन

15 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

आदिवासी कवि

'आदिवासी कवि सम्मिलन' सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित एस.डी. ज्ञानेश्वरन ने की। इस सत्र में गोविंद गायकी (भिलाली), थोइतक डिंगटोई चुंगबोई चिरु (चिरु), तुम्बॅम रिबा (गालो), लैनबोन काबुइ (काबुइ), सोनम वांगमू (मोनपा), प्रवीण पवार (पारधी) तथा खुवोलु (टेनिडी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

आदिवासी कवि सम्मिलन

15 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

आदिवासी कवि

सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित लेखिका मल्ली गाँधी (ईर्राकुर्ला) ने की। इस सत्र में राजकिशोर नायक (बाथुडी), जान केम्पराई (दिमासा), जयसिंह संता (कुवि), प्रेमचंद उरांव (उरांव), मुबिन राभा (राभा) तथा योग्यता भार्गव (सहरिया) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

आदिवासी कवि सम्मिलन

15 मार्च 2024, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

इस सत्र की अध्यक्षता भोटिया भाषा के प्रतिष्ठित विद्वान कुलदीप सिंह बंपल ने की। इस सत्र में मुहम्मद बद्दुर (ब्यारी), तेत्रू उरांव (कुडुख), सरन उरांव (कुडुख) तथा वाल्टे गिंखेंपौ (पाइते) ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया ।

नई दिल्ली

बहुभाषी कवि सम्मिलन

15 मार्च 2025, ललद्यद सभागार, नई दिल्ली

कवि सम्मिलन के प्रतिभागी

'बहुभाषी कवि सम्मिलन' में शेफाली चतुर्वेदी (ब्रजभाषा), बरखा बलवी (देहवाली), मोहम्मद मानशाह खाकी (गोजरी), गुलंचो कुमारी (कुरुमाली), नवाङ् छिरिङ शक्सपो (लद्दाखी) तथा द्विजेंद्रनाथ भकत (राजवंशी) ने कविताओं का पाठ किया।

21वीं सदी की भारतीय कविता : बहुभाषी कवि सम्मिलन

15 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

'21वीं सदी की भारतीय कविता' शीर्षक के अंतर्गत आयोजित बहुभाषी कवि सम्मिलन की अध्यक्षता जेरी पिंटो ने की। इस सत्र में बिजय शंकर बर्मन (असमिया), मृदुल दासगुप्ता (बाङ्ला), गुरु लद्दाखी (अंग्रेज़ी), मुग्धा सिन्हा (अंग्रेज़ी), प्रेम जनमेजय (हिंदी), मो. मंज़र सुलेमान (मैथिली), पी.सी. मुरलीमाधवन (संस्कृत) तथा वामसीकृष्ण (तेलुगु) ने कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

कहानी-पाठ

15 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

'कहानी-पाठ' सत्र की अध्यक्षता मनु बालिगर ने की। इस सत्र में शशिकला एच. (कन्नड), अरबिंद्र राय (ओड़िआ), जया जादवानी (सिंधी) तथा भारतीबालन (तमिळ) ने अपनी कहानियों का पाठ प्रस्तुत किया।

कहानी-पाठ सत्र के प्रतिभागी

नई दिल्ली

युवा साहिती : युवा भारत का उदय : कवि सम्मिलन

15 मार्च , तुलसीदास सभागार, नई दिल्ली

कवि सम्मिलन के प्रतिभागी

'युवा साहिती : युवा भारत का उदय' शीर्षक के अंतर्गत आयोजित कवि सम्मिलन सत्र की अध्यक्षता कश्मीरी के प्रतिष्ठित लेखक रफ़ीक़ मसूदी ने की। इस सत्र में तमोघ्न मुखोपाध्याय (बाङ्ला), सागर नज़ीर (कश्मीरी), बिमला लुइटेल तुमिन (नेपाली), जगदीप सिद्धू (पंजाबी), ऋषिराज पाठक (संस्कृत) तथा उमर फ़रहत (उर्दू) ने कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

15 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

'बहुभाषी कवि सम्मिलन' के सत्र की अध्यक्षता के.जी. शंकर पिल्लई ने की। इस सत्र में स्वरूप चाँद (बाङ्ला), राजेंद्र उपाध्याय (हिंदी), रंजीता श्रीवास्तव (हिंदी), मो. सरफराज़ पारे (कश्मीरी), सुरेश मोहिते (मराठी), कृष्ण कुमार महांति (ओड़िआ) तथा स्वामी अंतर नीरव (पंजाबी) ने कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

कवि सम्मिलन के प्रतिभागी

बहुभाषी कहानी-पाठ

15 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

'बहुभाषी कहानी-पाठ' सत्र की अध्यक्षता अब्दुल बिस्मिल्लाह ने की। इस सत्र में दीप्ति बबूटा (पंजाबी), देबप्रसाद दास (ओड़िआ) तथा दिनेश पांचाल (राजस्थानी) ने अपनी कहानियों का पाठ प्रस्तुत किया।

नई दिल्ली

आदिवासी कवि सम्मिलन

15 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

सत्र की अध्यक्षता ए.आर. गोविंदस्वामी (लंबाडी) ने की। इस सत्र में कविता कुसुगल (बेड़ा), अनीमा तेलरा बिरिजिया (बिरिजिया), सोलोनी बरहे (खासी), रोशन रामदास जाम्बू (कोरकू), रघुनाथ मडकानी (कोया) तथा मालती भास्कर (पर्धन) ने अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ प्रस्तुत कीं, इनमें से कुछ कविताओं का हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया।

आदिवासी कवि सम्मिलन

15 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

सत्र की अध्यक्षता गागरीन साबर (सौरा) ने की। मुदुली (डिडीयी), रोस्तम देबबर्मा (कोकबोरोक), सलोमी एक्का (मुंदारी) तथा अल्ताफ सलिम तडवी (तडवी) ने अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ प्रस्तुत कीं, इनमें से कुछ कविताओं का हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया।

दर्पण थिएटर ग्रुप, गोरखपुर द्वारा 'सम्राट अशोक' नाटक का मंचन

15 मार्च 2024, मेधदूत मुक्ताकाशी मंच-1, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान दर्पण थिएटर ग्रुप, गोरखपुर द्वारा प्रख्यात हिंदी नाटककार दयाप्रकाश सिन्हा कृत नाटक 'सम्राट अशोक' का मंचन किया गया, जिसका निर्देशन चित्तरंजन त्रिपाठी द्वारा किया गया।

श्री दयाप्रकाश सिन्हा कृत नाटक 'सम्राट अशोक' का मंचन

नाटक के कलाकार

नई दिल्ली

अखिल भारतीय दिव्यांग लेखक सम्मिलन

16 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

(बाएँ से दाएँ) श्री एस. रघुनाथ, श्री संजय विद्रोही, श्री राजेश आसुदानी, सुश्री मोनिका दास, सुश्री सुरवि चटर्जी तथा श्री शेख उबेद गुल ग़ज़ल

उद्घाटन सत्र में, स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने दिया। उन्होंने कहा कि दिव्यांग लोगों के साथ व्यवहार बहुत संवेदनशीलता के साथ किया जाना चाहिए। उन्होंने हाशिये के स्वरों को मंच प्रदान करने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए जी.जे.वी. प्रसाद ने दिव्यांगता के साथ अपने पारिवारिक अनुभव साझा किए। उन्होंने दिव्यांग लोगों के साहित्यिक प्रतिनिधित्व की परंपरा का उल्लेख किया जो महाकाव्यों तक फैली हुई है। उन्होंने 'दिव्यांग' की तुलना में 'अलग प्रकार के सक्षम' शब्द के मुद्दों को भी समझाया।

साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने राष्ट्रीय एकता के विचारों में दिव्यांग लोगों को शामिल करने की आवश्यकता पर बात की। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि समाज द्वारा पीछे छोड़ दिए गए लोगों पर विचार करना तथा उन्हें ऊपर उठाने के लिए हमें सामूहिक विशेषाधिकार का उपयोग करने की आवश्यकता है।

प्रथम सत्र में, मोनिका दास (असमिया), सुरवि चटर्जी (बाङ्ला), संजय विद्रोही (डोगरी), एस. रघुनाथ (कन्नड), थॉउडम नेत्रजीत सिंह (मणिपुरी), सत्यनारायण मिश्र (ओड़िआ), इंद्रजीत नंदन (पंजाबी), संजय कुमार अमरेटा (राजस्थानी), नागराजू (संस्कृत) तथा वीरेश अवनिश्री (तेलुगु) ने उपस्थित श्रोताओं को अपनी अंग्रेज़ी अथवा हिंदी में अनूदित कविताएँ सुनाईं। शेख उबेद गुल ग़ज़ल (कश्मीरी) ने अनुवाद के साथ उर्दू में अपनी कविता प्रस्तुत की। सत्राध्यक्ष राजेश आसुदानी (सिंधी) ने भी हिंदी में अनूदित अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

द्वितीय सत्र 'मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ' विषय पर आधारित था। इस सत्र में कोमल कामरा, नितिन वी. मेहता, एस.एम. सादिक तथा सोनाली नवांगुल ने अरविंद पी. भाटीकर की अध्यक्षता में अपनी साहित्यिक यात्राओं के बारे में बात की। कामरा ने विभिन्न विकलांगताओं के संबंध में जागरूकता बढ़ाने के साधन के रूप में लेखन के बारे में बात की। उन्होंने अपनी शोध गतिविधियों के बारे में भी बताया। एस.एम. सादिक ने मानवता के कार्य तथा समानता को बढ़ावा देने के एक उपकरण के रूप में लेखन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। नितिन वी. मेहता ने स्वयं के भीतर की आंतरिक इच्छा को संतुष्ट करने के लिए लिखने की आवश्यकता पर बात की। नवांगुल ने स्वयं को खोजने तथा आनंद प्रसारित करने के एक तरीके के रूप में लेखन पर बात की। अध्यक्ष ने सामाजिक गतिशीलता तथा सामुदायिक निर्माण के लिए एक उपकरण के रूप में लेखन के बारे में बताया।

कहानी-पाठ के तृतीय सत्र की अध्यक्षता के.आर.पी. सरवनामणिकंदन (तमिऴ) ने की। इस सत्र में बिष्णु प्रसाद बसुमतारी (बोडो), नरेंद्र नाथ झा (मैथिली), अर्जुन शर्मा (नेपाली) तथा लक्ष्मण किस्कू (संताली) ने हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ कहानियाँ प्रस्तुत कीं। कंचन सिंह चौहान (हिंदी) तथा साहेब ख़ान सागर (उर्दू) ने अपनी कहानियाँ अपनी मूल भाषा में सुनाईं।

सत्राध्यक्ष के.आर.पी. सरवनामणिकंदन (तमिऴ) ने अपनी कहानी का अंग्रेज़ी अनुवाद सुनाकर सत्र का समापन किया।

नई दिल्ली

आइंस्टीज वर्ल्ड रिकार्डस ने विश्व कीर्तिमान का दिया प्रमाण-पत्र

16 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार, नई दिल्ली

छह दिवसीय साहित्योत्सव 2024 को दुनिया का सबसे बड़ा साहित्योत्सव मानते हुए आइंस्टीन वर्ल्ड रिकार्डस, दुबई की टीम ने एक सादे समारोह में इस विश्व कीर्तिमान का प्रमाण-पत्र साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक, उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा तथा सचिव के. श्रीनिवासराव को सौंपा। प्रमाण-पत्र में छह दिन चले दुनिया के इस सबसे बड़े साहित्योत्सव में 190 सत्रों में 1100 से अधिक लेखकों के भाग लेने तथा इसमें 175 से अधिक भाषाओं का प्रतिनिधित्व होने को प्रमाणित किया गया है।

आइंस्टीज वर्ल्ड रिकार्डस का प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव, श्री माधव कौशिक तथा प्रो. कुमुद शर्मा

गोपीचंद नारंग का जीवन और कृतित्व पर परिसंवाद

16 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार, नई दिल्ली

उर्दू के प्रमुख लेखक, आलोचक, शोधकर्ता तथा भाषा विज्ञान के माहिर प्रो. गोपीचंद नारंग के जीवन और कृतित्व पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में विशिष्ट अतिथि श्री गुलज़ार ने प्रो. नारंग के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अभी यकीन नहीं हो रहा कि आज प्रो. नारंग हमारे दरम्यान मौजूद नहीं हैं। उर्दू की हर महफिल में हमारी आँखें उनको तलाश करती रहती हैं। नारंग साहब की ग़ैरमौजूदगी अभी अंदर समाई नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे दौर में उर्दू के बहुत से विद्वान हुए लेकिन मुझे नारंग साहब उर्दू में पिता तुल्य व्यक्तित्व के रूप में दिखाई देते हैं। जब वह महफिल को संबोधित करते थे तो एक-एक शब्द ऐसे चुन-चुन कर सामने रखते थे जो उनका ही कमाल था। उन्होंने नारंग साहब पर लिखी अपनी शायरी भी प्रस्तुत की। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रो. गोपीचंद नारंग की अदबी खिदमात पर रोशनी डाली, साथ ही उन्होंने नारंग साहब से अपने जाती ताल्लुकात के बारे में बताते हुए कहा कि आज मैं जो कुछ भी हूँ इसमें प्रो. नारंग का बहुत अहम रोल है। उन्होंने आगे कहा कि प्रो. नारंग के अध्यक्षीय कार्यकाल में साहित्य अकादेमी ने बहुत तरक्की की। उन्होंने यह भी कहा कि बरसों बाद अदब में कोई लीजेंड पैदा होता है, हिंदुस्तान की अदबी दुनिया में प्रो. नारंग एक लीजेंड की हैसियत रखते थे। आरंभिक वक्तव्य देते हुए अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने प्रो. नारंग की

श्री माधव कौशिक तथा श्री गुलज़ार के साथ परिसंवाद के प्रतिभागी

नई दिल्ली

अदबी ज़िंदगी, उनकी किताबों और इनामात-ओ-एज़ाज़ात का ज़िक्र करते हुए कहा कि प्रो. नारंग एक बहुआयामी व्यक्तित्व के मालिक थे। उनकी शोहरत आलमी सतह की थी। वह उर्दू के सफ़ीर कहे जाते थे।

इस खास कार्यक्रम में प्रो. गोपीचंद नारंग की धर्मपत्नी श्रीमती मनोरमा नारंग ने बतौर मेहमान-ए-खुसूसी शिरकत की। मेहमान-ए-एज़ाज़ी उर्दू के मुम्ताज़ नक़्क़ाद-ओ-दानिश्वर प्रो. सदीकुर्रहमान किदवई ने कहा कि उनका नारंग साहब से ताल्लुक पच्चास बरसों से ज़्यादा अर्से का रहा है। उन्होंने कहा कि नारंग साहब की शख़्सियत के अंदर एक अजीब रंगारंगी और नग्मगी पाई जाती थी जो नग्मगी उर्दू अदब का ख़ास हिस्सा है। जिस ज़माने में लिसानियात और साख़्तियात पर ज़्यादा तवज्जो नहीं दी जाती थी उस ज़माने में प्रो. नारंग ने लिसानियात और साख़्तियात पर काम किया और बहुत अच्छी किताबें लिखीं। उन्होंने आगे कहा कि प्रो. नारंग सिर्फ़ उर्दू ही नहीं, बल्कि हिंदुस्तान की हर ज़बान के अदीबों के दरमयान मकबूल थे। मुम्ताज़ उर्दू नक़्क़ाद-ओ-दानिश्वर जनाब निज़ाम सिद्दीकी ने अपना विद्वत्तापूर्ण बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मैं जब नारंग साहब से मुसाफा करता तो महसूस होता था कि हिंदुस्तान की रूह से मुसाफा कर रहा हूँ। उन्होंने आगे कहा कि मौजूदा अहद को अहद-ए-नारंग से मौसूम किया जा सकता है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने कहा कि जब कोई अदीब 'स्कूल ऑफ़ थॉट' बन जाए तो वह एक इदारा की हैसियत इख़्तियारकर लेता है। प्रो. नारंग की हैसियत हिंदुस्तानी अदब में एक इदारे की है।

परिसंवाद के प्रतिभागी

उद्घाटन सत्र के बाद प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. शाफ़े क़िदवई ने कहा कि प्रो. नारंग ने फिक्शन तन्कीद पर जो काम किया है उसका असर तादेर कायम रहेगा। उन्होंने प्रेमचंद की कहानी 'कफन' के हवाले से प्रो. नारंग के मौकिफ का ज़िक्र करते हुए कहा कि जिस तरह प्रो. नारंग ने 'कफन' कारईन को समझाया वो उनकी तंकीदी बसीरत का सबूत फराहम करती है। इस सत्र में प्रो. ख़्वाजा मुहम्मद इकरामुद्दीन ने अपने आलेख में कहा कि 'साख़्तियात पस साख़्तियात और मशरिकी शेरियात' प्रो. नारंग की सबसे अहम किताब है। इस किताब के बाद ही एक नज़रियासाज़ की हैसियत से उनकी बड़ी शख़्सियत सामने आती है। सत्र में प्रो. असलम जमशेदपुरी तथा डॉ. अहमद सगीर ने प्रो. नारंग की फिक्शन तंकीद के हवाले से अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. दानिश इलाहबादी ने प्रो. नारंग की शख़्सियत पर ख़ास आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री शीन काफ़ निज़ाम ने की और कहा कि अदब के फलसफे के हवाले से फन से रिश्ता पहली बार प्रो. नारंग ने तशकील किया। इस सत्र में प्रो. खालिद महमूद, डॉ. असद रज़ा, डॉ. शाहीना तबस्सुम तथा प्रो. तारिक छतारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री शमीम तारिक़ ने की तथा इस सत्र में श्री हक्कानी अल-कासमी, श्री फे. सीन एजाज़, डॉ. कासिम खुर्शीद तथा प्रो. मुहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा ने अपने मकाले पेश किए। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी मौजूद रहे।

बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक समाज में अनुवाद

16 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर हरीश नारंग ने की। उन्होंने 'बहुभाषी', 'बहुसांस्कृतिक' और 'अनुवाद' शब्दों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं के संदर्भ में इन विचारों के विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने हाइब्रिड भाषा सहित विभिन्न प्रकार की भाषाओं पर भी बात की। उन्होंने सामासिक संस्कृति के निर्माण की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अनुवाद इस उद्देश्य में उपकरण के रूप

प्रो. हरीश नारंग

श्री दामोदर खडसे

नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

में कार्य करता है। उन्होंने अनुवाद के अपने अनुभवों के संदर्भ में दर्शकों को इस चुनौतीपूर्ण कार्य की जानकारी भी दी।

अजय झा ने कहा कि अनुवाद कई संस्कृतियों तथा भाषाओं के बीच सेतु का काम करता है। उन्होंने भारत और उसके बाहर संस्कृतियों के उत्थान में अनुवादकों की भूमिका पर बात की। उन्होंने मैथिली भाषा को केंद्रित करते हुए भारत में अनुवाद के इतिहास पर प्रकाश डाला। दामोदर खडसे ने भारत की बहुभाषी प्रकृति पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने क्षेत्रीय किस्सों, बोलियों, सामाजिक मुहावरों के अनुवाद के मुद्दे पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने अनुवादकों की सीमाओं पर बात की। उन्होंने इस संदर्भ में *रामायण* तथा कुछ अन्य ग्रंथों के अनुवाद का भी उल्लेख किया। जीवन राणा ने समग्र रूप से भारत में ज्ञान के प्रसार में अनुवाद की भूमिका पर बात की। उन्होंने सीखने के माध्यम के रूप में भाषाओं के उपयोग और महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में भाषा अध्ययन को दी गई जगह के बारे में बताया। उन्होंने सांस्कृतिक आत्मसातीकरण के साधन के रूप में अनुवाद की भी बात की। रणजीत साहा ने कहा कि अनुवादकों को आज तक उनका हक़ नहीं मिल पाया है। उन्होंने किसी भाषा के अर्थ पक्ष के अनुवाद की समस्याओं पर बात की। उन्होंने दो अलग-अलग भाषाओं के बीच सीधे अनुवाद के महत्त्व पर बात की। उन्होंने भारतेंदु हरिश्चंद्र, रामचंद्र शुक्ल तथा अज्ञेय जैसे प्रख्यात अनुवादकों का उल्लेख किया।

वीणा शृंगी ने कहा कि अनुवादकों को एक भाषा से दूसरी भाषा में सीधे अनुवाद करना चाहिए। उन्होंने कविता के अनुवाद की समस्याओं पर बात की। उन्होंने अनुवादों का मूल्यांकन करने में अनुवाद के समीक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने सिंधी साहित्य में अनुवाद के स्थान पर ध्यान केंद्रित किया।

वासिरेड्डी नवीन ने तेलुगु में प्रचुर मात्रा में अनूदित साहित्य के बारे में बात की। उन्होंने विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद पर निरंतर चर्चा के महत्त्व को विशेषरूप से आवश्यक बताया। उन्होंने अनुवादकों की राष्ट्रीय रजिस्ट्री को अद्यतन करने के महत्त्व पर बात की और कहा कि विश्वविद्यालयों में अनुवाद के अध्ययन के लिए केंद्र बनाए जाने चाहिए।

योगेश अवस्थी ने समकालीन युग में सोशल मीडिया में सामग्री के अनुवाद पर बात की। उन्होंने एक संस्कृति के सकारात्मक पक्षों को दूसरी संस्कृति में लाने में अनुवाद की भूमिका को रेखांकित किया।

हमें भारत की भाषाओं का संरक्षण क्यों करना चाहिए?

16 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

अन्विता अब्बी ने 'हमें भारत की भाषाओं का संरक्षण क्यों करना चाहिए?' विषय पर केंद्रित सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने लोगों को अपनी पहचान के प्रति जागरूक बनाने, सहिष्णुता सिखाने तथा दूसरों की सांस्कृतिक पहचान का सम्मान करने के लिए भाषायी विविधता के महत्त्व पर बात की। उन्होंने भारत की मौखिक तथा लोक भाषाओं की विरासत के बारे में भी बताया, जो पूरे भारत में बोली जाने वाली हज़ारों भाषाओं के साथ अपने पूरे गौरव के साथ जीवित हैं। आयेशा किदवई ने हमारी भाषाओं तथा संस्कृतियों की खोज में पश्चिमी दुनिया के

डॉ. अन्विता अब्बी के साथ सत्र के अन्य प्रतिभागी

प्रयासों पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने इस संदर्भ में बौद्ध संस्कृति पर भी प्रकाश डाला। पम्मी पवन कुमार ने दुनिया भर में, विशेषकर भारत में, भाषाओं के लगातार क्षरण पर बात की। उन्होंने कहा ऐसा स्क्रिप्ट की कमी सहित कई कारणों से है। रीमा हुजा ने सभ्यताओं के संरक्षण तथा भंडार के रूप में भाषाओं के महत्त्व पर बात की।

सच्चिदानंद महांति ने भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के महत्त्व पर प्रकाश डाला। तन्मय भट्टाचार्य ने विभिन्न भाषा परिवारों से संबंधित भाषाओं की किस्मों पर बात की।

भारतीय संदर्भ में पुनर्लेखन/पुनःसृजन के रूप में अनुवाद

16 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

उक्त सत्र की अध्यक्षता रीता कोठारी ने की। उन्होंने विचारों के आदान-प्रदान के अंतर-सांस्कृतिक अध्ययन के महत्त्व पर चर्चा की। उन्होंने दर्शकों को अपने ऊपर सिंधी सूफी कवि शाह अब्दुल लतीफ के प्रभाव के बारे में भी बताया।

मिनी कृष्णन ने इतिहास और संस्कृति को बेहतर तरीके से समझने के साधन के रूप में साहित्य के बारे में बात की। उन्होंने अपनी मातृभाषा में अनुवाद करते समय अनुवादक की ओर से मातृभाषा के संपूर्ण ज्ञान के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि तीसरी भाषा के माध्यम से अनुवाद करने की तुलना में सीधा अनुवाद बेहतर है। जेवियर कोटा ने कोंकणी भाषा की तुलना में मराठी भाषा को अधिक

डॉ. रीता कोठारी के साथ सत्र के अन्य प्रतिभागी

महत्त्व मिलने पर बात की। उन्होंने मराठी भाषा को बढ़ावा देने में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

कीर्ति रामचंद्र ने उस प्रेरणा के बारे में बताया जिसने उन्हें संपादक के बजाय अनुवादक का कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने मराठी से अंग्रेज़ी/कन्नड तथा इनमें परस्पर अनुवाद करने के अपने अनुभवों के बारे में भी बताया।

गायत्री मनचंदा ने स्थानीयता के अनुसार मराठी और हिंदी की विभिन्न विविधताओं पर बात की।

नई दिल्ली

कहानी-पाठ

16 मार्च 2024, वेदव्यास सभागार, नई दिल्ली

श्री के. इनोक के साथ सत्र के अन्य प्रतिभागी

इस कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता के. इनोक ने की। इस सत्र में राज राही (डोगरी), ऋतुपर्णा ख़ान (अंग्रेज़ी), भरत ओला (राजस्थानी) तथा ग़ज़नफर (उर्दू) ने अपनी-अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। कथाकारों ने पहले अपनी भाषा में कहानी के कुछ अंश पढ़े तथा बाद में उनके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। कुछ कहानियों के शीर्षक थे - 'द गेज़', 'एक सवाल' तथा 'सरस्वती स्नान' आदि।

विभिन्न भाषाओं में भारतीय कविता : कवि सम्मिलन

16 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

श्री हरीश मीनाश्रु के साथ सत्र के अन्य प्रतिभागी

'विभिन्न भाषाओं में भारतीय कविता : कवि सम्मिलन' सत्र की अध्यक्षता हरीश मीनाश्रु ने की। प्रख्यात गुजराती कवि ने साहित्योत्सव के आख़िरी दिन सभी से मिलकर अपनी खुशी ज़ाहिर की। उन्होंने कहा कि आज गुजराती भाषा को लेखकों को आमंत्रित करने का सम्मान मिला है। प्रसिद्ध अंग्रेज़ी कवि तेनज़िन त्सुंदु ने अपनी मातृभाषा तिब्बती में फिर अपनी कविताओं - 'निर्वासन गृह', 'जब बारिश होती है', 'धर्मशाला' आदि का अनुवाद में पाठ किया। प्रख्यात हिंदी कवि अश्विनी शांडिल्य ने 'नायकों को नहीं पता', 'दीवारें', 'दूसरों के बीच में' कविताओं का पाठ किया। सुरजीत जज ने कुछ ग़ज़लें सुनाईं। प्रख्यात उर्दू शायर 'आदिल रज़ा मंसूरी ने 'ज़माना पहले है' जैसी कुछ नज़्में और कुछ ग़ज़लें पढ़ीं। अंत में, अध्यक्षता कर रहे हरीश मीनाश्रु ने कहा कि कविता हमारे परिवेश के सूक्ष्मतम विवरणों को पकड़ती है तथा उन्होंने कुछ कविताएँ भी सुनाईं।

21वीं सदी की भारतीय कविता : कविता-पाठ

16 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

सत्र की अध्यक्षता करते हुए सुरेंद्र दुबे ने कहा कि आपकी उपस्थिति इस बात का प्रमाण है कि मानवता आपके अंदर अभी भी जीवित है। कविता ने सदैव मानवतावाद को कायम रखा है तथा यह मानवीय भावनाओं का परिणाम है। कविता अमर है तथा भविष्य में भी सदैव रहेगी। यहाँ मंच पर उपस्थित कवियों की छटा देखते ही बनती है और कविता ने उन्हें इंसान बना दिया है। रश्मि चौधरी ने बोडो भाषा में 'रास्ता' और 'जीवन' शीर्षक कविताओं का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया। असानी भादुड़ी ने 'द मिडिल क्लास दैट वाज़ इंडिया' आदि शीर्षक से एक मूल कविता का पाठ किया। सागरी छाबड़ा ने 'गाज़ा के एक अस्पताल में', 'होमवर्क' आदि कविताओं का पाठ किया। लुईस बिस्ता ने हिंदी में एक ग़ज़ल तथा 'संकल्प' विषयक कविता का नेपाली से अंग्रेज़ी में पाठ किया। बद्रीनाथ मिश्र ने ओड़िआ में भजन की कुछ पंक्तियाँ सुनाईं तथा एक हिंदी कविता का पाठ किया। गगनदीप शर्मा ने पंजाबी में कुछ ग़ज़लें सुनाईं। असलम हसन ने कुछ उर्दू शायरी प्रस्तुत की तथा हिंदी में 'पिता', 'लॉकडाउन' आदि कविताएँ सुनाईं। अंत में, कार्यक्रम के अध्यक्ष सुरेंद्र दुबे ने 'विकास' शीर्षक से अपनी कविता सुनाई।

बहुभाषी कहानी-पाठ

16 मार्च 2024, मीराबाई सभागार, नई दिल्ली

सत्र के प्रतिभागी

सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी लेखिका सुश्री शीला झुनझुनवाला ने की। सत्र में प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक श्री अरुणोदय साहा, हिंदी लेखक सुश्री अल्पना मिश्रा तथा नेपाली लेखक श्री खर्ग बहादुर कौशिक (नेपाली) ने अपनी कहानियों का पाठ प्रस्तुत किया। कुछ रचनाकारों ने अपनी कहानियों के अंग्रेज़ी/हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किए।

नई दिल्ली

'आओ कहानी बुनें'

16 मार्च 2024, मेघदूत मुक्ताकाशी मंच-1, नई दिल्ली

प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए बच्चे

बच्चों को समर्पित कार्यक्रम 'आओ कहानी बुनें' में दिल्ली एवं एनसीआर के विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की भारी उपस्थिति देखी गई। उन्होंने कार्यक्रम के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। तीन विषयों पर विभिन्न श्रेणियों में चार प्रकार की प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं - चित्रकला प्रतियोगिता, साहित्यिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा भाषण प्रतियोगिता।

चित्रकला प्रतियोगिता का विषय था - 'मैं अपने पालतू जानवरों से प्यार करता हूँ'। इस चित्रकला प्रतियोगिता की पहली श्रेणी में, ओलिविया पात्रा (कक्षा III) ने प्रथम पुरस्कार जीता; प्रथम बाल (कक्षा III) ने द्वितीय पुरस्कार जीता; तथा तश्वी गोयल (कक्षा II) ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। इस चित्रकला प्रतियोगिता की अगली श्रेणी का विषय था - 'मेरा विद्यालय'। प्रतियोगिता में, सुहिना नस्कर (कक्षा IV) ने प्रथम पुरस्कार जीता; निशांत (कक्षा V) ने द्वितीय पुरस्कार जीता; तथा रियांशी भट्ट (कक्षा IV) ने तृतीय पुरस्कार जीता।

उदय शंकर गांगुली इन दोनों ड्राइंग प्रतियोगिताओं के निर्णायक थे। साहित्यिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए द्विभाषी लिखित परीक्षा में मानसी अग्रवाल, अमय मिश्र और अनन्या अन्वेषा नाइक ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार अर्जित किए। यह प्रतियोगिता अंग्रेज़ी और हिंदी भाषा, स्वतंत्रता आंदोलन, भारत के महाकाव्य तथा साहित्य अकादेमी के बारे में सामान्य ज्ञान पर आधारित थी। हिंदी और अंग्रेज़ी भाषा के लिए अलग-अलग आयोजित भाषण प्रतियोगिता में 'जलवायु परिवर्तन : दुनिया ख़तरे में है' को विषय बनाया गया था। हिंदी भाषा में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में बृजलाल कुमार, नृपराज जय और रिद्धिमा सोलंकी ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार जीता। इस प्रतियोगिता के निर्णायक ब्रजेंद्र त्रिपाठी थे।

भाषण प्रतियोगिता में भाग लेते हुए बच्चे

नई दिल्ली

आओ कहानी बुनें की झलकियाँ

अंग्रेज़ी भाषा में आयोजित भाषण में तन्निसथ दास, कृष्णा कार्तिक दारा तथा वृंदा वर्मा ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार जीता। सुश्री ममंग दई इस प्रतियोगिता की निर्णायक थीं। पुरस्कार वितरण समारोह में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक, उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा, सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने विजेताओं को प्रमाण-पत्र के साथ पुरस्कार प्रदान किया।

पुस्तक प्रदर्शनी और बिक्री

11-16 मार्च 2024, नई दिल्ली

साहित्योत्सव 2024 के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी के दृश्य

साहित्योत्सव 2024 के दौरान साहित्य अकादेमी प्रकाशनों की एक सप्ताह की प्रदर्शनी-सह-बिक्री का आयोजन किया गया। इस पुस्तक प्रदर्शनी के माध्यम से अकादेमी के लोकप्रिय प्रकाशनों को एक छत के नीचे उपलब्ध करवाया गया, जिसकी सबने सराहना की।

जसवंत सिंह कंवल पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी

20-21 मार्च 2024, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

संगोष्ठी के उद्घाटन का दृश्य

साहित्य अकादेमी द्वारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के पंजाबी विभाग के सहयोग से 20-21 मार्च 2024 को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सीनेट हॉल में प्रख्यात पंजाबी लेखक जसवंत सिंह कंवल पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र के आरंभ में कुलदीप सिंह ने मुख्य अतिथियों तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से आए प्रतिनिधियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने संगोष्ठी की रूपरेखा श्रोताओं के साथ साझा की। उन्होंने जसवंत सिंह कंवल की रचनाओं तथा उनके उच्च साहित्यिक मानदंडों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अकादेमी द्वारा इस संगोष्ठी के आयोजन के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. रवेल सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में जसवंत सिंह कंवल की साहित्यिक कृतियों को दोबारा पढ़ने तथा उन पर समालोचनात्मक चिंतन करने की आवश्कता पर बल दिया। मनमोहन ने अपने बीज-भाषण में कहा कि कंवल के साहित्य को विभिन्न आलोचकों की टिप्पणियों के आलोक में नए सिरे से पढ़ने तथा समझने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि रतन सिंह ढिल्लों ने कंवल की समाजवादी प्रतिबद्धता की कड़ी आलोचना की। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि पाठक को गंभीरता से अध्ययन करना चाहिए तथा किसी लेखक की कृति से सिर्फ़ भावनात्मक स्तर पर नहीं जुड़ना चाहिए। सत्र की अध्यक्षता करते हुए नरविंदर सिंह कौशल ने कहा कि यद्यपि कंवल की पहचान उपन्यासकार के तौर पर अधिक है, किंतु कंवल का गद्य भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। कंवल का गद्य सदैव पंजाब, पंजाबी संस्कृति तथा पंजाबी संस्कृति के समक्ष आने वाली चुनौतियों को भलीभांति प्रस्तुत करता था ।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में तीन आलेख प्रस्तुत किए गए। प्रवीण कुमार का पहला आलेख कंवल कृत उपन्यास *तोशाली हंसो* के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित था। दूसरा आलेख मनजिंदर सिंह ने कंवल की कहानियों पर प्रस्तुत किया। तीसरा आलेख हरविंदर सिंह द्वारा 'पंजाब के अस्तित्व पर चिंतन' विषय पर था। सत्र की अध्यक्षता रवेल सिंह ने की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता जसविंदर सिंह ने की। इस सत्र में दो आलेख प्रस्तुत किए गए। पहला आलेख कुमार सुशील ने कंवल कृत उपन्यास *रात बाकी है* पर प्रस्तुत किया। दूसरा आलेख बलजीत कौर रियाद ने 'जसवंत सिंह कंवल के राजनीतिक विषयों पर आधारित उपन्यास' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। सत्र का मुख्य आकर्षण प्रमोद पब्बी द्वारा जसवंत सिंह कंवल की कहानियों के स्क्रीन रूपांतरण की प्रस्तुति थी। इस लघु फ़िल्म की प्रस्तुति के पश्चात्, प्रमोद पब्बी ने कंवल के उपन्यासों पर अपने विचार व्यक्त किए, और कहा कि कंवल का सबसे बड़ा उपहार पंजाबियों के बीच एक बड़ा पाठक वर्ग बनाना रहा है। संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय सत्र पूर्वाह्न 10:30 बजे आरंभ हुआ। इस सत्र में कंवल के गद्य पर दो तथा कंवल की कविता पर एक आलेख प्रस्तुत किया गया। कंवल के काव्यात्मक अर्थ पर आलेख प्रस्तुत करते हुए देविंदर सैफी ने कंवल की कृतियों *भावना, आराधना* तथा *साधना* पर आधारित कविता के बारे में बताया। दूसरे आलेख में अमरजीत सिंह ने कंवल के गद्य में प्रस्तुत पंजाबियत की छवि को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया। हरजिंदर सिंह ने कंवल के यात्रा-

व्याख्यान देते हुए डॉ. मनमोहन

वृत्तांत *गोरा मुख सज्जनां दा* में मौजूद विविध सांस्कृतिक विमर्श पर आधारित तीसरा आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता गुरपाल सिंह संधू ने की। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता कुलबीर गोजरा ने की। उन्होंने कंवल के महान उपन्यासकार बनने के विभिन्न कारणों पर प्रकाश डाला। कुलदीप सिंह ने कंवल कृत उपन्यासों के परस्पर विरोधी विषयों, किसान तथा ग़ैर-किसान समुदायों के बीच अंतर पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने संगोष्ठी में भाग लेने वाले समस्त प्रतिनिधियों तथा छात्रों का धन्यवाद भी किया।

विश्व कविता दिवस

21 मार्च 2024, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 21 मार्च 2024 को नई दिल्ली में 'विश्व कविता दिवस' पर बहुभाषी कविता-पाठ का आयोजन किया गया, जिसमें अंग्रेज़ी, हिंदी, मैथिली, पंजाबी तथा संस्कृत भाषाओं के कवियों ने भाग लिया।

सर्वप्रथम अम्लान ज्योति गोस्वामी ने अंग्रेज़ी में कविताएँ प्रस्तुत कीं। उनकी कविताएँ स्मृतियों को साझा करती हुई कविताएँ थीं जिसमें उनके गाँव का तालाब था तो दिल्ली के दरीबा की चाट भी थी। उन्होंने प्रकृति को चिन्हित करते हुए भी कुछ कविताएँ प्रस्तुत कीं। नवनीत नीरव ने हिंदी में अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। उनकी कविताओं के शीर्षक थे - कुछ गुमशुदा सामान, समय, अकेलापन तथा मन गीला नहीं होता। उनकी कविताओं में अतीत और स्मृतियों का सुंदर और सार्थक आदान-प्रदान दिखा। मैथिली में भावना झा ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं जो स्त्रियों के जीवन पर ही

कार्यक्रम के प्रतिभागी

केंद्रित थीं तथा उनके विभिन्न विमर्शों को सामने लाती थीं।

पंजाबी के युवा कवि करनजीत सिंह कोमल की कविताओं में (जिनके शीर्षक थे - अचानक, आवाज़ के झुमके आदि) आज के समाज के विभिन्न संदर्भ प्रस्तुत थे। संगीता शर्मा ने संस्कृत भाषा की कविताएँ प्रस्तुत कीं और उसमें नारी जीवन में जो भेदभाव किए जाते हैं उनकी प्रस्तुति थी। कार्यक्रम का संचालन उपसचिव (प्रकाशन) एन. सुरेश बाबु ने किया। कार्यक्रम के आरंभ में सभी का स्वागत अंगवस्त्रम पहना कर किया गया।

डोगरी कविता में अलंकारों, भावों तथा मीटर का प्रयोग विषय पर परिसंवाद

22 मार्च 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

साहित्य अकादेमी ने जम्मू और कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी, जम्मू के सहयोग से 22 मार्च 2024 को राइटर्स क्लब, के.एल. सहगल हॉल, जम्मू, जम्मू और कश्मीर में 'डोगरी कविता में अलंकारों, भावों तथा मीटर का प्रयोग' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद का उद्देश्य डोगरी कविता की जटिलताओं को समझना, उसकी समृद्ध परंपरा, भाषाई बारीकियों तथा विषयगत विकास की खोज करना था। विद्वान, लेखक एवं श्रोतागण डोगरी साहित्य के सार का उत्सव मनाने के लिए एकत्र हुए तथा इसके अलंकारों, भावों के प्रयोग और मीटर पर चर्चा की।

साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मोहन सिंह ने प्रतिभागियों का स्वागत तथा आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रख्यात डोगरी लेखिका प्रोफ़ेसर अर्चना केसर ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध डोगरी लेखक पद्मश्री डॉ. जितेंद्र उधमपुरी ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा डोगरी कविता के सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्त्व पर प्रकाश डाला।

श्री मोहन सिंह के साथ परिसंवाद के प्रतिभागी

परिसंवाद में दो सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें से प्रत्येक सत्र में डोगरी साहित्य के क्षेत्र में प्रख्यात व्यक्तियों की अध्यक्षता में व्यावहारिक प्रस्तुतियाँ तथा चर्चाएँ शामिल थीं। प्रथम सत्र की अध्यक्षता विख्यात डोगरी लेखक डॉ. ज्ञान सिंह ने की तथा डॉ. सरिता खजूरिया ने 1980 से 1990 तक की डोगरी कविता तथा श्री अशोक अंबर ने 1990 के दशक की कविता विषयों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता जानेमाने डोगरी कवि श्री पूरन चंद्र शर्मा ने की। श्री प्रकाश प्रेमी ने अपने आलेख में 2000 से 2010 तक की डोगरी कविता का विश्लेषण प्रस्तुत किया तथा श्री राज मनवारी ने अपने आलेख में 2010 से 2020 तक के दशक की कविता पर प्रकाश डाला।

परिसंवाद का समापन जम्मू और कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी, जम्मू की सहायक संपादक सुश्री रीता खादयल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

राजस्थानी भाषा साहित्य का शिक्षण : दशा और दिशा पर परिसंवाद

28 मार्च 2024, जोधपुर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी ने जोधपुर (राजस्थान) में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभाग के सहयोग से "राजस्थानी भाषा साहित्य का शिक्षण : दशा और दिशा" पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने कहा कि मातृभाषा से ही संस्कृति का संरक्षण

परिसंवाद में व्याख्यान देते हुए प्रतिभागी

कार्यक्रम के प्रतिभागी

होता है। उद्घाटन सत्र में प्रो. कल्याण सिंह शेखावत ने कहा कि राजस्थानी भाषा संवैधानिक मान्यता की हकदार है, किंतु वर्तमान में राजस्थानी भाषा संवैधानिक संकट से गुज़र रही है, क्योंकि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत दस करोड़ की आबादी वाले राजस्थान में अभी तक राजस्थानी भाषा को मातृभाषा का दर्जा नहीं मिला है तथा इसका खामियाज़ा राज्यवासियों को भुगतना पड़ रहा है।

कार्यक्रम के संयोजक एवं जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेश कुमार सालवी ने की। सत्र के दौरान डॉ. इंद्रदान चारण तथा डॉ. रामरतन लटियाल ने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने की। सत्र के दौरान डॉ. जितेंद्र सिंह साठीका तथा डॉ. अमित गहलोत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के समापन सत्र के मुख्य अतिथि तथा राजस्थानी के प्रख्यात विद्वान डॉ. देव कोठारी ने कहा कि राजस्थानी भाषा हमारे राज्य की अस्मिता से जुड़ी हुई है।

कार्यक्रम के समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. प्रकाश अमरावत ने कहा कि राज्य के विद्यार्थी राजस्थानी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन करना चाहते हैं, किंतु दुर्भाग्यवश विद्यालयों में समुचित व्यवस्था न होने के कारण वे अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं।

डॉ. मंगत बादल के साथ लेखक से भेंट

28 मार्च 2024, जोधपुर

प्रख्यात राजस्थानी लेखक डॉ. मंगत बादल के साथ *लेखक से भेंट* कार्यक्रम का आयोजन जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के बृहस्पति भवन में किया गया। लेखक ने अपनी कुछ कविताओं के पाठ के साथ अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने अपने प्राथमिक विद्यालय के दिनों को याद किया, जब उन्होंने शहीद भगत सिंह, सुखदेव और गुरु गोविंद सिंह जैसे महान क्रांतिकारियों पर कविताएँ लिखी थीं। भले ही *कादंबिनी* जैसी पत्रिकाओं से शुरुआती निराशा हुई, किंतु उनकी प्रथम कहानी 'दादा' प्रतिष्ठित समाचार पत्र 'पंजाब केसरी' में प्रकाशित हुई, जिससे उनकी साहित्यिक यात्रा आरंभ हुई। मूल रूप से हरियाणा के निवासी होने के कारण, राज्य में प्रचलित विभिन्न देसी राग-रागिनियों के पद कहानी लेखन के अलावा उनकी काव्य कला को निखारने में विशेष रूप से सहायक रहे। डॉ. बादल ने कॉलेज में हिंदी के प्रोफ़ेसर के रूप में कार्य करते हुए भी अपनी साहित्यिक साधना जारी रखी। पंजाबी, हिंदी तथा राजस्थानी पर उनकी समान रूप से अच्छी पकड़ है तथा उन्होंने *मत बांधो आकाश, शब्दों की संसद, इस मौसम में, हम मनके इक हर के, कैकेयी, अच्छे दिनों की याद में* तथा *साक्षी रहे हो तुम* विषयक अपनी कविताओं का पाठ भी किया। लेखक ने *कागा सब तन, सुख की साँस* तथा *मुर्दाखो* जैसे

अपने लोकप्रिय प्रकाशित कहानी-संग्रहों पर भी प्रकाश डाला।

काव्य और *इतरा हुआ* जैसे नवगीतों के माध्यम से लेखक ने सभागार में उपस्थित साहित्यकारों को *कुदरत रो न्याय* जैसी अपनी काव्यात्मक कहानियों से भी परिचित करवाया। उन्होंने न केवल कहानी-संग्रह लिखे बल्कि अपनी साहित्यिक यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर *सावन सुरंगो असर यो, बात री बात, सूनी हथाई* आदि निबंधों के माध्यम से राजस्थानी भाषा और साहित्य को समृद्ध किया है। उन्होंने बताया कि किस प्रकार एक सफल आलोचक को अपनी रचना और पाठकों के बीच संबंध स्थापित करते हुए तथा दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए अपनी रचनात्मकता को जारी रखना चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट रूप से कहा कि सफल लेखक वही हो सकता है जो अपने समय के साहित्य की विभिन्न विधाओं के साथ सामंजस्य बनाए रखे तथा पाठकों को हमेशा अपनी रचना के साथ लेकर चले। रचना की सफलता पाठकों पर ही निर्भर करती है। जो रचना जितनी सरल और आमजन की भाषा में होगी, वह उतनी ही लोकप्रिय होगी तथा

डॉ. अर्जुन देव चारण और डॉ. मंगत बादल

आम पाठकों की पसंदीदा बनेगी। इस अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित लेखक, शिक्षक, शोध छात्र तथा मातृभाषा राजस्थानी के प्रेमी उपस्थित थे।

'मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य : इतिहास और साहित्य का अंतरसंबंध' विषय पर परिसंवाद

29 मार्च 2024, जोधपुर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी ने जोधपुर, राजस्थान में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभाग के सहयोग से 'मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य : इतिहास और साहित्य का अंतरसंबंध' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. माधव हाडा ने कहा कि मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में उपलब्ध जानकारी अद्‌भुत है। अपने अध्यक्षीय व्यख्यान में साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने भारतीय तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण से उदाहरण देकर इतिहास और साहित्य के अंतरसंबंधों पर अपने विचार साझा किए और कहा कि साहित्य और इतिहास के बारे में हर समाज की अपनी अलग धारणा होती है। कार्यक्रम के संयोजक एवं जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। उद्‌घाटन सत्र का संचालन डॉ. धनंजय अमरावत ने किया।

व्याख्यान देते हुए प्रो. माधव हाडा

प्रथम सत्र में डॉ. दिनेश चारण एवं डॉ. धनंजय अमरावत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. मंगत बादल ने की। द्वितीय

सत्र की अध्यक्षता श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने की। इस सत्र में श्रीमती मीनाक्षी बोराणा एवं डॉ. प्रकाशदान चारण ने आलेख प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के समापन सत्र में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.एल. श्रीवास्तव ने कहा कि जन्म देने वाली माँ, मातृभूमि तथा मातृभाषा में कोई अंतर नहीं है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा राजस्थानी के प्रख्यात विद्वान डॉ. भंवर सिंह सामौर ने कहा कि दुनिया के जिन इतिहासकारों ने मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य की अनदेखी कर राजस्थान का इतिहास लिखा है, वे प्रामाणिक नहीं हैं, क्योंकि प्रामाणिक इतिहास राजस्थानी दोहों, सोरठों तथा छंदों में मौजूद है। सत्राध्यक्ष प्रो. सोहनदान चारण ने कहा कि राजस्थान के इतिहास लेखन में राजस्थानी लोक साहित्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस अवसर पर कई प्रतिष्ठित लेखक, शिक्षक, शोध छात्र तथा मातृभाषा राजस्थानी से प्रेम करने वाले श्रोता उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी की रीडर सीरीज़

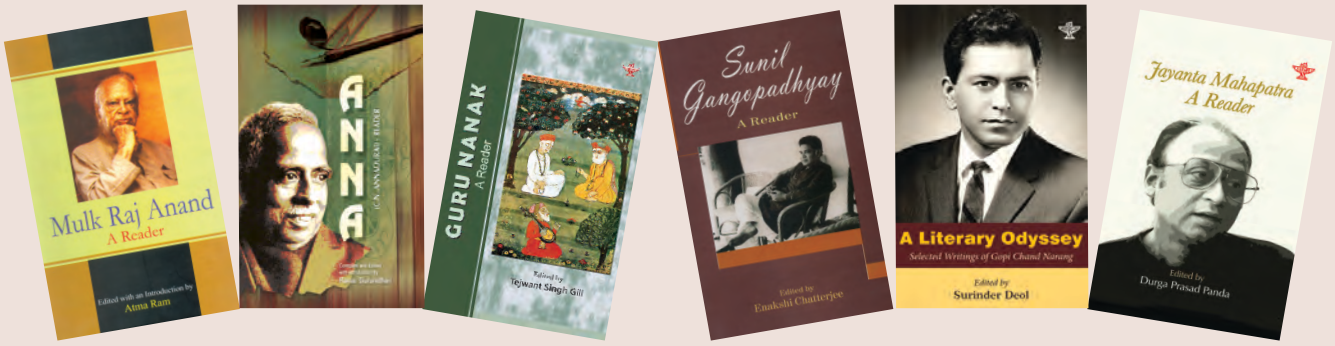

साहित्य अकादेमी ने 1995 से रीडर सीरीज़ का प्रकाशन शुरू किया, जिसका उद्देश्य न केवल हमारे महान साहित्यकारों की यादों को संजोना है, बल्कि हमारे देश और दुनिया को लेखकों की अंतर्दृष्टि से परिचित कराना भी है। यह रीडर सीरीज़ एक ऐसी वन स्टॉप शॉप है जो लेखक के जीवन, समय और कार्य को दर्शाती है। अकादेमी ने इस सीरीज़ के अंतर्गत आधा दर्जन से अधिक खंड प्रकाशित किए हैं तथा कुछ और खंड प्रकाशनार्थ हैं।

बेंगळूरु

पडाला रामराव पर जन्म शताब्दी परिसंवाद

06 जनवरी 2024, राजमहेंद्रवरम

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए पडाला वीरभद्र राव

साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय ने आंध्र प्रदेश अभ्युदय रचयिताला संघम के सहयोग से 6 जनवरी 2024 को श्री कंदुकुरी वीरसलिंगम थेस्टिक गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, राजामहेंद्रवरम में पडाला रामराव की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य श्री मंडलपार्थी किशोर ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और उनका परिचय कराया। श्री किशोर, जिन्होंने सत्र की अध्यक्षता भी की, ने पडाला रामराव के लेखन के गुणों के बारे में संक्षेप में चर्चा की। अपने बीज भाषण में डॉ. राम रेड्डी ने पडाला रामराव के विभिन्न प्रकार के लेखन के बारे में बात की और मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री आशापु रामलिंगेश्वर राव ने अपने संबोधन में पडाला रामराव के जीवन और कार्यों के बारे में बात की।

प्रथम सत्र में, जिसकी अध्यक्षता श्री वल्लूरी शिवप्रसाद ने की, दो प्रसिद्ध विद्वानों, श्री पी. भास्कर राव और श्री जी. ओबुलेशु ने क्रमशः "पडाला रामराव का जीवन और व्यक्तित्व" तथा "पडाला एक ट्रेड यूनियन नेता के रूप में" पर परिचयात्मक टिप्पणी की। श्री शिवप्रसाद ने संक्षेप में पडाला रामराव के जादुई व्यक्तित्व के बारे में बात की, जो जेल की कोठरी को भी विश्वविद्यालय में बदल सकते थे। टी. सत्यनारायण की अध्यक्षता में आयोजित द्वितीय सत्र में चार सुप्रसिद्ध विद्वानों, वद्रेवु सुंदर राव, पेनुगोंडा लक्ष्मिना रायना, तोत अकुर वेंकटनारायण और बी. एच. वी. रामादेवी ने क्रमशः "पडाला एक नाटककार के रूप में", "पडाला कवि, कहानीकार और निबंधकार के रूप में", "पडाला स्वतंत्रता सेनानी, स्वतंत्रता इतिहास के लेखक के रूप में" तथा "पडाला बाल लेखक के रूप में" पर आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य प्रोफ़ेसर डी.वी. राममूर्ति ने की, रुद्रराजू फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री आर.वी. सूर्यनारायण राजू मुख्य अतिथि थे तथा एसकेवीटी कॉलेज के तेलुगु विभाग के प्रमुख प्रोफ़ेसर पी.वी.बी. संजीव राव ने समापन भाषण दिया तथा श्री पडाला वीरभद्र राव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

लेखक से भेंट - एच.एस. राघवेंद्र राव

18 जनवरी 2024, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय ने नेशनल कॉलेज के सहयोग से 18 जनवरी 2024 को कॉलेज परिसर में प्रख्यात आलोचक और लेखक प्रोफ़ेसर एच.एस. राघवेंद्र राव की उपस्थिति में 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया। अपने स्वागत वक्तव्य में साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के प्रभारी अधिकारी डॉ. एस. राजमोहन ने मंच पर उपस्थित प्रख्यात कन्नड लेखकों तथा विद्वानों के बारे में संक्षेप में बात की।

साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर बसवराज कलगुडी ने अपने संबोधन में प्रोफ़ेसर राघवेंद्र राव के कार्यों, व्यक्ति के रूप में उनकी उत्कृष्टता तथा उनकी साहित्यिक रचनाओं के बारे में बात की, जिन्होंने उन्हें विद्वानों और पाठकों के बीच समान रूप से लोकप्रिय बनाया। अपने व्याख्यान में, प्रो. एच.एस. राघवेंद्र राव ने अपने प्रारंभिक जीवन, लेखक के रूप में अपनी यात्रा, कन्नड और अंग्रेज़ी में लेखक के रूप में अपने कार्य-जीवन पर साहित्यिक प्रभावों के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार न केवल साहित्यिक दिग्गजों की रचनाओं को पढ़ना बल्कि उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलना तथा उनके साथ बातचीत करना एक लेखक के रूप में उनके क्षितिज को व्यापक बनाता है। उन्होंने दर्शकों के साथ कई किस्से साझा किए तथा कई उदाहरणों के साथ रचनात्मक लेखन प्रक्रिया पर भी प्रकाश डाला। प्रभारी अधिकारी डॉ. एस. राजमोहन ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

लेखक से भेंट—प्रभा वर्मा

24 जनवरी 2024, कोळिकोड

साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय ने 24 जनवरी 2024 को कोळिकोड के के.पी. केशव मेनन हॉल में प्रख्यात मलयाळम् परामर्श मंडल कवि श्री प्रभा वर्मा की उपस्थित में "लेखक से भेंट" कार्यक्रम का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री के.पी. रामानुन्नी ने श्री प्रभा वर्मा की रचनाओं के बारे में बात की और बताया कि किस तरह उनकी कविताओं ने मलयाळम् परामर्श मंडल साहित्यिक और सांस्कृतिक परिवेश को समृद्ध किया। श्री रामानुन्नी ने यह भी कहा कि श्री प्रभा वर्मा लोकतंत्र के व्यक्ति थे और उनकी कविताओं में लोकतांत्रिक मूल्य झलकते थे। अपने भाषण में श्री प्रभा वर्मा ने एक कवि के रूप में अपनी साहित्यिक यात्रा, अपने लेखन पर पड़ने वाले प्रभावों और सामान्य रूप से अपने जीवन के बारे में बात की। उन्होंने कविता को बदलाव का

अपने व्यक्तित्व और कृतित्व पर बोलते हुए प्रभा वर्मा

माध्यम बताते हुए अपने दर्शन के बारे में बात की, जो योग्य लोगों को न्याय दिलाती है। उन्होंने श्रोताओं के साथ कविता लिखने की रचनात्मक प्रक्रिया को साझा किया और अनुभव के आधार पर लिखी गई कविताओं और अन्य कविताओं के बीच के अंतर को स्पष्ट किया। उन्होंने अपने भाषण का समापन इस बात के साथ किया कि कवि को दूरदर्शी होना चाहिए और साथ ही कल्पना और दृष्टि को पूरक करने के लिए मज़बूत तार्किक प्रवृत्तियाँ होनी चाहिएँ। बाद में संक्षिप्त संवादात्मक सत्र हुआ।

अब्बूरी वरदा राजेश्वर राव पर जन्म शताब्दी परिसंवाद

28 जनवरी 2024, राजम

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. सी. मृणालिनी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरू ने राजम रचयितला वेदिका के सहयोग से 28 जनवरी 2024 को राजम स्थित विद्या निकेतन स्कूल में परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य श्री चिंताकंडी श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया तथा परिसंवाद के विषय का प्रवर्तन किया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. सी. मृणालिनी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अब्बूरी वरदा राजेश्वर राव की साहित्यिक प्रतिभा के बारे में बात की, वे 8 साल की उम्र में नाटक लिखने वाले प्रतिभाशाली बालक थे और एक बहुमुखी विद्वान थे जिन्होंने हज़ारों युवा तेलुगु लेखकों को आगे बढ़ाया। राजम रचायीथला वेदिका के श्री गारा रंगनाथम ने अपने संबोधन में राजम में परिसंवाद आयोजित करने और संघ के साथ सहयोग करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। प्रथम सत्र में, अल्टी मोहना राव की अध्यक्षता में तीन प्रसिद्ध विद्वानों, अवधनुला मणिबाबू, पिल्ला तिरुपति राव और पोडिलापु श्रीनिवास ने क्रमश: "अब्बूरी स्तंभकार के रूप में," "अब्बूरी निबंधकार के रूप में" और "अब्बूरी द पन मास्टर" पर आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में, ओमनी रमण मूर्ति की अध्यक्षता में, तीन प्रसिद्ध विद्वानों, बाला सुधाकर मौली, एम. कृष्णकुमारी और सम्मेता नागमल्लेश्वर राव ने क्रमश: "अब्बूरी कवि के रूप में," "अब्बूरी नाटककार के रूप में" तथा "अब्बूरी ... छाया ... साहित्यिक जोड़ी" पर आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र में, श्री चिंतिकिंदी श्रीनिवासराव ने अध्यक्षता की, प्रख्यात लेखक श्री डी.वी.जी. शंकर राव मुख्य अतिथि थे तथा राजम रचयिथला वेदिका के के तिरुमाला राव ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

लेखक से भेंट - ओ.एल. नागभूषण स्वामी

29 जनवरी 2024, मैसूरु

बेंगळूरू में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय ने महारानी आर्ट्स कॉलेज फॉर विमेन के सहयोग से 29 जनवरी 2024 को मैसूरु में कॉलेज परिसर में प्रख्यात अनुवादक और शिक्षाविद ओ.एल. नागभूषण स्वामी की उपस्थिति में "लेखक से भेंट" कार्यक्रम का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर बसवराज कलगुडी ने अतिथि वक्ता का स्वागत किया और उनका परिचय कराया तथा लेखक की रचनाओं

ओ.एल. नागभूषण स्वामी

के बारे में संक्षेप में बात की। अपने भाषण में ओ.एल. नागभूषण स्वामी ने अपने प्रारंभिक जीवन, अपनी साहित्यिक यात्रा, अपने करियर को आकार देने वाले प्रख्यात साहित्यिक व्यक्तित्वों, साहित्यिक रचनाओं और अन्य भाषाओं के लेखकों के उनके साहित्यिक शैली पर प्रभाव आदि के बारे में बात की। उन्होंने अनुवाद के महत्त्व और अनुवाद किस प्रकार ज्ञान को आकार देता है, इस बारे में भी बात की। भाषण के बाद संक्षिप्त संवादात्मक सत्र हुआ।

साहित्य मंच

29 जनवरी 2024, रायचूर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के सहयोग से 29 जनवरी 2024 को रायचूर स्थित विश्वविद्यालय परिसर में "प्राचीन कन्नड साहित्य और कृषि" विषय पर साहित्य मंच का आयोजन किया। साहित्य मंच में साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. चिदानंद साली ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और दर्शकों से उनका परिचय कराया। प्रो. सी.बी. चिलकारागी ने "प्राचीन कन्नड साहित्य और कृषि" विषय पर बात की, प्रो. प्रमोद कट्टी ने "कृषि विज्ञान साहित्य का वर्तमान परिदृश्य" विषय पर बात की और प्रो. नूर समद अब्बलगेरे ने "कृषि विज्ञान साहित्य लेखन की चुनौतियाँ" विषय पर बात की। साहित्य मंच के मुख्य अतिथि एम.जी. पाटिल ने कृषि साहित्य के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के महत्त्व पर बात की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर एम. हनुमंथप्पा ने साहित्य पढ़ने और विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने के महत्त्व के बारे में बात की। उन्होंने विश्वविद्यालय में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अकादेमी को धन्यवाद दिया। डॉ. बसवण्णप्पा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

व्याख्यान देते हुए डॉ. चिदानंद साली

कन्नड साहित्यिक शोध के विविध आयाम पर संगोष्ठी

29-30 जनवरी 2024, मैसूर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने महारानी आर्ट्स कॉलेज फ़ॉर विमेन के सहयोग से मैसूर के कॉलेज परिसर में 29-30 जनवरी 2024 को "कन्नड साहित्यिक शोध के विविध आयाम" पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के प्रभारी अधिकारी डॉ. एस. राजमोहन ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया तथा भारत और दुनिया भर में हो रहे विभिन्न प्रकार के साहित्यिक शोध के बारे में संक्षेप में बात की। अपने उद्घाटन वक्तव्य में, महारानी आर्ट्स कॉलेज के प्रिंसिपल प्रोफ़ेसर बी.वी. वसंत कुमार ने कर्नाटक में प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल और आधुनिक काल तक हुए शोध के बारे में बात की। उन्होंने विभिन्न समयावधियों में हुए शोधों की विविधता का उल्लेख किया, जिनमें जैन साहित्य से लेकर शैव साहित्य, कविता और विभिन्न अलंकार शास्त्र शामिल हैं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर बसवराज कलगुडी ने आधुनिक और समकालीन कन्नड साहित्यिक शोध और कन्नड साहित्यिक शोध के क्षेत्रों के बारे में बात की। उन्होंने कर्नाटक में शोध के कई क्षेत्रों पर विस्तार से चर्चा की और कहा कि यद्यपि कन्नड साहित्यिक शोध में लगातार प्रगति हुई है, किंतु अभी भी रास्ता लंबा है और हमारे सामने एक कठिन कार्य है। उन्होंने कहा कि नवाचार प्रगति की कुंजी है और कन्नड शोधकर्ताओं को वर्तमान समय में आगे रहने के लिए पर्याप्त नवाचार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर करने की आवश्यकता है। कॉलेज में कन्नड अध्ययन के लिए पीजी सेंटर के समन्वयक प्रो. एच.एम.

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए बी.वी. वसंत कुमार

कलाश्री मुख्य अतिथि थे तथा विभाग के प्रो. नंजुंदैया ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। गुरुपद मारिगुड्डी की अध्यक्षता में प्रथम सत्र में दो प्रसिद्ध विद्वानों नित्यानंद, शेट्टी तथा के. रवींद्रनाथ ने क्रमश: "कन्नड शोध के विभिन्न दार्शनिक आधार" और "कन्नड पांडुलिपि विज्ञान में शोध के विभिन्न पहलू" पर आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्ष के रूप में, गुरुपद मारिगुड्डी ने "ऐतिहासिक शोध और कन्नड संस्कृति" पर आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में, वीरन्ना ढांडे की अध्यक्षता में, दो प्रसिद्ध विद्वानों, एम.जी. मंजूनाथ और विक्रम विसाजी ने क्रमश: "शिल्प के अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोण" और "आधुनिक कन्नड साहित्यिक शोध के विभिन्न दृष्टिकोण" पर आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्ष के रूप में, वीरन्ना ढांडे ने "कन्नड शोध में मौखिक संस्कृति के महत्त्व" पर एक आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. टी.एस. सत्यनाथ की अध्यक्षता में तृतीय सत्र में, दो प्रसिद्ध विद्वानों, डी.सी. गीता और एच. शशिकला ने क्रमश: "नारीवादी शोध और कन्नड साहित्य" और "कन्नड शोध और विभिन्न भाषाई दृष्टिकोण" पर आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्ष के रूप में टी.एस. सत्यनाथ ने "कन्नड साहित्यिक संस्कृति में तुलनात्मक अध्ययन की संभावनाएँ" पर आलेख प्रस्तुत किया। एन.एस. तारानाथ की अध्यक्षता में चतुर्थ सत्र में दो प्रसिद्ध विद्वानों अप्पागेरे सोमशेखर और सुरेश नागलामादिके ने क्रमश: "कन्नड शोध के सामाजिक पहलू" तथा "कन्नड में लोक शोध के विभिन्न पहलू" पर आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्ष के रूप में एन.एस. तारानाथ ने "पुराने कन्नड साहित्यिक शोध के विभिन्न पहलू" पर आलेख प्रस्तुत किया। बंजागेरे जयप्रकाश की अध्यक्षता में पंचम सत्र में प्रसिद्ध विद्वान गीता वसंता ने "कन्नड में अंत:विषय और बहुविषयक शोध" पर आलेख प्रस्तुत किया, जबकि जयाप्रकाश ने "कन्नड साहित्यिक शोध के अंत:विषयक पहलू" पर आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र में डॉ. मनु बलिगर ने अध्यक्षता की तथा साहित्यिक शोध के महत्त्व और प्रासंगिकता के बारे में संक्षेप में बात की, खासकर वर्तमान समय में और साथ ही कन्नड संस्कृति और साहित्य के विभिन्न पहलुओं को संरक्षित करने के लिए साहित्यिक शोध को जारी रखने की आवश्यकता पर भी बात की। अपने समापन वक्तव्य में, प्रख्यात कन्नड कवि, आलोचक और विद्वान प्रो. अरविंद मालागट्टी ने कन्नड साहित्यिक शोध में विभिन्न प्रवृत्तियों के बारे में बात की, कैसे साहित्यिक रचनाएँ और उन पर शोध समाज के वंचित वर्गों को आवाज़ देने और सशक्त बनाने के लिए उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, उन रचनाओं के विभिन्न आयामों और रंगों को सामने लाने के लिए क्लासिक्स और शोध का महत्त्व और कैसे यह लाखों कन्नड लोगों के क्षितिज को व्यापक बनाने में मदद करता है। विभाग के प्रो. बी.वी. वसंतकुमार और प्रो. एम. देवमन्नी सत्र के मुख्य अतिथि थे तथा प्रो. टी.एल. जगदीश ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

कन्नड तत्वपद पर परिसंवाद

2 फ़रवरी 2024, विजयपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने चाणक्य कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर के सहयोग से 2 फ़रवरी 2024 को विजयपुर स्थित महाविद्यालय परिसर में "कन्नड तत्वपद : एक पुनरावलोकन" विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य श्री चन्नप्पा कट्टी ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया और परिसंवाद के विषय पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. बसवराज सदर ने अपने बीज वक्तव्य में तत्वपद के मूल्य तथा उसके महत्त्व के बारे में और पुर्नलोकन की प्रासंगिकता के बारे में चर्चा की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस परिसंवाद से कर्नाटक में इस विषय के विभिन्न आयामों पर केंद्रित अन्य कार्यक्रम आयोजित होंगे। श्री एन.एम. बिरादर, संस्थापक, कमलादेवी मेमोरियल एजुकेशन इंस्टिट्यूट ने विजयपुर में परिसंवाद आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया और आशा व्यक्त की कि कॉलेज के संकाय और छात्र इस कार्यक्रम से लाभान्वित होंगे। श्री नटराज बुदालु ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की तथा श्री संगनगौड़ा हिरेगौदर और श्री मनु पट्टार ने क्रमशः "तत्वपद में गुरुपरंपरा" और "तत्वपद में आधिपत्य-विरोधी तत्व" पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री नटराज बुडालु "बुनियादी सिद्धांतों का तत्वपद" विषय पह अपना अध्यक्षिय व्याखान प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यतक्षता करते हुए एम.एस. मदभवी ने "तत्वपद और परंपरा-विरोध" विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र में साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. मनु बलिगर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे और कॉलेज के प्रिंसिपल प्रो. एस.टी. मेरावड़े ने सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. बलिगर ने तत्वपद पर परिसंवाद का स्वागत किया और कहा कि यह एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है और उन्होंने अतीत में इस क्षेत्र में किए गए शोध का सारांश भी प्रस्तुत किया। प्रो. मेरावड़े ने कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अकादेमी को धन्यवाद दिया।

परिसंवाद

जीवन समर्थक विचारों में समकालीन साहित्य

3 फ़रवरी 2024, हावेरी

साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय ने ज़िला कन्नड साहित्य परिषद, हावेरी के सहयोग से "जीवन समर्थक विचारों में समकालीन साहित्य" विषय पर 3 फ़रवरी 2024 को प्री-यूनिवर्सिटी कर्मचारी सभागार हावेरी में एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी की कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य श्री चन्नप्पा अंगडी ने प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया तथा परिसंवाद के विषय को प्रस्तुत किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में, प्रख्यात लेखक, आलोचक और विद्वान डॉ. राजेंद्र चेन्नी ने कहा कि साहित्यिक परंपराओं में संवैधानिक पहलुओं सहित जीवन समर्थक विचार मौजूद हैं और सहिष्णुता, सद्भाव, अखंडता और समावेशिता

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए डॉ. राजेंद्र चेन्नी

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ हैं और ये साहित्यिक परंपराओं में भी परिलक्षित होती हैं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. बसवराज सदर ने कहा कन्नड साहित्यिक रचनाओं में जीवन समर्थक अवधारणाएँ मौजूद हैं। कार्यक्रम में श्री लिंगया हीरेमठ और श्री नागराज द्यामनकोप्पा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित

थे तथा श्री वाई.बी. अलादकट्टी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र में, दो प्रख्यात विद्वानों, विजयकांत पाटिल और शुभा मारवंते ने क्रमश: "जाति पर काबू पाने की प्रक्रिया" और "लिंग राजनीति के आयाम" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। सामाजिक कार्यकर्ता के.सी. अक्षता ने सत्र का सारांश प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में दो प्रख्यात विद्वानों, आनंद कुंचनूर और मल्लिकार्जुनगौड़ा टूलाहल्ली ने क्रमश: "समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव" और "पर्यावरणीय पहलू" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. रामजन किलेदार ने सत्र का समाहार प्रस्तुत किया। समापन सत्र में प्रख्यात लोक विद्वान, मीरासबिहल्ली शिवन्ना मुख्य अतिथि थे तथा प्रख्यात कन्नड लेखक सतीश कुलकर्णी ने सत्र की अध्यक्षता की और आनंद मुदुकम्मनवर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

के.सभा पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

4 फ़रवरी 2024, चित्तूर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने चित्तूर ज़िला लेखक संगठन के सहयोग से के. सभा की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर चित्तूर के कट्टामाची बालकृष्ण रेड्डी मैंगो हॉल में परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल की संयोजक प्रोफ़ेसर सी. मृणालिनी ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया और के. सभा के लेखन और वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता के बारे में भी संक्षेप में बात की। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. के. रामालक्ष्मी, अध्यक्ष, चित्तूर ज़िला लेखक संघ, ने बताया कि किस प्रकार के.सभा की पत्रकारिता लेखन की गुणवत्ता ने उन्हें आम लोगों का प्रिय बना दिया, साथ ही उनकी साहित्यिक रचनाओं को विद्वानों द्वारा उच्च सम्मान भी प्राप्त हुआ। अपने बीज-भाषण में, प्रख्यात लेखक और विद्वान प्रोफ़ेसर मधुरंतकम नरेंद्र ने के.सभा की बहुमुखी प्रतिभा के बारे में और उनकी सभी विभिन्न उत्कृष्ट विधाओं पर विस्तार से चर्चा की, उन्होंने कहा कि राष्ट्रवाद और यथार्थवाद उनके लेखक की पहचान थे और वे मूल रूप से मानवतावादी थे। के. बालकृष्ण रेड्डी सत्र में मुख्य अतिथि थे। प्रथम सत्र की अध्यक्षता किरण क्रांत चौधरी द्वारा की गई तथा तीन प्रख्यात विद्वानों डी. राजेश्वरम, पायसम सुब्रह्मण्यम और पट्टिपका मोहन ने क्रमश: " के सभा की कहानियाँ", "के. सभा का जीवन और कार्य", तथा "के सभा का बाल साहित्य" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। कासिम अली खान की अध्यक्षता में द्वितीय सत्र में तीन विद्वानों, जोन्नाविट्टुआला श्रीरामचंद्र मूर्ति, पालमनेरू बालाजी और एम. आर. अरुणकुमारी ने क्रमश: " के. सभा के उपन्यास", "के. सभा की कविता" और "के. सभा के नाटक" पर आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र में पासापाला हरिकृष्ण रेड्डी ने सत्र की अध्यक्षता की जबकि डी. अशोक कुमार मुख्य अतिथि रहे तथा वी. रघुपति ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

दलित चेतना

13 फ़रवरी 2024, कोळिकोड

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय ने फ़ारूक़ कॉलेज के मलयाळम् विभाग के सहयोग से 13 फ़रवरी 2024 को कोळिकोड स्थित कॉलेज परिसर में "दलित चेतना" कार्यक्रम का आयोजन किया। मलयाळम् परामर्श मंडल विभाग के अध्यक्ष डॉ. अब्दुल अज़ीज़ ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। कॉलेज की प्रधानाचार्य प्रो. आयशा स्वप्ना, ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल की सदस्य डॉ. खदीजा मुमताज़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। टी. एस. श्यामकुमार ने "पानी और आत्मसम्मान के लिए दर्पण संघर्ष विषय पर

व्याख्यान देते हुए डॉ. खादीजा मुमताज़

अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि पानी और दर्पण डॉ. बी.आर. अंबेडकर और श्री नारायण गुरु के संघर्ष के प्रतीक हैं जो उन्होंने स्वतंत्रता और आत्मसम्मान को प्राप्त करने के लिए किया। सुकुमारन चालिगंधा, जो स्वयं जनजातीय कवि और संपादक हैं ने विभिन्न कवियों की आदिवासी कविताओं पर आधारित पुस्तक का विमोचन किया तथा दो कविताएँ सुनाईं। उन्होंने आदिवासी लेखकों द्वारा मलयाळम् परामर्श मंडल साहित्य में योगदान पर चर्चा की।

संगोष्ठी

महाभारत की परम्पराओं का पुनः कथन

16 फ़रवरी 2024, तिरुर

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए एच.एस. शिवप्रकाश

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने थुनचन स्मारक ट्रस्ट के सहयोग से तिरुर में थुंचन परम्बु में 16 फ़रवरी 2024 को "महाभारत की परंपराओं का पुनः कथन" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और दर्शकों को संबोधित किया। उन्होंने प्रवाहित परंपराओं तथा उनके प्रस्तुतीकरण और वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता के बारे में चर्चा की। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री के.पी. रामानुन्नी ने उनके अध्यक्षीय वक्तव्य में महाभारत की आध्यात्मिकता और भौतिकवाद का मिश्रण बताते हुए उसकी कमियों और खूबीयों पर चर्चा की। प्रख्यात कवि, नाटककार, आलोचक और विद्वान प्रोफ़ेसर एच.एस. शिवप्रकाश ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि किस प्रकार महाभारत का रूपांतरण, पुनर्कथन तथा अन्य कई कृतियों के माध्यम से विकास हुआ। के. मुरलीधरन ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की तथा के.सी. नारायणन ने उपमहाद्वीप के विभिन्न समुदायों में महाभारत के प्रसार और विविधताओं विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि महाभारत धार्मिक तथा दर्शन पर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण रचना है। सी. आर. प्रसाद ने अपने आलेख में कहा कि भक्ति परंपरा के कारण महाभारत का प्रचार तथा प्रसार पूरे देश में हो सका तथा साथ ही इसके विविध रूप भी सामने आए। टी. के. संतोष कुमार ने अगले सत्र की अध्याक्षता की तथा प्रसन्नराजन और के. एम. अनिल ने बताया कि किस प्रकार महाभारत ने कई लेखकों के प्रभावित किया तथा अनकों सामाजिक आंदोलनों को भी प्रभावित किया।

साहित्य मंच

16 फ़रवरी 2024, मडायी

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरू ने सहकारी कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के मलयाळम् विभाग के सहयोग से "मलयाळम् साहित्य में रेडियो का योगदान" विषय पर 16 फ़रवरी 2024 को मडायी स्थित कॉलेज परिसर में "साहित्य मंच" का आयोजन किया।

प्रो. ए.एम. श्रीधरन, सदस्य, मलयाळम् परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी, ने मंच की अध्यक्षता की तथा रेडीयो प्रसारण में भाषाई विविधता को बनाए रखने की आवश्यकता पर चर्चा की। के.पी.के. वेंगारा ने "साहित्य मंच" का उद्घाटन किया और जनता और सांस्कृतिक कथानक को आकार देने में रेडियो की महत्त्वपूर्ण भूमिका के बारे में बात की।

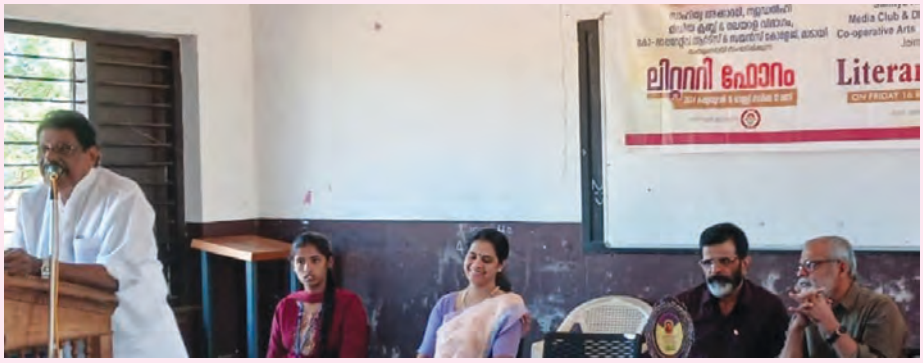

व्याख्यान देते हुए के.पी.के. वेंगारा

विख्यात विद्वान, बालकृष्णन कोय्याल, के. रमेश और वी.एच. निषाद ने "100 वर्षों के प्रसारण" विषयक चर्चा में भाग लिया।

कवि अनुवादक

18 फ़रवरी 2024, धारवाड़

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने कन्नड साहित्य परिषत्तु के सहयोग से 18 फ़रवरी 2024 को धारवाड़ के परिषत्तु परिसर में सिद्धलिंग पत्तनशेट्टी और धरणेंद्र कुरकुरी के साथ "कवि अनुवादक" कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में सिद्धलिंग पट्टनशेट्टी ने अपनी कन्नड कविताएँ सुनाईं और श्री धरणेन्द्र कुरकुरी ने उनका हिंदी अनुवाद पढ़ा। पाठ के बाद सिद्धलिंग पत्तनशेट्टी ने कविता के एक सतत रचनात्मक प्रक्रिया होने के बारे में अपने कुछ विचार साझा किए और कहा कि कविता की रचना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। धरणेन्द्र कुरकुरी ने कहा कि अनुवाद एक लिपि से दूसरी लिपि में रूपांतरण मात्र नहीं है, अनुवादक को मूल भाव को लक्ष्य तक पहुँचाने का प्रयास भी करना चाहिए।

सिद्धलिंग पट्टनशेट्टी तथा धरणेंद्र कुरकुरी

काम्बिसेरी करुणाकरन की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

19 फ़रवरी 2024, कोट्टायम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने कोट्टायम बेसेलियस कॉलेज के सहयोग से कंबिस्सेरी करुणाकरण की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर कोट्टायम के ए.पी. मणि मीडिया सेंटर में 19 फ़रवरी 2024 को परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री साबू कोट्टुक्कल ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया और कंबिस्सेरी की बहुमुखी प्रतिभा और उनके लेखन की विविधता के बारे में संक्षेप में चर्चा की। मलयाला मनोरमा के पूर्व संपादकीय निदेशक थॉमस जैकब ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में काम्बिसेरी करुणाकरण की पत्रकारिता के बारे में चर्चा की। कॉलेज के मलयाळम् परामर्श मंडल विभाग के प्रमुख प्रोफ़ेसर थॉमस कुरुविला ने बीज वक्तव्य दिया तथा निबूलाल ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। 'कांबिस्सेरी और पत्रकारिता' पर समर्पित प्रथम सत्र में, जिसकी अध्यक्षता बी. मुरली ने की, दो प्रसिद्ध विद्वानों, अरविंदन के.एस. मंगलम और थॉमस कुरुविल्ला ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'कांबिस्सेरी : व्यक्ति, नाटककार और मानवतावादी' पर समर्पित द्वितीय सत्र में, जिसकी टी.के. संतोष कुमार ने की, दो विख्यात विद्वान-वी.वी. कुमार और जयन मदथिल ने क्रमश: काम्बिसेरी के परोपकार और मानवतावाद तथा काम्बिसेरी की सामाजिक सक्रियता पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र में, संथन ने सत्र की अध्यक्षता की, तथा प्रख्यात आलोचक के. एम. वेणुगोपाल ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

21 फ़रवरी 2024, विजयवाड़ा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने *अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस* के अवसर पर आंध्र लोयोला कॉलेज के सहयोग से 21 फ़रवरी 2024 को कॉलेज परिसर में "मातृभाषाओं के महत्त्व" विषय पर साहित्य मंच का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में डॉ. षण्मुखानंद, प्रकाशन सहायक, साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु ने प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में, प्रख्यात तेलुगु लेखक श्री पापिनेनी शिवशंकर ने कहा कि संस्कृति के संरक्षण और प्रचार-प्रसार में मातृभाषा का अत्याधिक महत्त्व है। कॉलेज के प्राचार्य रेवरेंड फादर जी.ए.पी. किशोर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने अपने संबोधन में व्यक्तिगत विकास और सामाजिक प्रगति में मातृभाषाओं के महत्त्व पर चर्चा की। कॉलेज के तेलुगु विभाग के प्रमुख प्रो. कोला शेखर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र की परिचर्चा का संचालन जी. उमामहेश्वर राव द्वारा किया

गया, जिसमें तीन प्रसिद्ध विद्वानों, वेंकटेश मचाकनूर, इंदु मेनन और एल. राममूर्ति ने भाग लिया। उमा महेश्वर राव ने सभी भाषाओं के विकास के बारे में तथा इंदु मेनन ने मलयाळम् भाषा की विविधता के बारे में बात की और बताया कि कैसे इसने मलयाळम् भाषा को पनपने में मदद की, वेंकटेश मचाकनूर ने मातृभाषा में शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया तथा राममूर्ति ने मातृभाषाओं को संरक्षण और विस्तार देने के लिए किए गए समकालीन प्रयासों पर बात की। द्वितीय सत्र कविता-पाठ को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता भट्टू नागेश्वर राव द्वारा कि गई जिसमें चार प्रसिद्ध कवियों, अक्षता राज पेरला, आर. आनंदन, अथराम मोथिरम और गरारा ने भाग लिया। रंगनाथम ने क्रमश: बंजारा, तुलु, बडगा, कोलामी और तेलुगु में अपनी कविताएँ पढ़ीं। वासमल्ली की अध्यक्षता में कविता-पाठ को समर्पित तृतीय सत्र में, पाँच प्रसिद्ध कवियों, मुल्लेंगदा माधोश पूवैया, रामचंद्रन कंडमाला, कोटनक साईकुमार, बंदला माधवराव और मंदारपु ह्यमावती ने

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री पापिनेनी शिवशंकर

टोडा, कोडवा, मुल्लुक्कुरूम, गोंडी तथा तेलुगु भाषाओं में क्रमश: अपनी कविताओं का पाठ किया।

सी.वी. रमन पिल्लई पर परिसंवाद

21 फ़रवरी 2024, तिरुवनंतपुरम

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री के.पी. रामानुन्नी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने केरल सी.वी. रमन पिल्लई विश्वविद्यालय के मलयाळम् विभाग के सहयोग से 21 फ़रवरी 2024 को तिरुवनंतपुरम में परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य टी. के. संतोषकुमार ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया तथा मलयाळम् विभाग की अध्यक्ष प्रो. सीमा जेरोम ने सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री के.पी. रामानुन्नी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि सी.वी. मलयाली गद्य के एज़ुथाचन हैं और एज़ुथाचन की ही तरह सी.वी. ने मलयाळम् को संस्कृत और तमिळ के चंगुल से मुक्त कराया। उन्होंने कहा कि सी.वी. के लेखन में केरल के पिछड़े इलाकों और उत्पीड़ित समुदायों के जीवन को केंद्रित किया गया है। इसके बाद शीबा एम. कुरियन ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। प्रथम सत्र जोकि 'स्थायी ऐतिहासिक कल्पना' को समर्पित था की अध्यक्षता सबु कोट्टुक्कल द्वारा की गई। सत्र के दौरान एस.आर. लाल ने सी.वी. रमन पिल्लई के प्रभाव पर आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र में 'नई कल्पनाएँ' विषय पर चर्चा की गई जिसकी अध्यक्षता एम.ए. सिद्दीकी द्वारा की गई तथा दो उपन्यासकारों, जी.आर. दुगोपन और सलिन मणिकुझी ने क्रमश: सी.वी. के उपन्यास लेखन और ऐतिहासिक उपन्यासों पर चर्चा की। के.के. शिवदास ने समापन सत्र की अध्यक्षता तथा साहित्यिक आलोचक पी. सोमन ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कुमारन् आशान् पर परिसंवाद

22 फ़रवरी 2024, तिरुवनंतपुरम

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री वी. मधुसूदनन

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने केरल विश्वविद्यालय के केरल अध्ययन विभाग के सहयोग से कुमारन् आशान् पर विश्वविद्यालय परिसर में 22 फ़रवरी 2024 को परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य टी.के. संतोषकुमार ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। केरल अध्ययन विभाग के प्रमुख सी.आर. प्रसाद ने सत्र की अध्यक्षता की। अपने उद्घाटन वक्तव्य में, प्रख्यात कवि वी. मधुसूदनन नायर ने अद्वैत दर्शन में कुमारन् आशान् को काव्य की नींव बताया और बताया कि किस प्रकार श्री नारायण गुरु ने आशान् के विचारों को आकार दिया। अपने बीज-भाषण में, एस. नजीब ने बताया कि कैसे कुमारन् आशान् उपन्यासों ने सामाजिक दृष्टि को प्रभावित किया तथा उसे आकार प्रदान किया। के.एस. प्रमोद ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। एस. सुजा की अध्यक्षता में और 'स्थायी काव्य कल्पना' विषय को समर्पित प्रथम सत्र में प्रसिद्ध विद्वान ई.पी. राजगोपालन ने आलेख प्रस्तुत किया तथा काव्य को कुमारन् आशान् की सातवीं इंद्री बताया। द्वितीय सत्र का विषय 'कुमारन् आशान् और नई काव्यात्मक कल्पनाएँ' था जिसकी अध्यक्षता के. सजीवकुमार द्वारा की गई जिसमें दो विख्यात विद्वान ए.जी. ओलीना और अजयन पनयारा ने क्रमशः कुमारन् आशान् की चिरस्थायी विरासत और उनके प्रभाव पर केंद्रित आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता ए.एम. उन्नीकृष्णन ने की तथा प्रसन्नराजन ने समापन भाषण दिया।

शब्दकोश

डोगरी-हिंदी-राजस्थानी शब्दकोश

(खंड 1)

संकलनकर्ता
डॉ. चंद्रप्रकाश देवल
पृ. 842, ₹1000/-
ISBN: 978-81-260-3366-9

डोगरी-हिंदी-राजस्थानी शब्दकोश

(खंड 2)

संकलनकर्ता
डॉ. चंद्रप्रकाश देवल
पृ. 849, ₹1000/-
ISBN: 978-81-260-3366-9

जी. कुमारपिल्लई पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

27 फ़रवरी 2024, पय्यानूर

साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय ने श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय के सहयोग से जी. कुमारपिल्लई पर विश्वविद्यालय के पैय्यानूर परिसर में 27 फ़रवरी 2024 को जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. ए.एम. श्रीधरन ने प्रतिभागियों और श्रोतागणें का स्वागत किया।

प्रख्यात कवि के.आर. टोनी ने सत्र की अध्यक्षता की। प्रख्यात आलोचक ईवी. रामकृष्णन ने कुमारपिल्लई की रचनाओं के स्थायी प्रभाव के बारे में बात की तथा केरल के सांस्कृतिक और बौद्धिक परिदृश्य पर चर्चा की।

प्रथम सत्र जो 'जी. कुमार पिल्लई की काव्यात्मक दुनिया' पर आधारित था, की अध्यक्षता साबू कोट्टुक्कल ने की तथा दो विख्यात विद्वान पद्मनाभन कवुम्बयी और

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री ई.वी. रामकृष्णन

रोशनी स्वप्ना ने कुमारपिल्लई की कविता के विभिन्न आयामों पर केंद्रित आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र 'जी. कुमार पिल्लई - गाँधीवादी और शिक्षक' विषय को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता के.आर. टोनी ने की तथा प्रसिद्ध विद्वानों के. बी. सेल्वामणि और अजेश कदन्नापल्ली ने कुमारपिल्लई की कविताओं में गाँधीवादी मूल्यों तथा समाज में शिक्षक के रूप में उनकी भूमिका पर आलेख प्रस्तुत किए।

पी . प्रजिता ने समापन सत्र की अध्यक्षता की और अनिल वल्लथोल ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

के. सुरेन्द्रन पर परिसंवाद

29 फ़रवरी 2024, कोट्टायम

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री जोस पनाचिपुरम

साहित्य अकादेमी के बेंगळूरू स्थित क्षेत्रीय कार्यालय ने कोट्टायम एट्टुमानूरप्पन कॉलेज के सहयोग से 29 फ़रवरी 2024 को कोट्टायम में कॉलेज परिसर में के. सुरेन्द्रन पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य साबू कोट्टुक्कल ने प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रख्यात लेखक जोस पनाचिपुरम ने कहा कि भले ही के. सुरेन्द्रन ने साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में काम किया हो परन्तु उनके उपन्यास उनके समय के सर्वश्रेष्ठ लेखन थे। कॉलेज के प्रधानचार्य प्रो. आर. हेमंत कुमार ने बीज-वक्तव्य दिया और सुरेन्द्रन की रचनाओं में विभिन्न पात्रों और उनके प्रभाव पर चर्चा की। ए. मोहनकशन नायर ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। प्रथम सत्र जो 'के. सुरेन्द्रन की काल्पनिक दुनिया' विषय को समर्पित था, की अध्यक्षता टी. के. संतोष

कुमार द्वारा की गई तथा दो प्रख्यात विद्वानों - विनू अब्राहम और जोबिन चमकाला ने सुरेन्द्रन के उपन्यासों से संबंधित आलेख प्रस्तुत किए। सेबेस्टियन जोसेफ़ की अध्यक्षता में 'के. सुरेन्द्रन के ग़ैर-काल्पनिक साहित्य के साहित्यिक क्षेत्र' को समर्पित द्वितीय सत्र में दो प्रख्यात विद्वानों- सी. अनूप और आर. नंदकुमार ने सुरेन्द्रन के ग़ैर-काल्पनिक साहित्य से संबंधित आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र में हरिकृष्णन ने सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रख्यात समालोचक सुजा सुसान जॉर्ज, ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

"अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस" के अवसर पर "सामाजिक प्रभावक के रूप में महिला लेखिकाएँ" विषय पर परिचर्चा

8 मार्च, 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु द्वारा शुक्रवार, 8 मार्च 2024 को प्रातः 10:30 बजे कप्पन्ना अंगला, जे.पी. नगर, बेंगळूरु, कर्नाटक में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर "सामाजिक प्रभावक के रूप में महिला लेखिकाओं पर पैनल चर्चा" आयोजित की गई। उपस्थित लोगों का स्वागत वरिष्ठ पुस्तकालय एवं सूचना सहायक श्रीमती पी.टी. त्रिवेणी ने किया। आरंभिक वक्तव्य प्रकाशन सहायक, डॉ. षण्मुखानंद ने दिया। कार्यक्रम के दौरान सामाजिक प्रभावक के रूप में महिला लेखिकाओं पर चर्चा हुई, जिसमें द्विभाषी लेखिका एवं कवयित्री श्रीमती अंबिका अनंत, प्रसिद्ध कन्नड लेखिका एवं आलोचक डॉ. एम.एस. आशादेवी, प्रख्यात कहानी लेखिका डॉ. नीति रॉय, श्रीमती शिनी एंटनी तथा प्रख्यात हिंदी लेखिका एवं अनुवादक डॉ. उषा रानी राव जैसे वक्ताओं ने अपने विचार रखे। अंबिका अनंत ने कहा कि महिला लेखिकाओं के लेखों से महिलाओं को सशक्त बनाना चाहिए तथा उन्हें समाज का अधिक शिक्षित एवं जागरूक सदस्य बनने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इस युग में लिखी गई पुस्तकों एवं लेखों से महिलाओं को सकारात्मक परिवर्तन करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। इससे समाज में विभाजन नहीं होना चाहिए। श्रीमती अंबिका ने कहा कि एक महिला तभी किसी को प्रभावित कर सकती है जब उसने किसी क्षेत्र में उच्च स्तरीय ज्ञान प्राप्त किया हो, इसलिए हमारी महिलाओं को ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है। ज्ञान होगा तो महिलाओं में स्वयं की रक्षा करने की क्षमता आएगी। डॉ. एम.एस. आशादेवी ने कहा कि महिलाओं में स्वयं के साथ-साथ समाज को भी प्रभावित करने की क्षमता है। समाज को प्रभावित करने के साथ-साथ महिलाओं को स्वयं के विकास के लिए भी सोचना होगा तथा प्रयास करने होंगे तथा प्रत्येक चुनौती का सामना करने का साहस भी विकसित करना होगा। स्वतंत्रता पूर्व भारत एवं आधुनिक भारत में महिलाएँ अनेक लोगों के

व्याख्यान देते हुए श्रीमती अंबिका अनंत

लिए प्रेरणास्रोत रही हैं। इसी प्रकार हमें भी समाज के लिए एक उदाहरण बनकर जीना चाहिए। समाज के वे नेता जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक गतिविधियों से जुड़े हैं, उन्हें समाज में महिलाओं के प्रति उचित आचरण और व्यवहार के बारे में चिंतित होना चाहिए। डॉ. नीति रॉय ने कहा कि हालांकि अधिकांश महिलाएँ अपने परिवार की सारी ज़िम्मेदारियाँ स्वयं उठाती हैं, फिर भी उनका मानना है कि महिलाओं को अपना काम स्वयं ही करना चाहिए। उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि समान शिक्षा और समान आय की क्षमता के बावजूद महिलाओं को सारी ज़िम्मेदारी क्यों उठानी चाहिए। डॉ. नीति रॉय ने कहा कि हमें समानता को सर्वोपरि रखना चाहिए। श्रीमती शिनी एंटनी ने बताया कि कैसे उनकी दादी के साथ उनकी शुरुआती बातचीत ने उन्हें कहानियाँ लिखने के लिए प्रेरित किया। महिलाओं के संघर्षों से संबंधित अपनी पुस्तक पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भले ही महिलाएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, लेकिन वे अभी भी स्वयं को रसोई की रखवाली करने वाली के रूप में ही जोड़ती हैं। महिलाएँ उस रूप को छोड़ने की मानसिकता से बाहर नहीं निकल पा रही हैं। जो कोई भी इस पर सवाल उठाता है, वह या तो पारिवारिक कलह का शिकार हो जाता है, जो बाद में तलाक की ओर ले जाता है या वह थक कर टूट जाती है और स्थिति से समझौता कर लेती है। डॉ. उषा रानी राव ने कहा कि महिलाएँ कई क्षेत्रों में पुरुषों के बराबर उपलब्धियाँ हासिल कर रही हैं। किसी भी साहित्य, फ़िल्म, धारावाहिक या अन्य मीडिया में महिलाओं को सकारात्मक तरीके से चित्रित किया जाना चाहिए, जो दूसरों के लिए प्रेरणादायी हो। आज की दुनिया में शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों और समानता के प्रति अधिक जागरूक हो रही हैं, जो एक सकारात्मक प्रवृत्ति है। महिला लेखिकाओं की रचनाओं ने आम महिलाओं में उम्मीद जगाई है जो अन्याय और शोषण के खिलाफ लड़ रही हैं।

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित कृतियाँ

ISBN : 978-81-19499-28-1
मूल्य : ₹150/-

ISBN 978-93-5548-550-2
मूल्य : ₹160/-

ISBN 978-93-5548-581-6
मूल्य : ₹ 400/-

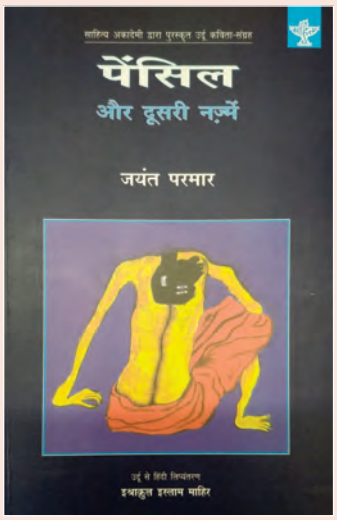

ISBN : 978-93-5548-593-9
मूल्य : ₹190/-

डॉ. वी.वी. वेलुक्कुट्टी आर्यन पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

16 मार्च 2024, करुनागप्पल्ली, केरल

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए डॉ. पी.के. पोकर

साहित्य अकादेमी ने करुनागपल्ली कुमारन् आशान् लाइब्रेरी के सहयोग से श्री किंग्स पारिश हॉल में डॉ. वी.वी. वेलुक्कुट्टी आर्यन की जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. सबु कोट्टुक्कल ने स्वागत किया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी लंबे समय से डॉ. वी.वी. वेलुक्कुट्टी आर्यन की जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का सम्मान करते हुए इस प्रकार के परिसंवादों का आयोजन करती आ रही है। प्रख्यात मलयाळम् समालोचक डॉ. पी.के. पोकर ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। पी.के. पोकर के अनुसार, यह महत्त्वपूर्ण है कि यह कार्यक्रम उन लोगों को सम्मानित करे जिन्होंने समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उनका मानना है कि वेलुक्कुट्टी आर्यन बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं जो पिछड़े समुदाय से उभरकर सामने आए हैं। आर्यन की साहित्यिक रचनाएँ विविध प्रकृति की थीं। श्री पोकर ने यह भी कहा कि वेलिकुट्टी आर्यन जैसी हस्तियों को याद करने में साहित्य अकादेमी का यह प्रयास बहुत सराहनीय है। कुमारन् आशान् स्मारक पुस्तकालय के सचिव एल्ड्रिन टी.एम. ने बीज-वक्तव्य दिया तथा बीजू थुरायिलकुन्नू ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

प्रथम सत्र, जिसका शीर्षक था "वेलुक्कुट्टी आर्यन - मल्टीपोटेंशियल" पूर्वाह्न 11:30 बजे से अपराह्न 1:15 बजे तक चला। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल की सदस्य डॉ. खादीजा मुमताज़ ने सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें वल्लिकावु मोहनदास और शिबू एस. वायलाकाथु ने आलेख प्रस्तुत किए। खादीजा मुमताज़ ने कहा कि वेलुक्कुट्टी आर्यन ने न केवल एक समुदाय बल्कि पूरे देश के पुनर्जागरण का नेतृत्व किया। उन्होंने आर्यन समुदाय को सही दिशा विर्निदिष्ट की किया और उनकी देखभाल की। वल्लिकाव मोहनदास ने आर्यन द्वारा किए गए व्यापक योगदान पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि डॉ. वी.वी. वेलुक्कुट्टी कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, पत्रकार, समाज सुधारक, शोधकर्ता, शिक्षक और पुस्तकालयाध्यक्ष थे। शिबू एस. वायलकथ ने वेलुक्कुट्टी आर्यन की श्रमिक नेता गतिविधियों का वर्णन किया, जिसमें नाविकों को संगठित करना शामिल था। द्वितीय सत्र का शीर्षक था—"वेलुक्कुट्टी आर्यन की साहित्यिक गतिविधियाँ।" दोपहर के सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. टी.के. संतोष कुमार ने की, जिसमें के.के. शिवदास और ए. मुहम्मद कबीर ने आलेख प्रस्तुत किए।

टी.के. संतोष कुमार ने आर्यन की साहित्यिक कृतियों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने दावा किया कि समाज को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने जो कुछ किया, उस पर लोगों ने विशेष ध्यान दिया। के.के. शिवदास ने वेलुक्कुट्टी आर्यन की लेखक के रूप में लगातार सफलता की कमी के बारे में चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी ने उनके योगदान को मान्यता प्रदान करके सराहनीय कार्य किया है। मुहम्मद कबीर ने चर्चा की कि वेलुक्कुट्टी आर्यन का काम किस प्रकार बहुआयामी रहा है। समापन सत्र की अध्यक्षता अनिल वी. नागेंद्रन ने की। आर. पार्वती देवी ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया, जिसके साथ परिसंवाद का समापन हुआ। आर. पार्वती देवी के अनुसार, केरल पुनर्जागरण में निम्न जाति समुदायों के योगदान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को वेलुक्कुट्टी ने समझाया। उनके अनुसार, उस समूह के सबसे स्मरणीय सदस्य वी. वी. वेलुक्कुट्टी आर्यन थे।

कन्नड साहित्य में नारीवाद के आयामों की प्रकृति पर साहित्य मंच

17 मार्च 2024, सुरपुरा, कर्नाटक

व्याख्यान देते हुए प्रो.महेंद्र एम.

साहित्य अकादेमी ने कन्नड साहित्य संघ, सुरपुरा, यादगीर ज़िले के सहयोग से 'कन्नड साहित्य में नारीवाद के आयामों की प्रकृति' तथा 'कन्नड साहित्य में नारीवाद के आयामों की प्रकृति' विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किए।

साहित्य अकादेमी के 'साहित्य मंच' शीर्षक के अंतर्गत 17 मार्च 2024 को गरुड़ाद्री कलामंदिर, सुरपुर में 'कन्नड रोमांटिक कविता' विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किए गए। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. चिदानंद साली ने मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने क्षेत्र के सांस्कृतिक रिक्तता को दूर करने के लिए कन्नड साहित्य संघ के निरंतर प्रयासों की सराहना की।

कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के लोक प्रशासन विभाग के प्रो. किरण एम. गजानुर ने 'कन्नड साहित्य में नारीवाद के आयामों की प्रकृति' पर अपने विशेष व्याख्यान में बताया कि इसमें तीन धाराएँ हैं : एक आत्म-दया की, एक आत्मनिरीक्षण और विरोध की, और एक परिष्कृत अभिव्यक्ति की। उन्होंने तीनों श्रेणियों में प्रमुख हस्तियों का उल्लेख किया।

कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. महेंद्र एम. ने "कन्नड रोमांटिक कविता पर वड्र्सवर्थ का प्रभाव" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि फ्रांसीसी क्रांति के बाद, प्रकृति ने साहित्य में महत्त्व अर्जित किया, जिससे मनुष्य की स्थिति बदल गई। रोमांटिकवाद के स्कूल का नेतृत्व वड्र्सवर्थ तथा एस.टी. कोलरिज ने किया।

बी.एम. श्री, कुवेम्पु और डी.आर. बेंद्रे इससे प्रभावित हुए तथा उन्होंने राष्ट्रवाद और प्रकृति की पृष्ठभूमि के साथ लिखना प्रारंभ किया, जिससे अन्य प्रमुख लेखक प्रभावित हुए। बीटीपीएस बेल्लारी के कवि और डीजीएम (एचआर) श्री वाई.बी. हालाभावी ने व्याख्यानों पर प्रतिक्रिया दी। 'कन्नड साहित्य में नारीवाद के आयामों की प्रकृति' विषय पर अपनी प्रतिक्रिया में उन्होंने कहा कि नारीवाद पुरुषों की शक्तियों को छीनकर महिलाओं को देने का प्रयास नहीं करता है; बल्कि, यह हमें बदलते सामाजिक परिदृश्य में शक्ति को फिर से परिभाषित करने के लिए मज़बूर करता है।

कन्नड साहित्य संघ के उपाध्यक्ष श्री जेम्स ऑगस्टिन तथा सुश्री जयललिता वी. पाटिल ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त किए।

बसवराज जमद्रखानी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि यह कार्यक्रम बहुत सफल रहा क्योंकि इसने दर्शकों के मन में नए विचारों के बीज बोए।

कोलकाता

बाङ्ला लेखकों के साथ ग्रामालोक

7 जनवरी 2024, ग्राम -मानखंड, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल

साहित्य अकादेमी ने रेखा सत्संग महिला समिति के सहयोग से 7 जनवरी 2024 को स्थानीय बाङ्ला लेखकों के साथ ग्राम मानखंड, डायमंड हार्बर-II, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल में 'ग्रामालोक' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में रेखा सत्संग महिला समिति की अध्यक्ष माणिक पुरकाइत ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय कराया और श्रोताओं को कार्यक्रम के महत्त्व के बारे में बताया। कार्यक्रम में स्थानीय बाङ्ला लेखकों-श्रीकांत मारिक, अरुण पुरकाइत, स्वप्न पुरकाइत, नीलांजन रायचैधुरी और रवींद्रनाथ मंडल ने अपने हाल में लिखी रचनाओं का पाठ किया। रेखा सत्संग महिला समिति की सचिव रेखा दास ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

युवा पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह

12 जनवरी 2024, कोलकता

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक

साहित्य अकादेमी ने 12 जनवरी 2024 को रवींद्र सदन सभागार, कोलकाता में अपने युवा पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक द्वारा 22 विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। पुरस्कार में उत्कीर्ण ताम्र फलक और पचास हजार रुपये का चेक दिया गया। पुरस्कार प्रदान करने से पहले साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रशस्ति पत्र पढ़े। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने पुरस्कार विजेताओं को पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। पुरस्कार विजेताओं में शामिल थे : जिंटू ठाकुरिया (असमिया), हामिरुद्दीन मिद्दया (बाङ्ला), माइनावस्रि दैमारी (बोडो), धीरज कुमार रैणा (डोगरी), अनिरुद्ध कनिसेट्टी (अंग्रेज़ी), अतुल कुमार राय (हिंदी), मंजुनायक चळ्ळुरु (कन्नड), निग़त नसरीन (कश्मीरी), तन्वी श्रीधर कामत बंबोळकार (कोंकणी), संस्कृति मिश्रा (मैथिली), गणेश पुत्तूर

युवा पुरस्कार प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक

(मलयाळम्), थिंनाम परशुराम (मणिपुरी), विशाखा विश्वनाथ (मराठी), नयन कला देवी (नेपाली), दिलेश्वर राणा (ओड़िआ), संदीप शर्मा (पंजाबी), देवीलाल महिया (राजस्थानी), मधुसूदन मिश्र (संस्कृत), बापी टुडु (संताली), मोनिका जे. पंजवाणी (सिंधी), राम थंगम (तमिऴ), जानी तक्केडसिला (तेलुगु) और तौसीफ़ ख़ान (उर्दू)। धीरज कुमार रैणा पुरस्कार अर्पण समारोह में उपस्थित नहीं हो पाए। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत वक्तव्य में स्वामी विवेकानंद के उत्साहवर्द्धक शब्दों को याद किया क्योंकि वे युवाओं के महानतम ध्वजवाहकों में से एक थे। उन्होंने उन दिग्गजों का भी ज़िक्र किया जिन्होंने अपनी युवावस्था में ज्ञान की विभिन्न धाराओं में उत्कृष्टता प्राप्त की थी। यह समाज का कर्तव्य है कि वह युवा मन को उचित रूप से सँवारने के लिए आवश्यक पठन सामग्री उपलब्ध कराए। समाज के उत्थान के लिए युवा लेखकों को बढ़ावा देना ज़रूरी है। उन्होंने श्रोताओं को साहित्य अकादेमी की प्रमुख परियोजनाओं, जैसे युवा साहिती, नवोदय प्रकल्प और यात्रा अनुदान के बारे में भी बताया, जो विशेष रूप से युवा लेखकों को एक व्यापक मंच प्रदान करने के लिए तैयार की गई हैं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि युवा लेखक भारतीय साहित्य का भविष्य हैं। इस अवसर पर एक ही मंच पर बैठे विभिन्न भारतीय भाषाओं के 22 लेखकों की उपस्थित की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि संपूर्ण भारतीय साहित्य एक मंच पर बैठा है। रोमांस और विद्रोह युवाओं मूल भावना है, इसलिए वे परंपरा को चुनौती दे सकते हैं और उसे नए सिरे से परिभाषित कर सकते हैं। चूँकि वे भारतीय साहित्य और संस्कृति के बदलते परिदृश्य से अवगत हैं, इसलिए वे परंपरा को आधुनिकता के साथ उत्कृष्टता के उच्चतम स्तर पर ला सकते हैं। समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात बाङ्ला कवि सुबोध सरकार ने नवोदित लेखकों को पहचान देने के इस विशेष अवसर पर उपस्थित होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। विश्व के कुछ प्रतिष्ठित लेखकों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक युवा लेखक अपने लेखन की

समापन वक्तव्य प्रस्तुत करती हुईं साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा

युवा पुरस्कार विजेताओं के साथ (बाएँ से दाएँ) के. श्रीनिवासराव, सुबोध सरकार, माधव कौशिक तथा कुमुद शर्मा

वैधता और सफलता को लेकर संशय में रहता है। उन्होंने दुनिया भर में लेखकों पर हो रहे हमले पर खेद व्यक्त करते हुए उम्मीद जताई कि युवा लेखकों की विद्रोही भावना नई संभावनाओं को जन्म दे सकती है। अपने समापन वक्तव्य में साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने युवा मन के लिए उचित मार्गदर्शन के महत्त्व पर ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने कहा कि युवा लेखकों को अपने उत्साह को उचित दिशा में लगाना चाहिए। इस संदर्भ में उन्होंने इस तथ्य की ओर इशारा किया कि सोशल मीडिया के इस दौर में लेखकों को बिना किसी बाधा के अपनी पहचान बनाने के लिए एक व्यापक मंच मिल रहा है, लेकिन उन्होंने युवा लेखकों को आगाह करते हुए यह भी कहा कि उन्हें परिपक्व लेखन के लिए समय निकालना चाहिए।

इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, विद्वान और साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

युवा पुरस्कार 2023 लेखक सम्मिलन

13 जनवरी 2024, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने 13 जनवरी 2024 को साहित्य अकादेमी सभागार में अपने युवा पुरस्कार विजेताओं के साथ लेखक सम्मिलन का आयोजन किया। इस सम्मिलन की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने युवा लेखकों की रचनात्मकता की सराहना की, जो उनके लेखन में परिलक्षित होती है। उन्होंने कहा कि उनके लेखन का मानवतावादी दृष्टिकोण मानवता की रक्षा के उनके प्रयासों का प्रमाण है। हालाँकि उन्होंने यह भी कहा कि लेखन के दौरान लेखकों को उचित दृष्टिकोण भी अपनाना चाहिए। सम्मिलन में पुरस्कार विजेताओं ने अपने रचनात्मक अनुभव प्रबुद्ध श्रोताओं के साथ साझा किया।

अपने जीवन के शुरुआती वर्षों के संघर्ष के बारे में बात करते हुए जिंटू ठाकुरिया (असमिया) ने श्रोताओं को बताया कि उनकी कहानी में स्थान और पहचान की अंत:क्रियाशीलता बहुत प्रभावशाली रही है। साथ ही, न्यूनतम, लेकिन महत्त्वपूर्ण तरीक़े से हाशिये पर पड़े पात्रों ने उनका ध्यान आकृष्ट किया है। यौन शोषण, लैंगिक अल्पसंख्यक, नैतिक व्यवस्था, मूल्य संकट, अलगाववाद की निरर्थकता, सांस्कृतिक पिछड़ापन ऐसे विषय बन गए हैं, जिन्हें वे अपने लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त करना चाहते हैं। ग्रामीण बंगाल में जन्मे और पले-बढ़े हामिरुद्दीन मिद्या (बाङ्ला) को शुरू से ही बंगाल की स्वदेशी वाचिक परंपराओं ने प्रभावित किया था। उसके गाँव में मनुष्य और प्रकृति का गहरा संपर्क था। खेतों में काम करते हुए उन्होंने बहुत सारी चीज़ें सीखीं—लोककथाएँ, दंतकथाएँ और जाने क्या-क्या। उनके आसपास के परिवेश ने उन्हें वह बनाया जो वे आज हैं। अपने जीवन के बारे में बात करते हुए माइनावस्रि दैमारी (बोडो) ने श्रोताओं को बताया कि कविता उनके मनोभावों, भावनाओं और असहनीय पीड़ा को साझा करने का एकमात्र साधन है। अकेली माँ का संघर्ष देखकर और पितृसत्तात्मक समाज में

पिता को खोना उनके लिए एक आघात था। बेटी होने की असमानता और भेदभाव भी एक अलग चुनौती थी। उन्होंने कहा कि समाज भले ही बेटा और बेटी की समानता के बारे में आवाज़ उठाता है, लेकिन वास्तविकता में कहीं न कहीं असमानता अभी भी मौजूद है। अनिरुद्ध कनिसेट्टी (अंग्रेज़ी) ने हमारी राजनीति को ढालने में इतिहास की भूमिका के साथ-साथ भारतीय संस्कृतियों और भाषाओं की विविधता पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने समकालीन स्थिति की गतिशील प्रकृति पर बोलते हुए पिछली पीढ़ी को भी याद किया। अतुल कुमार राय (हिंदी) ने अपने लेखन के शुरुआती वर्षों पर बात की और यह भी बताया कि साहित्य के सामाजिक पहलुओं को उजागर करते हुए उन्होंने कैसे अपने उपन्यासों के कथानक की योजना बनाई। अपने जीवन के संघर्षों पर ध्यान केंद्रित करते हुए मंजुनायक चळ्ळुरु (कन्नड) ने बताया कि प्रवास से जुड़ी विरक्ति और भावनाओं ने कैसे उनके साहित्यिक प्रयास को आकार दिया। उनके बचपन का स्थान, लोग, चित्र और स्मृतियों में निहित परिस्थितियाँ स्रोत बनकर उनके द्वारा लिखी गई कहानियों में रूपांतरित हो गईं। निग़हत नसरीन (कश्मीरी) ने जीवन की पीड़ाओं, पारिवारिक समस्याओं, दिन-प्रतिदिन की घटनाओं, सामाजिक परिवर्तन, भाईचारे, महिला सशक्तीकरण और दहेज, घरेलू हिंसा जैसी सामाजिक विसंगतियों पर केंद्रित विषयों पर अपने लेखन की बात की। तन्वी श्रीधर कामत बंबोळकार (कोंकणी) ने कोंकणी क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर बात की, जो सदियों पुराने इतिहास को दर्शाती चट्टानों की नक्काशी, समृद्ध लोककथाओं और हरे-भरे वन क्षेत्र की भूमि है। वहीं प्रमुख कोंकणी लेखकों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उनका लेखन सुंदर कोंकणी समुदाय को बढ़ावा देने के लिए है। कविता के स्वरूप पर बोलते हुए संस्कृति मिश्रा (मैथिली) ने श्रोताओं को बताया कि एक कवि के रूप में समस्याग्रस्त क्षेत्रों को

लेखक सम्मिलन

प्रस्तुत करने के स्थान पर वह समस्याओं के संभावित समाधान भी प्रस्तुत करती है। गणेश पुत्तूर (मलयाळम्) ने अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों पर बात की और कहा कि उनके लिए यथार्थवाद और व्यावहारिकता साहित्य में सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। अपने लेखन की उत्पत्ति पर बोलते हुए थिंनाम परशुराम (मणिपुरी) ने मणिपुर की वर्तमान स्थिति और लोगों पर इसके खतरनाक प्रभावों पर ध्यान केंद्रित किया। विशाखा विश्वनाथ (मराठी) ने रचनात्मक साहित्य के मूल पहलुओं पर विस्तार से बात की। उनके लिए लेखन सिर्फ़ एक शिल्प नहीं है; यह एक यात्रा है—एक ऐसी यात्रा जहाँ संदेह और विश्वास एक नृत्य में संलीन होते हैं, एक संघर्ष जो अंततः कुछ नया और जीवंतता लाता है। यह एक ऐसी यात्रा है जहाँ हम अपने विश्वास पर सवाल उठाते हैं, चुनौती देते हैं और उनके साथ खुद को और अपने आसपास की दुनिया को गहराई से समझने की कोशिश करते हैं। नयन कला देवी (नेपाली) ने कहा कि साहित्य को आम लोगों के जीवन पर केंद्रित होना चाहिए। वह खुशियों के अनुभव और जनता के दुःख के साथ-साथ दैनिक जीवन में आने वाली व्यावहारिक परिस्थितियों का चित्रण भी करती है। अपने लेखन पर प्रभावों की प्रकृति पर बोलते हुए दिलेश्वर राणा (ओड़िआ) ने श्रोताओं को बताया कि प्रत्येक कहानी सच्ची घटनाओं पर आधारित है, लेकिन वास्तविकता प्रबल होती है। विस्थापन, खनन के कारण बेघर होने, कालाहांडी की परंपराओं और संस्कृति तथा मानवीय मूल्यों के बारे में कहानियाँ बुनी गई हैं। इस समय उनके आस-पास की समस्याएँ, घटनाएँ और परिस्थितियाँ उनकी कहानी कहने की नींव के रूप में काम करती हैं। उनके लिए एक समस्या, जिसे हल नहीं किया जा सकता है वह कहानी बन जाती है। संदीप शर्मा (पंजाबी) ने भाषाओं की प्रकृति और उनके पहलुओं पर बात की। उनके लिए अच्छे साहित्य में भाषा की कोई बाधा नहीं होती। देर-सवेर एक अच्छी रचना नए क्षेत्रों को खोजने के लिए अपना रास्ता खोज ही लेती है। देवीलाल माहिया (राजस्थानी) ने अपने वक्तव्य में राजस्थानी इतिहास और संस्कृति की समृद्ध विरासत पर प्रकाश डाला। उन्होंने समकालीन राजस्थानी साहित्य पर बात की और बताया कि इसने उनके साहित्यिक जीवन को कैसे आकार दिया। मधुसूदन मिश्र (संस्कृत) ने संस्कृत साहित्य की विरासत पर बात की और इस भाषा के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का उल्लेख किया। उन्होंने संस्कृत की विशिष्ट साहित्यिक तकनीकों पर भी बात की। बापी टुडु (संताली) ने अपने

लेखन के प्रारंभिक वर्षों पर बात करते हुए कहा कि वे आधुनिक शैली में समकालीन संताल समाज में ज्यादातर सामना किए जाने वाले मुद्दों और चुनौतियों पर कहानियाँ लिखने के लिए समर्पित हैं। मोनिका जे. पंजवाणी (सिंधी) ने सिंधी साहित्य के प्रमुख लेखकों और उसके लेखन पर उनके प्रभाव के बारे में बात की। कालजयी तमिळ लेखन पर ध्यान केंद्रित करते हुए राम थंगम (तमिळ) ने कहा कि वे काल्पनिक कहानियाँ नहीं लिखते हैं। वे अपने जीवन के अनुभवों से लिखते हैं—जिन लोगों से वे मिले और जो कहानियाँ उन्होंने सुनीं। यह वास्तविक जीवन की कहानी कहने जैसा है, जो बहुत जीवंत है। जानी तक्केडसिला (तेलुगु) ने अपने शुरुआती लेखन और सामाजिक मुद्दों को उनके लेखन में कैसे जगह मिली इस पर बात की। उन्होंने अपने शुरुआती जीवन में जिन

लेखक सम्मिलन

संघर्षों का सामना किया, उसका उल्लेख किया। लेखन के पीछे अपनी प्रेरणाओं पर बोलते हुए तौसीफ़ ख़ान (उर्दू) ने उर्दू साहित्य के साथ-साथ समाज की वर्तमान स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया, जो पिछले दौर से काफ़ी बदल गया है। धीरज कुमार रैणा (डोगरी) सम्मिलन में उपस्थित नहीं हो सके।

अंत में, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी : बसंत कुमारी पटनायक

16 जनवरी 2024, कटक, ओड़िशा

(बाएँ से दाएँ) वैजयंती मिश्र, रघुनाथ महापात्र, नरेंद्र प्रसाद दास, ज्ञानी देवाशीष मिश्र, शिवाशीष कारा

साहित्य अकादेमी ने उत्कल साहित्य समाज, कटक, ओड़िशा के सहयोग से 16 जनवरी 2024 को शताब्दी भवन, कटक में बसंत कुमारी पटनायक पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि बसंत कुमारी पटनायक ने अपने झरोखे से समाज की तसवीर देखी, जो उनकी रचनाओं में परिलक्षित होती है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रख्यात ओड़िआ लेखक विभूति पटनायक ने कहा कि बसंत कुमारी का अमादा बाटा (द अनट्रोडेन पाथ) उपन्यास ओड़िआ साहित्य में एक कालजयी रचना है। इस उपन्यास का चरित्र चित्रण और सामग्री बहुत प्रभावशाली है।

मुख्य अतिथि के रूप में साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य पंडित अंतर्यामी मिश्र ने बसंत कुमारी पटनायक को ओड़िआ साहित्य में एक प्रभावशाली लेखिका बताया। उत्कल साहित्य समाज के अध्यक्ष गोविंदचंद्र चंद ने बीज वक्तव्य दिया और बसंत कुमारी के जीवन और रचनात्मक संपदा का मूल्यांकन किया। उन्होंने कहा कि बसंत कुमारी की रचनाएँ अद्वितीय हैं।

साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि बसंत कुमारी के *अमडा बाट* और *चोराबाली* उपन्यासों ने ओड़िआ साहित्य को समृद्ध किया है।

प्रथम सत्र का संचालन साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक ने किया। धन्यवाद ज्ञापन उत्कल साहित्य समाज के महासचिव आदित्य प्रताप दल ने किया। संगोष्ठी के प्रथम सत्र की

अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य बिजय कुमार सतपथी ने की। विष्णुप्रिया ओटा, शत्रुघ्न पांडव और संजीता मिश्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता नरेंद्र प्रसाद दास ने की, वहीं रघुनाथ महापात्र, वैजयंती मिश्र और ज्ञानी देवाशीष मिश्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। उत्कल साहित्य समाज के उपाध्यक्ष जीवनानंद अधिकारी और कोषाध्यक्ष शिवाशीष कारा ने क्रमशः इन सत्रों का समन्वय किया।

कथासंधि : मृत्युंजय षड़ंगी

16 जनवरी 2024 कॉन्फ्रेंस हॉल, रोटरी भवन, भुवनेश्वर

आयोजन के दौरान वक्तव्य देते हुए गौरहरि दास

साहित्य अकादेमी द्वारा 16 जनवरी 2024 को रोटरी भवन, भुवनेश्वर, ओड़िशा के कॉन्फ्रेंस हॉल में *कथासंधि* कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रख्यात ओड़िआ कथाकार मृत्युंजय षड़ंगी ने अतिथि के रूप में कार्यक्रम में सहभागिता की और अपनी रचनात्मक यात्रा के बारे में बात की। उन्होंने एक कहानी 'कैसेट' भी पढ़ी, जिसने उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने कार्यक्रम के बारे में श्रोताओं को जानकारी दी और अतिथि लेखक का परिचय दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास ने की। श्री षड़ंगी ने बताया कि उन्होंने 57 वर्ष की आयु में अपने लेखन की शुरुआत की और अब तक 143 से अधिक कहानियाँ लिख चुके हैं। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य उन्हें शुद्ध आनंद और आत्म-संतुष्टि प्रदान करता है। अपने वक्तव्य में उन्होंने अपनी कहानी लेखन प्रक्रिया और तकनीक का भी उल्लेख किया। अंत में श्री षड़ंगी ने दर्शकों द्वारा पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिए। साहित्य अकादेमी, कोलकाता के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक ने कार्यक्रम का संचालन किया। साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के सदस्य पवित्र मोहन कर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद

संताली गीतों में प्रतिबिंबित धार्मिक अवधारणा

17 जनवरी 2024, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी ने तुलनात्मक जनजातीय भाषा एवं साहित्य स्कूल, केआईएसएस के सहयोग से 17 जनवरी, 2024 को सम्मेलन कक्ष-2, प्रशासनिक भवन परिसर-3, केआई एसएस, भुवनेश्वर में 'संताली गीतों में प्रतिबिंबित धार्मिक अवधारणा' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य दिया।

परिसंवाद का दृश्य

उन्होंने संताली साहित्य के संदर्भ में भारतीय साहित्य पर धार्मिक प्रसंगों के योगदान पर चर्चा की।

साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक चैतन्य प्रसाद माझी ने अपना आरंभिक वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के सदस्य नाकू हांसदा ने बीज भाषण दिया और प्रख्यात संताली विद्वान गंगाधर हांसदा ने अध्यक्षता की।

उद्घाटन सत्र के लिए धन्यवाद ज्ञापन केआईएसएस के उप निदेशक (शैक्षणिक) कडै सोरेन द्वारा दिया गया। प्रथम शैक्षणिक सत्र में जतींद्रनाथ बेसरा, सुखचंद सोरेन और सिद्धिलाल मुर्मू ने आलेख प्रस्तुत किए और भुजंग टुडू ने अध्यक्षता की। दूसरे सत्र में रूपचंद हांसदा की अध्यक्षता में धनेश्वर माझी, अंजन कर्माकर और लालचंद सोरेन द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। सभी प्रतिभागियों ने प्रमुख ग्रंथों के संदर्भ में संताली गीतों के विभिन्न पहलुओं और उन पर धार्मिक अवधारणाओं के प्रभाव पर चर्चा की।

परिसंवाद : ओड़िआ साहित्य में व्यंग्य और हास्य

22 जनवरी 2024, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

साहित्य अकादेमी ने ओड़िआ विभाग, विश्वभारती के सहयोग से 22 जनवरी 2024 को सम्मेलन कक्ष, भाषा भवन, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल में 'ओड़िआ साहित्य में व्यंग्य और हास्य' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने ओड़िआ साहित्य में व्यंग्य और हास्य की शैली के महत्त्व पर बात की। एमएससीबी विश्वविद्यालय, बारिपदा के ओड़िआ विभाग के विभागाध्यक्ष बब्रूवाहन महापात्र द्वारा बीज भाषण दिया गया, जिसमें विश्वभारती के ओड़िआ विभाग के विभागाध्यक्ष मनोरंजन प्रधान ने अध्यक्षता की। उन्होंने प्रमुख ग्रंथों के संदर्भ से ओड़िआ में व्यंग्य और हास्य साहित्य के विकास की उत्पत्ति पर

मनोरंजन प्रधान, क्षेत्रबासी नायक तथा बब्रूवाहन महापात्र (बाएँ से दाएँ)

विस्तार से बात की। उद्घाटन सत्र में विश्वभारती के ओड़िआ विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर शरत कुमार जेना ने धन्यवाद ज्ञापन किया। पहले सत्र में अनन्या दत्तगुप्ता, चिन्मय होता और प्रमिला पाटुलिया द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए और अध्यक्षता मुक्तेश्वरनाथ तिवारी ने की। दूसरे सत्र में देवाशीष महापात्र, इंद्रमणि साहू, रवींद्र कुमार दास, शरत कुमार जेना और स्वप्नरानी सिंह द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। इस सत्र की अध्यक्षता राधू मिश्र ने की। उन्होंने चर्चा के दौरान प्रमुख ग्रंथों और लेखकों के संदर्भ के साथ-साथ साहित्यिक शैली के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रासंगिक ग्रंथों से भी व्यापक रूप में उद्धृत किया।

साहित्य अकादेमी की पत्रिका के सदस्य बनें

समकालीन भारतीय साहित्य का डाक खर्च सहित

एक प्रति : 100 रु. वार्षिक शुल्क : 250 रु.

त्रिवार्षिक शुल्क : 650 रु.

बहुभाषी कवि सम्मिलन

25 जनवरी 2024, कोलकाता

बहुभाषी कवि सम्मिलन

साहित्य अकादेमी ने 25 जनवरी 2024 को एसबीआई ऑडिटोरियम, अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला, सेंट्रल पार्क, मेला ग्राउंड, सॉल्ट लेक, कोलकाता में बहुभाषी कवि सम्मिलन का आयोजन किया। सम्मिलन में स्वागत वक्तव्य देवेंद्र कुमार देवेश, क्षेत्रीय सचिव, साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता ने दिया। उन्होंने वक्ताओं से श्रोताओं का परिचय कराया और इस तरह के बहुभाषी कार्यक्रमों के आयोजन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ये विचारों के आदान-प्रदान के ज़रिये विभिन्न भारतीय साहित्य और संस्कृति को जोड़ने का काम करती हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात बाङ्ला कवि प्रसून बंद्योपाध्याय ने की। सम्मिलन में मंजिमा गगै दास (असमिया), प्रसून बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), संयुक्ता बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), अनिल कुमार ओझा (भोजपुरी), राजर्षि एन. पत्रनवीस (अंग्रेज़ी), राज्यवर्द्धन (हिंदी), चंदन कुमार झा (मैथिली), आशा उपाध्याय 'बराल' (नेपाली), कृष्ण कुमार महांति (ओड़िआ), भूपिंदर सिंह बशर (पंजाबी), आदित्य कुमार मांडी (संताली) और फ़े सीन एजाज़ (उर्दू) ने हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ मूल भाषाओं में अपनी कविताएँ पढ़ीं। उनके लेखन ने परिवेश के प्रति उनके प्रभावी दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया।

साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री क्षेत्रबासी नायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच

अशाङ्बम मीनकेतन सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

27 जनवरी 2024, अगरतला

साहित्य अकादेमी ने मणिपुरी साहित्यिक एवं संस्कृति मंच, त्रिपुरा के सहयोग से 27 जनवरी 2024 को सम्मेलन कक्ष, एनईसीओएल, नजरुल कलाक्षेत्र परिसर, बनमालीपुर, अगरतला में अशाङ्बम मीनकेतन सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर साहित्य मंच का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने वक्ताओं से श्रोताओं का परिचय कराया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक राजेन तोइजाम्बा ने अपना परिचय दिया। मणिपुरी परामर्श मंडल के सदस्य ख. बिरला सिंह ने बीज वक्तव्य दिया और प्रख्यात मणिपुरी लेखक एन. निरंजन दत्ता ने अध्यक्षता की। उन्होंने अशाङ्बम मीनकेतन सिंह के जीवन और कार्य के बारे में विस्तार से बताया।

मंच पर राजकुमारी मुसुकस्ना देवी, हुइरेम भारती और एन. प्रणय सिंह

कार्यक्रम के प्रतिभागी

ने ए. मीनकेतन सिंह की महत्त्वपूर्ण रचनाओं पर आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने उनके लेखन से भी व्यापक रूप से उद्धृत किया। मणिपुरी साहित्यिक एवं संस्कृति मंच, त्रिपुरा के महासचिव खोइसनाम मंगोल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद : मणिपुरी साहित्य का स्वरूप

28 जनवरी 2024, कॉन्फ्रेंस हॉल, त्रिपुरा स्टूडेंट्स हेल्थ होम, अगरतला

साहित्य अकादेमी द्वारा मणिपुरी साहित्यिक और सांस्कृतिक मंच, त्रिपुरा के सहयोग से 28 जनवरी 2024 को कॉन्फ्रेंस हॉल, त्रिपुरा स्टूडेंट्स हेल्थ होम, अगरतला में 'मणिपुरी साहित्य का स्वरूप' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने श्रोताओं से वक्ताओं का परिचय कराया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक राजेन तोइजाम्बा ने आरंभिक वक्तव्य दिया। मणिपुरी साहित्य परिषद्, इंफाल के अध्यक्ष एल. जयचंद्र मुख्य अतिथि के साथ मणिपुरी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच के अध्यक्ष एन. बीर सिंह अध्यक्षता की।

मणिपुरी साहित्य परिषद्, त्रिपुरा के अध्यक्ष एल. वीरमंगल सिंह विशिष्ट अतिथि थे। साहित्य

(बाएँ से दाएँ) वीरमंगल सिंघा, क्षेत्रबासी नायक, राजेन तोइजाम्बा, एल. जयचंद्र और एस. खेलामोहन

अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के सदस्य खोइस्नाम बिरला द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। प्रथम सत्र में थोकचोम इबोहनबी सिंह, अनुराधा नोङ्मैथेम और खोइस्नाम मंगोल द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए और एम. अभिराम सिंह ने अध्यक्षता की। द्वितीय सत्र में ए.सी. नेत्रजित, सारोखाइबम गंभिनी और क्षेत्रीमयूम प्रेमचंद्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए और एल. जयचंद्र सिंह ने अध्यक्षता की। वक्ताओं ने मणिपुरी साहित्य के विकास को चिह्नित करते हुए मिणिपुरी साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से बात की।

साहित्य मंच : मीडिया और साहित्य

28 जनवरी 2024, कॉन्फ्रेंस हॉल, त्रिपुरा स्टूडेंट्स हेल्थ होम, अगरतला

(बाएँ से दाएँ) नीलमणि सिंह, के. धीरेंद्र सिंह और एस. उत्तम कुमार सिंह

साहित्य अकादेमी द्वारा *मारुप* साप्ताहिक समाचार पत्र के सहयोग से 28 जनवरी 2024 को कॉन्फ्रेंस हॉल, त्रिपुरा स्टूडेंट्स हेल्थ होम, अगरतला में 'मीडिया और साहित्य' पर साहित्य मंच का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक द्वारा मंच पर स्वागत वक्तव्य दिया गया। उन्होंने श्रोताओं से वक्ताओं का परिचय कराया।

साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक राजेन तोइजाम्बा द्वारा आरंभिक वक्तव्य दिया गया।

मंच में एस. उत्तम कुमार सिंह और के. धीरेंद्र सिंह ने विभिन्न रूपों में एक-दूसरे को प्रभावित करते मीडिया और साहित्य पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने इस विषय पर दिलचस्प केस स्टडी भी प्रस्तुत की।

मंच की अध्यक्षता एम. नीलमणि सिंह ने की। *मारुप* साप्ताहिक समाचार पत्र, अगरतला के संयुक्त संपादक आर.के. तरुणजीत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बाङ्ला लेखक के साथ ग्रामालोक

28 जनवरी 2024, इंद्रपुर, गोबर्द्धनपुर तटीय, पत्थरप्रतिमा, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल

साहित्य अकादेमी द्वारा नवरूपा जोनाकी के सहयोग से 28 जनवरी 2024 को इंद्रपुर, गोबर्द्धनपुर तटीय, पत्थरप्रतिमा, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल में स्थानीय बाङ्ला लेखक के साथ *ग्रामालोक* कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नवरूपा जोनाकी के सचिव चित्तरंजन दास ने इस कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य दिया। इस कार्यक्रम में बाङ्ला कवियों अवरानी बेताल, मालती प्रामाणिक, सुब्रत सुंदर जाना, उत्पल सामंत और अरिजीत बाग द्वारा कविताओं का पाठ किया गया। अजीत कुमार बाग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

ग्रामालोक कार्यक्रम के प्रतिभागी

चकमा कवि सम्मिलन

10 फ़रवरी 2024, एनईसीओएल, अगरतला

चकमा कवि सम्मिलन का दृश्य

साहित्य अकादेमी मौखिक साहित्य के पूर्वोत्तरी केंद्र द्वारा 10 फ़रवरी 2024 को एनईसीओएल, साहित्य अकादेमी, नज़रुल कलाक्षेत्र, बनमालीपुर, अगरतला के सभागार में 'चकमा कवि सम्मिलन' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य एनईसीओएल के निदेशक निर्मल दास द्वारा दिया गया, साथ ही प्रख्यात कवि निरंजन चकमा ने अध्यक्षता की। सम्मिलन में प्रख्यात चकमा कवियों - कुसुम चकमा, मालविका चकमा, सजल विकास चकमा और उत्तरा चकमा ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

परिसंवाद

एलाङ्बम नीलकांत सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

10 फ़रवरी 2024, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी द्वारा सांस्कृतिक मंच, मणिपुर के सहयोग से 10 फ़रवरी 2024 को सीनेट हॉल, पृथ्वी विज्ञान विभाग, एम.यू., कांचीपुर, मणिपुर में एलाङ्बम नीलकांत सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया।

साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक राजेन तोइजाम्बा ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने एलाङ्बम नीलकांत सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षेप में बात की। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे—प्रख्यात मणिपुरी लोककथाकार और विद्वान हुइरेम बिहारी सिंह। उन्होंने एलाङ्बम नीलकांत सिंह के जीवन के महत्त्वपूर्ण चरणों पर बात

की। सांस्कृतिक मंच के अध्यक्ष कोइजाम शांतिबाला देवी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने आधुनिक मणिपुरी कविता में एलाङ्बम नीलकांत सिंह की अग्रणी भूमिका पर बात की। सांस्कृतिक मंच के महासचिव नावोरेम अहांजाव मैतेई ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में के. कोइरेंग, निङोबाम नंदो सिंह और के. मेमतोन देवी ने क्रमश: 'एलाङ्बम नीलकांत सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व', 'एक कवि के रूप में एलाङ्बम नीलकांत सिंह' और 'एक आलोचक के रूप में एलाङ्बम नीलकांत सिंह' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए, साथ ही लोंजियाम जयचंद्र ने अध्यक्षता की।

द्वितीय सत्र में डब्ल्यू. रमेश, टी. कुंजेशर सिंह और एल. आनंद ने क्रमश: 'निबंधकार के रूप में एलाङ्बम नीलकांत सिंह', 'एक यात्रा लेखक के रूप में एलाङ्बम नीलकांत सिंह' और 'एलाङ्बम नीलकांत सिंह की भाषा और शैली' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता थ. रतनकुमार ने की।

जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी : कवि लाइतानथेम राम सिंह

11 फ़रवरी 2024, थौबल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी द्वारा मणिपुर साहित्य समिति, थौबल और कवि लाइतानथेम राम सिंह स्मारक न्यास के सहयोग से कवि लाइतानथेम राम सिंह पर 11 फ़रवरी 2024 को वाईवीयू भवन, थौबल वांगमताबा, थौबल, मणिपुर में जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

जन्मशतवार्षिकी में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक राजेन तोइजाम्बा ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने कवि लाइतानथेम राम सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षेप में बात की।

वहीं उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि मणिपुर संस्कृति विश्वविद्यालय, इंफाल के पुस्तकालयाध्यक्ष थौनावङ्म खोमदोन सिंह ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उन्होंने समकालीन समाज के संदर्भ में कवि लाइतानथेम राम सिंह के लेखन के महत्त्व पर बात की।

विशिष्ट अतिथि लाइतानथेम निंगोल आर. के. ओंगबी मुहिनी देवी ने अपने दिवंगत पिता कवि लाइतानथेम राम सिंह की स्मृति को ताज़ा किया। मणिपुर साहित्य समिति, थौबल के

समारोह में वक्तव्य देते हुए राजेन तोइजाम्बा

अध्यक्ष विंग कमांडर ए. डी. सिंह (सेवानिवृत्त) ने उद्घाटन सत्र के अध्यक्षता की। उद्घाटन सत्र में मणिपुर साहित्य समिति, थौबल के सचिव समोन रघुमणि सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

प्रथम सत्र में हुइरेम बिहारी सिंह की अध्यक्षता में शरतचंद्र लोङ्जोंबा, सनासम नवद्वीप सिंह और इबोसना याङ्बेम द्वारा क्रमश: 'लाइतानथेम राम सिंह एक कवि रूप में', 'लाइतानथेम राम सिंह एक उपन्यासकार के रूप में' और 'लाइतानथेम राम सिंह और उनके समकालीन मणिपुरी लेखक' विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए गए।

द्वितीय सत्र में येङ्खोम इंदिरा देवी की अध्यक्षता में आनंद लोङ्जियाम, सेंगोई सनासम और युमनाम उत्तांबला देवी द्वारा क्रमश: 'लाइतानथेम राम सिंह के लेखन में उनकी भाषा', 'लाइतानथेम राम सिंह एक शिक्षाविद् के रूप में' और 'लाइतानथेम राम सिंह उपन्यासता रोमांटिज्मगी मसक' विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए गए।

मणिपुर साहित्य समिति, थौबल के सदस्य ओ. ब्रजमोहन सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

बाङ्ला लेखकों के साथ ग्रामालोक

11 फ़रवरी 2024, गोविंदपुर, रामनगर, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल

साहित्य अकादेमी द्वारा माटिर गान के सहयोग से 11 फ़रवरी 2024, गोविंदपुर, रामनगर, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल में बाङ्ला लेखकों के साथ *ग्रामालोक* कार्यक्रम का आयोजन किया गया। माटिर गान के सचिव कृष्णा कायल द्वारा कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य दिया गया।

अल्पना मंडल की अध्यक्षता में आलोक मंडल, निशिकांत सामंत, उमा चटर्जी, भीम घोष और सुब्रत मंडल ने अपने हाल के लेखन का पाठ किया। तनुश्री गायेन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मृणाल सेन पर साहित्य मंच

15 फ़रवरी 2024, कोलकाता

(बाएँ से दाएँ) अनिंद्य सेनगुप्ता, सोमेश्वर भौमिक और शिलादित्य सेन

साहित्य अकादेमी ने प्रख्यात पटकथा लेखक, विद्वान और फ़िल्मकार मृणाल सेन पर 15 फ़रवरी 2024 को पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय, 4 डी.एल. ख़ान रोड, कोलकाता के सभागार में *साहित्य मंच* कार्यक्रम का आयोजन किया। इस सम्मिलन में साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने श्रोताओं से वक्ताओं का परिचय कराया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सोमेश्वर भौमिक ने की। श्री सोमेश्वर भौमिक ने एक वक्ता के रूप में मृणाल सेन की जादुई प्रतिभा पर बात की, जो अपनी कला से आकर्षित करके अपने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता था, जिसका असर उनकी फ़िल्मों में भी दिखाई पड़ता है। श्री शिलादित्य सेन ने मृणाल सेन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर बात की। उन्होंने उनकी सिनेमैटोग्राफ़ी और पटकथा के विशिष्ट पहलू पर भी बात की। श्री अनिंद्य सेनगुप्ता ने मृणाल सेन की फ़िल्मों और वर्तमान फ़िल्म निर्माण परिदृश्य की विरासत को जारी रखने की बंगाल की चुनौतियों की प्रासंगिकता पर बात की। साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

मेरे झरोखे से :
जनक झंकार नार्ज़री पर अजीत बोरो का वक्तव्य

16 फ़रवरी 2024, गोसाईगाँव

साहित्य अकादेमी ने आईक्यूएसी, गोसाईगाँव बी.एड. कॉलेज और हैनामुली, गोसाईगाँव बी.एड. कॉलेज के सहयोग से 16 फ़रवरी 2024 को गोसाईगाँव बी.एड. कॉलेज सभागार, गोसाईगाँव, कोकराझार में मेरे झरोखे से कार्यक्रम का आयोजन किया, जहाँ प्रख्यात बोडो विद्वान अजीत बोरो ने प्रतिष्ठित बोडो कलाकार जनक झंकार नार्ज़री के व्यक्तित्व और कृतित्व पर बात की। उन्होंने श्री नार्ज़री के जीवन के महत्त्वपूर्ण चरणों के बारे में और कैसे उनकी रचनाओं ने मूर्तिकला की एक प्रवृत्ति की स्थापना में योगदान दिया, के बारे में विस्तार से बताया।

मेरे झरोखे से कार्यक्रम में अजीत बोरो

बोडो लेखकों के साथ बाल साहिती

16 फ़रवरी 2024, असम

(बाएँ से दाएँ) उखरंग गौरा नार्ज़री, जॉय श्री बोरो, अजित बर', नीलिमा बसुमतारी और जेवोती प्रभा ब्रह्म

साहित्य अकादेमी ने आईक्यूएसी, गोसाईगाँव बी.एड. कॉलेज और हैनामुली, गोसाईगाँव बी.एड. कॉलेज के सहयोग से 16 फ़रवरी 2024 को गोसाईगाँव बी.एड. कॉलेज सभागार, गोसाईगाँव, कोकराझार में बोडो लेखकों के साथ *बाल साहिती* कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी की बोडो परामर्श मंडल की अध्यक्ष जॉय श्री बोरो की अध्यक्षता में गोसाईगाँव बी.एड. कॉलेज की व्याख्याता अलंगबार सोरगियारी द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। कार्यक्रम में उखरंग गौरा नार्ज़री ने एक कहानी प्रस्तुत की। जियोलांग नार्ज़री और नीलिमा बसुमतारी ने कुछ कविताओं का पाठ किया। जेवोती प्रभा ब्रह्म ने दो लोककथाएँ प्रस्तुत कीं। अंत में आईक्यूएसी, गोसाईगाँव बी.एड. कॉलेज की समन्वयक अल्पना सोरेन द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

21 फ़रवरी 2024, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर 21 फ़रवरी 2024 को अपने कोलकाता कार्यालय सभागार में *बहुभाषी कवि सम्मिलन* का आयोजन किया। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया।

कार्यक्रम में प्रख्यात मैथिली कवि विद्यानंद झा की अध्यक्षता में बाङ्ला कवयित्री अदिति बसुरॉय, भोजपुरी कवि जीवन सिंह, अंग्रेज़ी कवि शेखर बनर्जी, हिंदी कवयित्री पूनम सोनछात्रा, नेपाली कवि नारायण प्रसाद होमागाई, ओड़िआ कवयित्री शैबालिनी साहू, संताली कवयित्री छाया मांडी, पंजाबी कवि गुरदीप सिंह संघा और उर्दू कवि अबुज़र हाशमी ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

अध्यक्ष के रूप में विद्यानंद झा ने अपनी

(बाएँ से दाएँ) क्षेत्रबासी नायक, नारायण प्रसाद होमागाई, विद्यानंद झा, पूनम सोनछात्रा और शैबालिनी साहू

कुछ कविताओं का पाठ किया और उन्होंने साहित्य अकादेमी को भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन के लिए उठाए गए कदमों के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कवियों और श्रोताओं से अपील की कि अपनी मातृभाषा के प्रचार के लिए हर किसी को अपनी मातृभाषा में साल में कम से कम एक किताब ज़रूर पढ़नी चाहिए और भेंटस्वरूप देने के उद्देश्य से एक और किताब ख़रीदनी चाहिए।

साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

परिसंवाद

हाशिये के लोग और ओड़िआ साहित्य

24 फ़रवरी 2024, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी ने गवर्नमेंट स्वायत्त कॉलेज, राउरकेला के सहयोग से 24 फ़रवरी 2024 को गवर्नमेंट स्वायत्त कॉलेज, राउरकेला, ओड़िशा में 'हाशिये के लोग और ओड़िआ साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद में साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्र के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। गवर्नमेंट स्वायत्त कॉलेज, राउरकेला के प्राचार्य बिजय कुमार बेहेरा द्वारा आरंभिक वक्तव्य दिया गया। प्रख्यात विद्वान प्रकाशचंद्र पटनायक ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने ओड़िआ साहित्य में हाशिये के लोगों के चित्रण पर संक्षेप में बात की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास ने की। उन्होंने ओड़िआ साहित्य पर आधरित हाशिये के लोगों के कई उदाहरण दिए तथा बलराम दास के लक्ष्मीपुराण और भीमा भोई की स्तुति चिंतामणि

(बाएँ से दाएँ) रजनी किसान, सुषमा मोदी, बिजय कुमार बेहेरा, गौरहरि दास, प्रकाशचंद्र पटनायक और क्षेत्रबासी नायक

के बारे में भी प्रकाश डाला। प्रथम सत्र में करुणाकर पटसानी, पीतांबर तराई और सुषमा मोदी ने ओड़िआ साहित्य में हाशिये के लोगों के चित्रण के विभिन्न रुझानों पर आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ ओड़िआ कवि और आलोचक वासुदेव सुनानी ने की। द्वितीय सत्र में रजनी किसान, रंजन सेठी, संजय कुमार बाग और सुचित्रा महांति ने ओड़िआ साहित्य से गहरे जुड़े हाशिये पर पड़े लोगों के विभिन्न पहलुओं पर आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गोपीनाथ बाग ने की।

परिसंवाद

असमिया नाट्य साहित्य : अतीत, वर्तमान और भविष्य

24 फ़रवरी 2024, असम

साहित्य अकादेमी ने बरभाग महाविद्यालय के सहयोग से 24 फ़रवरी 2024 को बरभाग महाविद्यालय, कलाग, नलबाड़ी, असम में 'असमिया नाट्य साहित्य : अतीत, वर्तमान और भविष्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद में साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया।

साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक दिगंत विश्व शर्मा ने आरंभिक वक्तव्य दिया। परिसंवाद के मुख्य अतिथि असम नाट्य सम्मिलन के अध्यक्ष कुमार दीपक दास थे। बीज वक्तव्य प्रख्यात असमिया लेखक जगदीश पटगिरी द्वारा दिया गया। उन्होंने असमिया नाटक की उत्पत्ति और विकास पर संक्षेप में बात की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बरभाग महाविद्यालय के प्राचार्य बिरिंची चैधुरी ने की। बरभाग महाविद्यालय की एसोसिएट प्रोफ़ेसर अनुपम दत्ता द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

विभा भराली की अध्यक्षता में प्रथम सत्र में अंजन शर्मा, धीरेंद्रचंद्र शर्मा और लीना डेका ने असमिया नाटक के विभिन्न पहलुओं पर आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र में विप्लव डेका और पुलिन कलिता ने असमिया नाटक के विकास पर केंद्रित इसके विशिष्ट पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता दीप्ति फुकन पाटगिरी ने की।

कथासंधि : रंजू हाज़रिका

24 फ़रवरी 2024, बरभाग कॉलेज, असम

साहित्य अकादेमी ने बरभाग कॉलेज के सहयोग से 24 फ़रवरी 2024 को बरभाग कॉलेज, कलाग, नलबाड़ी, असम में प्रख्यात असमिया कथाकार रंजू हाज़रिका के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में श्री हाज़रिका ने अपने जीवन के विभिन्न चरणों और कैसे वे साहित्य में रमे रहे, पर बात की। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन पर भी बात की और अपनी कुछ रचनाओं का पाठ किया। रचना पाठ के बाद उन्होंने श्रोताओं द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब भी दिए।

परिसंवाद

स्वतंत्रता के बाद ओड़िआ भाषा, साहित्य और संस्कृति

25 फ़रवरी 2024, ढेंकानाल, ओड़िशा

(बाएँ से दाएँ) क्षेत्रबासी नायक, अंतर्यामी मिश्र, गौरहरि दास, पुष्पलता रथ और मनोहर सतपथी

साहित्य अकादेमी ने 25 फ़रवरी 2024 को पुराने ज़िला परिषद हॉल, ढेंकानाल, ओड़िशा में 'स्वतंत्रता के बाद ओड़िआ भाषा, साहित्य और संस्कृति' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य अंतर्यामी मिश्र ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने ओड़िआ भाषा, साहित्य और संस्कृति के इतिहास के बारे में बात की। उन्होंने यह भी कहा कि भाषा और साहित्य संस्कृति के बहुत नज़दीक हैं। प्रख्यात ओड़िआ विदुषी पुष्पलता रथ ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने ओड़िआ साहित्य और भाषा में स्वतंत्रता के बाद के काल के रुझान पर संक्षेप में बात की। साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. दास ने स्वतंत्रता के बाद के काल के ओड़िआ साहित्य के विकास पर संक्षेप में चर्चा की। मनोहर सतपथी ने उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रथम सत्र में बिजय कुमार सतपथी की अध्यक्षता में दिनेश दास, गुरुचरण राउतराय तथा जयकृष्ण मिश्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता बिजयानंद सिंह ने की और तपन कुमार सतपथी द्वारा आलेख प्रस्तुत किया गया।

परिसंवाद : काव्यात्मक अंतर्दृष्टि और जीवन

26 फ़रवरी 2024, असम

साहित्य अकादेमी ने रंगपारा कॉलेज, रंगपारा, असम के सहयोग से 26 फ़रवरी 2024 को रंगपारा कॉलेज, रंगपारा, शोणितपुर, असम में 'काव्यात्मक अंतर्दृष्टि और जीवन' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक दिगंत विश्व शर्मा द्वारा आरंभिक वक्तव्य दिया गया। रंगपारा कॉलेज के शासी निकाय के अध्यक्ष चारु सहरिया नाथ कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। रंगपारा कॉलेज के बोडो विभाग के प्रमुख प्रशांत बर' ने उद्घाटन सत्र में धन्यवाद ज्ञापन किया।

(बाएँ से दाएँ) चारु सहरिया नाथ, रंजन कलिता, प्रशांत बर', दिगंत बिस्वा शर्मा

प्रथम सत्र में मौसमी दत्ता, रिंजुमनी नियोग बर' और उपम सैकिया ने काव्यात्मक अंतर्दृष्टि और जीवन के बीच संबंधों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता अनुभव तुलसी ने की।

द्वितीय सत्र में प्रणव कुमार बर्मन की अध्यक्षता में बर्नाली बरगोहाईं, मृदुल हलै और रंजीत गगै ने आलेख पाठ किए।

कविसंधि : बिपुल ज्योति सैकिया

26 फ़रवरी 2024, असम

साहित्य अकादेमी ने रंगपारा कॉलेज के सहयोग से 26 फ़रवरी 2024 को रंगपारा, असम में प्रख्यात असमिया कवि बिपुल ज्योति सैकिया के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम में श्री सैकिया ने अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी, जिसमें उन्होंने अपनी प्रमुख रचनाओं और अपने करियर को प्रभावित करने वाले कारकों का उल्लेख किया। उन्होंने अपनी कई रचनाओं का भी उल्लेख किया और उनका पाठ भी किया।

बोडो लेखकों के साथ ग्रामालोक

3 मार्च 2024, असम

साहित्य अकादेमी ने कुमारिकटा प्राथमिक बीएसएस के सहयोग से 3 मार्च 2024 को लतीबारी पाकरीबारी एम.ई. स्कूल, कुमारिकटा, तामुलपुर में स्थानीय बोडो कवि और कथाकार के साथ 'ग्रामालोक' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत तामुलपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक जोलेन दैमारी ने दीप प्रज्ज्वलित करके की। बीएसएस के पूर्व सचिव राफेल दैमारी ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के सदस्य बरुआकांत ब्रह्म ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कुमारिकटा प्राथमिक बीएसएस के अध्यक्ष सत्यनारायण बसुमतारी ने कार्यक्रम के महत्त्व पर बात की। मिथिंगा राजा बासुमतारी, एरन कोचरी और मिथिंगा बसुमतारी ने अपनी कविताओं का पाठ किया। साधना बोरो ने कहानी और बिठु बोरो ने एकांकी का पाठ किया।

कार्यक्रम में लतीबारी पाकरीबाड़ी सांस्कृतिक समूह ने नृत्य प्रस्तुत किया। अलैयारन बोरो थुनलैरी अफ़ाद के अध्यक्ष सैलेन बसुमतारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया।

ओड़िआ लेखकों के साथ ग्रामालोक

5 मार्च 2024, कोरापुट

साहित्य अकादेमी ने कोरापुट साहित्य परिवार के सहयोग से 5 मार्च 2024 को के. नुआगुडा, पोडागडा, कोरापुट, ओड़िशा में स्थानीय ओड़िआ कवियों और कथाकारों के साथ 'ग्रामालोक' कार्यक्रम का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के सदस्य प्रीतिधर समल ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में रवि सतपथी, माधुरी पंडा, चक्रपाणि परीचा और बिजय कुमार प्रधान ने श्रोताओं के सामने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतिष्ठित लेखक नारायण पंडा ने की। मुंदर यू.पी. स्कूल के प्रधानाध्यापक रमेशचंद्र साहू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

समारोह के प्रतिभागी

नारी चेतना कार्यक्रम

बोडो लेखिकाओं के साथ

8 मार्च 2024, कोकराझार, असम

समारोह के प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी ने बोडो लेखिक संघ के सहयोग से 8 मार्च 2024 को प्रख्यात बोडो लेखिकाओं के साथ राष्ट्रीय बोडोलॉजी संस्थान, कोकराझार, असम में 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल की सदस्य जयश्री बोरो ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में अंजलि ब्रह्म, कौशल्या ब्रह्म, भनिता बसुमतारी, वर्जिन जेकोबा मुसाहारी ने श्रोताओं के सामने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता बोडो लेखिका संघ की अध्यक्ष अंजलि बसुमतारी ने की।

अस्मिता कार्यक्रम

बाङ्ला लेखिकाओं के साथ

8 मार्च 2024, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने एपार ओपार उत्सव समिति के सहयोग से 8 मार्च 2024 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बाङ्ला लेखिकाओं के साथ साहित्य अकादेमी कार्यालय सभागार, कोलकाता में 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में दलिया बसु साहा, दीपशिखा चक्रवर्ती, इंद्राणी विश्वास मंडल, झरना भट्टाचार्य, मधुपर्णा बसु, महुआ दास, सप्तर्षि भौमिक, शाश्वती भट्टाचार्य, शकुंतला सान्याल, तिलोत्तमा बसु, उपासना सरकार ने अपनी कविताओं का पाठ किया। नंदिनी भट्टाचार्य और सुदीप्ता रायचौधुरी मुखर्जी ने इस अवसर पर आलेख प्रस्तुत किए। एपार ओपार उत्सव समिति की अध्यक्ष पिनाकी रॉय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

समारोह के प्रतिभागी

आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्य के साथ साहित्य मंच

14 मार्च 2024, कोलकाता

शुन्टेंग हुन का परिचय कराते हुए क्षेत्रबासी नायक

साहित्य अकादेमी ने आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्य प्रख्यात कंबोडियन विद्वान श्री शुन्टेंग हुन के साथ 14 मार्च 2024 को क्षेत्रीय कार्यालय सभागार, कोलकाता में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। उन्होंने आमंत्रित अतिथि प्रो. हुन का परिचय श्रोताओं से कराया। प्रो. हुन ने 'भीमपुरा और बट्टामबांग : कंबोडिया में ऐतिहासिक स्थलनाम और महाभारत मिथक का विकास' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने कंबोडिया में *महाभारत* के साक्ष्य बट्टामबांग प्रांत, भीमपुरा के स्थलनाम और आधुनिक समय में कंबोडिया में महाभारत के बारे विस्तार से चर्चा की। प्रो. हुन ने कहा कि छठी-सातवीं शताब्दी के शिलालेख में मंदिर को *महाभारत* के दान का उल्लेख है। कंबोडिया में कई मंदिर हैं जो *महाभारत* के दृश्यों को दर्शाते हैं। कंबोडिया में महाभारत के कुछ तत्त्व समय के साथ लोककथाओं में बदल गए हैं। फ़िलहाल कंबोडिया *महाभारत* को समझने और उससे सीखने के प्रयास कर रहा है। कंबोडिया में *महाभारत* को विभिन्न कलात्मक और सांस्कृतिक कार्यों में शामिल करने और उसकी खोजबीन में रुचि बढ़ रही है। उन्होंने यह भी कहा कि कंबोडिया और भारत को कंबोडिया में महाभारत की धरोहर से संबंधित सहयोग को मज़बूत करना चाहिए। इस सहयोगात्मक प्रयास में व्यापक अनुसंधान, संरक्षण, और महाभारत का खमेर भाषा में अनुवाद जैसे विभिन्न पहलू शामिल हो सकते हैं। ऐसा करके हम इस शानदार सांस्कृतिक धरोहर को गहनता से समझ सकते हैं और इसकी प्रसिद्धि को बढ़ावा दे सकते हैं। अंत में प्रो. हुन ने श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

21 मार्च 2024, कोलकाता

(बाएँ से दाएँ) प्रभात पांडेय, निशि पुलुगुर्था, रूपेश टेओथ और राहुल पुरकायस्थ

साहित्य अकादेमी ने विश्व कविता दिवस के अवसर पर 21 मार्च 2024 को साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के अपने कार्यालय सभागार में बहुभाषी कवि सम्मिलन का आयोजन किया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी, कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। प्रतिष्ठित हिंदी कवि प्रभात पांडेय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने कविता के महत्त्व और सौंदर्य पर प्रकाश डालने के साथ-साथ हिंदी में अपनी कविताओं का पाठ भी किया। बाङ्ला कवि राहुल पुरकायस्थ ने अपनी लंबी कविता 'जे डिगे गृहेर पथ' का पाठ किया। अंग्रेज़ी कवि निशि पुलुगुर्था ने 'जस्ट ए फ़्यू ब्रिक्स रिमेन', 'द लिंगरिंग मोमेंट्स', 'डे वन', 'द एम्प्टी हाउस एंड सम स्टील ओवर द वाटर' शीर्षक कविताओं का पाठ किया। युवा मैथिली कवि रूपेश त्योंथ ने 'सीता-सुविता', 'इमोजी केर एही जुग में' और 'किरन सुतले रही गेल' कविताओं का पाठ किया। अंत में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रबासी नायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मेरे झरोखे से : नोंगमाइथेम तोम्बी सिंह का राजकुमार मधुबीर सिंह पर वक्तव्य

30 मार्च 2024, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी ने नाहरोल साहित्य प्रेमी समिति के सहयोग से 30 मार्च 2024 को इंफ़ाल, मणिपुर में 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में नोंगमाइथेम तोम्बी सिंह ने राजकुमार मधुबीर सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर बात की। उन्होंने उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं और उनके लेखन को प्रभावित करने वाले कारकों पर बात की। उन्होंने उनकी प्रमुख रचनाओं का भी उल्लेख किया।

मुंबई

विद्याधर गोखले : व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषय पर परिसंवाद

4 जनवरी 2024, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई एवं मराठी विभाग, एस.एन.डी.टी. वीमेन्स यूनिवर्सिटी के संयुक्त तत्वावधान में 'विद्याधर गोखले : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन 4 जनवरी 2024 को मुंबई में किया गया। डॉ. ओम प्रकाश नागर, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। अकादेमी के सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. नरेंद्र पाठक ने अपने आरंभिक वक्तव्य में विद्याधर गोखले को गुणवान शिक्षक के रूप में याद किया तथा कहा कि उनका बहुमुखी व्यक्तित्व आने वाली पीढ़ीयों के लिए प्रेरणास्रोत का काम करेगी। श्री अरुण नलवाडे ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और कहा कि गोखले के द्वारा संगीत नाटकों एवं उनके विभिन्न प्रसंगों जैसे ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सामयिक मुद्दों को पुन:जीवित करने के कार्य को समकालीन साहित्य द्वारा अपनाया गया है। सुश्री सुभदा दादरकर ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। एस.एन.डी.टी. वीमेन्स यूनिवर्सिटी की कुलपति डॉ. उज्ज्वला चक्रदेव ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. नरेंद्र पाठक

श्री अभिराम भडकामकर ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की जिसमें एस.एन. पंडित ने ''विद्याधर गोखले की नाट्य दृष्टि'' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया जबकि श्री प्रमोद बापट ने ''विद्याधर गोखले के नाटक एवं संगीत'' विषय पर वक्तव्य दिया। परिसंवाद के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद के सदस्य नरेंद्र पाठक ने की। इस सत्र में प्रथम आलेख श्रीराम शिधाये ने ''विद्याधर गोखले और पत्रकारिता'' पर, जबकि द्वितीय आलेख मीनाक्षी बरहटे ने ''विद्याधरा गोखले की कथात्मक साहित्य'' पर प्रस्तुत किया। सुनील रामटेके, विभागाध्यक्ष, मैथिली विभाग, एस.एन.डी.टी. यूनिवर्सिटी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। स्नातकोत्तर विभाग के संगीत निकाय ने विद्याधर गोखले के कुछ गीतों की प्रस्तुति दी।

वामन सरदेसाई का व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषय पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

6 जनवरी 2024, पणजी, गोवा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई एवं भारतीय भाषा विभाग, धेमपे कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स, साईंस तथा अखिल भारतीय कोंकणी परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में 6 जनवरी 2024 को धेमपे कॉलेज, पणजी, गोवा में 'वामन सरदेसाई का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन किया गया। डॉ. ओम प्रकाश नागर, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। वृंदा बोरकर, प्राचार्य, धेमपे कॉलेज ने अपने आरंभिक वक्तव्य में वामन सरदेसाई के लेखन

बीज-वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए श्री उदय भेम्ब्रे

पर प्रकाश डाला। उद्घाटन वक्तव्य लीबिया लोबो सरदेसाई ने दिया जबकि उदय भेम्ब्रे ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रतिष्ठित लेखक तथा पत्रकार संदेश प्रभूदेसाई तथा प्रबंधक, धेम्पे चैरिटीज़ ट्रस्ट राजेश भाटीकर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मेल्विन रॉडरिज़, संयोजक, कोंकणी परामर्श मंडल ने की।

प्रख्यात कोंकणी लेखक नारायण देसाई ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। संजीव सरदेसाई ने ''वामन सरदेसाई और गोवा मुक्ति आंदोलन में उनके योगदान'', जबकि प्रवीन सबनिस ने ''वामन सरदेसाई का मराठी साहित्य'' विषय पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद के द्वितीय सत्र में अशोक गाँवकर ने ''अभिजीत तथा वज़रांची खोन्न की पुस्तकों पर आलोचना'' विषय पर चर्चा की। चर्चा के बाद शकुंतला भारने ने वामन सरदेसाई के गीतों की प्रस्तुति की। सत्र की अध्यक्षता पूर्णानंद चारी द्वारा की गई। कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य अंजु साखरडंडे ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

पांडुरंग भांगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषय पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

7 जनवरी 2024, पणजी, गोवा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई एवं भारतीय भाषा विभाग, धेम्पे कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स, साईंस तथा अखिल भारतीय कोंकणी परिषद् एवं गोवा कोंकणी अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में ''पांडुरंग भांगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' विषय पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 7 जनवरी 2024 को धेम्पे कॉलेज, पणजी, गोवा में किया गया। डॉ. ओम प्रकाश नागर, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य शशिकांत पुनाजी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। गोवा कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष अरुण

बीज-वक्तव्य देते हुए माधव बोरकर

साखरडंडे ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा माधव बोरकर ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय कोंकणी परिषद के अध्यक्ष चेतन आचार्य तथा प्राचार्य धेम्पे कॉलेज ने

विशिष्ट अतिथि के रूप में सहभागिता की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मेल्विन रॉड्रिगस, संयोजक, कोंकणी परामर्श मंडल ने की।

प्रख्यात कोंकणी लेखक कमलाकर म्हालसी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। ''पांडुरंग भांगी और कविता में उनका योगदान'' विषय पर परेश एन. कामत ने आलेख प्रस्तुत किया। दामोदर घनेकर ने ''पांडुरंग भांगी कोश निर्माता के रूप में'' विषय पर अपना आलेख पढ़ा।

द्वितीय सत्र में वसंत भगवंत ने ''अनूदित नाटक : पांडुरंग भांगी का योगदान'' शीर्षक से चर्चा की तथा शैलेंद्र मेहता ने ''पांडुरंग भांगी की गद्य रचनाएँ'' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता तुकाराम शेठ ने की। समापन सत्र में कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य जिल्लू गाँवकर ने कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ पांडुरंग भांगी की कविताओं का पाठ किया। अंत में अखिल भारतीय कोंकणी परिषद के सचिव गौरीश वर्नेकर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में चर्चा करती हुईं नूतन साखरदांडे

नूतन साखरदांडे के साथ कविसंधि

14 जनवरी 2024, पुत्तूर (कर्नाटक)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई एवं कविता ट्रस्ट, मंगलोर के संयुक्त तत्वावधान में प्रख्यात कोंकणी कवयित्री नूतन साखरदांडे के साथ *कविसंधि* कार्यक्रम का आयोजन 14 जनवरी 2024 को कॉलेज परिसर, सेंट फिलोमेना कॉलेज, पुत्तूर (कर्नाटक) में किया गया। मेल्विन रोड्रिग्स, संयोजक, कोंकणी परामर्श मंडल ने प्रतिभागी कवयित्री एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी की गतिविधियों के बारे में विस्तार से चर्चा की। नूतन साखरदांडे ने आरंभ में अपनी कुछ कविताओं का पाठ किया तथा अपनी साहित्यिक यात्रा एवं लेखन पर चर्चा की। उन्होंने विद्वत्तापूर्ण श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर दिए।

सिंधी अदबी संगत के साथ साहित्य मंच

21 जनवरी 2024, इंदौर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई और सिंधी अदबी संगत, इंदौर के संयुक्त तत्वावधान में सिंधी साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन 21 जनवरी 2024 को कंधकोट भवन, इंदौर में किया गया। सिंधी परामर्श मंडल की सदस्य रश्मि रमाणी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने भारतीय भाषाओं के विकास के क्षेत्र में साहित्य अकादेमी द्वारा किए जा रहे सराहनीय कार्यों का विस्तृत ब्यौरा भी प्रस्तुत किया। सिंधी अदबी संगत की ओर से चुनीलाल वाधवानी ने श्रोताओं एवं आमंत्रित वक्ताओं का स्वागत किया। मंच दो भागों में विभाजित था, जिसके पहले भाग में कविताओं का पाठ किया गया जिसमें चुनीलाल वाधवानी, किरण परयानी एवं विनिता मोटलाणी ने भाग लिया। कवियों ने विभाजन एवं सिंधी सोसायटी की पीड़ा पर केंद्रित कविताएँ प्रस्तुत कीं। द्वितीय सत्र में अशोक मानवाणी ने अपनी कहानी का पाठ किया।

कार्यक्रम के प्रतिभागी

दलित चेतना, गुजराती

24 जनवरी 2024, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई तथा ओम कम्यूनिटी के संयुक्त तत्वावधान में 24 जनवरी 2024 को गोवर्धन स्मृति सभागार, गुजराती साहित्य परिषद, अहमदाबाद में *दलित चेतना* कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. ओम प्रकाश नागर, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। प्रख्यात गुजराती कवि श्री प्रवीन गधवी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। आत्माराम दोदिया ने जनजातीय साहित्य एवं संस्कृति पर आधारित कविताओं का पाठ किया जिसमें डॉ. अंबेडकर के संस्मरण शामिल थे। अरविंद वेगाडा, साहिल परमार ने जनजातीय लोक कथाओं पर आधारित अपनी ग़ज़लें प्रस्तुत कीं जबकि पुरुषोत्तम जादव एवं रमन वाघेला ने अपनी कविताओं का पाठ किया। मनीष पाठक, अध्यक्ष, ओम कम्यूनिकेशन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अपनी कविताओं का पाठ करते हुए साहिल परमार

'गुजराती साहित्य में शोध' विषय पर परिसंवाद

25 जनवरी 2024, पिलवई (गुजरात)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई तथा गुजराती साहित्य अकादमी, गाँधीनगर, एवं कला, विज्ञान, वाणिज्य महाविद्यालय, पिलवई के संयुक्त तत्वावधान में ''गुजराती साहित्य में शोध'' विषय पर 25 जनवरी 2024 को कॉलेज सभागार, पिलवई, ज़िला मेहसाना में परिसंवाद का आयोजन किया गया।

डॉ. ओम प्रकाश नागर, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। संजय शाह, कॉलेज प्राचार्य, ने आरंभिक वक्तव्य दिए।

उद्घाटन सत्र

परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए प्रसाद ब्रह्मभट ने कहा कि गुजराती साहित्य के हवाले से गहन शोध की आवश्यकता है। बलवंत जानी ने बीज-वक्तव्य दिया और कहा कि समकालीन शोधकर्ताओं को अपने पूर्ववर्त्तियों द्वारा तय नियमों का पालन करना चाहिए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता हसित मेहता ने की जबकि प्रथम आलेख दर्शना ढोलकिया ने ''मध्यकालीन गुजराती साहित्य में शोध'' तथा ''तुलनात्मक एवं अंतरविधायी संशोधन' विषय पर द्वितीय आलेख नरेश शुक्ल द्वारा प्रस्तुत किया गया।

भोजन के पश्चात् आयोजित द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अमृत पटेल ने की तथा ''लोक कथाओं के शोध में समस्याएँ एवं उनका समाधान'' विषय पर अपने विद्वत्तापूर्ण विचार व्यक्त किए जबकि प्रभुदास पटेल ने ''आदिवासी साहित्य में शोध'' विषय पर आलेख पाठ किया।

कॉलेज के गुजराती विभागाध्यक्ष यशोधर एच. रावल द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

कलापी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषय पर परिसंवाद

29 जनवरी 2024, राजकोट

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा गुजराती भाषा साहित्य भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट के सहयोग से 29 जनवरी 2024 को ''कलापी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' विषय पर परिसंवाद का आयोजन गुजराती भाषा साहित्य भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट के डोलरराय मांकड़ सभागार में किया गया। डॉ. ओम प्रकाश नागर, प्रभारी-अधिकारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत की। बीज-वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद के सदस्य जे.एम. चंद्रवाड़िया ने कलापी को ऐसे कवि के रूप में वर्णित किया, जिनकी कविताओं में उनके व्यक्तिगत दु:ख झलकते हैं। गुजराती भाषा साहित्य भवन के अध्यक्ष मनोज जोशी ने उद्घाटन सत्र की

(बाएँ से दाएँ) ओम प्रकाश नागर, मनोज जोशी तथा जे.एम. चंद्रवाड़िया

अध्यक्षता की।

विविध विषयों पर आधारित सत्र की अध्यक्षता जे.एम. चंद्रवाड़िया ने की। इस सत्र में महेंद्रसिंह परमार ने ''कश्मीर यात्रा वृत्तांत'' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि ज्वलंत छाया ने ''कलापी के पत्र'' पर चर्चा की। तीसरा आलेख राजू ज्ञानिक ने ''कलापी की कविता और प्रस्तुति'' पर, तथा प्रेमल ज्ञानिक ने ''कलापी के साहित्य में संवाद लेखन'' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

बरकत विराणी बेफाम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषय पर परिसंवाद

30 जनवरी 2024, राजकोट

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा गुजरात साहित्य अकादमी तथा गुजराती भाषा साहित्य भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट के सहयोग से 30 जनवरी 2024 को ''बरकत विराणी बेफाम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' विषय पर परिसंवाद का आयोजन गुजराती भाषा साहित्य भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट के डोलरराय मांकड़ सभागार में किया गया। डॉ. ओम प्रकाश नागर, प्रभारी-अधिकारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने उपस्थित विद्वानों और श्रोताओं का स्वागत किया। उद्घाटन वक्तव्य साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य

उद्घाटन वक्तव्य देते हुईं नीलांबरी दवे, कुलपति, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय

जे.एम. चंद्रवाड़िया ने प्रस्तुत किया। सौराष्ट्र विश्वविद्यालय की कुलपति नीलांबरी दवे ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि ''कला और साहित्य जीवन का आधार हैं। साहित्य व्यक्ति की संवेदनशीलता को जागृत करता है। आज के समय में, चाहे कोई भी शक्ति हो, साहित्य ही हमें जीवित रखता है।'' वीरु पुरोहित ने बीज-वक्तव्य में कहा कि ''बेफाम का व्यापक कार्य ग़ज़लों में था लेकिन उन्होंने नाटक और फ़िल्मी गीत भी लिखे। उनके द्वारा लिखे गए गीत आज भी गुजराती लोगों के मन में गूँजते हैं। उनकी रचनाओं की सरलता उनकी मुख्य विशेषता है। बफाम की ग़ज़लों में सरलता और जागरूकता है। गहराई उनकी ग़ज़लों का आकर्षण है।'' धन्यवाद ज्ञापन दीपक पटेल, प्रोफ़ेसर, गुजराती भाषा साहित्य भवन, ने किया। विभिन्न विषयों पर आधारित सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य हसित मेहता ने की। एस.एस. राही ने ''बरकत विराणी की ग़ज़लों में तुकांत अवधारणा'' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। संजू वाला ने ''बरकत विराणी की ग़ज़लों में काव्य तत्व'' पर, मनोज जोशी ने ''बरकत विराणी की ग़ज़लों में आध्यात्मिकता'' विषय पर अपने विचार रखे, और रमेश मेहता ने ''बरकत विराणी की ग़ज़लों में चिंतन'' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

शाह जो रिसालो पर परिसंवाद

10 फ़रवरी 2024, आदिपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई और भारतीय सिंधोलॉजी संस्थान, आदिपुर के सहयोग से ''शाह जो रिसालो'' पर परिसंवाद का आयोजन 'शाह जो रिसालो' के पहले संस्करण के 1923 में प्रकाशन के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में किया गया। यह परिसंवाद भारतीय सिंधोलॉजी संस्थान, आदिपुर के ईश्वरजी जीवत बक्सानी हॉल में संपन्न हुआ।

अपने आरंभिक वक्तव्य में, सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक मोहन हिमथाणी ने होटचंद गुरबखशाणी द्वारा संपादित इस पुस्तक के प्रकाशन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक सिंधी समुदाय की आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन के आवश्यक पहलुओं को दर्शाती है और सिंधी संस्कृति को उन्नत बनाने के लिए उत्कृष्ट सामग्री प्रदान करती है। प्रसिद्ध सिंधी लेखिका रेणु हिंगोराणी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि यह पुस्तक ज्ञान का ख़ज़ाना है। प्रतिष्ठित सिंधी विद्वान साहिब बिजाणी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने दर्शकों को गुरबख्शाणी की जीवन यात्रा से अवगत कराया और 'शाह जो रिसालो' में संग्रहीत सिंधी साहित्य के सही उच्चारण पर प्रकाश डाला।

मोहन हिमथाणी अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार कमला गोकलाणी ने की। विम्मी सदरंगानी ने अपने आलेख ''होटचंद गुरबख्शाणी : शोधकर्ता व आलोचक : मुकद्दम-ए-लतीफी' के माध्यम से शाह लतीफ के जीवन को उद्धृत किया। कलाधर मुतवा ने अपने आलेख ''रिसालो, शाह लतीफ़ की बोली और कच्छ से संबंध'' प्रस्तुत करते हुए श्रोताओं को शाह लतीफ़ द्वारा लखपत गुरुद्वारा, नालिया और कोटेश्वर की यात्रा और कच्छी-सिंधी संस्कृति पर उनकी रचनाओं से अवगत कराया। युवा सिंधी लेखक जयेश शर्मा ने अपना आलेख ''शाह की शायरी और वर्तमान परिप्रेक्ष्य'' के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि शाह की अधिकांश कविताओं ने युवा पीढ़ी की जीवनशैली को प्रभावित किया। शाह ने विभिन्न स्थानों की परंपराओं के अनुसार विशाल मात्रा में कविताएँ रचीं।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता साहिब बिजाणी ने की। कमला गोकलाणी ने अपने आलेख ''रिसालो - शोध और आलोचना'' पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि ''रिसालो'' शाह लतीफ़ की मूल और प्रामाणिक शायरियों को

उजागर करता है और इसके सभी शब्दों के संभावित अर्थ प्रदान करता है। एक अन्य आलेख ''शाह की सुरमियों में नाट्य तत्व'' में जेठो लालवाणी ने बताया कि शाह द्वारा लिखे गए नाटकों की पटकथाएँ अत्यंत कल्पनाशील हैं। शाह के नाटक भावनाओं, जुनून, और संवेदनाओं से भरपूर हैं। इनमें से कुछ नाटक मधुर गीतों, नृत्यों और करुणामय कहानियों से परिपूर्ण हैं। परिसंवाद में आभासी मंच से जुड़ी प्रसिद्ध सिंधी अनुवादक रीता कोठारी ने ''रिसालो, हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद'' पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने शाह की कुछ कविताओं के हिंदी अनुवाद का पाठ भी किया। अंतिम आलेख वरिष्ठ सिंधी गायक दुष्यंत आहूजा ने ''शाह के कलाम में संगीत तत्व'' विषय पर प्रस्तुत किया तथा दर्शकों को शाह के प्रसिद्ध क़लाम सुनाकर मंत्रमुग्ध कर दिया।

अंत में मोहन हिमथाणी ने सभी प्रतिभागियों, विद्वानों, बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों और अन्य श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया।

कथासंधि

11 फ़रवरी 2024, मैसूर

वल्ली वाग्गा अपनी कहानियाँ प्रस्तुत करते हुए

साहित्य अकादेमी द्वारा कोंकणी क्रिश्चियन एसोसिएशन, मैसूर के सहयोग से रविवार, 11 फ़रवरी 2024 को विजयनगर के कोंकण भवन में ''कथासंधि'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कोंकणी के वरिष्ठ लेखक वैली वैग्गा (वैलेरियन डिसूज़ा) को आमंत्रित किया गया।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक मेल्विन रोड्रिगस ने साहित्य अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने वैली वैग्गा द्वारा अपने लेखन के माध्यम से कोंकणी संस्कृति को समृद्ध बनाने के योगदान की प्रशंसा की। कार्यक्रम में वैली वैग्गा ने अपनी सबसे श्रेष्ठ कहानियों में से एक का पाठ किया तथा लेखक और कवि के रूप में अपनी लेखन यात्रा पर बात की। उन्होंने कहा कि चूँकि वे किया उत्साही पाठक थे, इसलिए उनके लिए कहानियाँ और कविताएँ लिखना बहुत आसान था। जॉन विलियम डिसूज़ा ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। जॉयस सेक्वेरा ने अतिथि एवं श्रोताओं का स्वागत किया। उपाध्यक्ष मीना डाइस ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन विंसेंट डिसूज़ा ने किया।

लुईस मासकारेनहास पर साहित्य मंच

16 फ़रवरी 2024, मंगलूरु

साहित्य अकादेमी द्वारा कोंकणी इंस्टीट्यूट, सेंट एलॉयसियस (मानद विश्वविद्यालय) के सहयोग से 16 फ़रवरी 2024 को मंगलूरु के एलसीआरआई ब्लॉक स्थित रॉबर्ट स्कावयर हॉल में कोंकणी कवि लुइस मास्कारेनहास पर *साहित्य मंच* कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सेंट एलॉयसियस के कुलसचिव और परीक्षा नियंत्रक, एल्विन डी'सा ने आगंतुकों का स्वागत किया तथा साहित्य मंच के प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी की कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य हेनरी मेंडोंसा ने अपने आरंभिक वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के उद्देश्यों और लक्ष्यों को विस्तार से समझाया।

कार्यक्रम के दौरान लुइस मास्कारेनहास के जीवन और साहित्यिक कृतियों पर 4 आलेख प्रस्तुत किए गए। प्रख्यात लेखक डॉल्फी कासिया ने ''लुइस मास्कारेनहास का जीवन और कृतियाँ'' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। मेल्विन रॉड्रिग्स ने ''लुइस मास्कारेनहास की कविता में छंद'' पर चर्चा की। फ़ादर फ्रांसिस रोड्रिगस ने ''लुइस मास्कारेनहास संपादक के

कार्यक्रम के प्रतिभगी

रूप में'' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया और फ़ादर एल्विन सेराव ने ''लुइस मास्कारेनहास नाटककार के रूप में'' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। रेव. डॉ. मेल्विन सनी पिंटो ने आलेख प्रस्तुतियों का संचालन किया।

कार्यक्रम का संचालन मर्विन सेक्वेरा ने किया तथा आलेख प्रस्तुतियों का संयोजन डेलविटा वेगास ने किया। धन्यवाद ज्ञापन जोआकिम पिंटो ने प्रस्तुत किया।

बहुभाषी कवि सम्मिलन

21 फ़रवरी 2024, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने 21 फ़रवरी 2024 को 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के अवसर पर मुंबई स्थित अपने भूतल सभागार में *बहुभाषी कवि सम्मिलन* का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी भाषाओं के कवियों को अपने काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. ओम प्रकाश नागर, प्रभारी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने आमंत्रित कवियों और श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने मातृभाषा दिवस के महत्त्व पर चर्चा की और बताया कि यह मातृभाषा को संरक्षित रखने में किस प्रकार सहायक है। हितेन आनंदपारा, गुजराती कवि और गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य ने अपनी कुछ व्यंग्यात्मक कविताएँ गुजराती में प्रस्तुत कीं और फिर उनका हिंदी में अनुवाद भी किया। कोंकणी कवि, नेरी मेल्विन नजरथ ने अपनी कविताओं का कोंकणी पाठ किया और उनके अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किए। प्रख्यात मराठी कवि निर्मोही फड़के ने अपनी प्रतिनिधि कविताएँ मराठी में और कुछ कविताएँ हिंदी अनुवाद में सुनाईं। युवा सिंधी कवि हितेश पेसवाणी ने अपनी कविताएँ सिंधी और हिंदी में प्रस्तुत कीं। कवियों ने श्रोताओं के साथ अपनी साहित्यिक यात्रा भी साझा की। इस कार्यक्रम को काव्य प्रेमियों और मीडिया द्वारा अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।

अपनी कविताओं का पाठ करते हुए हितेन आनंदपारा

मुंबई

स्वतंत्रता संग्राम और साहित्य : पश्चिम क्षेत्रीय भाषाएँ विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

23 फ़रवरी 2024, तेलिएगाव, गोवा

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. भाज़ेश झा

साहित्य अकादेमी द्वारा कोंकणी विभाग, शेनोई गोएम्बाब स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेज एंड लिटरेचर, गोवा विश्वविद्यालय और अखिल भारतीय कोंकणी परिषद के सहयोग से 23 फ़रवरी 2024 को ''स्वतंत्रता संग्राम और साहित्य : पश्चिम क्षेत्रीय भाषाएँ (गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी)'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन सभागार, प्रशासनिक भवन, गोवा विश्वविद्यालय, तेलिएगाव, गोवा में किया गया। डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने अपने भाषण में किसी भी भाषा के इतिहास और संस्कृति को संरक्षित करने में साहित्य की भूमिका को दर्शाया। इसके साथ ही उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में पश्चिम क्षेत्रीय भाषाओं के योगदान पर भी बल दिया। आरंभिक वक्तव्य हनुमंत चोपड़ेकर, निदेशक, कोंकणी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय प्रस्तुत किया गया। उन्होंने संगोष्ठी के विषय पर संक्षिप्त जानकारी दी और अतिथियों का परिचय कराया। संगोष्ठी का उद्घाटन माननीय हरिलाल बी. मेनन, कुलपति, गोवा विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि गोवा के इतिहास के अभिलेखों को सशक्त बनाना चाहिए। नई पीढ़ी को गोवा के 450 वर्षों के स्वतंत्रता संघर्ष से परिचित होना चाहिए। उन्हें बकीबाब बोरकर, मनोहरराई सरदेसाई जैसे लेखकों के साहित्य के माध्यम से देशभक्ति को विकसित करना चाहिए। बीज-वक्तव्य प्रकाश वाजरीकर, प्रोफ़ेसर, कोंकणी विभाग, गवर्नमेंट कॉलेज, मार्सल-गोवा ने दिया जिसमें उन्होंने गोवा के स्वतंत्रता संग्राम को विशिष्ट बताया और इसे विस्तार से लिखने की आवश्यकता पर बल दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता भाज़ेश झा, संयोजक, पश्चिमी क्षेत्रीय परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने की। उन्होंने महात्मा गाँधी को याद किया और *रामचरितमानस* तथा अन्य साहित्य से स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्राप्त प्रेरणा का वर्णन किया। धन्यवाद ज्ञापन मेल्विन रोड्रिगस, संयोजक, कोंकणी परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने किया।

प्रथम सत्र का विषय था ''कोंकणी साहित्य में गोवा के स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिबिंब'', जिसकी अध्यक्षता हनुमंत चोपड़ेकर ने की। इस सत्र में राजय पवार ने ''कोंकणी कविता में गोवा के स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिबिंब'' पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रकाश पर्येंकार ने ''कोंकणी गद्य साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिबिंब'' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि युवा कोंकणी लेखक दीपराज सतार्डेकर ने ''कोंकणी नाटक में गोवा के स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिबिंब'' पर अपने विचार रखे।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता नारायण देसाई ने की, जो ''गुजराती, मराठी और सिंधी साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिबिंब'' पर आधारित था। इस सत्र में प्रशांत पटेल ने ''गुजराती साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिबिंब'' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया, जबकि विनायक बापट ने ''मराठी साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिबिंब'' पर विस्तृत रूप से चर्चा की। कलाधर मुत्वा ने ''सिंधी साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिबिंब'' पर अपने विचार व्यक्त किए।

धन्यवाद ज्ञापन चेतन आचार्य, अध्यक्ष, अखिल भारतीय कोंकणी परिषद ने किया।

शुन्टेंग हुन द्वारा व्याख्यान

15 मार्च 2024, मुंबई

श्री शुन्टेंग हुन

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने 15 मार्च 2024 को अपने भूतल स्थित सभागार, मुंबई में साहित्य अकादेमी के डॉ. आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्य कंबोडियाई लेखक शुन्टेंग हुन के व्याख्यान का आयोजन किया गया। डॉ. ओम प्रकाश नागर, प्रभारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने अतिथि और श्रोताओं का स्वागत किया। हुन ने "खमेर लिपियों का विकास" विषय पर अपने व्याख्यान को एक प्रभावी स्लाइड शो के माध्यम से विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि "लिखित खमेर का इतिहास एक हज़ार वर्षों से भी अधिक पुराना है। इसकी उत्पत्ति सातवीं शताब्दी में हुई, जब पत्थर और धातु पर शिलालेख पहली बार उस लिपि में अंकित किए गए थे, जो आधुनिक खमेर भाषा में विकसित हुई। इस लिपि पर विभिन्न भारतीय लिपियों का प्रभाव था, विशेष रूप से पलावा लिपि। समय के साथ, खमेर वर्णमाला में कई परिवर्तन हुए, जो कंबोडिया के बदलते समाजिक राजनीतिक परिदृश्य और पड़ोसी संस्कृतियों के साथ इसके अंत:क्रियाओं के अनुरूप थी। मों खमेर भाषाओं के सदस्य के रूप में, यह दक्षिण-पूर्व एशिया के अपने पड़ोसी देशों थाईलैंड और म्यांमार की भाषाओं से घनिष्ठ संबंध रखती है। लिपि के विकास को व्यापक रूप से तीन अवधियों में विभाजित किया जा सकता है। खमेर लेखन बौद्ध धर्म से गहरे जुड़ाव रखते हैं, जो कंबोडिया का प्रमुख धर्म है। अंगकोर वाट जैसे मंदिर धार्मिक उपदेशों, कहानियों और समर्पणों को व्यक्त करने वाले शिलालेखों से अलंकृत हैं। इस लिपि ने कंबोडिया की साहित्यिक धरोहर को संरक्षित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महाकाव्य, लोककथाएँ और ऐतिहासिक विवरण पीढ़ी दर पीढ़ी मों खमेर भाषा के लिखित रूप में प्रेषित किए गए हैं।''

लेखक से भेंट

21 मार्च 2024, गोवा

श्री तुकाराम शेट

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने कोंकणी भाषा मंडल और कार्मेल कॉलेज, गोवा के सहयोग से 21 मार्च 2024 को गोवा के न्यूवेम स्थित कार्मेल कॉलेज के सभागार में ''लेखक से भेंट'' कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम के आरंभ में, डॉ. ओम प्रकाश नागर प्रभारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने अतिथि लेखक उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों और इस कार्यक्रम के महत्त्व पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ लेखक अतिथि लेखक तुकाराम शेट ने अपने जीवन और साहित्यिक यात्रा को उपस्थित श्रोताओं के साथ साझा किया। इस अवसर पर लेखक की जीवन यात्रा, उनके संपूर्ण कालक्रम और साहित्य सूची को दर्शाने वाला एक विशेष प्रशस्ति-पत्र भी प्रकाशित किया गया था।

नारी चेतना

21 मार्च 2024, गोवा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा कोंकणी भाषा मंडल और कार्मेल कॉलेज, गोवा के सहयोग से 21 मार्च 2024 को विश्व कविता दिवस के अवसर पर ''नारी चेतना'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम गोवा के न्यूवेम स्थित कार्मेल कॉलेज के सभागार में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध कोंकणी साहित्यकार प्रशांती तलपंकर ने की। रुपा चारी, नमन सामंत धवसेकर और हरर्षा शेट्ये ने अपनी कविताओं का पाठ किया जिन्हें श्रोताओं ने ख़ूब पसंद किया।

(बाएँ से दाएँ) हरर्षा शेट्ये, नमन सामंत, रूपा चारी तथा सत्राध्यक्ष प्रशांती तलपंकर

मेरे झरोखे से

28 मार्च 2024, आभासी मंच

साहित्य अकादेमी द्वारा 28 मार्च 2024 को वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत ''मेरे झरोखे से'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रख्यात सिंधी कवि एवं विद्वान श्री खीमन मुलाणी को दिवंगत ग़ज़लकार श्री लक्ष्मण दुबे के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. ओम प्रकाश नागर, प्रभारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने प्रतिभागी का और यूट्यूब पर इसे लाइव देखने वाले दर्शकों का स्वागत किया। श्री मुलाणी ने लक्ष्मण दुबे के जीवन और कृतियों पर विस्तार से बताते हुए कहा, ''लक्ष्मण दुबे प्रमुख सिंधी ग़ज़लकार थे जिन्होंने हिंदी में भी दोहे और पुस्तकें लिखीं। उनके लेखन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह था कि उनकी अधिकांश ग़ज़लें आम आदमी के रोज़मर्रा के जीवन को दर्शाती हैं। उनकी प्रभावशाली रचनाएँ सिंध (पाकिस्तान) से भी प्रकाशित हुई थीं।'' इस कार्यक्रम को साहित्य प्रेमियों ने देखा और सराहा।

(बाएँ से दाएँ) डॉ. ओम प्रकाश नागर और श्री खीमन मुलाणी

चेन्नै

तमिऴ ओली पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी

4-5 जनवरी 2024, पुडुचेरी

(बाएँ से दाएँ) आर.पी. बाला गंगाधरन, एस.के. गंगा, पी. बूपैथी, एलाई शिवकुमार, आर. थामोथरन (अरवेंदन), टी.एस. चंद्रशेखर राजू और के. पंचांगम

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै ने पुडुचेरी कलई इलक्किया पेरुमंदरम, पुडुचेरी के सहयोग से, पुडुचेरी भाषाविज्ञान और संस्कृति संस्थान, पुडुचेरी में 4-5 जनवरी 2024 को तमिऴ ओली पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नई ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने उल्लेख किया कि तमिऴ ओली व्यावहारिक और साहसी लेखक थे जिनकी कविताओं में समाजवादी विचारधारा में उनकी गहरी रुचि झलकती है। उन्होंने छात्रों से खुद को जीवंत रखने के लिए तमिऴ ओली की कृतियों को पढ़ने का आह्वान किया। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक थामोथरान (अरवेंदन) ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने तमिऴ ओली द्वारा उनके कार्यों में प्रयुक्त साहित्यिक बारीकियों और युगीन उपमाओं के बारे में संक्षेप में बात की। उन्होंने *वेरायी कप्पियम* कृति का विशेष उल्लेख किया और बताया कि इस कृति को महान तमिऴ महाकाव्य *सिलपथिकरम* के समानांतर रखा जा सकता है। उन्होंने बताया कि संगोष्ठी का उद्देश्य लेखक के कार्यों को दोबारा देखना और अगली पीढ़ी को उनके साहित्यिक योगदान से परिचित कराना था। तमिऴ आलोचक डॉ. के. पंजंगम ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि तमिऴ ओली का पालन-पोषण भारतीदासन ने किया था। उन्होंने अपना सारा जीवन तमिऴ लोगों के लिए जिया और तमिऴ भाषा के प्रति उनका प्रबल प्रेम उनके लेखन में गहराई से झलकता है।

उन्होंने कहा, ''उनकी विद्वता को उनके जीवन का इतिहास पढ़कर ही समझा जा सकता है।'' हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए, श्री कालियापैरुमल, पुडुचेरी सरकार के कला और संस्कृति विभाग के निदेशक ने उल्लेख किया कि तमिऴ ओली ने दलितों के अधिकारों की वकालत की। उनका सिद्धांत था कि साहित्य का उपयोग लोगों के जीवन को ऊपर उठाने के लिए किया जाना चाहिए। श्री एस.के. गंगा, अध्यक्ष, तमिलनाडु कलई इलक्किया पेरुमंद्रम ने विशेष भाषण दिया। उन्होंने उल्लेख किया कि यद्यपि तमिऴ ओली थोड़े समय के लिए ही जीवित रहे, लेकिन उन्होंने एक फलदायक जीवन जीया। उन्होंने कहा, उनके पूरे जीवन को तीन चरणों में देखा जा सकता है - भारतीदासन के साथ उनका जुड़ाव और द्रविड़ तथा समाजवादी आंदोलनों में उनकी भागीदारी। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अरंगा मुरुगैयान ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। प्रथम सत्र में डॉ. एन. इलांगों ने अध्यक्षता की और 'अश्वघोष' पर आलेख प्रस्तुत किया और 'कोसलकुमारी काव्यम्' से कहानी प्रस्तुत की। उन्होंने विद्रोही परिचय देने के लिए तमिऴ ओली की सराहना की।

उन्होंने तमिऴ पाठकों के लिए विद्रोही पात्र 'अश्वघोष' से परिचित

कराने के लिए तमिळ ओली की सराहना की। इसके बाद, डॉ. टी. अंबुचसेल्वन ने 'वीरायी काव्यम्' पर आलेख प्रस्तुत किया।

डॉ. ई. एजिलक्संथन ने तमिळ ओली के पत्रकारिता कार्य पर लेख प्रस्तुत किया। उनका पत्रकारिता करियर हस्तलिखित पत्रिका 'मुरासु' में काम करने से शुरू हुआ और बाद में उन्होंने 'कुडियारासु', 'द्रविड़' 'नादु', 'जैनासा सक्ति', 'थामराई', 'मनिथन' और 'सरस्वती' जैसी कई अन्य पत्रिकाओं के लिए काम किया। द्वितीय सत्र में डॉ. अव्वई निर्मला ने अध्यक्षता की और 'कन्नप्पन किलिगल' पर अपना लेख प्रस्तुत किया। इसके बाद, श्री आरु सेलवन ने 'तमिळ ओली और भारतीदासन' पर लेख प्रस्तुत किया। प्रख्यात कवि भारतीदासन से उनके घनिष्ठ संबंध थे। तमिळ ओली ने भारतीदासन के क्रांतिकारी आदर्शों को आत्मसात किया तथा अत्याचारों पर आधारित कविताएँ लिखीं। भारतीदासन और तमिळ ओली पिता-पुत्र की तरह थे। उन्होंने कहा कि विजयरंगम को भरत थिडा सान के बेटे मन्ना आर मन्त्रान द्वारा दिया गया 'तमिळ ओली' उपनाम मिला। इसके बाद, डॉ. आर.बी. विवेकानन्ददासन ने 'मे धीना रोजा' पर लेख प्रस्तुत किया। तमिळ ओली के लिए कविता एक हथियार था। उन्होंने कहा, 'मे धीना रोजा' में विद्रोहियों के जीवन को अच्छी तरह से चित्रित किया गया है। उसका अनुसरण करते हुए डॉ. वी. सेल्वापेरुमल ने 'विधियो ? विनियो ?' विषय पर लेख प्रस्तुत किया। यह भावनात्मक ओपेरा तमिळ महाकाव्य *सिलपथिकरम* पर आधारित है। दस अध्यायों वाला यह ऑपेरा माधवी के निपुण नर्तक भावों को दर्शाता है।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय सत्र में डॉ. जी. रेवती ने अध्यक्षता की और 'माधवी काव्यम्' पर लेख प्रस्तुत किया। तमिळ ओली के महाकाव्यों में, माधवी काव्यम् उत्कृष्ट कार्य है। उन्होंने कहा, यह क्षेत्रीय बोलियों और सौदर्य संबंधी अभिव्यक्तियों से सुसज्जित है जो इसे युगानुकूल कृति बनाती है। इसके बाद, डॉ. ए. विजयरानी ने 'तमिळ ओली के निबंध' पर लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने तमिळ ओली द्वारा लिखे गए आलोचनात्मक निबंधों के बारे में बात की और बताया कि वे कैसे समाज की भयावह उदासीनता को दर्शाते हैं। डॉ. अरंगा मुरुगैयान ने 'कझाई कूथाडी' पर लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, यह कार्य पूरे देश में नृत्य कलाकारों की जीवन स्थितियों को संग्रहीत करता है। इसके बाद, श्री एम. बालसुब्रमण्यम ने 'कविग्ननिन काधल' पर लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, इस महाकाव्य कृति में सौंदर्यपूर्ण काव्य पंक्तियाँ हैं और इसे लघु फ़िल्म में रूपांतरित किया जा सकता है। चतुर्थ सत्र में डॉ. बी. रविकुमार ने 'तिरुक्कुरलम कदवुलुम' पर लेख प्रस्तुत किया। यह कार्य तमिळ ओली की अनुसंधान क्षमताओं को सामने लाकर उनके रचनात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। इसके बाद श्री सा. थू. अरिमावलवन ने 'निलाई पेट्रा सिलाई' पर लेख प्रस्तुत किया। उनके बाद, श्री एलाई शिवकुमार ने 'तमिळ ओली के शोध' पर अपना लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि तमिळ ओली के शोध कार्य मार्क्सवादी विचारधारा पर आधारित थे। उनके शोध पत्र 'तिरुक्कुरलुम कदावुलुम', 'तमिझुम समस्किरुथमम', 'सिलप्पाथिकरम नादगमा? काव्यामा' पर संक्षेप में चर्चा की गई। तमिळ ओली के अनुसार तमिळ समाज में निहित संगीत परंपराओं की बहुलता को इलंगो आदिगल ने अपने महाकाव्य 'सिल्लपथिकरम' में प्रस्तुत किया, श्री एलाई शिवकुमार ने उल्लेख किया। श्री सिलाम्बु ना. सेल्वारास तमिळ आलोचक ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने तमिळ ओली के कार्यों की पृष्ठभूमि के बारे में बताया कि किस प्रकार उनकी विचारधारा तमिळ समाज के लोकाचार को पूरा करती है। तमिळ आलोचक डॉ. आर. सांबथ ने समापन भाषण दिया। तमिळ ओली स्वतंत्र विचारक थे, जिनकी कोई अपेक्षा नहीं थी। उनका शोध पत्र *सिल्लपथिकरम, थोलकाप्पियम* और *तिरुक्कुरल* उल्लेखनीय हैं। उन्होंने कहा, यद्यपि अल्पकालिक लेखक, तमिळ ओली का प्रारंभिक योगदान आधुनिक तमिळ साहित्य के क्षेत्र में बेजोड़ है। कार्यक्रम में छात्रों, शोध विद्वानों, संकाय सदस्यों तथा कई अन्य स्थानीय साहित्यकारों ने उपस्थिति दर्ज की।

साहित्य मंच

वी.वी.एस. अय्यर का कंब रामायणम् - एक अध्ययन

18 जनवरी 2024, तिरुचिरापल्ली

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने तमिळ अनुसंधान विभाग, नेशनल कॉलेज, तिरुचिरापल्ली के सहयोग से 'वी.वी.एस. अय्यर का कंब रामायणम् - एक अध्ययन' विषय पर 18 जनवरी 2024 को महाविद्यालय प्रांगण में *साहित्य मंच* कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. यू. अलीबावा ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नैशनत कॉलेज के प्राचार्य डॉ. के. कुमार ने की।

कॉलेज के सचिव श्री के. रघुनाथन ने हार्दिक बधाइयाँ दीं। डॉ. पी. वेंकटेशन ने 'रामायण में अलौकिक तत्त्व' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने *रामायण* के दो मुख्य वर्गों - *राक्षस* और *वानर* पर बात की जो

'अलौकिक' तत्व का निर्माण करते हैं। उन्होंने राक्षस राजा रावण, हनुमान, सुग्रीव और अंगद जैसे वानर नेताओं, महान गरूड़ गिद्ध-राजा जटायु और उनके भाई संपाती और अंत में राम और लक्ष्मण द्वारा प्रदर्शित अलौकिक शक्तियों के बारे में संक्षेप में बताया। उनके बाद, डॉ. ए. सेल्वराज ने 'हनुमान की उपस्थिति और एकजुटता' पर लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने चर्चा की कि कैसे कम्बन ने हनुमान को ऐसे नायक के रूप में चित्रित किया जो अपनी ताकत के प्रति सचेत है लेकिन अहंकार की भावना से मुक्त है। लेख में हनुमान द्वारा लंका में सीता की खोज को दर्शाया गया है जो कुछ बेहतरीन लक्षणों जैसे- उनके चरित्र - विनम्रता, अपने गुरु के प्रति समर्पण तथा धर्म के प्रति प्रेम को दर्शाता है। इसके बाद, श्री एस. कार्तिक ने 'इन मीडियास रेस' विषय पर लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने लगातार इस रुचि को बनाए रखा कि किस प्रकार महाकाव्य पाठकों की कल्पना और भावना के लिए समृद्ध भोजन प्रदान करता है और यह भी बताया कि किस प्रकार कम्बन शुरू से अंत तक कहानी में निरंतर रुचि बनाए रखने में सक्षम रहे।

अंत में, डॉ. के. भुवनेश्वरी ने 'राम का आकर्षण और व्यक्तित्व' पर लेख प्रस्तुत किया। कंबन द्वारा राम की वीरता, करुणा और प्रेम, उनकी उदारता और वचन के प्रति निष्ठा का वर्णन पूरी तरह से ऐसी भव्य अवधारणा की ऊँचाइयों तक पहुँचता है। उन्होंने कहा, कंबन ने राम के चरित्र को अधिक ऊँचाइयों तक पहुँचाया और उन्हें महाकाव्य के नायकों में सबसे भव्य बना दिया। तमिळ अनुसंधान विभाग के प्रमुख डॉ. एन. मणिक्कम ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

सी. बालासुंदरनार पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी

19-20 जनवरी 2024, तिरुचिरापल्ली

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै में तमिळ अध्ययन विभाग, भारतीदासन विश्वविद्यालय, तिरुचिरापल्ली के सहयोग से 19-20 जनवरी 2024 को सी. बालासुंदरनार पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में किया।

श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नई ने स्वागत भाषण दिया तथा साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों के बारे में विस्तृत रूप से बताया। डॉ. यू. अलीबावा, सदस्य, तमिळ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी, ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया और तमिळ साहित्यिक परिवेश में सी. बालासुंदरनार के व्यक्तित्व के बहुआयामी रूप को संक्षेप में प्रस्तुत किया। डॉ. आर. थमोथरन (अरवेन्दन), संयोजक, तमिळ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने संगोष्ठी के उद्देश्य को रेखांकित किया और इसे आगे बढ़ाने में साहित्य अकादेमी की भूमिका पर चर्चा की और बताया की यह तमिळ साहित्य की प्रमुख साहित्यिक हस्तियों का शताब्दी समारोह है। उन्होंने बताया कि बालासुंदरनार का व्यक्तित्व सरल था फिर भी वे तमिळ साहित्यिक बिरादरी के लेखकों के साथ खड़े रहते थे।

भारतीदासन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एम. सेल्वम ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया और बालासुंदरनार के प्रेम और स्वामित्व के बारे में बताया। उन्होंने अपने विश्वविद्यालय में सी. बालासुंदरनार की शताब्दी आयोजित करने में सहयोग करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम में सी. बालासुंदरनार के पुत्र प्रो. बी. मथिवनन ने हार्दिक अभिनंदन किया और साहित्य अकादेमी और भारतीदासन विश्व-विद्यालय को धन्यवाद दिया। उन्होंने बाला-सुंदरनार के कार्यों की पहुँच और व्यापकता का उल्लेख किया और बताया कि कैसे उनकी रचनात्मक प्रतिभा तमिळ साहित्य की विभिन्न शैलियों में फैली हुई है। तमिळ आलोचक डॉ. एम. रामलिंगम ने विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय के पूर्व संकाय सदस्य और साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता के रूप में, उन्होंने संगोष्ठी में भाग लेने के लिए अपनी खुशी और आभार व्यक्त किया। उन्होंने संगोष्ठी की कार्यवाही को संकलित करने तथा बालासुंदरनार के जीवन और कार्यों को समझने के लिए पुस्तक प्रकाशित करने का भी सुझाव दिया। भारतीदासन विश्वविद्यालय के तमिळ अध्ययन विभाग की डॉ. जे. चंद्रकला ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। प्रथम सत्र में डॉ. आर. कालियापेरुमल ने अध्यक्षता की और 'करनथाई कोवई' पर लेख प्रस्तुत किया। श्री एम. कंदासामी ने सी. बालासुंदरनार के नाटक पर लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, तमिळ भाषा के प्रति उनका प्रबल प्रेम उनके लेखन में गहराई से झलकता है।

द्वितीय सत्र में डॉ. शनमुगा सेल्वगणपति ने

कार्यक्रम के प्रतिभागी

अध्यक्षता की और 'सी. बालासुंदरनार के गीत' पर लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि बालासुंदरनार बीसवीं सदी के तमिळ संगीत और नृत्य परंपराओं के विशेषज्ञ थे। डॉ. पी. तमिष़्गन ने 'सी. बालासुंदरनार के व्युत्पत्ति संबंधी अध्ययन' पर लेख प्रस्तुत किया। डॉ. एस. कर्पगम ने नृत्य पर सी. बालासुंदरनार के विचार पर लेख प्रस्तुत किया।

बालासुंदरनार ने अपनी आत्मकथात्मक कृति 'निनैवलाइगल' में नृत्य की गतिविधियों, भावों और नृत्य प्रणाली का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया है। नृत्य की कला पर उनके विचार अद्वितीय थे और उन्होंने सिलपथिकरम में तमिळ नृत्य के पैटर्न पर विस्तृत जानकारी दी। इसके बाद, श्री एम. कलैवेंधन ने 'सी. बालासुंदरनार की कविताओं में कलैगनार एम. करुणानिधि' पर आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें उनके प्रति बालासुंदरनार के उच्च सम्मान की भावना व्यक्त की गई। संगोष्ठी के दूसरे दिन, तृतीय सत्र में डॉ. के.वी. बालासुब्रमणियन ने अध्यक्षता की और 'तिरुक्कुरल कमेंटरी' पर लेख प्रस्तुत किया। यद्यपि कई विद्वानों ने *तिरुक्कुरल* पर टिप्पणियाँ लिखीं हैं फिर भी बालासुंदरनार की टिप्पणी अद्वितीय हैं। उन्होंने व्यापक शोध किया और कई दोहों को नवीन अर्थ प्रदान किए हैं। डॉ. एन. कन्नम्मल ने *निनाइवेलेगल* पर आलेख प्रस्तुत किया। एक आत्मकथात्मक कृति जो जीवन की घटनाओं को दिलचस्प रूप से दर्शाती है।

चतुर्थ सत्र में, श्री बी.वेलुसामी ने अध्यक्षता की और बालासुंदरनार द्वारा लिखी गई टिप्पणी *थोलकप्पियम एझथाधिकारम* पर संक्षेप में बात की। डॉ. टी. मोहनराज ने 'थोल्कप्पियम सोल्लएथिकआरएम कमेंट्री' पर आलेख प्रस्तुत किया और बताया कि यह कमेंट्री सूत्रात्मक है और तमिळ भाषा के वाक्य-विन्यास का अध्ययन करती है। डॉ. आर. राजा ने 'थोलकप्पियम पौरुलाधिकारम कमेंट्री' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, उनकी शोध क्षमताएँ और तमिळ व्याकरण का उनका गहरा ज्ञान कमेंटरी में प्रतिबिंबित होता है। पंचम सत्र में डॉ. मु. एलमुरुगन ने अध्यक्षता करते हुए 'लेक्सिकोग्राफिकल वक्रस' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया और डॉ. अरंगा सुब्बैया ने 'व्याकरणिक अध्ययन' तथा डॉ. मणि मारन ने संकलन और संपादित कार्य पर आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र में, तमिळ आलोचक डॉ. एस. पलानियांदी ने हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने बताया कि बालासुंदरनार ने *थोलकप्पियम* के लिए पूरी टिप्पणी लिखी। उन्होंने पाया कि सभी प्रतिभागियों ने बालासुंदरनार पर कई विचार व्यक्त किए तथा संगोष्ठी सुचारु रूप से चल पाई। तमिळ आलोचक डॉ. पी. मथैयान ने बालासुंदरनार की टिप्पणियों और दृष्टिकोणों पर विचारोत्तेजक प्रस्तुति दी। उन्होंने ने कहा कि उनकी टिप्पणी *थोलकाप्पियम* तमिळ व्याकरणिक ग्रंथ का व्यापक विश्लेषण है और अभी भी समय की कसौटी पर खरी उतरती है। उन्होंने कहा, उनके योगदान ने तमिळ भाषा और साहित्य को उच्चतम स्तर तक पहुँचाया।

कि. राजनारायणन् पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी

22-23 जनवरी 2024, सेलम

वक्तव्य देतु हुए प्रो. सिर्पी बालसुब्रमण्यम

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने सेलम के पेरियार विश्वविद्यालय के तमिळ विभाग के सहयोग से कि. राजनारायणन् पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन 22-23 जनवरी 2024 को किया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नई ने विश्वविद्यालय परिसर में स्वागत वक्तव्य दिया। डॉ. आर. थमोथरन (अरवेन्दन), संयोजक, तमिळ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने संगोष्ठी के उद्देश्य को रेखांकित कर कहा, कि. राजनारायणन् ने अपने लेखन के माध्यम से साहस के साथ वास्तविकता को उजागर किया तथा प्रेम और आपसी स्नेह से भरा सामाजिक ताना-बाना बुना। डॉ. सिर्पी बालसुब्रमण्यम, कवि और अनुवादक ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने कि. राजनारायणन् को करिसल साहित्य के पिता तुल्य और अग्रदूत के रूप में बताया। उनकी कहानियों में करिसल बोली को कथानक और प्रत्यक्ष रूप में इस्तेमाल किया गया है। वे असाधारण कहानीकार थे, जिन्होंने अपने पाठकों को लोगों के रंगीन चित्रण और 'करिसल मन' की संस्कृति से मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने कहा, वह तमिळ साहित्य के ध्रुवतारे थे, जिन्होंने लोककथाओं में तमिलनाडु के सबसे महान व्यक्ति के रूप में अपने नाम के अनुरूप गौरवशाली जीवन जीया।

पेरियार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. जगनाथन ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने इस बात पर ख़ुशी ज़ाहिर की कि पेरियार विश्वविद्यालय को इस प्रकार के प्रतिष्ठित समारोह की मेज़बानी के लिए चुना गया और भविष्य में ऐसे प्रतिष्ठित लेखकों की शताब्दी मनाने के लिए उपयोगी सहयोग का आश्वासन भी दिया गया। कि. राजनारायणन् के बेटे श्री कि.रा. पिराबी ने हार्दिक अभिनंदन किया तथा पिता और लेखक के साथ अपने अनुभव साझा किए। तमिळ लेखक श्री इमायम ने विशेष भाषण में कहा कि. राजनारायण ऐसे अग्रणी रचनाकार थे, जिन्होंने तमिळ साहित्य में नए आयाम खोले। उनकी कथन शैली उन्हें अन्य आधुनिक तमिळ रचनात्मक लेखकों से अलग बनाती है। उन्होंने कहा, उनका लेखन उनके जीवनकाल के बाद भी आनेवाली पीढ़ियों के लिए निरंतर प्रेरणा का काम करेगा। तमिळ विभाग प्रमुख प्रो. टी. परियासामी ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। प्रथम सत्र में डॉ. आर. कामरासु ने अध्यक्षता की और कि. राजनारायणन् की कहानियों में मार्क्सवाद विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। कि. राजनारायण के मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र पर चर्चा की गई कि कैसे उन्होंने महिलाओं का, करिसल क्षेत्र के बच्चे और किसान के जीवन का दस्तावेज़ीकरण किया। मेहनतकश मज़दूरों के पसीने और मेहनत के प्रति कि. राजनारायणन् की संवेदनशीलता ने उन्हें 'कथवु', 'वेट्टी', 'पिंजुगल' और 'कोट्टईपरुथी' जैसी कहानियाँ लिखने के लिए प्रेरित किया। डॉ. जे. सुदरविज़ी ने 'कि. राजनारायणन् के लेखन में प्रकृति' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रकृति प्रेम, साधारण जन विशेषकर करिसल लोगों के प्रति उनका प्रेम सभी कार्यों में देखा जा सकता है। उन्होंने कहा, प्रकृति, पशु-पक्षियों के साथ उनके संबंधों का वर्णन उनकी रचनाओं में भी दिखता है। द्वितीय सत्र में प्रो. एस.ए. वेंगडा सौप्रया नवागर ने अध्यक्षता की और कि. राजनारायणन् के लेखन में 'उत्तर आधुनिकतावाद' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उनके कुछ कार्यों के बारे में बताया। तृतीय सत्र में, श्री सिलमपु एन. सेल्वराज ने अध्यक्षता की और कि. राजनारायणन् की भाषा

का दक्ष प्रयोग' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उनके लेखन में रचनात्मक स्वतंत्रता का बोलबाला था और उन पर कोई प्रतिबंध नहीं था। उन्होंने सरल और समझने योग्य तरीके से बोली के शब्दों की विस्तृत शृंखला प्रस्तुत की। डॉ. आर. श्रीविद्या ने 'कि. राजनारायणन् के लेखन में हास्य' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने महसूस किया कि हास्य एक आलोचनात्मक सोच कौशल है जो पाठकों को दुखों से राहत प्रदान करता है और उनके लेखन ने सूक्ष्म हास्य पैदा किया। संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र में डॉ. ओ. मुथैया ने अध्यक्षता की और 'कि. राजनारायणन् और उनके पत्र' पर आलेख प्रस्तुत किया। पत्र लिखना काफी दिलचस्प कला है और कि. राजनारायणन् के पत्र साहित्य का स्रोत हैं। कि. राजनारायणन् ने अपने साथी लेखकों के साथ मधुर संबंध बनाए रखे। उनके पत्रों से यह स्पष्ट है कि कि. राजनारायणन्, पोथैया, कु. अजगिरिसामी, ती.के.सी और वेंगडा सुद्र अमानियम ने रिश्ता साझा किया। श्रीमती जे. मंजुला देवी ने कि. राजनारायणन् के उपन्यास में नारीवाद विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उनकी पत्नी कनावती अम्मल ने उनकी प्रशंसा की और लेखन में भरपूर सहयोग दिया। उनकी 'अंडारांडा पैची' प्रगतिशील नारीवादी दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण है। पंचम सत्र में प्रोफ़ेसर एस. शनमुगसुंदरम ने अध्यक्षता की और 'कि. राजनारायणन् और लोकगीत' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनके लेखन में बोली जाने वाली शैली के परिचय ने भाषा को आसानी से समझने योग्य बना दिया। उनका सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान मौखिक लोककथाओं का प्रकाशन था। उन्होंने मौखिक लोक कथाओं को सावधानीपूर्वक लिपिबद्ध किया, जिन्हें बाद में संग्रहित किया गया और नट्टुप्पुरा कढ़ाई कलंजियम के रूप में प्रकाशित किया गया। उनके बाद, डॉ. अरासुपरमेश्वरन ने 'कि. राजनारायणन् की भाषा शैली' पर आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि. राजनारायणन् की लेखन शैली सरल और सहज थी, जिससे पाठक उनकी शैली को समझ सकते थे और उसका आनंद ले सकते थे। उन्होंने कहा, उनकी कहानियाँ तमिळ मिट्टी में निहित हैं और अर्ध-शुष्क क्षेत्र की जीवनशैली और संस्कृति पर ज़ोर देती हैं। डॉ. के. पंजंगम ने समापन वक्तव्य देने से पहले 'द पायनियर ऑफ़ कैरिसल लिटरेचर' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कि. राजनारायणन् के साथ पुडुचेरी में अपने लंबे जुड़ाव को याद किया। कि. राजनारायणन् असाधारण कहानीकार थे, जिन्होंने अपने पाठकों को वहाँ के लोगों के रंगीन चित्रण और 'करिसल मन' संस्कृति से मंत्रमुग्ध कर दिया। वे सामाजिक कार्यकर्ता थे जो अपनी बात को सशक्त ढंग से व्यक्त करते थे। उन्होंने बिना किसी संकीर्णता के साथी मनुष्यों के प्रति प्यार और सम्मान दर्शाया। उन्होंने कहा, तमिळ लोककथाओं में एक समृद्ध विरासत को पीछे छोड़ते हुए, उनका लेखन युवा लेखकों और लोकगीतकारों को प्रेरित करता रहा है।

कार्यक्रम में तमिळ विभाग के छात्रों और व्याख्याताओं, संकायों, शोध विद्वानों, लेखकों और स्थानीय साहित्यकारों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

पुस्तक चर्चा कार्यक्रम

25 जनवरी 2024, चेन्नई

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै में *पुस्तक चर्चा* कार्यक्रम का आयोजन 25 जनवरी 2024 को कार्यालय परिसर में किया गया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने स्वागत वक्तव्य दिया और अतिथि वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया। *पिन नवीनथुवा तमीष़ इलक्किया विमारिसनाधिन पनमुगंगल,* निबंधों-संग्रह उत्तर आधुनिक तमिळ साहित्यिक आलोचना पर विभिन्न लेखकों के इस संग्रह को, डॉ. एस. कार्लोस तमिझावन द्वारा एक परिचय के साथ चयनित और संकलित किया गया है। डॉ. वी. अरासु ने गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया। तमिळ भाषा में आधुनिकतावाद और उत्तर-आधुनिकतावाद के इतिहास और विकास के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया है। उन्होंने बताया कि पुस्तक तमिळ साहित्यिक आलोचना के उत्तर-आधुनिक सिद्धांतों पर प्रकाश डालती है तथा यह भी बताती है कि किस प्रकार उत्तर-आधुनिक साहित्यिक आलोचना की अवधारणा ने 1930 और 1980 के बीच की अवधि के दौरान अपना पाठ्यक्रम बदल दिया। उन्होंने तमिळ साहित्यिक आलोचना की

व्याख्यान देतु हुए हुए डॉ. वी. अरासु

उत्तर आधुनिक अवधारणाओं को समझने के लिए अत्यधिक पठनीय पुस्तक देने के लिए तमिझावन के प्रयासों की सराहना की।

के. अब्दुल गफ़ूर पर जन्मशतवार्षिकी साहित्य मंच

30 जनवरी 2024, तिरुनेलवेली

कार्यक्रम के प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै में तमिळ विभाग सदाकतुल्लाह अप्पा कॉलेज, तिरुनेलवेली के सहयोग से के. अब्दुल गफ़ूर पर जन्मशतवार्षिकी *साहित्य मंच* कार्यक्रम का आयोजन 30 जनवरी 2024 को कॉलेज परिसर में किया। डॉ. यू. अलीबावा, सदस्य, तमिळ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने तिरुनेलवेली में कवि-लेखक की जन्मशतवार्षिकी के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा के. अब्दुल गफ़ूर के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। डॉ. अलीबावा ने कहा कि वे प्रोफ़ेसर, लेखक, कवि, शिक्षक, वक्ता तथा इस्लामी धार्मिक विद्वान थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज के सचिव श्री टी.ई.एस. फित्तू रब्बानी ने की। उनका मानना था कि अब्दुल गफ़ूर के कार्यों का राष्ट्रीयकरण किया जाना चाहिए और उससे होने वाली आय का उपयोग कवि-लेखक के नाम पर एक फाउंडेशन स्थापित करने के लिए किया जाना चाहिए। प्रधानाचार्य डॉ. एस.एम. अब्दुल कादर ने हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। डॉ. एस. महादेवन ने के. अब्दुल गफ़ूर की समृद्ध कविता पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. एम. अब्दुल समद ने 'के. अब्दुल गफ़ूर का बाल साहित्य' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. ए. कलील रहमान ने के.अब्दुल गफ़ूर के गद्य पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. एम.ए.एस. हबीबुर रहमान ने 'के. अब्दुल गफ़ूर के इस्लामी साहित्य' पर आलेख प्रस्तुत किया और डॉ. थेंगई शरबुदीन ने के. अब्दुल गफ़ूर के बहुआयामी व्यक्तित्व पर आलेख प्रस्तुत किया।

डॉ. ए.एस. सदाकतुल्लाह अप्पा कॉलेज के तमिळ विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर शेख सिंथा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

व्यक्ति और रचनात्मक लेखन' पर ग्रामालोक

8 फ़रवरी 2024, कन्याकुमारी

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने लक्ष्मीपुरम कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, कन्याकुमारी के सहयोग से 'व्यक्ति और रचनात्मक लेखन' विषय पर 8 फ़रवरी 2024 को कॉलेज परिसर में *ग्रामालोक* कार्यक्रम का आयोजन किया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. टी. विष्णुकुमारन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. के. चिथमपरथनु पिल्लई, कॉलेज के प्राचार्य और डॉ. ए. श्रीकंदन, तमिळ विभागाध्यक्ष ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। डॉ. चिथमपराथनु पिल्लई ने सभी भाषाओं में युवा लेखन को बढ़ावा देने के लिए साहित्य अकादेमी की प्रशंसा की और देश भर के युवा लेखकों को साहित्य

कार्यक्रम के प्रतिभागी

अकादेमी द्वारा दिए जाने वाले युवा पुरस्कार पर प्रकाश डाला। श्री एस. साजू ने 'कविता' पर आलेख प्रस्तुत किया और छात्रों को पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। पढ़ना किसी समाज की वृद्धि और विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कारक है। उन्होंने कहा कि अधिक पढ़ने से उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है और वे लेखक के रूप में उभरते हैं। श्री रेत्नास्वामी ने 'नाटकों' पर आलेख प्रस्तुत किया। मुथमिज (तमीझ का तीन कला रूपों में सीमांकन - इयाल, इसाई और नादागम) पर संक्षेप में चर्चा की गई। उन्होंने यह भी बताया कि

कैसे नाटक सामाजिक मुद्दों से निपट सकते हैं, आम लोगों तक संचार और विचारों की अभिव्यक्ति को सरल तरीके से बढ़ा सकते हैं। श्री बेजो शाइलीन ने 'उपन्यास' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि कैसे साहित्य वास्तव में स्वतंत्र कला है और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करता है। तमिळ विभाग के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. एस. गणेश ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

तमिळ कहानियों के नए रुझान पर परिसंवाद

9 फ़रवरी 2024, कन्याकुमारी

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने कला एवं विज्ञान कॉलेज, लक्ष्मीपुरम के सहयोग से कन्याकुमारी में 9 फ़रवरी 2024 को 'तमिळ कहानियों के नए रुझान' पर परिसंवाद का आयोजन किया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. टी. विष्णुकुमारन् ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने परिसंवाद के विषय तथा इसके आयोजन के उद्देश्य के बारे में बताया और पिछले कुछ वर्षों में तमिळ कहानियों के बदलते रुझानों पर भी प्रकाश डाला। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. के. चिथमपराधनु पिल्लई ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया और अपने कॉलेज में परिसंवाद आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया और साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा छात्रों को अपने विकास के लिए इस अवसर का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। कॉलेज के सचिव श्री के. राजगोपाल ने हार्दिक बधाई दी और उल्लेख किया कि कहानियाँ पाठकों तक पहुँचने का आदर्श माध्यम हैं। उन्होंने कहा, साहित्य के साथ मुठभेड़ अनुभवों को प्रतिबिंबित करने में मदद करती है तथा हमारे समाज और खुद के बारे में बेहतर समझ को बढ़ावा देती है। डॉ. एस. गणेश, एसोसिएट प्रोफ़ेसर तमिळ विभाग ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। प्रथम सत्र में, डॉ. एन. शिवसुब्रह्मण्यन ने अध्यक्षता की और 'तमिळ कहानियों के हालिया रुझान' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उभरते रुझान और आधुनिकता पर आधारित कहानियों जिनमें नए रूपों और

(बाएँ से दाएँ) डॉ. ए. विक्टर, डॉ. एन. शिवसुब्रह्मण्यन, डॉ. कुमारसेल्वा तथा डॉ. एस. महादेवन

अभिव्यक्ति के साथ लेखकों द्वारा किए जानेवाले प्रयोगों पर प्रकाश डाला। डॉ. कुमारसेल्वा ने 'हाल की तमिळ कहानियों पर नकुलन का प्रभाव' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। आलेख में इस बात पर चर्चा की गई कि कैसे नकुलन को व्यापक रूप से पढ़ा जाता था, उनका प्रभाव अनगिनत लेखकों और कलाकारों पर था और किस प्रकार उनके कार्यों का तमिळ साहित्यिक परिदृश्य पर अधिक प्रभाव पड़ा। इसके बाद, डॉ. एस. महादेवन ने 'उत्तर-औपनिवेशिक तमिळ कथाएँ' पर आलेख प्रस्तुत किया और सी.एस. चेलप्पा, टी. जानकीरमन, कु. पा.रा., ला.सा.रा., का.ना.सु., मौनी और नकुलन जैसे प्रख्यात तमिळ लेखकों द्वारा लिखी गई कुछ महत्त्वपूर्ण उत्तर-आधुनिक कहानियों के बारे में बात की। द्वितीय सत्र में श्री पोन. कुमार ने 'तमिळ में छाया कथाएँ' पर आलेख प्रस्तुत किया तथा सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा, छाया कथा स्थायी प्रभाव छोड़ती है और इसकी समाप्ति के पश्चात् भी विचार पाठकों के मन में गूँजते रहते हैं। डॉ. विक्टर ने 'उलागुपुरथल' कहानी में मुथु करुप्पन की चुप्पी पर आलेख प्रस्तुत किया। मुथु करुप्पन मा. अरंगनाथन की कहानियों का एक आवर्ती चरित्र और प्रोटोगोनिस्ट है। यह किरदार कई अनकही अवधारणाओं को सामने लाता है और उसके अनुभव और भावनाएँ समकालीन तमिळ समाज में पहचान के संकट का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'उलागुपुरथल' कहानी बताती है कि आधुनिक समय में लोग कैसे अलग-थलग हो जाते हैं। अंत में, डॉ. आर. एंटनी राज ने 'हाल की तमिळ कहानियों पर पुधुमैपिथन का प्रभाव' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उनके कार्यों में मार्क्सवाद, दलित और नारीवाद मुख्य रूप से दिखाई देते थे। आलेख में इस बात पर चर्चा की गई कि कैसे पुदुमैपिथन के प्रभाव को तमिळ कथा साहित्य के वर्तमान लेखकों द्वारा व्यापक रूप से स्वीकार तथा सराहा गया है। परिसंवाद में कॉलेज के छात्रों और शिक्षकों तथा कई अन्य स्थानीय साहित्यकारों ने अच्छी उपस्थिति थी।

ए. माधवय्या की कृतियों पर परिसंवाद

20 फ़रवरी 2024, चेन्नै

(बाएँ से दाएँ) टी.एस. चंद्रशेखर राजू, डॉ. के. कलविक्करसी, डॉ. वाई मणिकंदन और डॉ. एस. मुरुगेसन

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने तमिळ विभाग, डीआरबीसीसीसी हिंदू कॉलेज, चेन्नै के सहयोग से 'माधवय्या की कृतियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 20 फ़रवरी 2024 को कॉलेज परिसर में किया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी ने स्वागत भाषण दिया। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. वाई. मणिकंदन ने बीज भाषण दिया और परिसंवाद के उद्देश्य को रेखांकित किया। ए. माधवय्या तमिळ कहानी शैली के अग्रदूतों में से एक थे जिन्होंने आधुनिक तमिळ कथा साहित्य की रूपरेखा को परिभाषित किया। उन्होंने कहा, वे बहुमुखी लेखक और सामाजिक सुधारवादी की संयुक्त प्रतिष्ठा के साथ तमिळ और अंग्रेज़ी में प्रवीण थे तथा विभिन्न शैलियों में लिखते थे। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. के. कलविक्करसी ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने अपने कॉलेज परिसर में परिसंवाद आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। उन्होंने छात्रों को ए. माधवय्या की कृतियों को पढ़ने और अपना जुनून साहित्य के लिए विकसित करने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

तमिळ विभाग के प्रमुख डॉ. एस. मुरुगेसन ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। प्रथम सत्र में, डॉ. आर. अजगरसन ने अध्यक्षता की और 'तमिळ गाथागीत और ए. माधवय्या की काल्पनिक भाषा' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने 'बर्निंग ऑफ़ मनमथा', ''झाँसी की रानी' और तमिळ महाकाव्य की उनकी पुनर्कथन मनिमेकलै 'सीता - एन इंडियन आइडल' पर गाथागीत के बारे में बात की। उन्होंने कहा, उनकी काल्पनिक भाषा के गद्य के उपयोग द्वारा संभावित विविधता का प्रदर्शन किया। डॉ. के. मुथरपावलर ने 'ए. माधवय्या की पत्रकारिता संबंधी कृतियाँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने चर्चा की कि कैसे माधवय्या पत्रकारिता की ओर आकर्षित हुए और उन्होंने *तमिझारेसन* और *पंचमृतम्* पत्रिका में कितना योगदान दिया। पत्रिकाएँ दुर्लभ गुणवत्ता का वादा करती थीं और उन पत्रिकाओं में उच्च गुणवत्ता की विविध प्रकार की रचनाएँ प्रकाशित होती थीं।

द्वितीय सत्र में, श्री काला सुब्रमण्यम ने अध्यक्षता की और माधवय्या के नाटक पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि माधवैया ने तमिळ में पहला मोनोलॉग लिखा और उनके द्वारा लिखे गए 6 अलग-अलग नाटकों की चर्चा की। डॉ. के. जवाहर ने ए. माधवय्या के अंग्रेज़ी उपन्यास पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने अंग्रेज़ी उपन्यास 'क्लेरिडा' के बारे में बात करते हुए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और महिला मुक्ति का विचार विषय पर चर्चा की। उन्होंने कहा, उनका एक और नाटक 'थिल्लई गोविंदन' भारतीय कथा साहित्य में सामाजिक सरोकारों पर चर्चा करने वाले पहले अंग्रेज़ी उपन्यासों में से एक है। डॉ. जे. राधाकृष्णन ने 'ए. माधवय्या की कविता' पर आलेख प्रस्तुत किया। 'पोधु धर्मम', 'संगीत मंजरी', 'पुधु मधिरी कल्याण पट्टू', 'इंडिया देसिया गीतंगल', 'इंडिया कुम्मी' जैसी अपनी कविताओं का पाठ किया। उन्होंने कहा, माधवय्या के लिए कविता भावनाओं को व्यक्त करने का आदर्श मंच है और उनके साहित्यिक कार्य में क्लासिक अंग्रेज़ी कविता, तमिळ कविताओं और गीतों के रूपांतरण और अनुवाद शामिल हैं।

कार्यक्रम में छात्र, अनुसंधान विद्वान, कॉलेज के शिक्षक और स्थानीय साहित्यिक उत्साही लोग शामिल हुए।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर साहित्य मंच

21 फ़रवरी 2024, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै के परिसर में 21 फ़रवरी 2024 को *मातृभाषा दिवस* मनाया गया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी ने स्वागत भाषण देकर कवियों का परिचय कराया। अतिथि वक्ता, डॉ. वाई. मणिकंदन, सदस्य, तमिळ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने मातृभाषा दिवस के महत्त्व के बारे में बताते हुए उल्लेख किया कि कुछ भाषाओं को भुलाया जा रहा है जबकि अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस भाषाओं के संरक्षण और सुरक्षा को बढ़ावा देता है। डॉ. वत्सला 'किरण' ने अपने आलेख में बताया कि भाषा संचार का सशक्त उपकरण है। यह महत्त्वपूर्ण है कि माता-पिता घर पर अपनी मातृभाषा में बोलने को प्रोत्साहित करें। उन्होंने कहा, मातृभाषा के अलावा अन्य भाषाएँ सीखने से बेहतर समझ और सहनशीलता को बढ़ावा मिलेगा। डॉ. कासाला नागभूषणम ने राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय एकता विकसित करने में मातृभाषा के महत्त्व पर बात की। उन्होंने अलसानी पेद्दन्ना की कुछ कविताएँ सुनाते हुए कहा कि कार्यक्रम विविध भाषाई

(बाएँ से दाएँ) डॉ. कसाला नागभूषणम, डॉ. वत्सला 'किरण' और डॉ. वाई मणिकंदन

परंपराओं की बेहतर समझ को प्रोत्साहित करता है और विविधता में एकता को बढ़ावा देता है। उन्होंने अनुवाद के माध्यम से भाषाई मतभेदों को पाटने के लिए साहित्य अकादेमी की भी सराहना की। कार्यक्रम में कई स्थानीय तमिळ लेखकों, विद्वानों तथा साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत कवि सम्मिलन

28 फ़रवरी 2024

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत उर्दू-तमिळ कवि सम्मिलन का आयोजन 28 फ़रवरी 2024 को किया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने स्वागत भाषण देकर कवियों का परिचय कराया। डॉ. मुबीन साधिका, तमिळ कवि, कहानीकार, आलोचक और अनुवादक ने तमिळ में कविता-पाठ किया तथा उनका उर्दू और अंग्रेज़ी अनुवाद 'दि वॉल' और 'द टेल टोल्ड बाय ए ग्रीन पैरोट' प्रस्तुत किया। इसके बाद, उर्दू कवि और निबंधकार डॉ. शोएब निज़ाम ने उर्दू में अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं और डॉ. मुबीन साधिका ने उनके अंग्रेज़ी अनुवाद 'फुसफुसाहट', 'छाया', 'क्रिसेंट ऑफ़ ईद', 'ईद' और 'अरोमा' नाम से पढ़े। तमिळ कवि, आलोचक और निबंधकार डॉ. बी. जयगणेश ने अपनी तमिळ कविताएँ और उनके अंग्रेज़ी अनुवाद 'द एनचांटिंग गर्ल एंड द एलीफेंट' और 'सैक्रिफिशियल गोट' का पाठ किया। उनके बाद, उर्दू कवि, कथाकार, आलोचक और संपादक डॉ. परवेज़ शहरयार ने उर्दू में अपनी कविताएँ और उनके अंग्रेज़ी अनुवाद 'द ड्रीम ऑफ़ ए बिग सिटी', 'रिवार्ड फ़ॉर ब्यूटी' और 'स्कार्लेट लीव्स' का पाठ किया। काव्य-पाठ के बाद वक्ताओं ने सत्र में प्रस्तुत कविताओं पर परस्पर अपने विचारों का आदान-प्रदान किया तथा एक-दूसरे की सराहना की। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

(बाएँ से दाएँ) (पहली पंक्ति) टी.एस. चंद्रशेखर राजू, डॉ. शोएब निज़ाम और डॉ. बी. जयगणेश
(बाएँ से दाएँ) (दूसरी पंक्ति) डॉ. मुबीन साधिका और डॉ. परवेज़ शहरयार

पुस्तक चर्चा कार्यक्रम

29 फ़रवरी 2024, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने 29 फ़रवरी 2024 को अपने कार्यालय परिसर में *पुस्तक चर्चा* कार्यक्रम का आयोजन किया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने स्वागत भाषण देकर अतिथि वक्ताओं का परिचय करवाया। अमरकांत द्वारा लिखित तथा पुरस्कृत हिंदी उपन्यास जिसका तमिळ अनुवाद थान कृष्णगिनी ने किया था *इन्धा आयुधंगलाल* को चर्चा के लिए चुना गया था। श्री सोरनाभारती, तमिळ आलोचक ने पुस्तक का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया। यह पुस्तक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि में लिखी गई है तथा यह आंदोलन और व्यक्तिगत आज़ादी से जुड़े लोगों के अनुभव संघर्ष का यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। उपन्यास के लेखक अमरकांत ने लोगों की सोच, जीवनशैली और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ़ उनका संयुक्त प्रतिरोध, कलात्मक तरीके से विभिन्न श्रेणियों के कोलाज के साथ प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। श्री सोरनाभारती ने ज्ञानपूर्ण अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए अनुवादक की सराहना की। श्रीमती कृष्णगिनी जो उपन्यास की अनुवादक हैं, ने इस अवसर पर अपने विचार और अनुवाद के अनुभव साझा किए। उन्होंने ऐसे विशाल उपन्यास का अनुवाद करने का

इस अवसर पर बोलते हुए श्री सोरना भारती

अवसर प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में श्री नागराजन, श्री कुमारी एस. नीलकांतन, श्री थंजई एजिलन और स्थानीय पाठकों ने भाग लिया।

नारी चेतना

8 मार्च 2024, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने 8 मार्च 2024 को अपने कार्यालय परिसर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, साहित्य अकादेमी, चेन्नै के कार्यालय प्रभारी ने स्वागत भाषण देकर प्रतिभागियों का परिचय करवाया। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल की सदस्य डॉ. नीता एझिलारसी (एम. वनिता) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उद्देश्य के बारे में संक्षेप में बात की।

(बाएँ से दाएँ) श्रीमती पलाइवना लंधर, डॉ. आई. नंथमिल नंगई, श्रीमती जी. मीनाक्षी तथा डॉ. नीता एझिलारसी

संगम युग से लेकर समकालीन समय तक की महिला लेखिकाएँ और उनके लेखन के इतिहास पर संक्षेप में वक्तव्य दिया। श्रीमती जी. मीनाक्षी ने पत्रिकाओं में महिला लेखन के बारे में बात की और मंजुला रमेश, वाई. मु. कोथेनायकी अम्मल और अन्य महिला लेखकों के कार्यों को याद किया। उन्होंने उल्लेख किया कि पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है और उन महिलाओं की सराहना की जिन्होंने पत्रकारिता को चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अपने करियर के रूप में चुना और उसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

श्रीमती पलाइवना लंथर ने लेखिकाओं द्वारा कथा साहित्य पर बात की। उन्होंने कहा, यद्यपि हर किसी के पास बताने के लिए एक कहानी है, किंतु केवल कुछ ही साहित्य के विशिष्ट रूपों की सीमा से बाहर जाकर अपना रचनात्मक परिणाम सामने लाने में सक्षम हैं। उसका अनुसरण करते हुए, डॉ. आई. नंथमिल नंगई ने संगम युग से लेकर वर्तम समय तक महिला कविता पर चर्चा की और उन महिला लेखकों पर प्रकाश डाला जिन्होंने अपने-अपने समय में प्रमुखता हासिल की। विशाल जनसमूह ने तालियाँ बजाकर कार्यक्रम की सराहना की।

स्थापना दिवस व्याख्यान

12 मार्च 2024, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने 12 मार्च 2024 को अपने स्थापना दिवस के अवसर पर अपने कार्यालय परिसर में एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया। श्री टी. एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने स्वागत भाषण देकर अतिथि वक्ता का परिचय दिया। उन्होंने साहित्यिक गतिविधियों और इसकी स्थापना के बाद से साहित्य अकादेमी का योगदान के बारे में संक्षेप में चर्चा की। तमिळ लेखक श्री एस. रामकृष्णन ने 'साहित्य के नए आयाम' विषय पर व्याख्यान दिया। साहित्य का पथ नए विचारों और दिशाओं को व्यक्त करता है। उन्होंने कहा, यद्यपि हम विभिन्न भाषाएँ बोलते हैं तथापि साहित्य हमें जोड़ता है। उपन्यासों के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि कथा-साहित्य विधा अत्यंत व्यापक है और इसमें विभिन्न प्रकार की उप-विन्यास शैलियाँ हैं। उन्होंने बताया कि समसामयिक साहित्य के संबंध में उत्तर आधुनिकतावाद किस विकसित हुआ और उन्होंने यह भी कहा कि इसे समझने के लिए साहित्य पर व्यापक चर्चा होनी चाहिए।

श्री एस. रामकृष्णन

पुस्तक चर्चा कार्यक्रम

14 मार्च 2024, चेन्नै

डॉ. टी. प्रह्लाथन

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै में 14 मार्च 2024 को कार्यालय परिसर में पुस्तक चर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने स्वागत भाषण देते हुए अतिथि वक्ता का परिचय कराया। चर्चा के लिए चुनी गई पुस्तक थी—*सी.वी. श्रीरामणिन, थर्नथेडुक्कप्पाट्टा सिरुकाथैगळ,* इस पुरस्कृत मलयाळम् कृति के लेखक थे सी.वी. श्रीरामन तथा इस कृति को तमिळ में अनूदित टी. विष्णुकुमारन ने किया था। तमिळ समीक्षक श्री टी. प्रह्लाथन ने पुस्तक का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने तमिळ अनुवाद मूल पाठ के अनुरूप करने के लिए अनुवादक की सराहना की।

'वेबलाइन साहित्य शृंखला' के अंतर्गत कवि सम्मिलन

19 मार्च 2024

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने 19 मार्च 2024 को 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत असमिया-तमिळ कवि सम्मिलन का आयोजन किया।

श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी चेन्नै ने स्वागत भाषण दिया तथा अतिथि कवियों का परिचय कराया। डॉ. बिपुलज्योति सैकिया, असमिया निबंधकार और अनुवादक ने अपनी कविताएँ सुनाईं। असमिया और उनके अंग्रेज़ी अनुवाद 'द रोड दैट लीड्स द सोल्जर्स, 'कम रेन', 'गीता रिसाइटल' और 'फुटबॉल इन द स्काई' प्रस्तुत किए। इसके बाद तमिळ कवि, निबंधकार और अनुवादक डॉ. के. मगुदीश्वरन ने तमिळ में अपनी कविताएँ पढ़ीं। उनके बाद, असमिया कवयित्री निबंधकार और अनुवादिका डॉ. बिनीता बोरा देव चैधरी ने अपनी कविताओं का पाठ किया और उनके अंग्रेज़ी अनुवाद 'विमेन्स हैव नो कंट्री' तथा 'येसटरडे ऑफ्टरनून' प्रस्तुत किए। तमिळ कवि और निबंधकार डॉ. पी. लक्ष्मी ने अपनी तमिळ कविता और उसका अंग्रेज़ी अनुवाद 'आवर इंडिया इज़ फिल्ड विथ वैदिक विसडम' का पाठ किया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

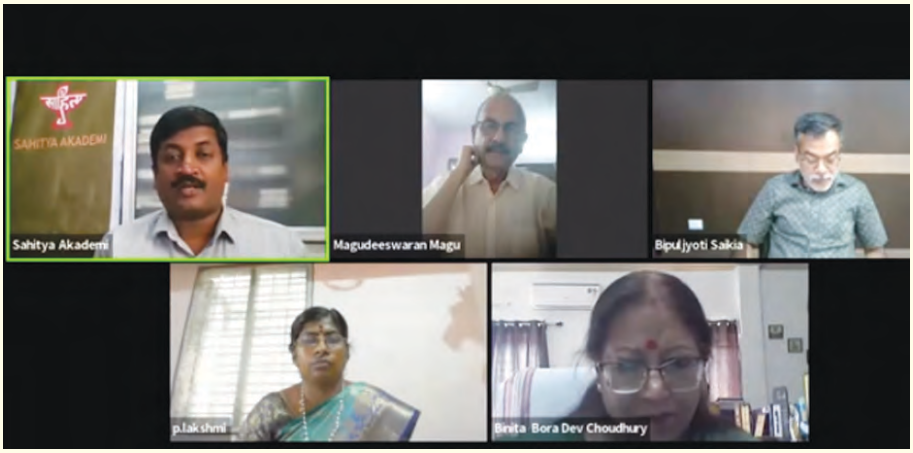

(बाएँ से दाएँ) (पहली पंक्ति) टी.एस. चंद्रशेखर राजू, डॉ. के मगुदीस्वरन और डॉ. बिपुलज्योति सैकिया
(बाएँ से दाएँ) (दूसरी पंक्ति) डॉ. पी. लक्ष्मी और डॉ. बिनीता बोरा देव चैधरी

'विश्व कविता दिवस' के अवसर पर कवि सम्मिलन

21 मार्च 2024, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै परिसर में 'विश्व कविता दिवस' के अवसर पर 21 मार्च 2024 को कवि सम्मिलन का आयोजन किया गया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी चेन्नै ने स्वागत भाषण देकर वक्ताओं का परिचय दिया। श्रीमती ए. वेनिला ने मन की उस अवस्था का उल्लेख किया जिसमें काव्य में कवि के मन को काव्य शैली में सामने रखा जाता है। उन्होंने अपने कविता-संग्रह - *पोन अंधी,* (गोल्डन इवनिंग) से कुछ कविताओं का पाठ किया। डॉ. इलमपिराई ने अपने लेखकीय अनुभव साझा किए। उन्होंने शुरुआत में 'पुथगा आलमारी', 'एनराइक्कु पेय्यूम वान', 'मणिथार्गल नांगल', 'अधू वेरु मझाइक्कलम', 'ग्राबगा पॉडिगाइगल', 'नान यारुम इलै' जैसी कुछ कविताएँ और 'कादरकरई' नामक पारंपरिक कविता का पाठ किया। डॉ. एम. लोगेश्वरन ने 'एंजामी' (एन सामी), 'काइथु कट्टिल', 'अयाविन पार्ककल', 'पिथन उलगम', 'पेन्त्राधिकारम', 'पोरुल वैर पिरिवु' तथा 'ऊर सुत्री' जैसी कुछ कविताओं का पाठ किया।

(बाएँ से दाएँ) डॉ. एम. लोगेश्वरन, श्रीमती एस. वेनिला और डॉ. इलमपिराई

प्रकाशन

डोगरी

दखमा (पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह)
ले. बेग एहसास, अनु. शिवदेव सुशील
पृ. 140, रु. 140/-
ISBN: 978-93-5548-560-1

अंग्रेज़ी

इंडियन लिट्रेरी हिस्ट्रोग्रैफी कंसेप्ट्स, लैंग्वेजज़, हिस्टरीज-सेमिनार पेपर्स
संपा. हरीश त्रिवेदी
पृ. 540, रु. 600/-
ISBN: 978-81-19499-33-5

द्रौपदी : द वुमन अनपैरागोंड (कविता)
ले. प्रफुल्ल कुमार मोहंती
पृ. 260, रु. 300/-
ISBN: 978-81-19499-75-5

लाइफ़ वीव्स
(एन. गोपी की चयनित कविताएँ)
संपा. के. दामोदर राव
पृ. 176, रु. 230/-
ISBN: 978-81-19499-42-7

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर
(खंड V)
संपा. गार्गी तालपात्रा
पृ. 1018, रु. 1200/-
ISBN: 978-81-19499-87-8
(संशोधित संस्करण)

हिंदी

संतोख सिंह (विनिबंध)
ले. लालचंद गुप्त 'मंगल'
पृ. 75, रु. 100/-
ISBN : 978-81-19499-53-3

कश्मीरी

हमकाल पंजाबी अफ़साना
(कार्यशाला में अनूदित पंजाबी कहानियाँ)
(कार्यशाला सामग्री)
संपा. यूसुफ जहाँगीर
पृ. 298, रु. 330/-, पहला संस्करण : 2024
ISBN: 978-81-19499-64-9

मिशाल सुल्तानपुरी (विनिबंध)
ले. अब्दुल अहद हाजिनी
पृ. 92, रु. 100/-, पहला संस्करण : 2024
ISBN: 978-81-19499-84-7

अब्दुर रहमान आज़ाद (विनिबंध)
ले. ग़ुलाम नबी आताश
पृ. 92, रु. 100/-, पहला संस्करण : 2024
ISBN: 978-93-6183-660-2

मोती लाल खेमू (विनिबंध)
ले. सोहल लाल कौल
पृ. 77, रु. 100/-, पहला संस्करण : 2024
ISBN: 978-93-6183-623-7

सजूद सैलानी (विनिबंध)
ले. अयाज रसूल नाजकी
पृ. 85, रु. 100/-, पहला संस्करण : 2024
ISBN: 978-93-6183-897-2

नेपाली

कुमार घिसिंग रचना संचयन
संपा. जीवन नामदुंग
पृ. 300, रु. 400/-
ISBN: 978-81-19499-55-7

इंद्रमणि दरनाल (नेपाली विनिबंध)
ले. विंध्य सुब्बा
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-189-8

नेपालिमा अनुदित केहि असमिया कथा
असमिया में संपा. गोविंद प्रसाद शर्मा, शैलीन भाराली और हृदयानंद गागोई
नेपाली में संपा. खगेन शर्मा
पृ. 296, रु. 430/-
ISBN: 978-93-6183-545-2

पंजाबी

टोकरी विच दिगंत 'थेरी गाथा' : 2014
(पुरस्कृत हिंदी कविता संग्रह,
टोकरी में दिगंत 'थेरी गाथा' : 2014)
ले. अनामिका, अनु. भूपिंदर कौर प्रीत
पृ. 172, रु. 280/-
ISBN: 978-81-19499-47-2

राजस्थानी

डोकरो अर समंदर
(नोबेल पुरस्कार विजेता अंग्रेज़ी उपन्यास, *द ओल्डमेन एंड द सी*)
ले. अर्नेस्ट हेमिंग्वे, अनु. रितु शर्मा
पृ. 68, रु. 135/-
ISBN: 978-93-5548-577-9

तमिळ

कदल ओराथिल (गुजराती उपन्यास)
ले. ध्रुव भट, अनु. राजलक्ष्मी श्रीनिवासन
पृ. 280, रु. 415/-
ISBN: 978-93-5548-653-0

तमीझ थाथा (विनिबंध)
ले. की.वा. जगन्नाथन
पृ. 80, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-621-9
(नौवाँ पुनर्मुद्रण)

अव्वैयार (विनिबंध)
ले. तामीष्नल
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-640-0
(नौवाँ पुनर्मुद्रण)

बाबासाहेब अम्बेडकर (विनिबंध)
ले. के. राघवेंद्र राव
अनु. अरु. आरुथादुरई
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-638-7
(छठा पुनर्मुद्रण)

पेरियार ई.वी.रा (विनिबंध)
ले. अरु अझगप्पन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-659-2
(नौवाँ पुनर्मुद्रण)

देवनेय पावनार (विनिबंध)
ले. आर. इलमकुमारन
पृ. 104 रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-660-8
(छठा पुनर्मुद्रण)

वा.वी.सु. अय्यर (विनिबंध)
ले. जी. सेल्वम
पृ. 143, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-625-7
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

तमीष़ सिरुकाथैगल
(जीवंत तमिऴ संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाला कहानी संकलन)
चयन और संकलन : भारतीबालन
पृ. 448, रु. 540/-
ISBN: 978-93-6183-107-2
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

समकाल तमिष़ सिरुकाथैगल
(2000-2020 तक समकालीन तमीझ कहानी-संग्रह)
चयन और संकलन : भारतीबालन
पृ. 512, रु. 610/-
ISBN: 978-93-6183-577-3
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

तमीझिल रायिल कथैगल
(ट्रेनों के विषय और रेल यात्रा पर केंद्रित तमिऴ कहानी संकलन)
चयन और संकलन : सा. कंदासामी
पृ. 336, रु. 270/-
ISBN: 978-93-6183-772-2
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

वल्लिक्कन्ननिन थेर्नथेदुथा सिरुकथैगल सिरुकाथैगल
(वल्लीकन्नन की कहानी-संग्रह)
चयन और संकलन : 'मेलम' सिवासु
पृ. 288, रु. 240/-
ISBN: 978-93-6183-289-5
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

अशोकामित्रन (विनिबंध)
ले. सा. कंदासामी
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN:978-93-6183-968-9
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

ज्ञानक्कूथन (विनिबंध)
ले. अजहागियासिंगर
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-587-2
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

इंकलाब (विनिबंध)
ले. जमालन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-229-1
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

मुल्लई मुथैया (विनिबंध)
ले. मुल्लई मु. पलानियप्पन
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-417-2
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

थी. का. शिवशंकरन (विनिबंध)
ले. आर. कामरासु
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-805-7
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

थिरिकुदरसप्पाकविरायर (विनिबंध)
ले. ए. मुथैया
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-939-9
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

एम.वी. वेंकटराम (विनिबंध)
ले. रविसुब्रमण्यम
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-536-0
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

मा. अरंगनाथन (विनिबंध)
ले. एस. शनमुगम
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-206-2
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

मुदियारासन (विनिबंध)
ले. आर. मोहन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-219-2
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

वल्लीक्कन्नन (विनिबंध)
ले. कजानियूरन
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-496-7
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंदीन सिरन्था सिरुकाथैगल (भाग 1)
ले. प्रेमचंद, चयन और संकलन : अमृत राय
अनु. एन. श्रीधरन (भारनिधरन)
पृ. 142, रु. 160/-
ISBN: 978-93-6183-666-4
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंदीन सिरंधा सिरुकाथैगल (भाग 2)
ले. प्रेमचंद, चयन और संकलन : अमृत राय
अनु. कामाक्षी धरणीशंकर
पृ. 112, रु. 140/-
ISBN: 978-93-6183-584-1
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

थी. जानकीरमानिन थेर्नथेदुथा सिरुकथैगल
चयन और संकलन : मालन
पृ. 288, रु. 240/-
ISBN: 978-93-6183-687-9
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

सुंदर रामासामी (विनिबंध)
ले. अरविंदन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-228-4
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

कलैगनार मु. करुणानिधि (विनिबंध)
ले. एम. राजेंद्रन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-682-4
(चौथा पुनर्मुद्रण)

एंगेल थाथावुक्कु ओरु यानई इरुंधधु
ले. वैक्कोम मुहम्मद बशीर
अनु. के.सी. शंकर नारायणन
पृ. 88, रु. 110/-
ISBN: 978-93-6183-634-3
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

जयकांतन (विनिबंध)
ले. के.एस. सुब्रमण्यन
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN: 978-93-6183-051-8
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

सिरुवर नाडागा कलंजियम
चयन और संकलन : म्यू मुरुगेश
पृ. 320, रु. 255/-
ISBN: 978-93-6183-694-7
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

सिरुवर कथैप्पादलगल
(बच्चों की कथात्मक छंदों का संकलन)
चयन और संकलन : सी सेतुपति
पृ. 232, रु. 230/-
ISBN: 978-93-6183-549-0
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

अप्पार (विनिबंध)
ले. जी. वनमीगनाथन
पृ. 80, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-91-5
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

सिंगारवेलर (विनिबंध)
ले. बी. वीरमणि
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-66-3
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

का. अयोथिदास पंडिथर (विनिबंध)
ले. गौथमा सन्ना
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN: 978-93-6183-013-6
(सातवाँ पुनर्मुद्रण)

अकिलन (विनिबंध)
ले. सु. वेंकटरमण
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-74-8
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

थो. परमाशिवन (विनिबंध)
ले. ए. मोहना
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-425-7
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

कोवई ज्ञानी (विनिबंध)
ले. अजहागियासिंगर
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN: 978-93-6183-322-9
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

की. राजनारायणन (विनिबंध)
ले. के. पंचांगम
पृ. 86, रु. 50/-
ISBN: 978-93-6183-980-1
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

सुजाथा (विनिबंध)
ले. इरा. मुरुगन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-93-6183-648-0
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

रेट्टामलाई श्रीनिवासन (विनिबंध)
ले. जे. बालासुब्रमण्यम
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-93-6183-933-7
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

जीवन लीला (गुजराती यात्रा वृत्तांत)
ले. काका कालेलकर
अनु. टी.बी.एम. कृष्णासामी
पृ. 480, रु. 520/-
ISBN: 978-93-6183-949-8
(चौथा पुनर्मुद्रण)

उर्दू

असद बदायुनी (विनिबंध)
ले. खान मोहम्मद रिजवान
पृ. 94, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-863-1

खुशवंत सिंह (विनिबंध)
ले. जी.जे.वी. प्रसाद
अनु. सरवर हुसैन
पृ. 84, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-466-0

साहित्योत्सव 2024 की झलकियाँ

प्रधान कार्यालय
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : +091-011-23386626/27/28
फ़ैक्स : +091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय अनुभाग
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : +011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : +091-11-23364207
ई-मेल : sales@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : +022-024135744, 24131948
फ़ैक्स : +091-022-24147650
ई-मेल : po-romumbai@sahitya-akademi.gov.in

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
4, डी.एल. ख़ान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : +033-24191693, 24191706
फ़ैक्स : +091-033-24191684
ई-मेल : rs. rok@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ बी.आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु 560001
दूरभाष : +080-22245152, 22130870
फ़ैक्स : +091-81-22121932
ई-मेल : rs. rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443 (304)
अन्नासलाइ, तेनामपेट, चेन्नै 600018
दूरभाष : +044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : +091-44-24311741
ई-मेल : chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

देवेन्द्र कुमार 'देवेश' द्वारा संपादित तथा के. श्रीनिवासराव, सचिव
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001 द्वारा प्रकाशित
एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित